अढार दूषण निवारक.

रचनार

शेठ. अनोपचंद मलुकचंद.

छपावी प्रसिद्ध करनार

शेठ. अनोपचंद मलुकचंद.

संघ तरफथी. भरुच.

अमदावाद

निर्मळ प्रिन्टिंग प्रेस. मदनगोपालनी हवेलीमां लल्लुभाई

ईश्वरदास त्रिवेदीए छाप्युं.

संवत १९६०. सन १९०३.

कीमत रु. ०-६-०.

प्रस्तावना.

आ ग्रंथमां प्रथम आस्तिक मतनी सिद्धि करी छे, ने नास्तिक मतनुं खंमन कर्युं छे, तेथी वांचक वर्गने वांचवाथी आस्तिक मतनी श्रद्धा दृढ थशे. पछी अढार दूषण सहित संसारी जीव छे तेनुं वर्णन कर्युं छे, अने ते दूषणथी केम लेपाय छे ने केम मुक्त थाय छे तेनुं वर्णन करेलुं छे, अने तेनी साथे अढार दूषण रहित वीतराग छे ते दर्शाववामां आव्युं छे. आ रूपनो वर्णव जूदो नहीं होवाथी शास्त्रना आधारथी भव्य जीवना हितने अर्थे केटलाएक प्रिय बंधुनी प्रेरणाथी लख्यो छे. पाछळना भागमां जैनो केम सुधरे तेनुं वर्णन करेलुं छे. आ पुस्तकमां मारी मतिना दोषथी कांइ शास्त्र विरुद्ध लखायुं होय तो शास्त्र जोइ शुद्ध करवा विनंती करुं छुं आ ग्रंथनो केटलोएक भाग आचार्य श्री विजयानंदसूरि महाराजना शिष्यानुशिष्य परम पूज्य मुनि महाराज श्री हंसविजयजी महराज शोध्यो छे. तेमज केटलुंक शुद्ध करवानी मेहेनत अमदावादना शा. हीराचंद ककलभाइए लीधी छे, तेथी ते बंने पुरुषोनो उपकार मानुं छुं. आ ग्रंथ तइयार करवामां जे ज्ञानानुरागी भाइओए प्रथमथी मददने माटे रुपीआ मोकली दीधा छे तेओ साहेबनां नाम उपकार साथे नीचे जणावुं छुं.

२५) शा. वीरचंद कशनाजी श्री पुनावासी अति उत्कंठाथी आपी गया छे

२५) श्री. कलकत्ता बंदर निवासी बाबु लक्ष्मीचंदजी शीपाणीए पोतानां पत्नी छगनकुंवर तरफथी ज्ञान वृद्धिने अर्थे मोकल्या छे

२५) मूर्शिदावाद निवाशी वाबु सादेव कालुरामजी किरतचंदजी
ना मालेक माजी साहेबनी तरफथी

२५) श्री. मीआंगामना शेठ. दलीचंद पीतांबरदास जे धर्मना का-
ममां घणा मददगार हता, तेमना पुन्यने अर्थे तेमना भाइ
नेमचंद पीतांबरदास ज्ञानवृद्धिने अर्थे आपी गया छे

५) भरुचनां बाइ मोतीकोर शा. रुपचंद झवेरचंदनां दीकरीए
पोताना आत्माहितार्थे आप्या छे.

१०) भरुचनां बाइ हरकोर उर्फे नाथी शा. नरोतम वीरचंदनी
दीकरी

१०) शा. मगनलाल परसोतमदास.

आ प्रमाणे उपर मुजब पोतानी उत्कंठाथी आ पुस्तक छ-
पाववामां मदद मळी छे, तथा प्रथम प्रश्नोत्तर—रत्नचिंतामणि छ-
पाववामां जे मदद मळी हती तेमांनो वधारो पण आ पुस्तक
छपाववामां वापर्यो छे. तेथी मुनि महाराजोने तथा साध्वीजी म-
हाराज विगेरेने मफत आपवामां आवशे. तेमां हरकत पडशे नही
किंमत पण लागत करतां ओछी राखी छे. माटे जे जे मुनिराज
तथा साधवीजी महाराजने खप होय तेमणे मंगाववी. हुं मोकली
आपीश. आ ग्रंथ लखवाने देशावरना केटलाक भाइओए पण प्रे-
रणा करेली तेनो उपकार मानुं छुं, तथा मने जे जे पुरुषोए सम्यक
बोध कर्यो छे, अने हरिभद्रादि आचार्य महाराजना ग्रंथो जोवाथी
बोध थयो अने जेथी आ ग्रंथ लखायो तेथी ते सर्वे उपकार ते म-
हान् पुरुषोनो छे तेमां वीतरागनी आज्ञाथी विरुद्ध जे कांइ ल-
खायुं होय तेनुं मिच्छामि दुक्कडं देउं छुं. शंवः

अनुक्रमणिका.

श्री आदीश्वराय नमः

श्री मुनिसुव्रतस्वामि जिनेंद्राय नमः

श्री पार्श्वनाथाय नमः

श्री महावीराय नमः

अढार दूषण निवारक.

प्र. १. आपणुं आ शरीर देखाय छे, तेमां जीव छे एम केटलाएक सज्जनो कहे छे, अने केटलाएक जीव नथी एम कहे छे ते केम ?

उत्तर. जेटला धर्म आस्तिक मती छे ते सचेतन शरीरमां जीव अने जड जे शरीर रुप अजीव एम बे माने छे. जे नास्तिकमती छे ते एकलुं शरीर माने छे. शरीर विनाश पाम्युं एटले पछी कांइ नथी. पाप, पुन्यनुं फल पण भोगववुं नथी.

प्र. २. आ बे पक्षमां तमे कयो पक्ष मानो छो ?

उ. अमे पूर्ण खातरीथी जीव अने अजीव बे मानीए छीए, बंने वस्तु छे, तेनो सारी रीते अनुभव थई शके छे.

प्र. ३. जीव छे एवी शी रीते खातरी थाय छे ?

उ. आ शरीरमां जीव होय छे, त्यांसुधी हालवुं, चालवुं, बोलवुं, विचारवुं, हिताहितनुं जाणवुं, सुख दुःखनुं जाणवुं ए विगेरे बने छे, अने जीव रहित शरीर थाय छे, त्यारे ए सर्वे क्रिया बंध थई जाय छे, तेथी जाणवानी शक्तिवालो ते जीवज छे. शरीर अजीव छे, तेथी शरीरथी जीव विना कांइपण बनी शकतुं नथी. माटे जीव पदार्थ छे, तेमां संशय नथी.

प्र. ४. नास्तिकमती एम कहे छे के पांचभूतना संजोगथी

जाणवा विगेरेनी शक्ति उत्पन्न थाय छे, माटे तेनुं शुं समजवुं?

उ. पांच भूतमां एवी पृथक् पृथक् शक्ति नथीज, तो पछी एकठा थवाथी केवी रीते थाय; कदापि उत्पन्न थवानो स्वभाव माने तो बधा जीवनी सरखी शक्ति होवी जोइए, ते देखाती नथी; ज्ञानशक्ति सर्वनी भिन्न भिन्न देखाय छे, ते न होवी जोइए. सुख दुःख पण भिन्न भिन्न जोवामां आवे छे, ते होवुं न जोइए; ने ज्यारे भिन्न भिन्न देखाय छे त्यारे तेनुं कांइ पण कारण होवुं जोइए.

प्र. ५. जे ज्ञानशक्ति ओछी वधती जोवामां आवे छे, तेतो उद्यमनी खामीथी जोवामां आवे छे, जे ज्ञाननो उद्यम करे तेने ज्ञान थाय, जे उद्यम न करे तेने ते न थाय.

उ. बे माणस साथे बेशी एकी वखत उद्यम करे छे, सरखो वखत महेनत करे छे, पण सरखुं भणी शकता नथी. केटलाएक भणे छे तो अर्थ समजी शकता नथी, केटलाएक समजीने ते प्रमाणे वर्ती शके छे; तेम बीजो माणस वर्ती शकतो नथी. माटे एकला उद्यमथी ज्ञान आवडतुं नथी.

प्र. ६. उद्यम सिवाय ज्ञान बीजा शाथी आवे छे.

उ. ज्ञानशक्ति जीवनी छे, ते अवराई गई छे, तेमांथी जेटलां जेटलां आवरण खुले छे, ते प्रमाणे ते माणसने ज्ञान थाय छे.

प्र. ७. त्यारे शुं उद्यमनी जरुर नथी? एकली आत्मशक्तिथीज ज्ञान थाय छे, ने हिताहित जाणे छे?

उ. ज्यांसुधी आत्मानी जेटली शक्ति छे, ते प्रगट नथी थई त्यां सुधी आत्मा अने शरीर ए बन्नेना मळवाथी ज्ञान थाय छे. आत्मानुं ज्ञान अने आत्मानी शक्ति कर्मना जोगथी अवराई गई छे. ते अवराएली छे त्यांसुधी इंद्रियोना संजोगथी ज्ञान थाय छे. जेमके आंखे आपणे जोईए छीए, ते आंखो उघाडी होय, अने जीव नीकळी गयो, तो ते आंखोथी कंइ जणातुं नथी. जीव श

रीरमां छे, पण आंखो मींची दईए, तो कोई पदार्थ जोई शकता नथी. आंखो उघाडी छे, पण पोते बीजा उपयोगमां परोवायेलो होय तो पदार्थ जोई शकतो नथी. तेथी खुल्लुं समजाय छे के उपयोग करनार अंदर कोई छे, तेज जीव छे. एमज वली काने सांभलवामां पण, उपयोग जो ते वात सांभलवामां होय तो संभलाय छे, पण बीजा काममां ध्यान होय तो कोई गमे ते बोले तो ते सांभलवामां आवतुं नथी. तेमज मांहे जीव छे पण कानमां कोइ पुमडुं घाले या रोग थाय, तो सांभली शकतो नथी तेम नाकना विषय पण कोई कहेशे. आ गंध शानी आवे छे, त्यारे त्यां बेठेलो माणस उपयोग मुकी गंध तपासे, त्यारे कहे छे के घीनी गंध आवे छे. हवे विचार करो जे नासिका तो खुल्ली छे, पण उपयोग नहीं हतो तेथी गंधनी खबर पडी नहि, तो आ शरीरनी मांहे गंध लेनार जुदो छे, रस इंद्रि जे जीभ तेमां माणसनुं ध्यान खावा बेठो छे तेमां नथी. बीजा काममां छे ने उतावलथी खाय छे, तो स्वादनुं ज्ञान तेने थतुं नथी. स्वादनो जाणनार शरीरमां जीव छे, तेम स्पर्श इंद्रि जे शरीर तेने स्पर्श थाय छे तेथी ज्ञान थाय छे. पण शरीरे वस्तु स्पर्शे ते वखत कांइ बीजा ध्यानमां होय तो तेनी पण खबर पडती नथी. वली शरीरे सरदीना रोगथी बेहेर मारी होय तो अंदर जीव छे, पण स्पर्शनुं ज्ञान थतुं नथी. आ बधुं तपासतां शरीर अने जीव बे मलीने बधुं काम करे छे, तेमां पण एकबीजाने विषय लेवानो फेरफार होय छे, बधा सरखो विषय लई शकता नथी, तेनुं कारण कोईने कर्म आवरण वधारे छे, तो दरेक विषय ओछो करी शके छे. जेने ए पांचे इंद्रिनां आवरण खुल्यां छे ते विशेष इंद्रियोथी जाणी शके छे. माटे जे जे ज्ञान थाय छे, ते कर्मना क्षयोपशमथी थाय छे, एकला उद्यमथी बनतुं नथी. ओछो उद्य-

म करे ने ज्ञान वधारे थाय, वधारे उद्यम करे ने ज्ञान थोडुं थाय, माटे जीव ने अजीव बे मानवाथी वधुं समजवुं सुगम पडशे.

प्र. ७. अमे जीव मानीए पण पाछा तमे जीवने कर्मसंजोग कहो छो ते शुं छे ? शी वस्तु छे ?

उ. कर्म छे ते जड पदार्थ छे, तेनो आ जीवनी साथे अनादिनो संबंध छे. ए अतिशय ज्ञानी पुरुषना वचनथी प्रमाण थाय छे. अनुभवथी विचारतां पण जो प्रथम निरावरण होय तो कर्म लागे केम ? कदापि लाग्यां मानीए तो ते दिवस आदि थइ, त्यारे तेनी आगली स्थितिमां निर्मल हतो, ते क्यारथी हतो ते पण अनादि कहेवुं पडे. केटलाएक आदि कहे छे तो तेनी अगाउना कालमां संसार जगत् हतुंज नहि. ए केम संभवे, आ जगत्नी स्थिति फेरफार थाय पण कांइ चीज होय नहि तेतो आवेज क्यांथी. माटे जैन दर्शनवाला अनादिनो जीव कर्म संयुक्त छे एम माने छे ते वात निर्विवाद सिद्ध थाय छे. ए कर्म न होय तो जीव सुख दुःख शाथी पामे, सुख दुःख केटलुं भोगववुं, केटला काल जीववुं. केटलुं कुटुंब मलवुं, ए वधुं कर्म प्रयोगेज बने छे.

प्र. ८. ए सर्वे उद्यमथी बने एमां कर्म शुं करे छे ?

उ. अरे इच्छाकारि सुख दुःख जो उद्यमथीज बनतुं होय तो मजुर आखो दिवस महेनत करे छे, त्यारे चार आनाना पइसा मले छे अने एक माणसनो जमीनमां पग गरकी जाय छे ने निधान मले छे ने धनवान थाय छे. जेमके सीयाजीराव गायकवाड सरकार शी स्थितिमां हता ने एकदम राज्यगादी उपर बेठा ए शुं उद्यम करवा गया हता ? पूर्वे पून्य उपार्जन कर्युं हतुं तो राज्य मल्युं. एक दवा बे माणस खाय छे, एकने सारुं थाय छे, एकने सारुं थतुं नथी ने डाक्तर पण एकज छे, तेम छतां मटतुं नथी, ते कर्मनो फेरफार छे तेथी बने छे. एक बुद्धिवान् सा-

रो विद्वान् आलसु नहि, उद्यम करवामां तत्पर रहे छे, पण वे पारमां बापदादाना पेदा करेला पइसा गुमावे छे तो जो उद्यमथी बनतुं होत तो गुमावेज नहि, पूर्वेनां करेलां पाप उदय आव्यां तेथी तेणे दुःख भोगववुं जोईए. तेथी तेना पैसा चाल्या जाय छे. ए कर्मनुंज फल छे. कोई माणस एक बे स्त्री परणे पण तेने एक पण छोकरुं थतुं नथी. भोगादिकनो उद्यम करे छे, पण छोकरां थतां नथी. एम करतां थाय छे, तो जीवतां नथी. तो ए शुं छे? पूर्वना कर्मना संजोग छे. एक माणस मोटो बलवान छे ने सारु खाय पीए छे, सारी शरीरनी संभाल राखे छे. एवो प्राणी मरकी विगेरेना उपद्रव शिवाय वगासुं खाय छे अने मरीजाय छे, वली मरकीनी हवा आखा शहेरमां चाले छे तेम छतां ते हवा बधामां प्रवेश करती नथी. जेनो पाप उदय होय तेनामांज ए रोग प्रवेश करे छे. बे माणस एक घरमां रहेनार, साथे फरनारा, साथे खानारा, सारी संभाल राखनारा, ते छतां एक माणसमां मरकी प्रवेश करे छे तेथी ते मरी जाय छे. एक ज़ीवतो रहे छे तो ए पूर्वना कर्मनो प्रभाव छे. जो केवल उद्यमथी बनतुं होय तो ए बे माणस सरखा उद्यमी ते मरवा न जोइए. माटे पूर्वे पाप कर्म बांध्यां छे तेनां फल छे. ए उपरथी समजो के केवल उद्यम व्यर्थ जाय छे, त्यारे कांइ हेतु होवो जोइए. ते हेतु पूर्वनां करेलां कर्म. ज्यारे पूर्वनां कर्म रह्यां त्यारे पाछलो भव रह्यो. पाछलो भव रह्यो त्यारे जीव पण रह्यो. जीव शब्द अजीव शब्दनो प्रतिपक्षी छे तो दुनीयामां अजीव शब्द जीव होवाथी पड्यो छे, माटे जीव सारी रीते सिद्ध थाय छे. आ जगत्मां नास्तिक=जीव नहि माननार एवा जुज छे. घणा धर्मवाला एम तो कहेछे जे 'जेवां करीशुं तेवां पामीशुं.' त्यारे करनार जीवज होवो. जोइए, एथी पण सिद्ध थाय छे. जीव शब्दनो अर्थ पण ए-

ज छे ते जीव प्राणधारणे धातुथी सिद्ध थाय छे वास्ते जीवे ते जीव छे. माटे शरीर फेरफार थया करे छे, पण जीव तो तेने तेज छे. जेवां कर्म बांध्यां होय तेवुं पाछुं शरीर धारण करे छे, तेज जीव छे, अने जे जे सुख दुःख उत्पन्न थाय छे ते जेवां जेवां पाप, पुन्य गया भवमां करेलां छे तेवां जीव भोगवे छे. ने तमारा मत प्रमाणे जीव न होय, ने शरीरज एकलुं होय त्यारे आ उपर फेरफार बताव्या छे ते होवा न जोईए, अने तेम थाय छे, तो तमारुं नास्तिकनुं समजवुं भूल भरेलुं छे. आ नास्तिक मतनो काढनार पापी होवो जोइए, कारण जे हालमां इग्लांन्डमां केटलाएक एवा माननार नीकळ्या छे के पाप पुन्य नथी. शरीरनी संभालथी सारु शरीर रहे छे. नहि संभालथी शरीर बगडे छे. आवो विचार करी गुन्हो कर्यानी शिक्षाज मानता नथी, अने नहीं मानवाथी एवाज माणसो खून बहु करे छे. तो जेम हाल नास्तिक पाप नहि माने, एटले कांइ पण खोटां काम करवानी धास्ती नहिज रहे, ने बुरां काम करे ते उपरथी समजाय छे के नास्तिक मतनो काढनार पापी होवो जोइए, अने तेनी संगते रहे ते पण कोई प्रकारना पापना कामथी बीहे नहि. हालमां जेटलां राज्य चाले छे ते बधां राज्यमां गुन्हानी शिक्षा छे. तो जेवी शिक्षा बधी दुनिया प्रमाणं करे छे. तेमज दरेक पाप करे तेनी शिक्षा होवी जोइए. आ दुनियामां बधा माणस माने छे के कोई जीवने दुःख थाय ते न करवुं, ने ज्यारे नास्तिक थाय त्यारे तो कोईने दुःख देवानी फीकर रहेती नथी तेथी तो दुनियाना विचारथी अने न्यायथी ए अयोग्य थाय छे. आ बधी हरकतो तपासतां जीव मानवो, अने सुख दुःख कर्मना संजोगथी बने छे, एम मानवाथी बधां दूषण टली जाय छे ए कर्मनुं स्वरुप मारा करेला प्रश्नोत्तर रत्नचिंतामणिमां बहु वि-

स्तारे छे त्यांथी जोई लेवुं.

प्र. १०. तमारा कहेवा प्रमाणे कर्मना संजोगथी बधुं बने छे त्यारे जीव एकलो कांइ करी शकतो नथी?

उ. जीवनी शक्ति तो अनंती छे, पण कर्मने वशीभूत छे त्यांसुधी एकली आत्मानी शक्ति चलावी शकतो नथी. जेम कोई महोटो राजा होय ने ते केद पडे छे, त्यारे पोतानुं जोर चालतुं नथी, तेम कर्मना वशमां जीव पड्यो छे, त्यांसुधी आत्मानी प्रवृत्ति आत्मा जडनी संगत विना करी शकतो नथी.

प्र. ११. कर्मना संबंधथी प्रवृत्ति करे छे त्यारे जीवनी शक्ति तो न रही, त्यारे जीव पदार्थ शा सारु मानवो जोइए?

उ. जीव विना जड तो कंइ पण करी शकवानो नथी. कारण जे जेनामां जड स्वभावछे चेतन स्वभावनथी ते शुं करी शके? जेटली जेटली विचार शक्ति छे ते चेतननी छे, जडमां ए स्वभाव नथी. पांचभूत तमे मानो छो ते पण जड छे, तेमां पण विचारशक्ति नथी. पांचभूत खावानी रसोइमां पण मले छे, पण तेमां कांइ जीवशक्ति उत्पन्न थती नथी; माटे पांचभूतनी वातमां पण बहु प्रश्न छे ते प्रकरण रत्नाकर भाग बीजामां पाने १७७ मे नास्तिकनो संवाद छे त्यांथी जोवुं.

प्र. १२. तमे कहो छो के जडमां चेतनशक्तिज नथी, त्यारे तमे पण बुद्धि वधवाने सरस्वती चूर्ण खवडावो छो. वली शास्त्रमां पण वज्र ऋषभ नाराच संघयण होय तो क्षपकश्रेणी मांडी शके, वली "प्रश्नोत्तर रत्न चिंतामणि"मां पण यात्राना फलमां सार पुद्गल फरसवाथी सारी बुद्धि थाय एम जणाव्युं छे. ते जडनी शक्तिथी केम बने छे?

उ. जड छे तेनी शक्ति ज्यांसुधी कर्म सहित जीव छे ने कर्मे करी आत्मानो स्वभाव अवराई गयो छे, ते आवरण करना-

र पुद्गल छे. ते पुद्गलो एवा मळ्या छे के आत्मानी ज्ञानशक्ति चालवा देता नथी. तो सरस्वती चुर्ण प्रमुखना सार पुद्गल छे. ते तो जेम औषध खाईए छीए तो शरीरमां रोगना पुद्गलने काढी नांखे छे, तेम शरीरमां वायु प्रमुखथी इंद्रियोनी शक्तिने हरकत होय ते दूर करे छे. एटले चेतनशक्ति चालवामां जे अडचण हती ते दूर थई एटले जे बुद्धि हती ते चाली शके छे. जेम आंखोने पाटो बांध्यो होय अने खशेडी नांखीए तो आंखेथी जोई शकीए. पाटो जवाथी कांई आंखमां जोर आवतुं नथी; परंतु बाधाकारी टली गयुं, तेमज सरस्वती चूर्ण करे छे. संघयणनुं बल पण जेम कानमां रोग थयो होय तेथी आत्मा छे तोपण सांभली शकातुं नथी, केमके काननो भाग बगड्यो छे ते सुधरे एटले सांभले छे. तेम संघयण बलवान होय तो आत्माने पोतानुं काम करवाने बाध करनारनी हरकत रहेती नथी. तेथी पोतानी ज्ञानशक्ति चाली शके छे. जेम निर्बल माणसने लाकडीनो टेको होय तो चालवाने अडचण पडती नथी तेम आत्मा कर्म आवरण सहित छे, त्यां सुधी निर्बल छे. तेथी टेकारुप संघयणनुं बल जोईए छे. सर्वथा कर्मथी रहीत थाय त्यारे देहरहीत थाय छे, अने त्यारे पोतानी आत्मशक्ति जेटली छे ते चाले छे. तेमां कांइ पण पुद्गलनो आधार जोइतो नथी. जेम निरोगी आंखवालाने चशमां जोइतां नथी. आंखनी शक्ति घटी होय तेने चशमां जोइए छे. तेमज कर्म आवरणरुप रोग छे, त्यांसुधी जे जे ज्ञान थाय छे ते इंद्रीओना बलथी थाय छे, त्यांसुधी सारा पुद्गलनो खप पडे छे. जेमके केवलज्ञान प्रगट थाय छे, त्यारे कोईपण इंद्रिनो खप पडतो नथी. पोतानी आत्मशक्तिथीज ज्ञान थाय छे. माटे आत्मशक्तिमां कांईपण जडनो खप पडतो नथी. जेम जेम जड संगत छूटशे तेम तेम आत्मभाव प्रगट थशे, अने संसारमां रख-

रुवानुं मटशे. आत्माना अवला विचारो थाय छे ते ते जरूनी संगतनां फल छे. ते जरूनी संगत छूटशे, ने आत्मानी सन्मुख थशे त्यारेज जे जे खरा विचार छे ते जणाशे, त्यांसुधी जणाशे नहि, माटे जरूनी संगत छंडी करो के सर्व सारुं थाय.

प्र. १३ जरूनी संगत छंडी करवाने शुं करवुं?

उ. सद्गुरुनी संगत, निस्पृही निर्विषयी, स्वात्मान्नावी एवा पुरुषनी सोबत करवाथी मार्ग पामशो.

प्र. १४. तमारा कहेवा प्रमाणे सर्वे कर्मथी बने छे तो तो जेम बनवानुं छे तेम बनशे. उद्यम करवानुं शुं काम छे? उद्यम तो आगल तमे नकामो कर्यो छे.

उ. अमारा जैन शासनमां तो हरकोई कार्य थाय छे ते पांचे कारणो मळ्याथी थाय छे. अने ते पांच कारणमां उद्यम पण कह्यो छे. तमे तो एकला उद्यमथीज कार्य मान्युं ते अमे न थी मानता, केमके प्रत्यक्ष जोईए छीए जे उद्यम बहुए करे छे पण पुन्यनी खामी होय तो मलतुं नथी. वली एकला उद्यमथी थाय छे त्यारे तेने सारी करणी करवानी बुद्धि नाश पामे छे, केम-के एना मनमां पूर्वना पुन्यनी श्रद्धा नथी के पुन्यथी थशे, एटले पुन्य करवानो उद्यम नष्ट थई जाय छे, तेम केटलाएक न्नावी उ-पर रहे छे के जेम बनवानुं हशे तेम बनशे. ते पण निरुद्यमी थाय छे. ते पण कामनुं नथी. पांचे कारणना जोग मलवाथीज कार्यनी सिद्धि थाय छे.

प्र. १५. (अ) पांच कारण शी रीते मानो छो?

उ. पांच कारण ते काल, स्वन्नाव, नियत, उद्यम अने पू-र्वकृत. आ पांच कारण मले छे त्यारे हरेक कार्य थाय छे. काल ते हालमां पंचम काल छे. तो पंचम कालमां कोई जीव मुक्तिमां जई शके नहि. त्रीजो चोथो आरो वर्तंतो होय त्यारेज जीव मोक्ष

पामे. जेम उष्ण ऋतुमांज आंबो फले. स्त्रीनी उमर जोईए एटली नथी थई त्यां सुधी गर्भ धारण करे नहि, तेम हरेक काममां कालनी सामग्री मलवी जोईए. कालनी सामग्री चोथा आराना जीवने मली पण ते जीवमां भव्य स्वभाव नथी त्यांसुधी मुक्ति पामे नहि माटे भव्य स्वभाव जोईए. ने त्रीजा चोथा आरामां घणा भव्य जीव हता एटले स्वभाव कारण मळ्युं, पण ते जीवे समकित प्राप्त कर्युं नहि, तेथी नियत कारण मळ्युं नहि. त्यारे कोई कहेशे जे श्रेणीक महाराज तथा कृष्ण महाराज तो क्षायक सम्यक्त्व पाम्या हता. तेमने नियत कारण मळ्युं, पण केम मोक्षे गया नथी? एनुं एम समजवुं के ए त्रण कारण मळ्यां, पण मोक्ष साधननो उद्यम कर्यो नहि. जेम आंबानी ऋतु छे. वंध्यपणुं आंबामां नथी. ते स्वभाव अने मांजर विगेरे आवी छे. ए त्रणे कारण मळ्यां; पण जो ए आंबानुं रखोपुं न करे, पाणी विगेरे जे आंबाने जोईए ते शींचे नहीं तो फलवंत आंबो न थाय, तेम समकित पाम्या पण ज्ञान दर्शन चारित्र प्रगट करवानो उद्यम न करे, तो मुक्ति मले नहि. तेमज श्रेणिकराजाए संजम आराधन न कर्युं तेथी तद्भव केवलज्ञान पाम्या नहि. हवे उद्यमथी जो केवलज्ञान थाय तो शुलीभद्र प्रमुख मुनि महाराजे तप संजमनो घणो उद्यम कर्यो हतो ते छतां केवलज्ञान न पाम्या तेनुं शुं कारण? पांचमुं भवीतव्यतानो जोग मलवो जोइए. शुलीभद्रने हजी कर्म भोगववां बाकी हतां तेथी मोक्षे गया नहि. कर्मनी स्थितिछ जे जे मुनिनी परिपक्व थाय छे ते ते मुनिउद्यम करवाथी केवलज्ञान पामी सिद्ध सुखने पामे छे. वली पण पामशे. माटे पांचे कारण मलवाथी मोक्षरुप कार्य थशे. आ अधिकार प्रकरणरत्नाकर भाग १ लाना पाने १७६ मे छे त्यांथी जोई लेवो. वली विनयविजयजी महाराजे स्याद्वादनुं स्तवन रच्युं छे तेमां

पण विस्तारे कह्युं छे. ते त्यांथी जोई लेवुं. आ पांच कारणमांथी एक एक कारणनी मुख्यता लई जुदा जुदा मतो नीकळ्या छे, तेमांथी आत्मार्थीए जोवुं के आ पांचेना मेळापथी जेवुं थाय छे तेवुं एक एक कारणथी थतुं नथी. केटलाएक उद्यमनी महत्त्वता गणी उद्यम करे छे, पण ज्यारे धारेलुं कार्य थतुं नथी त्यारे चित्तमां विखवाद आवे छे, पण जो कर्मनी प्रतीत होय तो तेथी कर्मनो विचार करे जे वेपार तो कर्यो पण पूर्वकृत पुण्यनी खामी छे, तेथी पेदा कर्युं नहि. हवे विकल्प करीने शुं करीश, एम विचार करी समता लावे. वळी केटलाएक एम कहे छे के भावी बनवानुं हशे तेम बनशे, एम विचार करी उद्यम करता नथी तो एवा जीवो पण प्रभुना मार्गनो लाभ लई शकता नथी; कारण के प्रभुजीए कर्म बे प्रकारनां कह्यां छे, तेमां एक उपक्रमी अने बीजुं निरुपक्रमी. हवे जे निरुपक्रमी कर्म छे तेमां तो उपक्रम लागवानुं नथी, पण उपक्रमी कर्ममां उद्यमथी उपक्रम लागे छे, ने तेथी कर्म नाश पामे छे; कारण के क्षायक समकित जे वखत पामे छे त्यारे एक कोडाकोडी सागरोपममां पल्योपमनो असंख्यातमो भाग ओछो एटली स्थिति साते कर्मनी रहे छे. हवे जो बीजा भवनुं आयुष्य बांध्युं नथी, तो तेज भवमां मुक्ति पामशे, त्यारे आयुष्य तो क्रोड पूर्वथी अधिक कोइ पण मोक्षगामीनुं नथी तो ए कर्म क्यां भोगवशे. अर्थात् भोगवशे नही ? ज्ञान दर्शन चारित्रना आराधनरुप उद्यमे ए कर्मनी स्थिति घटाडी कर्म थोडा काळमां भोगवी लेशे वास्ते ए सर्वे उद्यमथी बने छे, माटे भावी उपर बेशी रहेवुं ते जोग्य नथी. जे जे कार्य करवुं होय तेमां उद्यम तो करवो, तेमां पण उद्यम करतां कार्य न थयुं त्यारे विचारवुं जे आ कार्यमां अंतराय कर्म जोर मारे छे, ते कारणनी खामी पडी तेथी मारुं कार्य थयुं नहि, एम विचारथी समभावमां रहेवुं तेथी चित्त

प्रसन्न रहेशे. नवां कर्म नहि बंधाय माटे जे जे कार्य करवुं होय तेमां पांच कारणमांथी जे जे कारणनी खामी होय, त्यां सुधी कार्य थशे नहि. एम विचारी न थएलानो संताप करवो नहि. कोइ वखत उद्यम कर्यो पण खामी ज्ञरेलो कर्यो तो तेथी पण कार्य थाय नहि. तो फरी उद्यम करवो. आ विषे एम समजवुं के जे जे वखत जे करवा योग्य होय ते करवुं. आ मुजबनां पांच कारणना जोगथी कार्य थाय, एम जैन आगमनुं कहेवुं छे, तेज अमने मनोवांछितने पूरनार छे.

प्र. १५. (ब) जैन आगमनी मर्यादा मने पण बहु सारी लागे छे. आ पांच कारणना संजोगथी कार्य थाय एमां कांई शंका रहेती नथी, पण तमोए जीवनुं स्वरुप बताव्युं ते जोतां अनंत ज्ञानादि शक्ति रही तो ते प्रगट शी रीते करवी ?

उ. अढार दूषण ज्यां सुधी जीवमां छे त्यां सुधी जीवनी जे जे आत्मशक्ति छे, ते प्रगट थती नथी. ते अढार दूषणनां नामः- दानांतराय, लाभांतराय, भोगांतराय, उपभोगांतराय, वीर्यांतराय, हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दुगंछा, काम, अज्ञान, मिथ्यात्व, निद्रा, अव्रत, राग, द्वेष. आ अढार प्रकारना अवगुण टाली, नांखे त्यारे आत्माने गुण प्रगट थाय, अने जन्म मरणना फेरा टले.

प्र. १६. दानांतराय ते शुं ?

उ. दान एटले आपवुं ते. संसारमां दान पांच प्रकारनां छे ते-अभयदान, सुपात्रदान, अनुकंपादान, कीर्तिदान, उचितदान, आ पांच प्रकारनां दान छे तेनो अंतराय होय त्यां सुधी जीव दान दई शकतो नथी.

सुपात्रदान ते तीर्थंकर महाराज, सामान्य केवलज्ञानी, आचार्य, उपाध्याय, साधु मुनिराज, तथा उत्तम श्रावक, सम्यग् दृष्टी, मार्गानुसारी आ सरवे सुपात्र छे. एवा पुरुषोनो जोग बने

अने पोतानी पासे जोगवाई पण होय एवा पुरुषोने आपवामां लाज्ञ पण जाणतो होय तोपण दान अंतराये करी आपी शके नहि. अने दान अंतराय कर्मनो क्षयोपशम थयो होय, तो आपी शके. अज्ञय दान ते कोई जीवने मारी नांखतो होय तो तेने बचावे. ते जीवने बचावतां पोताने कष्ट वेठवुं पमे तो वेठे पण ते जीवने बचावे. वली जे पुरुषोने विशेष दान अंतरायनो क्षयोपशम थयो होय, तेतो पोताना खावा पीवा सारु पण कोई जीवनी हिंसा थवा देता नथी. पोते कष्ट सहन करे. अचित्त (जीव रहित) वस्तु मखे तेज ले. नहीं मले तो पण जीवनी हिंसा थाय तेवुं ले नहि. पोतानुं मरण थाय ते कबुल करे पण कोई जीवने छुःख थाय एम करे नहि. एवा पुरुषो तो कोई पण कारणे कोई पण जीवने छुःख थाय तेम करे नहि. कारण के जेम मने कांइपण पीमा थाय वे तो छुःख थाय वे. तेम बीजा जीवने पण छुःख थाय माटे कोईने छुःख थाय ते मारे करवुं नहि. आवी रीते वर्तवाथी अज्ञयदान थाय.

अनुकंपादान ते कोई जीव छुःखी होय ने पोतानी पासे वस्तु होय तो ते आपीने तेने सुखी करवो. पछी थोमी जोगवाई होय तो थोमुं आपवुं. वधारे जोगवाई होय तो वधारे आपे. शरीरनी महेनतथी छुःख टलतुं होय तो महेनत करीने तेनुं छुःख टाले. एमां पात्र अपात्रनो विचार वे नहि. फक्त छुःखी जीवनुं छुःख ज्ञांगवानी बुद्धि वे. वली जेने ज्ञाननी शक्ति वे तेमणे अधर्मी जीवने ज्ञाननो बोध करवो. ते पण अनुकंपादान वे. औषधादिक होय ते आपीने सुखी करवो. जेम बीजो जीव सुखी थाय एवी बुद्धिए करवुं, ते अनुकंपा दान जाणवुं. एनो अंतराय होय तो ए दान खरी जोगवाइए करी शके नहि, अने ए अंतरायनो क्षयोपशम थयो होय तो ए दान दई शके. आ त्रण

दान आत्माने हित कर्त्ता छे. चोथुं कीर्तिदान ते पोतानी कीर्ति थाय ते सारु आपवुं. बीजुं शासननी कीर्ति सारु आपवुं. एटले जैनी लोक शुं दानेश्वरी छे! शुं उदार दीलना छे! धन्य छे जैन धर्मने, एम धर्मनी प्रशंशाने सारु आपवुं ते एक सम्यक्त्वनो प्रभाविक गुण छे ए पण अंतराय कर्मनां आवरण खश्यां होय तो बने छे. पांचमुं उचित दान. संसारी कुटंबादिकने उचित प्रमाणे आपवुं ते. ए पण अंतराय होय तो उचित साचवी शके नहि. ए रीते पांच प्रकारनां दान छे. तेमां पाछलां बे दानथी आ लोकने विषे जश कीर्ति थाय छे. नीति जलवाय छे. माता पिता प्रमुख उपकारी छे. तेमना उपकारनो बदलो वले छे जे उचितमां नथी समजतो ते पापनो भागी थाय छे. वली पहेलां त्रण दान छे ते आत्माने हितकारक छे. ते ज्यारे दानांतराय तुट्यो होय तोज गुणवंतने गुणवंत जाणी आपवानो विचार थाय.त्यारे जेटलो जेटलो दानांतराय तुट्यो एटलो आत्मा विशुद्ध थाय. इहां कोईने शंका थशे जे मुनि महाराजो विगेरे शुं दान दे छे ? ते विषे समजवुंजे ज्ञानदान जेवुं जगतमां बीजुं कोई दान नथी. माटे मुनि महाराजो भव्य जीवने ज्ञान भणावे छे. ज्ञाननो उपदेश दे छे, तेथी ते जीवो अकार्य एटले नहि करवा जोग कामथी मुक्त थाय छे, अने पापनां काम करता नथी. एथी दुर्गतिनां दुःख भोगववां पडतां नथी. अने सद्गति जे देव लोक प्रमुख तेना सुखनीप्राप्ति थाय छे. तो ए सुखना आपनार ए गुरु महाराज छे तो कोईथी न अपाय एटलुं दान आप्युं. केटलाएक तीर्थंकर महाराजनो उपदेश सांभली संपूर्ण तीर्थंकर महाराजनी आज्ञा शिरपर चढावी सर्वथा राग द्वेषथी मुक्त थाय छे. केवल पोताना आत्म धर्ममांज वर्ते छे. तेथी केवलज्ञान पामी मुक्तिमां जाय छे त्यां सदा स्थिरपणे रहे छे, फरी संसारमां आ-

चवुं नथी. जन्म मरणनुं दुःख टली जाय छे. सर्व प्रकारना विकल्पो टली जाय छे. पूर्ण आत्माना गुण प्रगट थाय. बाधा कोई प्रकारनी नथी एवुं अव्याबाध सुख प्राप्त थाय छे. तो ए आपनार तीर्थंकर महाराज छे. एज दानांतराय क्षय थवाथी आत्मामां अनंत दान शक्ति प्रगट थई छे. तेथी ज्ञाननुं दान देई जगत्ने भव दुःखथी मुकावे छे. जे कांई करी न शके एवुं अद्भूत ज्ञानदान छे. वली गृहस्थपणामां हता त्यारे रोज एक वरस दिवस सुधी एक करोड ने आठ लाख सोनईआनुं दान दीधुं एवा दानेश्वरी जगत्मां कोई नथी. ए दानांतरायना क्षयोपशमनुं फल छे. वली ज्यारे केवलज्ञान थाय छे त्यारे सर्वथा दानांतराय क्षय थाय छे तेना प्रभावे ज्ञान दान छे ए व्यवहारमां, ने निश्चयमां पोताना आत्माना गुण अवराई गया हता, ने बहिरात्म दशा थई हती ते टली पोताना गुण पोताना आत्मामां आव्या ते रूपदान गुण प्रगट थयो छे ने सदाकाल अवस्थित छे, ने ते गुण सिद्ध भगवान् थाय छे त्यारे कायम रहे छे. ए जीव पोतानी आत्मसत्ताने ध्यावतां ते वर्तना करवाथी दानांतराय क्षय थाय.

प्र. १७. दानांतराय शाथी बंधाय छे ?

उ. दान हरकोइ पांचे प्रकारमांथी करतुं होय, तेने कहे जे ए दान आपवुं ते करतां पेटे खावुं ठीक छे ते गंडी लोकोने आपवामां शुं फायदो छे. वा गुणवंत होय तेने निर्गुणी ठरावी आपे नहि. वली आपता होय तेने ना कहे तेनी निंदा करे तेने कहे जे आतो भुंडाव छे कांइ पैसा खरचवानो विचार करतो नथी. वा पोते शक्तिवान होय ने दान आपनारनो महिमा थाय ते जोईने तेना उपर रोष करे, पोताथी बने तो तेनुं बिगाडे, तेनी हीलना करे, वली कदापि दान आपे तो तेनो अहंकार करे, म्हारा जेवो ज-

गतूमा कोण दान देनार छे. में धर्मनां काम कोई न करी शके तेवां कर्यां. ए आदे अनेक प्रकारना कारणोथी जीव दानांतराय कर्म बांधे छे, अने जे आत्मार्थी छे ते तो विचार करे छे जे ज्ञगवाने वरशीदान दीधुं ने में शुं कर्युं? म्हारा आत्मानो तो दान गुण अवराई गयो छे ते प्रगट करवो जोईए. अनंत दान देवानी आत्मानी शक्ति ते तो कांईपण प्रगट करी नथी. फक्त पुन्य उदयेथी धन मळ्युं छे; ते पण जेटलुं म्हारा ज्ञोगववामां वापरुं बुं तेटलुं दानमां वापरतो नथी. तो हुं शुं अहंकार करुं. पूर्वेना मोटा पुरुषो मूलदेव जेवा के जेने त्रण दिवस थयां अन्न मळ्युं नथी. त्यारबाद अरूद मळ्या तो पण मनमां आव्युं के कोई सुपात्र मुनि मले तो तेमने आपीने खाऊं. एम वीचार करे छे एटलामां ज्ञाग्यशालीने मासखमणना पारणावाला मुनि मळ्या. तेमने अरूदना बाकला आपी दीधा. जेहना दान गुणना महिमाथी आकाशे वाणी थई. दान प्रशंस्युं, ने सातमे दिवसे राज मलशे एम देवताए कह्युं ने तेमज मळ्युं. तो हे चेतन तें तो छती वस्तुए पण एवुं दान दीधुं नहीं तो शुं अहंकार करे छे. पूर्वना एवा गुणवंत पुरुषो पोतानुं धन अने शरीर बंने गुरुने अर्पण करे छे; ते पण तें कर्युं नथी. तो तुं शुं अहंकार करे छे. देवनी ज्ञक्तिमां खामी न पमे ते सारुं रावणे पोतानी नस काढीने वीणाए बांधी गायन जारी राख्युं. तो एवी तें ज्ञगवंतनी ज्ञक्ति करी वा द्रव्य वापर्युं वा शरीर वापर्युं के तुं अहंकार करे छे? पूर्व पुरुषोए अज्ञयदान सारु कोई जीव मरतो होय तो ते बचाववाने पोतानी दोलतो आपो छे ते तें आपी? के अहंकार करे छे? शांतीनाथ महाराजे तीर्थंकरनाम कर्म बांध्युं. ते जीवे कबुतर उगारवा सारु पोताना शरीरनुं मांस कापीने आपवा मांड्युं. जुओ दानेश्वरोपणुं! तें एवुं तो अज्ञयदान नथी कर्युं.

के अहंकार करे छे ? सर्व जीवने अभयदान थाय ते सारु चक्रवर्तिनी रिद्धि छोडीने संजम लीधुं. तो चेतन तें शुं कर्युं के अहंकार करे छे सगराम सोनीए सोनाना अक्षरे ज्ञान लखाव्युं तेमांनुं में शुं कर्युं. के अहंकार करुं. वली कुमारपाले ज्ञान लखाववाने तारुपत्र नहीं हतां तेथी कागल उपर पुस्तक लखता जोई हेमचंद्र आचार्य महाराजने कह्युं जे केम कागल उपर पुस्तक लखावो छो? त्यारे आचार्य महाराजे फरमाव्युं जे हाल तारुपत्रनी खोट छे. तेज वखत पोते निश्चय कर्यो जे ज्यारे तारुपत्र पुरां करुं त्यारे अन्न पाणी लउं. ते वखत प्रधाने कह्युं के तारुपत्र दूर देशथी आवे छे. माटे ए नियम केम पुरो थशे. तो पण पोते कह्युं जे एतो अभिग्रह लीधो. गमे तेम थाय तो पण तारुपत्र पुरां कर्यां विना अन्न पाणी लउं नहि. पछी एमना उग्र अभिग्रहना प्रभावथी पोताना बागमां खरुतारु हता ते असल तारु थई गया. ने अभिग्रह पुरो थयो. तो चेतन तें ज्ञान केटलां लखाव्यां? केटला आवा अभिग्रह लीधा के ज्ञानमां कांई अल्प खरच करी अहंकार करे छे. तें साधर्मीनी शुं वच्छलता करी? कुमारपाले स्वधर्मीने राज्यमां रोजगारे दाखल कर्या. एवा तें शुं उपकार कर्या के अहंकार करे छे. संप्रती राजाए सवाक्रोड जिनबिंब भराव्यां. तेमांनुं तें शुं कर्युं? के अहंकार करे छे. धनाजीए ठेर ठेर धन मेलव्युं. ने ते पोताना भाईने आपी परदेश चाली नीकल्या तें एवुं कुटुंबनुं रखोपुं शुं कर्युं के अहंकार करे छे. विक्रम राजाए तथा भोजराजाए एक एक श्लोकना लाखो रुपीया दानमां आप्या. तेमां तें शुं कर्युं? सिद्धसेन दिवाकरजी महाराजे चार श्लोक कह्या तेमां विक्रमे चारे दिशानुं राज्य आप्युं.हवे विचार एवुं तें शुं दान दीधुं? के अहंकार करे छे. आवी सुंदर भावना भावीने दान दई अहंकार न करतां दान आपवानी बीजाने प्रे-

रणा करे छे कोई दान करे छे, तेनी प्रशंसा करे छे, दानना अति-
शय व्यसनी थाय छे, पोताने पहेरवानुं वस्त्र सरखुं पण आपी
देई पोते दुःख भोगवे छे, एवा दानना उत्कृष्टा भाव जेम जेम
थाय छे, तेम तेम दानांतराय तूटे छे. दातारनी सोबत करवी
दानना फलनां शास्त्र सांभलवां, विषयनी लालसा गंधवी, वि-
षयनी लालसावालो तो विचारे छे के हुं दान दईश तो पछी हुं
शुं खाईश. एम पुद्गल सुखमां मग्न थवाथी दान दई शकतो नथी.
ने दानांतराय बांधे छे, अने जेइने दानांतराय तूटवानो छे. ते तो
विचारे छे के हे आत्मा तारो स्वभाव ज्ञानदर्शन चारित्र गुणमां
रहेवानो छे. आ शरीर ते तुं नहि, शरीर कर्म संजोगे मळ्युं छे,
तो एने पुष्ट करवाथी नवां कर्म बंधाशे. जे जे विषय भोगवीश
तेथी कर्म बंधाशे. ने आ धनादिक पुन्य उदयथी मळ्युं छे तो पण
ए द्रव्यनी ममता करीश तो कर्म बंधाशे. ने तारो आत्मा
अवराशे. माटे ए द्रव्यनुं दान करीश तो जे द्रव्यवडे विषय
भोगवी कर्म बंधाय, ते नहीं बंधाय. माटे आ द्रव्य जेम बने तेम
सुपात्रमां वापरवुं. आवी भावना भावे छे. वली भावे छे के
तादृश आत्माना गुण प्रगट करी आत्माने आपवा ते दान गुण
छे ने ए धनादिकनी ममता छे. तेनो त्याग थाय तो जेटली जेट-
ली ममता तादृशी त्याग थई एटलो आत्मा निर्मल थयो ने तें तादृश
आत्माना गुण आत्माने प्रगट करी आप्या. एज स्वाभाविक दान
गुण प्रगट्यो. आवा विशुद्ध भावथी दानांतराय तूटे छे. एम अ-
नुक्रमे सर्वथा तूटे छे.

प्र. १८. लाभांतराय ते शुं ?

उ. जे जे लाभ थवाना ते लाभांतराय तूटवाथी थवाना
छे. हवे ते लाभ बे प्रकारना. एक संसारी लाभ ने एक आत्मीक
लाभ. ए बंनेमां अंतराय कर्म पीडे छे. प्रथम संसारी लाभ ते

शरीर निरोगी मलवुं. स्त्री, पुत्र परिवार मलवो, धन मलवुं, अनुकुल माणस नोकरो मलवा, ने जे जे वखत जे जे इच्छा थाय ते मलवुं. विद्याकला शीखवी ए बधो लाभांतराय कर्मनो क्षयोपशम थयो होय तो मले तेमां थोम्मो क्षयोपशम थयो होय तो थोमुं मले. विशेष थयो होय तो विशेष मले. अने जे जे वस्तुनो अंतराय होय ते ते लाभ मली शके नहि. उत्तम पुरुषोए ए कर्मनुं स्वरूप जाण्युं छे. तेथी ए वस्तु नथी मलती तेनो संताप करता नथी. मनमां क्लेश जेहने आवे छे ते पण विचारे छे. के पूर्वे लाभांतराय कर्म बांध्युं छे. तेथी नथी मलतुं. पूर्वे कर्म बांधती वखत विचार कर्यो नहि. ने हवे संताप करे छे. ते शुं कामनो. आम विचारथी संतोषमां रहे छे. तेथी लाभांतराय कर्मनी निर्जरा करे छे. विशेष उत्तम पुरुषने तो विचारवुं पण नथी पमतुं. सहेजे समभावमांज रहे छे. जे थाय ते जाणवानो आत्मानो धर्म छे. तेमां रही जाणी ले छे पण विकल्पो करता नथी. अज्ञानी जीवो छे ते लाभ नथी मलतो, त्यारे पारकाना दोष काढे छे. केटलाएक देवने दोष आपे छे. अहो देव तें आ शुं कर्युं ? में ताहरुं शुं बगाम्युं हतुं वली सामा माणस साथे लमे, चीमई जाय. वैदनी साथे काम पाम्युं होय ने सारुं थवानो लाभ न मल्यो तो तेना उपर द्वेष करे छे. एमज लाभ मलवाथी फुलई जाय छे अहंकार करे छे हुं केवो धनवान छुं. हुं केवो हुंशीयार छुं के जे व्यापार करुं छुं तेमां पेदाशज करुं छुं. खोट जायज नहि. लाभज मले. राजा होय तो राजनो लाभ मल्यानो वा राजमां न्याजबी पेदाश थाय वा गेरवाजबी रीते लोक उपर जूलम करी पैसा लइ लाभ मेलवी तेनो अहंकार करे. वली कारभारी होय ते लोको पासे लांच लई लाभ मेलवी तेनो अहंकार करे, वा लोक उपर जूलम करे. राजा खुशी थई मान

आपे, इनाम आपे अथवा रावबहादुर प्रमुखना इलकाब आपे ते लाभ मेलवी अहंकार करे, जे अनीतिए चाल्यो तेनी पोतानी प्रशंसा करे. लुच्चाई करी मनमां विचारे, केम केवी तदबीर करी कोईना जाणवामां न आव्युं. ने में महारो लाभ मेलवी लीधो. एवा अनेक प्रकारना अहंकार करे. वली कोईनुं खरुं देवुं होय ते खोटी रसीदो बनावी सरकारमां पसार करी तेनुं लहेणुं खोटुं करी मनमां लाभ मळ्याथी खुशी थाय. आवी खोटी वर्तना करवाथी जीव लाभांतराय कर्म बांधे छे. तेथी पाछो लाभ मलवो मुश्केल पडे. आत्मीक लाभ ते पूर्णतो त्यारे प्राप्त थशे के ज्यारे सर्व कर्म क्षय करी आत्मानुं अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, अनंत वीर्य, अव्याबाध सुख, अक्षय पदनुं, अजरा, अमरण, अजन्म, अगम, अगोचर, अगुरु लघु, आदे अनंता गुण प्रगट करे त्यारे आत्माने लाभ प्राप्त थयो. ते सर्वथा प्रकारे बारमे गुण स्थाने सत्ताबंध उदयथी ए कर्म खपी जाय त्यारे थाय छे. हवे अंशे अंशे तो चोथा सम्यक्त्व गुण स्थानथी प्रगट थाय छे. जेटलो आत्मानो गुण प्राप्त थयो एटलो लाभ थयो एहवा गुणस्थानना गुण प्राप्त करवाना कारणरूप प्रवृति थवाथी पण लाभ थाय छे. ते लाभ पण लाभांतराय तूटवाथी थाय छे. हवे ते शुं शुं थाय. ते दान, शील, तप, भाव. हवे ए चारे वस्तु प्राप्त थवा रूप लाभ लाभांतराय तूटवाथी थाय छे.

प्र. १९. दान ते शुं?

उ. दानांतरायना स्वरूपमां कह्युं छे ते मुजब दान करी शके, तो दान गुण प्रगट थयो तेज आत्माने लाभ थयो. तेमां जे जे अंशे गुण करी शके एटलो लाभ प्राप्त थयो समजवो.

प्र. २०. शील ते शुं?

उ. शील केहेतां आचार ते पांच प्रकारनो छे तेमां प्रथम

ज्ञानाचार, ते ज्ञानाचार संपूर्ण तो अनंत ज्ञान प्रगटे त्यारे ते रूप लाभ मलशे.अने तेना कारण रूप मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान ए चार प्रगट थाय. त्यारे चारनो लाभ थयो. तेटलो लाभांतराय नथी तूटयो तो मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान प्राप्त थाय छे. अथवा मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, मनःपर्यवज्ञान थाय छे. तेवा पण लाभांतराय कर्म, नथी क्षय थयां ने थोडो क्षयोपशम थयो छे तो मतिज्ञान, श्रुतज्ञान बेज प्रगटे छे. तेटलो लाभ थयो.अने तेनी साथे समकितनो पण लाभ थाय. कारण जे समकित विनां मति श्रुत अज्ञान कह्यां छे. तेथी पण कर्मी क्षयोपशम थयो होय तो समकित रहित ज्ञान ते रूप लाभ थाय. तेथी बुद्धिमां कुशल होय, संसारी काममां हुंशीयार थाय पण आत्मीक ज्ञान न थाय. आत्माना कल्याणरूप ज्ञान तो सम्यक्त्वज्ञान छे ते काम लागे. सम्यक्त्वज्ञानरूप लाभ थाय. ते ज्ञान कोईने द्वादशांगरूप ज्ञान थाय छे; तेटलो लाभांतराय तुटे तो मुक्तिने घणा नजीक थाय. कोईने चौद पूर्वनुं ज्ञान थाय. ते चउद पूर्वनां नाम १ उत्पाद पूर्व, जेमां द्रव्यना पर्यायना उत्पादनुं स्वरूप छे. २ अग्रायणी पूर्व जेमां सर्व द्रव्य सर्व पर्यायनुं परिमाण दर्शाव्युं छे. ३ वीर्य प्रवाद पूर्व. तेमां कर्म सहित जीवना, कर्म रहित जीवना तथा अजीवना वीर्य एटले शक्ति तेनुं विस्तारे स्वरूप छे ४ अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व. ते मध्ये धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, काल ए छए द्रव्य स्वस्वरूपे अस्ति पर स्वरूपे नास्ति आदे वर्णन छे.५ ज्ञान प्रवाद पूर्व, जेमां पांच ज्ञाननुं विस्तारे वर्णन छे. ६ सत्य प्रवाद पूर्व. तेहमां सत्य संजम वचन ए त्रण वस्तुनुं विशेष स्वरूप दर्शाव्युं छे. ७ आत्म प्रवाद पूर्व तेहमां आत्माजीव तेनुं अनेक-नय मत भेदे करीने वर्णव्युं छे. ८ कर्म प्रवाद पूर्व, तेहमां आठ

कर्म जे ज्ञानावर्णी, दर्शनावर्णी, वेदनी, मोहनी, आयु, नाम कर्म, गोत्र कर्म, अंतराय कर्म ए आठे कर्मनी प्रकृति बंध, स्थिति बंध, रस बंध, प्रदेश बंध. ए चारे प्रकारना बंधनुं स्वरूप अतिशय करी दर्शाव्युं छे. ए प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व, त्याग जोग्य वस्तुनुं तथा त्यागनुं स्वरूप कथन छे. १० विद्या प्रवाद पूर्व. तेहमां अनेक आश्चर्यकारी विद्यानुं स्वरूप छे. ११ पूर्वनुना कल्या पूर्व छे पाठांतर अवंध्य पूर्व. एटले फल वांझीयुं नथी. ज्ञान तप संजमादिकनुं शुभ फल. प्रमादादिकनुं अशुभ फल एवा शुभाशुभ फल बताव्यां छे. १२ प्राणायु पूर्व, तेमां दशप्राण जे पांचइंद्रि, त्रण बल, श्वासोश्वास अने आयु ए प्राणनुं वर्णन छे. १३ क्रिया विशाल पूर्व, तेमां कायकी आदे क्रियानुं स्वरूप संजमक्रिया, छंदक्रिया, विगेरेनुं वर्णन छे. १४ लोक बिंदुसार पूर्व जेहमां लोकमां अक्षरोपर बिंदुसार भूत छे. तेम सर्वोत्तम सर्व अक्षरना मेलाप लब्धिनो हेतु तेनुं वर्णन छे. ए चौद पूर्वनां नाम कह्यां. एनो विस्तार एक एक पूर्वनी पदनी संख्यानुं मान एक एक पूर्वनुं ज्ञान लखवानी शाहीमां मेश केटली जाय. ए सर्व वर्णन नंदी सूत्रनी टीकामां छपेली प्रतमां पाने ४७२ मे छे त्यांथी जाणी लेवुं. पहेलुं पूर्व लखतां एक हाथीपुर मेशनो ढगलो जोईए. पछी बमणा बमणा लेवा. ते चौदमा पूर्वमां ८१९२ हाथीपूर काजलनो ढगलो थाय. तेमां पाणी रेडी शाही करी लखे तो लखाय एटलुं चउद पूर्वनुं ज्ञान छे. पाछे तेना अर्थनो तो पार नथी. एक बीजा चउद पूर्वधर ज्ञानीना वचमां अनंतगुणी हानी वृद्धि होय छे. जे पुरुषने जेटलो लाभांतरायनो क्षयोपशम थयो होय एटला अर्थ ज्ञाननो लाभ थाय. कोइ मुनिने एटलो लाभांतराय न तूट्यो होय तो छंगं पूर्वनुं ज्ञान थाय. कोईने एक पूर्वनुं, कोईने बे पूर्वनुं, कोईने त्रण एम जावत् चउद पूर्वनुं थाय. वर्त्तमान काले पूर्वनुं ज्ञान कोईने थाय नहि. बहु ज्यारे अ-

तिशय ज्ञानी थाय तो सूत्र जे पीस्तालीश आगम तेनुं ज्ञान थाय. तेमांना अग्यार अंग हालमां छे. बारमुं अंग विछेद गयुं छे.

आचारांग सुयगडांग ठाणांग समवायांग
भगवतीजी ज्ञातासूत्र उपाशक दशांग अंतगड दशांग
अनुत्तरोववाइ प्रश्नव्याकरण विपाकसूत्र.

ए अग्यार अंग गणधर महाराजे रचेलां छे जेम श्रीमत् महावीर स्वामीए प्ररुप्यां तेम गणधर महाराजे सांभलीने गुंथ्यां एटले गाथारूप बनाव्यां. पण त्यारबाद बार दुकाली घणी वखत पडी तेमां दरेक अंगमांथी घणो भाग विछेद गयो. ने जे थोडो भाग रह्यो ते देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण महाराजे लखाव्यो. तेथी नंदीजी समवायांगजीमां जेटली संख्या पदनी कही छे तेटली रही नथी. एक पदमां ५१०८८६८४० श्लोक होय ए एक श्लोकना अठावीश अक्षर कह्या छे. ए अधिकार सेन प्रश्नमां पाना ३२ मे छे तेमां अनुजोगद्वारनी टीकानी साख आपी छे तिहांथी जोई लेवुं. उपांग १२ (बार) तेनां नाम १ उवाईसूत्र. २ रायपशेणीसूत्र. ३ जीवाभिगमसूत्र. ४ पन्नवणासूत्र. ५ सुरपन्नतीसूत्र. ६ जंबुद्विपपन्नतीसूत्र. ७ चंदपन्नतीसूत्र नीरीयावलीसूत्रमां पाचते. ८ कप्पीया. ९ कप्पवडंसीयासूत्र. १० पुप्फीआसूत्र. ११ पुप्फचुलीकासूत्र. १२ वन्हीदशांगसूत्र. ए रीते बार उपांग छे.

दश पयन्ना तेनां नाम.

१ चउसरण पयन्नो. २ आउरपच्चखाण पयन्नो.
३ महापच्चखाण पयन्नो. ४ भत्तपच्चखाण पयन्नो.
५ तंदुलवीयाली पयन्नो. ६ गणीवीज्ञ पयन्नो.
७ चंदावीजय पयन्नो. ८ देविंदूस्तव पयन्नो.
९ मरणसमाधि पयन्नो. १० संस्थारक पयन्नो.

छ छेद चार मूल सूत्र वीगेरे.

१ दशाश्रुत स्कंध. २ बृहत्कल्पसूत्र.
३ व्यवहारसूत्र. ४ जीतकल्पसूत्र.
५ नीशीथसूत्र. ६ महानीशीथसूत्र. ए ६ छेद ग्रंथछे.
१ आवश्यकसूत्र. २ दशवैकालीकसूत्र.
३ उत्तराध्ययनसूत्र. ४ पींमनिर्जुगतीसूत्र.
१ नंदीसूत्र. २ अनुजोगद्वारसूत्र.

ए पीस्तालीश आगम, ए शिवाय पण केटलाएक पयन्ना प्रमुख छे. तेहनां नाम पण नंदीसूत्रमां तथा समवायांग सूत्रमां छे. परकी सूत्रमां पण छे. पण पीस्तालीशनी मुख्यता थवानुं कारण वलभीपुरे पुस्तक लखायां. तिहां एटलांज लखायां तेथी ते पीस्तालीश आगम कहेवायां. पण बीजा देशमां बीजां लखायां. ते पण हाल कालमां वर्ते छे एम दीपकवि एक चोपमीमा लखे छे. तेमांथी में पण केटलांएक जोयां छे.

रीसीभाषित सूत्र. पौरसी मंमल. वीतराग स्तव.
संलेखना सूत्र. अंगविद्या. ज्योतिष करंमक.
गछा चार. तिर्थोदगारम. उपदेशमाला.
सिद्ध पाहुम. श्रावकनुं वंदीतु. शत्रुंजय कल्पलघु.
शत्रुंजय कल्पमोटो. शत्रुंजयकल्प. भद्रबाहुस्वामीकृत गाथा२५
शत्रुंजयकल्पवेरस्वामीकृत. शरावली पयन्नो.
वशुदेवहींम. श्रावक पन्नती. अंगचुलीआ.
वंगचुलीआ. आराधना पताका.

आटलां सूत्र वर्तमानमां देखाय छे. एम दीपकवि लखे छे पण बीजा घणा देशोमां बधे कांई जोयां नथी. तो विशेष पण होय केमके नंदीसूत्रमां देवर्द्धिगणीक्षमाश्रमण महाराजे जे नाम आप्यां ते ते वखते हाजर होवां जोईए ए आगमोमांथी दश सूत्रनी निर्युक्ति भद्रबाहु स्वामी महाराजे करी छे. जे चउद पूर्व-

धर हता, एटले निर्युक्ति पण पूर्वधरनी करेली मांटे सूत्र जेवी ज माने, जेमां सूत्रनो अर्थ युक्तिए सिद्ध कर्यो छे; तथा भाष्य पूर्वधर एवा जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण महाराजजीए रची छे. तेमां निर्युक्ति करतां घणो विस्तारे अर्थ कर्यो छे. तेमज चूर्णी पण पूर्वधरे रची छे, तेमां तेथी विस्तारे अर्थ छे; तथा आ शिवाय घणा ग्रंथो तथा टीका पूर्वधर विगेरे बहुश्रुत पुरुषोना रचेला छे, ते पण आगम जेहवाज छे. एवां जैननां सर्व शास्त्रना तथा जे जे शास्त्रो बीजां दर्शनोमां रचेलां छे ते तथा व्याकरण, न्याय शास्त्र, वैदक शास्त्र, नीति शास्त्र, अष्टांग निमित्त शास्त्र, अष्टांग योगनां शास्त्र, ए सर्वे शास्त्रोनो बोध मेलवी सत्य असत्यनी परीक्षा करी, सत्यनी परीक्षा करी सत्यने अंगीकार करे तो एटलो ज्ञाननो लाभ थयो कहीए. एवा लाभवाला पुरुषो ज्ञानना आचारनो आठ प्रकारे लाभ मेलवे छे. ते काले कहेतां जे जे सूत्र जे जे काले भणवानां वांचवानां कह्यां छे तेज काले भणे, चार संध्या वर्जे, ते १सवारे सूर्य उदय थाय ते पहेली ने पछीनी अकेक घडी, एम २ मध्यान तथा ३ संध्या वखत तथा ४ मध्य रात्री ए चारे वखत बे घडी तजवी. ए वखत कोई पण सूत्र वांचे नहि. ए वखत दुष्ट देवो फरवा नीकले छे ते जैन मार्गना द्वेषी होय तो भणनारने छल करे तेथी ए वखत निषेध्य छे. विनय ते ज्ञानवंत पुरुषनुं मुख जुवे के नमस्कार करे, बेठा होय ते उभा थाय, ज्यां सुधी ज्ञानवंत पुरुष उभा रहे त्यां सुधी पोते बेसे नहीं, वली ज्ञानवंतने बेसवा आसन आपे. पछी उचित रीते वंदना प्रमुख करीने बेसे, पण गुरुथी उंचा न बेसे. तेम ज्ञानीनी आगल न बेसे, पाछा उभा थाय तो उभा थाय, चालतां पण तेमनी आगल न चाले एवी रीते जेम जेम नीतिमां उचित होय तेम तेम साचवे. तेमनुं जेम महत्त्वपणुं वधे तेम करे.

तेमनुं वचन उल्लंघन न करे. ज्ञानवंतनी जे जे रीते पोताथी बनी शके ते तन मन अने धने करीने भक्ति करे. बीजा पासे भक्ति करावे, तेमज ज्ञाननां पुस्तक तेनो पण विनय करे. पुस्तक पासे होय तो लघु नीति, वडी नीति न करे. तेम पुस्तक होय ते जगोए पण ए काम न करे; तेम स्त्री आदिकना भोगादिक न करे. तेम पुस्तकनी पासे बेसी जमवुं, पाणी पीवुं न करे. ठवट वस्त्रनो पण अंतर राखे, तेम पुस्तक उशीके मूके नहि. वली पुस्तक लखावी ज्ञाननो वधारो करे, पुस्तक होय तो तेनी संभाल करे, वली ज्ञान भणवानो उद्यम करे, पोते भणेलो होय तो बीजाने भणावे, एवी रीते विनय करे, ज्ञानवंतनुं बहुमान करे. ते बाह्यथी केवल नहि पण अंतरंग प्रेमथी मनमां विचारे जे अहो! आ पुरुषनां ज्ञाननां आवरण घणां खपी गयां छे तेथी एमनो आत्मा निर्मल थयो छे. ए पुरुष मने ज्ञान आपे छे ए ज्ञानना प्रभावे महारो आत्मा निर्मल थशे. माहारे चार गतिमां रोलावुं बंध थशे. जन्म मरणना दुःख एमना प्रभावथी मटशे, माटे आवा ज्ञानवंत पुरुषनां जेटलां बहुमान न करुं तेटलां उगं छे. जगत्ना जीवो जे उपकार करे ते पईसा आपे तो ते अल्प काल सुख थाय. शरीरने कोई शाता करे तो अल्प काल सुख थाय, अने ज्ञानी पुरुष तो ज्ञान आपे छे तेनुं सुख तो अनंतो काल पहोचशे, जेनो अंत नथी, तो एवा पुरुषनां केटलां बहुमान करुं. एवा भावथी बहुमान करे. उवहाणे केहेतां उपधान ते ज्ञान भणवा सारु नवकारादिकनां उपधान जे तप करवानो महानीशीथ सूत्रमां कह्यो छे, तथा सूत्र भणवाने जोग वहेवाना कह्या छे ते मुजब ते तपस्या करवी. जोगनी जे जे क्रियाउं छे ते करवी. हवे इहां कोईने शंका थशे जे ज्ञान भणवामां तपस्या तथा क्रिया शुं करवा करवी जोईए तेनुं समाधान पुद्-

गलभाव उपरथी मोह उतरे त्यारे तपस्या थाय, वली मोह उतरे त्यारे आत्मानी विशुद्धि थाय, ने आत्मानी विशुद्धिथी ज्ञानावरणी कर्म नाश थाय छे तेथी ज्ञान सुखे आवडे. वली क्रिया छे ते तंत्र जेवी छे तेथी सूत्रना अधिष्टायक साहाय्य करे. जेमके मल्लवादी महाराजजीने एक गाथा देवीए एवी आपी के ते गाथाथी द्वादश सार नयचक्र रच्यो, अने बौध लोको साथे जय मेलव्यो, अने सोरठ विगेरेमां ज्यां शिलादित्य राजानुं राज्य हतुं त्यांथी बौध लोकोने बाहार काढ्या. वली मुनिराजजी साहेब श्री आत्मारामजी महाराजजीने विशेषावश्यक नहि बेसतुं हतुं, तेथी पस्तावो करवा लाग्या. तेज रात्रे स्वप्नामां हेमचंद्राचार्य महाराज मल्या ने जे जे अटकतुं हतुं ते सर्व समजाई गयुं. एमज कमलगछना आचार्य महाराज वर्धमान विद्या भणावी गया. एज रीते शासनदेवतानी सहायथी ज्ञाननो लाभ थाय छे ते सारु जोगवहननी क्रिया बतावी गया छे ते अति हितकारी छे. विशेष हेतु जेम कोई शास्त्रमां कह्यो होय ते प्रमाणे जाणी लेवुं. अनीन्हवणे ते गुरुने हलववा नहि. जे ज्ञानी पासे भण्या होय तेनुं नाम पालटी बीजानुं नाम देवुं नहि, ते पांचमो आचार. व्यंजन ते अक्षर शास्त्रमां लख्यो होय तेम शुद्ध बोलवो, अशुद्ध बोलवो नहि. अर्थ ते जेवो गुरु महाराजे आप्यो होय तेवोज राखवो फेरफार करवो नहि, ते सातमो आचार, आठमो व्यंजन तथा अर्थ बंने जेम शास्त्रमां कह्या होय तेम बोलवा. एवी रीते ज्ञाननो आचार व्यवहारथी मन, वचन, कायाए करी पाले एथी विपरित वर्ते तो ज्ञानाचारमां दूषण लागे, ने ज्ञानावरणी कर्म बंधाय. तेना भयथी सावधानपणे रहे. वली बहु भण्यानो अहंकार आवे तो मनमां भावे जे हे चेतन! तुं अनंत ज्ञाननो धणी छे, जगतमां छ द्रव्य छे. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय,

आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय अने काल ए पांच द्रव्य अरूपी एटले वर्ण, गंध, रस, स्पर्श रहीत तथा छठो पुद्गलास्तिकाय ते रूपी वर्ण, गंध, रस, स्पर्श सहीत, ए छए द्रव्यमां एक एक द्रव्यना अनंता गुणपर्याय छे, ते समय समय एक एक द्रव्यमां खटगुण हानी वृद्धि थइ रही छे. ते अनंत भाग हाणी, असंख्यात भागहाणी, संख्यात भाग हाणी, संख्यात गुण हाणी, असंख्यात गुणहाणी, अनंत गुणहाणी एम खट कहेतां छ प्रकारे हाणी तथा वृद्धि थई रही छे, तेवी छए द्रव्यनी वात गया कालनी आवता कालनी अने वर्त्तमानकालनी ते सर्वे केवल ज्ञानी महाराज एक समयमां जाणी रह्या छे, तेवीज आत्मा तारी शक्ति छे पण ते ज्ञान शक्ति ज्ञानावरणी कर्मे अवराई गई छे अने तने ज्ञान थतुं नथी, तो तारुं ज्ञान जतुं रह्युं ते लघुतानुं स्थानक छे, ते छतां महत्त्वता करे छे, ए तारी हे चेतन! केवी मूर्खता छे? वली पूर्वकाले चार ज्ञानी हता तेवां ज्ञान पण तने प्रगट थयां नथी, तो ए पण तारी लघुतानुं स्थानक छे, तो तुं शुं अहंकार करे छे. पूर्वे त्रण ज्ञानी हता तेवां ज्ञान पण तने प्रगट्यां नथी तो ते तने पण लज्जानुं कारण छे, तो तुं शुं अहंकार करे छे? वली बे ज्ञानी पण चउद पूर्वधर बार अंगना जाणकार हता, तेवुं ज्ञान पण तने नथी ते छतां शी बाबतनो तुं उत्कर्ष करे छे? वली उंग ज्ञानी एक पूर्वधर हता, ते पण तने ज्ञान नथी, तो शी बाबतमां फुलाय छे? वली हालमां पण वर्त्तमानकालमां आगम, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका, ग्रंथो वीगेरे छे, अने अन्य दर्शनीयोनां शास्त्र छ तेनुं पण तने ज्ञान नथी, तो हे चेतन! शी बाबत अहंकार करे छे? वली एमांथी जुज शास्त्र तुं भण्यो छे, ते पण वधुं याद नथी. वली गुरु पासे शास्त्र सांभळ्या ते पण तने याद नथी, तो शी बाबतनी महोटाई करे छे? वली देश देशनी

भाषा तथा जूदी जूदी लिपि तेनुं पण तने ज्ञान नथी. वली स-
म्मति तत्त्वार्थ विगेरे न्यायनां शास्त्र छे, ते कोई ज्ञानी समजावे
तो ते पण समजवानी तारामां शक्ति नथी, अने अहंकार करे
छे, ते केवी अज्ञानता ? वली तुं जे जे धर्म क्रिया करे छे ते स
वेना हेतुनुं ज्ञान पण तने नथी, ते छतां तुं फोकट शुं मद करे छे?
अनेक प्रकारनी नीतिना ग्रंथो छे, अनेक प्रकारनी हिसाबनी री-
ती छे तेनुं तने ज्ञान नथी ते छतां जीव तुं अहंकार करे छे, ते
अहंकार करवा जोग छे के कर्मनी निंदा करवा जोग छे ते तुं
आत्माथी विचार कर. वली पूर्वे मुनिसुंदरसूरि महाराज जेवा
पुरुषो एक हजार ने आठ अवधान करता हता ते शक्ति पण ता-
रामां नथी. हालमां पण १०० अवधानना करनार छे, ते पण
शक्ति तारामां जागी नथी, तो शी बाबत तुं गर्व करे छे ? हाल
कालमां आत्मारामजी महाराज थई गया ते रोजना ३०० श्लो-
क मुखे करता हता अने तने तो पांच गाथा पण मोढे करवा-
नी शक्ति नथी, तो चेतन तुं बहु विचार कर ने खोटा गर्व न
कर. पूर्व पुरुषो शास्त्रमांथी उद्धरीने अनेक ग्रंथ करी गया छे ने
करे छे तो शुं एवी शक्ति तारामां छे ? तें नवा ग्रंथो केटला
रच्या के फोगट भूलथी मनमां आनंद माने छे ? वली पूर्वना
पुरुषोए सोनाना अक्षरे ज्ञान लखाव्यां तो तें शाहीना अक्षरथी पण
सर्वे शास्त्र लखाव्यां के अहंकार करे छे ? तें भणीने आत्मवि-
चारणा केटली करी ? वली बीजा जीवोने पूर्वनां शास्त्र केटलां
भणाव्यां के मदोन्मत्त थई फरे छे. ताराथी घणा पुरुषो हालमां
आत्म साधन करता थया के अहंकार करे छे? तारी लघुता थाय
एवी करणी तुं करे छे माटे फोगट तुं ज्ञानावरणी कर्म बांधे छे.
माटे एक अंशमात्र ज्ञाननो क्षयोपशम थयो तेथी मनमां
ज्ञानी बनीने बेसे छे.आवी भावना भावो आत्मज्ञानमां मग्न था-

य छे. पोताना आत्मानो ज्ञान गुण छे ते प्रगट करवाना उद्यम-मां तत्पर रहे, ते ज्ञानाचार जाणवो. एवो ज्ञानाचार पालवाथी परंपराए सर्व ज्ञान प्रगट करे छे.

दर्शनाचार—दर्शन शब्दे देखवुं ते. जे जे पदार्थ जेवी रीते होय तेवीज रीते देखवुं एटले मानवुं. शुद्ध देवनेज शुद्ध देव मानवा. शुद्ध गुरुनेज शुद्ध गुरु मानवा. शुद्ध धर्मनेज शुद्ध धर्म मानवो. शुद्ध धर्म ते आत्मानो स्वभाव, तेज धर्म. भगवतीजीमां कह्युं छे जे "वत्थु सहावो धम्मो". एटले वस्तुनो स्वभाव ते धर्म. त्यारे आत्म स्वभावमां रहेवुं तेज धर्म अने तेनी श्रद्धा करे. आत्मा शरीरमां रह्यो छे त्यां सुधी जड प्रवृत्ति करे छे, ते पोतानो धर्म जाणे नहि. आत्मानो स्वभाव अवरायो छे ते प्रगट करवानां कारणोने कारण धर्म माने. धर्मना निमित्त कारणरूप देव गुरु तेने निमित कारण माने. व्यवहारनये धर्मना कारणने धर्म कह्यो छे ते अपेक्षाए धर्म माने. जे जे देव गुरु उपकारी पुरुष छे ते पुरुषनी सेवा भक्ति शास्त्रमां कही छे ते प्रमाणे प्रवर्ते, तेनो विस्तार प्रश्नोत्तर रत्न चिंतामणिमां कह्यो छे ते मुजब करे ते दर्शननो आचार. ए आचार आठ प्रकारे छे. निसंकीय केहेतां प्रथम जे अढार दूषण कह्यां छे तेथी रहित जे देव तेमना वचनमां शंका न करे, कारण के जे देवने राजा अने रंक बे सरखा छे, कोइनो पक्षपात नथी; जेने धननी, स्त्रीनी ममता नथी, जेने मान अपमान सम छे एवा पुरुषने असत्य बोलवानी जरुर रहेती नथी, एवां लक्षण छे के नहि तेमनां चरित्र जोवाथी खात्री थाय. ते खात्री करीने ज देव मानवा. पछी तेना वचनमां शंका करवी नहि. कारण के अरूपी पदार्थ छे ते चक्षुथी निरधार थतो नथी. कोइ कदेशे के बुद्धिथी निरधार करीए, पण संपूर्ण प्रगट थइ होय तो शास्त्र जोवानी जरुर पडती नथी. बुद्धिनी कसूर छे तेथी

शास्त्र जोइ गुरुनो समागम करी बुद्धि प्राप्त करवानो उद्यम करीए छीए, माटे बुद्धिनी कसर सिद्ध थाय छे. केटलीएक बाबतो नथी समजाती ते पण बुद्धिनी कसर छे ते कसर नीकली जशे एटले यथार्थ समजाशे. संसारी काममां बुद्धि प्रगट थवी सहेल छे अने आत्मतत्त्व उलखवानी बुद्धि आववी कठण छे, माटे वीतरागना वचनमां शंका करवी नहि. निकंखा ते कुमतिनी वांछा, कुमति ते कुबुद्धि आत्माने विषे अनादिनी छे, तेना प्रभावे विषयादिकना अभिलाष थया करे छे; जे जे दुःखनां कारण छे ते सुखनां कारण भासे छे; आत्मानी स्वरिद्धि सामी दृष्टिज नथी. वली एवी कुबुद्धि वाला देव गुरुनी वांछा थाय छे ते कंखा दूषण कहीए ते जेहने टल्युं छे, तेने जरा पण कुमतिनी वांछा थती नथी.

निर्वितिगिछा ते धर्मना फलनो संशय; ते संशयथी रहित ते निर्वितिगिछा आचार जाणवो. ए आचार लाभांतराय तूटवाथी थाय छे. खरी आत्मिक वस्तुनी तथा आत्मिक वस्तु प्रगट थवाना कारणोनी चोकस खात्री थाय छे तेथी फलनो शंसय रहेतो नथी. अमूढदृष्टि ते मूढपणुं गयुं छे. मूढपणे वस्तुने अवस्तु माने, जेमके दुनीयामां वेदीआ ढोर कहेवाय छे, ते आत्मानी वातो करे पण विषय कषायमां मग्न रहे, कोइपण प्रकारे संसारथी उदास थाय नहि; देवगुरुनी भक्ति ने व्रत नियमने विषे प्रवर्ते नहि एहवी जे दशा ते मूढ दृष्टीपणुं कहीए, ते न होय. जे जे रीते प्रभुजीए जे जे अपेक्षाए धर्म बताव्यो छे ते प्रमाणे श्रद्धा करे. विषय कषाय अव्रत जेटलां जेटलां उछां थाय ते करे. जे न टले ते टालवानी वांछा बनी रही छे. एवो जे आचार ते अमूढ दृष्टि कहीए. उववूह गुण ते साधु साध्वी श्रावक श्राविका प्रमुख उत्तम पुरुषना गुणनी प्रशंसा करवी ते. थीरीकरण गुण, ते साधु साध्वी श्रावक श्राविका चतुर्विध संघरूप उत्तम पुरुष धर्मथी च-

ज्ञायमान थता होय, तेमने धर्म समजावीने स्थीर करवा. तन, मन ने धन ए त्रणे प्रकारथी जे जे रीतनी एवा पुरुषने हरकत होय ते ते हरकत दूर करी स्थिर करवा ते स्थिरीकरण गुण. वत्सलता ते सरखा धर्मी, पोताथी गुणे अधिक वा उंचा पण गुणवाला होय तेनी, जेवी जेवी शक्ति होय ते शक्ति प्रमाणे आहार पाणी वस्त्र आभूषणादिके करी सेवा करवी. ज्ञान, दर्शन, चारित्र जेम वृद्धि पामे एवा प्रकारे भक्ति करवी ते वत्सलता गुण. प्रभावना गुण ते जिन शासननी बहुमानता बीजा लोक करे, अने वली ते कृत्य जोइ बीजा जीवो धर्म पामे, जेम के प्रभुना मंदीरमां उत्सव आदिक करवे करी, तथा तीर्थ जात्राए धनवान पुरुषो होय ते संघ काढीने जाय, अने संघनुं रस्तामां रक्षण करे, जेम संघना माणसो निर्विघ्नपणे पोतानो आत्मिक धर्म साधी शके एवी धर्मनी साहाय्य करे, जैनधर्म जेम दीपे एम करे. वली महंत पुरुषो आठ प्रकारे प्रभुनुं शासन शोभावे छे. प्रथम प्रवचनी ते प्रवचन जे आगम, प्रभुनां प्ररूपेलां अंग, उपांग, छेद, आदिक सूत्र, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका ए सर्व शास्त्र वर्तमानकालमां वर्ततां होय ते सर्वे स्वसमय कहीए, अने परसमय ते खटे दर्शनना शास्त्र तेना पारगामी होय तेना प्रभावे जे शास्त्रनुं जेने समजवुं होय ते समजावी शके, जे जे शास्त्रनो अर्थ पूछे तो ते बतावी शके, तेथी घणी जैन शासननी प्रशंसा थाय. बीजो प्रभावक धर्म कथी ते धर्मोपदेश देवामां अतिशय कुशल होय, जेना मुखमांथी वचन एवां नीकले के सांभलनारने तेमना वचनमां शंका पडे नहि. सांभलनारनुं मन संसारथी उदास थाय अने पोतानुं आत्मतत्त्व प्रगट करवा तत्पर थाय, मोहनी आधीनता अनादि कालनी छुटी जाय, मिथ्या हठवाद रहे नहि, संसारी सुख तो दुःख जेवां लागे, आत्मिक

सुख तेज सुख माने. ज्ञान, दर्शन, चारित्र, गुण आत्मानो ते प्रगट करवानां काम थाय, विषयादीकना अभीलाष शांत थइ जाय, कामभोगनी वांछाउनो नाश थाय, कुबुद्धि कुशास्त्रनी बुद्धि टली जाय, एवा उपदेशक पुरुष उपदेश करीने शासनने शोभावे. त्रीजो वादी प्रभाविक ते जे जे खोटा मतवादी वाद करवा आवे, अनेक प्रकारना कुतर्को करे तेहना जवाब एवा आपे के कुतर्कों नाश थाय; जेमके मल्लवादीजी महाराजे बौद्ध साथे वाद कर्यो तेमां बौद्धवालाथी जवाब न देवायो तेनी फिकरमां ते बिचारो मरण पाम्यो. एवा वाद करवानी कुशलताथी जिन शासन शोभे. चोथो नैमित्तिकि ते निमित्त शास्त्र जे ज्योतिष शास्त्र तेनो पारगामी होय तेथी जे जे निमित्त कहे ते सत्य थाय; जेम भद्रबाहु स्वामीए राजाने कह्युं के सातमे दीवसे तमारो पुत्र मरण पामशे, तेज प्रमाणे थयुं अने वराहमिहिरे सो वर्षनुं आउखुं कह्युं हतुं ते खोटुं थयुं. एवा भद्रबाहु स्वामी जेवा निमित्त शास्त्रना जाण ते एवी शासननी प्रभावनाने अर्थे निमित्त प्ररूपी शासननी प्रभावना करे. पांचमो तपस्वी ते अहंकार ममकार रहित शांत स्वभावी आकरी तपस्याउ करे, पोताना आत्मानो अणाहारी गुण प्रगट करवाने मोटी मोटी तपस्याउ करे तेने जोइने बीजा पुरुषने तपस्या करवानी बुद्धि जागे. तपस्यानुं अजीर्ण क्रोध जगतमां कहेवाय छे ते जेनामां नथी, शांत रसनो समुद्र छे, तेने जोइने घणा लोक प्रशंसा करे, ते तपस्वी नामा प्रभाविक कहिये. छठो विद्याप्रभाविक ते जेम वज्र स्वामी महाराजे विद्याना प्रभावे श्री देवीना भुवन वगेरेथी फुल लाव्या, जेथी बौद्ध धर्मनो राजा चमत्कार पाम्यो ने जैन धर्म अंगीकार कर्यो. एवी रीते शासननी शोभा करे ते विद्याप्रभाविक. सातमो अंजनसिद्धि प्रभाविक जेम कालीकाचार्य म-

इराजे अंजन योगथी आखो इंटोनो पजावो चुरण नाखी सुवर्णनो बनावी दीधो, अने गर्धभील्ल राजाने जीती पोतानी बेन सरस्वतीने गेमावी. एहवां शासननां काम करी शासन शोभावे. आठमो नवां काव्य वगेरे रचवामां कुशल ते कविनामे प्रभाविक; जेम सिद्धसेन दिवाकर माहाराजे वीक्रमराजा आगल नवां काव्य रचीने चार दीशाए चार काव्य कह्यां ते एकेक काव्य कहेतां एकेक दिशिनुं राज आव्युं, एम चार दीशानुं राज आव्युं पण एतो निस्पृही पुरुष ठे ते राज्य लीधुं नहि, पण एवी कुशलताथी शासननी प्रभावना थाय, घणा जीवो धर्म पामे अने पोतानुं आत्म तत्त्व साधे तेथी उपकार थाय. एवी रीते आठे प्रकारे शासननी प्रभावना निस्पृहीपणे करे, कोइ प्रकारे कंइपण वांबा राखी करे नहि, ते प्रभाविक गुण कहीये. ए आठ प्रकारे दर्शननो आचार पामे, ते लाभांतराय टुटवाथी थाय ठे, अने जेने दर्शननो लाभांतराय होय तेने ए आचारथी विपरीत वर्तना होय. देवगुरु धर्मनी निंदा करे, धर्ममां कुतर्क करी शंका करे खोटा मत सारा लागे, लोकोने खोटा धर्ममयी बुद्धि करे, जिनराजनी भक्ति करी तेनो अहंकार करे जे हुं विधि युक्त भक्ति करुं बुं. हुं जिन भक्तिमां धन वापरुं बुं तेवुं जगतमां कोइ वापरतुं नथी, हुं उत्साह सहित करुंबुं तेवुं कोइ करतुं नथी एवा अनेक प्रकारना अहंकार करे ते अनाचार जाणवो. तेवा अनाचार सेववाथी दर्शननुं लाभांतराय कर्म उपार्जे.

चारित्राचार आठ प्रकारे ठे. इर्यासमिति ते चालवुं, बेसवुं, उठवुं, सुवुं, पासु फेरववुं ए सर्वे काम यतना पूर्वक करवां. प्रथम रजोहरण वा मुहपति वगेरे करी पुंजवुं वा दृष्टिथी जोवुं. ने पठी चालवादिकनी वर्तना करवी. एम करवाथी कोइ पण जीवने दुःख थाय नहि. केमके परजीवने दुःख नहि करवाथी स्व-

दया ते पोताना आत्मानी दया थाय. केमके परजीवने दुःख दे-
वाथी कर्मबंध थाय, तेथी पोतानो आत्मा मलीन थाय, आवी
भावना सदा बनी रही छे तेथी कोइ जीवने दुःख थाय एवी
वर्तना करता नथी, तेथी सेहेजे परजीवनी दया थाय छे. भाषा
समिति ते प्रथम तो मुखे हाथ अथवा वस्त्र मुहपति राखीने बोले
छे जेथी मुखना श्वासथी जीव हणाय नही कारण उघाडे मुखे
बोलतां केटलीएक वखत मछर, मांख वगेरे जीव मुखमां आवी
जाय छे ते गलामां उतरी जवाथी वकारी वीगेरे पोताने कष्ट था-
य छे ने ते जीवनो विनाश थाय छे. ते सारु भगवतीजीमां गौ
तम स्वामी महाराजना प्रश्नो उत्तर. भगवाने कह्यो छे के हाथ
राखी बोले छे तो ते निरवद्य भाषा छे, ने उघाडे मुखे बोले छे
ते सावद्य भाषा छे. एम भगवतीजीमां छपेल पाना १४०२मे छे मा-
टे मुनि तो उघाडे मुखे नज बोले. वली गृहस्थने पण उघाडे
मुखे न बोलवुं जोइए. हवे मुख ढांकीने बोलवुं, ते पण सत्य
बोलवुं. वली कोईनुं छिद्र खुले, कोईनी निंदा थाय, एवुं वचन बो-
लवुं नहि. जे वचन बोलवाथी सामो जीव पाप प्रवृत्ति करे, जे
वचनमां मकार चकारनी भाषा बोलवाथी कोई जीवने दुःख
थाय, तेनुं मन दुभाय एवुं वचन न बोलवुं. अर्थात् साधुना वा
श्रावकना धर्ममां बोलवानी भगवंते मना करी होय एवुं वचन
बोलवुं नहि. जे वचन बोलवाथी सामा जीवने वा कोई पण
जीवने तथा आत्माने लाभ न थाय ते वचन पण बोलवुं नहि;
ते भाषासमिति कहिये. वली पुद्गलीक जे जे पदार्थ छे ते सारु
आत्मामां उपयोग करे, जे आ देह प्रमुख जे जे पुद्गलीक पदा-
र्थ छे ते मारा नथी पण मात्र वहेवारथी केहेवा मात्र कहुं छुं;
एवा उपयोग सहित बोलवुं ते भाषासमिति सदाकाल स्वदशा-
मांज उपयोग छे. जे बोलवाथी आत्मा मलीन थाय ते वचन

बोले नहि. एषणा समिति ते निर्दोष एटले बेंतालीश दोष रहि-
त आहार पाणी वस्त्र पात्रां वीगेरे जे कांइ जोइए ते एवां ले के
जे लेवाथी कोईपण आपनार तथा तेना कुटुंब आदिकने कोई
ने पण दुःख न थाय वली कोईने दुःख थाय, हिंसा थाय, ए-
हवा आहार ले नहि; कोई पण जीवनी हिंसा करवी नथी तेथी
पोते करीने खाय नहि, कोई पासे करावे नहि; कोईए मुनिने सारु
आहार कर्यो एम जाणवामां आवे, ते पण ले नही; तेना बेताली
श दोष दशवैकालीक सिद्धांतमां घणे ठेकाणे कह्या छे. ते दोषनी
मतलब एवी छे के आहार आपनारने तथा आहारना जीवने
एमना निमित्ते कांई पण दुःख थाय एवा आहारने दोषित आहा-
र कह्यो छे; तथा स्वाद करीने खावो नहि; तेम रांधेली वस्तु
सारी होय तो राजी न थवुं, तेम नवली होय तो दीलगीर न थ-
वुं, तेमज रांधनारे सारी रांधी होय तेनां वखाण करवां नहि,
तेम नवली रांधी होय तेने वखोडवी नहि; दानना आपनार तथा
नहि आपनार उपर राग द्वेष करे नहि; बधा उपर समवृत्ति राखे
एवी रीतना दोषो विस्तारे बताव्या छे, ते टालीने आहार पाणी
वस्त्र पात्र लेवां, ते एषणा समिति. आदानभंडमनिक्षेपणासमि-
ति, ते पात्र, पाट, पाटला वीगेरे जे कांइ चीज ले ते प्रथम दृ-
ष्टीथी जुए, पछी तेने पूजे, पछी ले, वली मुके, ते पण जमीन
निर्जीव जोइ पुंजीने तीहां मुके. पारिठावणिया समिति ते
मल, ठल्लो, मात्रु, लींट, थुंक, शरीरनो मेल जे जग्याए नांखे
ते जग्याए कोई पण जीव होय, तेम पछी पण तेमां जीव उत्पन्न
थाय तो पण कोईथी विनाश न थाय, एवी जगोए परठवे. गंद-
की वाली जग्याए वा गंदकी थाय एवी जग्याए परठवे नहि; तेम
कोई पण माणसने दुःख थाय, दुगंछा थाय; तेवी जग्याए परठ-
वे नहि, तेम माणस देखे एवी जगोए झाडे जवा बेसे नहि, ए

रीते पारिठावणियां समिति पाळे, ए पांच समिति. हवे त्रण गुप्ति तेमां, मन गुप्ति ते मन कांई पण पापना काममां प्रवर्तावे नहि, वधारे शुद्ध पुरुषो तो पोताना आत्म तत्त्वमां मन प्रवर्तावे, तेवी शक्ति न जाणी होय तो जेथी पोतानो आत्मतत्त्व प्रगट थाय ने तेमांज रमण थाय तेवां शास्त्र वांचे, वंचावे, सांभळे, संभळावे, अने तेमां मन परोवे; पण संसारी बाबतमां मन प्रवर्तावे नहि. ध्याननी शक्ति वाळा ध्यान करे, ते ध्याननुं स्वरूप प्रश्नोत्तर रत्नमाळामांथी जोई लेवुं अने ध्यानना लक्ष वधारे करवो, तेथी मन गुप्ति थाय छे. आर्त्त रौद्र ध्यानमां मनने प्रवर्तावयुं नहि जोईए. तेथी मन गुप्तिवाळा मुनि महाराजने कोई पण रीतनी शरीरादिक तथा धनादिकनी इच्छा नथी, तेम कुटुंबनी पण इच्छा नथी, तेथी कोई वस्तु मळी वा न मळी ते संबंधी राग द्वेष नहि. तेथी मनथी आर्त्तरौद्र ध्यान सेहेजे थतुं नथी. पोताना आत्माना सहेज स्वरूपमांज सदा मग्न रहे छे, कोई पण रीतनी परपरणतिमां मनने वर्तावता नथी. सद्चिदानंद स्वरूपमां मनने प्रवर्तावे छे. आत्मानुं स्वरूप अरूपी, अक्रोधी, अमानी, अमायी, अलोभी, अशरीरी, अखंड, अगोचर, अलख, अविनाशी, अकल, अगम, अतींद्रीय, अजर, अरागी, अद्वेषी, अपर, अमदी, अणाहारी अनोपम, एवा स्वरूपमां मग्न थई रह्यो छे, तेमां शरीरे रोग थाय, कोई उपद्रव करे, कोई कडवां वचन कहे, कोई मारे, कूटे तो पण तेमां मनने प्रवर्तावता नथी ते मन गुप्ति कहीए. तेमज वचन गुप्ति पण पाळे छे. वधारे विशुद्धि करवा ध्यानादिक करे छे एटले कांइ पण बोलवुं पडतुं नथी. श्रीमत् श्री महावीर स्वामी भगवाने अभिग्रह धारण कर्यो हतो जे केवळ ज्ञान प्राप्त थतां सूधी कोई साथे वचन बोलवुंज नहि, तेम बोलेज नहि, तेवी शक्ति नथी

तो कोई पण जीवने दुःख थाय एवां वचननी गुप्ति करे, एवां वचन बोले नहि, वली बोले ते पण एवुं बोले के सांभलनारने वचन गुप्ति थाय. पोताने वचनगुप्ति थाय एवां वचन शास्त्र आधारे बोले, केमके मौनपणुं धारण करे ते मुनि, माटे जेम परभावमां मौनपणुं थाय एवो उद्यम करे. लाभ सिवाय फोगट वाद विवादमां वचन प्रवर्तावे नहि, केवल वचनरहितपणुं अजोगी गुणस्थानमां अने सिद्धपणामां छे. संसारमां रहेला जीवने आवा अवसरमां प्रभुनो मार्ग मल्यो, तेथी जेम बने तेम वचन योगनुं गोपववुं थाय एम करे, ते वचन गुप्ति. काय गुप्ति ते कायानी प्रवृत्तिने रोकवी. बीलकुल कायगुप्ति तो चउदमे गुणस्थाने थाय छे, ते गुणस्थान नथी पाम्या त्यां सुधी पापना काममां कायाने प्रवर्तावची नहि. कायगुप्ति थाय एवा कारणोमां काया प्रवर्तावची. जेटली जेटली कायानी प्रवृत्ति रोकाय एम रोके, ते कायगुप्ति कहीए. जेम बने तेम आत्म भावमां वर्त्ते ने कायानी चपलता छोडे. स्वस्वभाव सन्मुख थाय तेमां जेटलो चेतन स्वभाव प्रगटे एटली गुप्ति थाय. ए रीते पांच समिति अने त्रण गुप्ति मली आठ चारित्रना आचार व्यवहारथी मन, वचन, कायानी प्रवृत्ति प्रभुनी आज्ञाए करवी, जेथी आत्माना स्वभावनो आचार शुद्ध थाय. निश्चे चारित्राचार शुं छे ? आत्मा आत्म स्वभावमां स्थिर थाय, देहना स्वभावमां वर्ते नहि, कर्मनो नाश थाय, आत्मा जेटलो जेटलो शुद्ध थाय तेटलो तेटलो चारित्राचार प्रगटे, ए चारित्राचार सर्व प्रकारे प्रगटे त्यारे सर्व कषाय जे क्रोध, मान, माया, लोभ छे ते नाश थाय, अने यथाख्यात चारित्र प्रगटे. ए लाभ चारित्राचारनो अंतराय तुटे छे त्यारे प्राप्त थाय छे, अने जे जीवो चारित्रवंत पुरुषनी निंदा करे छे, अने बोले छे के खावापीवा न मल्युं, वेपार करतां न आवड्यो, त्यारे साधु थईने बेठा; एवुं

बोलवाथी, अथवा कोई दिक्षा लेनार पोतानो सगो छे तेना मोहथी साधुनी निंदा करे छे, तेने दीक्षा लेवा देता नथी; वली बोले छे के साधुपणामां पण शुं फायदो छे, आवुं बोले छे, भावे छे, केटलाएक नामज्ञानी बनी बोले छे, के ए करवाथी कांई लाभ नथी, ज्ञानथी लाभ छे एम कही विषय कषायनी प्रवृती छोरूता नथी; छोरूनारनी लघुता करे छे; एवुं करवाथी जीव चारित्रना लाभनो अंतराय कर्म बांधे, माटे चारित्राचार जेथी प्रगटे एवां कारण सेववां, के कोई दीक्षा लेतो होय तेमां बनती मदद आपची, तेना कुटुंबना माणसने आजीवीकानुं दुःख होय तो आपणी शक्ति होय ते प्रमाणे दुःख भागवुं के तेथी तेने दिक्षा लेवामां हरकत परूे नहि. कोई पण रीते संजमनी मदद थाय एम करवुं. संजम लेवानी सदा भावना भाववी. कोई संजमवंतनी निंदा करतो होय तो तेनी निंदा टालवानो उद्यम करवो, जेमके राजग्रही नगरीमां भीखारीए दीक्षा लीधी तेने सारु लोक निंदा करता हता, पछी अभयकुमार मंत्रीश्वरे सवाक्रोरू सोनैयानो बजारमां ढगलो कर्यो अने आखा शहेरमां ढंढेरो फेरव्यो के जे माणस पृथ्वीकाय ते माटी प्रमुख, अपकाय ते पाणी, तेउकाय ते अग्नी, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय ते जे हालता चालता जीव, ए छ कायनी हिंसानो त्याग करे, तेने आ सवाक्रोरू सोनैया आपुं. पछी काइए पण सोनैया लीधा नहि. सर्व माणसो विचार करे जे संसारि सुख हिंसा कर्या विना बनतुं नथी, तो पइसाथी शुं करवुं? एम विचारी कोई पण सोनैया लेवाने आव्युं नहि; पछी अभयकुमार मंत्रीश्वरे बजारमां लोकने आवी एकठा कर्याने पुछ्युं जे आ सोनैया केम लेता नथी, त्यारे सर्वे कहे जे ए सोनैया लइने शुं करवुं ? संसारमां खावुं, पीवुं, पहेरवुं, ओढवुं, गारूी घोरूा दोरूावत्रा ते सर्वे काम हिंसा विना थतां नथी,

ने ए संसारी सुखनी इछा अमारी गइ नथी, एटले सोनैयाने शुं करीए? पछी अभयकुमारे कह्युं जे तमो सवाक्रोड सोनैया लइ हिंसानो त्याग करता नथी, तो आ भीखारीए तो वगर पैसे हिंसानो त्याग कर्यो तेनी तमे केम निंदा करो छो? एवुं समजाववाथी बधाए ते संजम लेनार भीखारीनां बहुमान करवा लाग्या. तेमज जे संजम ले तेनां बहुमान थाय एम करवुं. वली जे वखते थावच्चा कुमारे दिक्षा लीधी ते अवसरे कृष्ण वासुदेवे आखी द्वारिका नगरिमां उदूघोषणा करावी के जे कोई थावच्चाकुंवर साथे दिक्षा लेशे तेनां छोकरां मा बाप वगेरे जे कोई हशे तेनी हुं प्रतिपालना करीश, अने पछी तेमज कर्युं. आम करवाथी सेहेज संजम लेनारनां संजम लेवामां विघ्न होय छे ते दूर थाय छे, माटे आवी रीते संजमनां बहुमान करवाथी संजमनो लाभांतराय तूटे एवो उद्यम करवो. आ सर्वे अधिकार सर्व संजमनो कह्यो. तेमज देश चारित्र श्रावकना बार व्रत रूप, तेनो पण एज रीते आचार देशथी जाणवो. केमके व्रत देशथी छे, तेम आचार पण देशथी जाणवो, ते पण अंतराय कर्म होय त्यां सुधी देश विरति लेइ शकता नथी. सामायक पौषधमां तो मुनी जेवाज आठ आचार पालवा छे; ते पाली न शके अने ज्यारे अंतराय तुटे त्यारे पाली शके छे; जेमके सुव्रत शेठे पौषध लीधो हतो अने मकानमी पाछल आग लागी तो पण पौषधथी चलायमान थया नहि, अने ते मकानमांथी रात्रीए नीकल्या नहीं तो धर्म ढढता जोई देवताए सहाय करी, अने पोते जे मकानमां हता तेनी आगल पाछलनां मकान बली गयां, पण ए मकानने हरकत थइ नहि. माटे पौषध सामायकमां मुख्यपणे चारित्राचार पालवो, अने पालवानी भावना राखवी. जेम जेम चारित्राचार पालवानी उत्कंठा थाय छे, तेम तेम चारित्राचारना लाभनो अंतराय तुटे

छे. सदाकाल एज भावना भाववी के क्यारे आ संसाररूप बंदीखानामांथी छुटुं. आ संसारमां अज्ञानपणे सुख मान्युं छे, पण विचार करतां कांई पण सुख नथी. अग्निमां लोहनो गोलो जेवो तपी रह्यो छे तेवो आ संसारमां रात दिवस विकल्परूप ताप लागी रह्यो छे. धननो विकल्प, वेपारनो विकल्प, कुटुंबनो विकल्प, खावा पीवानो, पहेरवानो, ओढवानो, सुवानो, सर्व कुटुंबनो विकल्प, एवा अनेक प्रकारना विकल्परूप तापे तपी रह्यो छुं, ते हुं क्यारे छुटीश, एम भावीने बने छे तो संसारने छोडे छे, नथी बनतुं तो संसार छोडवानी भावना रात दिवस भावी रह्या छे; एवी भावना भाववाथी जीव हलको थाय छे. वली कदापि चारित्र अंगीकार करी मनमां अहंकार धारण करे छे के माहारा जेवो चारित्रनो पालनार कोण छे ? त्यारे भाववुं जे अरे जीव श्रीमान् महावीर स्वामीए केवा उपसर्ग सहन कर्या छे ? बे पग वच्चे अग्नि सलगावी खीर रांधी ए आदे संगम देवताए हजारो मणनुं माथे चक्कर मुक्युं, जेथी घुटण सुधी भूमीमां पेसी गया तो पण समभाव छोड्यो नहि. एवा तें कया उपसर्ग सहन कर्या ? जे तुं अहंकार करे छे. अरे चेतन तें सूर्यनी आतापना लीधी ? वा चार महिना सुधी कुवाना टोडा उपर काउस्सग्ग ध्यानमां पूर्वना मुनिउ रहेता तेम तें कर्युं छे ? ढंढण मुनिने छ मास सुधी आहार न मल्यो तो पण पोतानो अभिग्रह छोड्यो नहि. एवुं तें शुं मोटुं संजम पाल्युं ? के तुं अहंकार करे छे. एवा मुनिउना उत्कृष्ट कृत्य विचारी पोताना अहंकारनो नाश करे छे, अने आत्माने आत्म स्वभावमां स्थिर करे छे. परभावमां अनादिनी स्थीरता थई रही छे, ते खशेडीने स्वपरणतिमां स्थिर थाय छे, ते लाभ लाभांतरायना क्षय थवाथी थाय छे.

तपाचार ते आत्मानो अणाहारी गुण छे. आहार करवो ते

आत्मानो धर्म नथी, ते छतां आहारमां अनादि कालनो पुद्गलनी संगे आहारनी आकांक्षा थयां करे छे, ते दशा छोडवाने सारु तप करे छे. आत्मानां छ लक्षण कह्यां छे. तेमां आत्मानुं तप पण लक्षण छे. ते तपनुं अंतराय कर्म बांध्युं छे, त्यां सुधी तपगुण प्रगट थतो नथी. तपनुं अंतराय जीव हमेश बांधी रह्यो छे. तपस्वी पुरुषोनी नींदा करे छे, तपमां कांइ गुण नथी, खावा न मले एटले तप करे, एवो रीते बोले, कुटुंबी माणस तपस्या करतां होय, तेने कंई शरीरे फेरफार थाय तो तपने दुषण दे, पण एम वीचारे नहि के पूर्वे अशाता वेदनीय कर्म बांध्युं छे तेथी रोग थयो. कंई पण रोग पूर्वना कर्मना उदय सिवाय थतो नथी, तो पूर्वे अज्ञानताए तपस्या करवाना भाव थया नहीं, अने तपस्या करी नहि, विषय कषायमां मग्न रह्यो, तेथी आ अशाता वेदनी कर्म बांध्युं, ते उदये आव्युं छे. तपस्यानो पण अंतराय करेलो तेथी अंतराय कर्मनो उदय थयो, तेथी तपस्या थती नथी, एवी वीचारणा न करे, वली तप करी अहंकार करे जे म्हारा जेवो तपस्वी कोण छे ? बीजाथी तपस्या न थती होय तेनी निंदा करे, पोते तप कर्यो छे तेनी महोटाई करवा लोक आगल पोतानी प्रशंसा करावना तप करेलो जणावे, पण एम न विचारे के में शुं तप कर्यो छे ? पूर्वे मुनिउ तप करता हता ते इंद्रियोना विषय मंद पाडवा करता हता. शरीरनां हाडकां खखडतां हतां, तेनुं दृष्टांत भगवतीजीमां आप्युं छे के पातरानुं भरेलुं गाडुं होय ते चाले त्यारे खखडे. तेम जे मुनि महाराजे तपस्या करी पोतानुं शरीर गाली नांख्युं तेवी रीते शरीर गाली नांखवाना भाव नथी; कारण के शरीर नरम पडे छे तो शरीर पुष्ट करवानो उद्यम सदा करी रह्यो छे. पूर्वेना पुरुषो देहने विदेह मानता हता एटले देहने पोतानो मानताज नहोता तो तेवो भा-

व थयो नथी, त्यां सुधी तारो तप केहेवा मात्र छे. वली तपस्या करी खावानी कोई प्रकारनी इच्छा करता नहोता, ने तुं तो इच्छा करे छे. तारी इच्छाउ रोकाई नथी तो तुं तपनो शी बाबत अहंकार करे छे ? एवी भावना करे नहि, ने अहंकारमां मची रहे तेथी पण तपनुं अंतराय कर्म जीव बांधे छे. तेथी तप करवानो भाव थतो नथी. हवे जेने तपना लाभनो लाभांतराय टुट्यो छे ते पुरुषोने तपस्या करवानो भाव थाय छे, ते रूडी रीतना तपनो आचार पाले छे, बारे प्रकारे तप करवामां अग्लान भावकरे. ग्लानभाव ते आ तप केम थाय, महाराथी थई न शके, छती शक्तीए उत्साह न करे, वली तप करे तो मांदा जेवा भाव धारण करे, एहवी रीतनी ग्लानता धारण करे नहि, जे जे तपस्या करे ते ते उत्साहे करे, मन पण प्रसन्न रहे के आज मारो धन्य दिवस के आत्मानुं तप लक्षण प्रगट करवानो माहारो भाव थयो, वली ए उद्यममां प्रवर्तवानो वखत मल्यो. हवे जेम मारा आत्मानो तपगुण प्रगट थाय एम हुं वर्तुं, एवी रीते करे. वली अणाजीवी ते तपस्याए करी आजीवीकानी इच्छा नथी, एटले हुं तपस्या करुं तो मने बधा लोक मान आपशे, वा धन आपशे, वा पुद्गलीक सुख आ लोक तथा परलोकमां मलशे एवी आजीवीकानी इच्छा नथी. केवल आत्माने कर्मथी मुक्त करवाने सारुज उद्यम करे. वली कुशलदीठी एटले तीर्थंकर महाराजे तप करवानो कह्यो छे, अने पोते करी बताव्यो छे, ने कर्म खपावी मोक्षे गया छे; तेम हुं पण तप करी कर्म खपावुं. एवी भावनाए ते तप करे, ते तपनो आचार. एवी रीते तपाचार कह्यो. जे शरीरने दुःख सुख थाय ते गणे नहि, तेथी शरीरनी संभाल रहे नहि. त्यारे शरीर पडी जाय तो धर्म साधन शी रीते करी शके ? आवी शंका थाय तेनुं समाधान ए के

पूर्वे जेमणे तपनुं अंतराय कर्म बांध्युं छे तेमनुं शरीर नरम पडे छे, ने धर्म साधन थई शकतुं नथी, तो तेओ शक्ति माफक तपनो उद्यम करशे. वली शरीर नरम हशे तो सर्वथा आहार छोडी नहि दे, पण विषय छोडवा तेमां कांई शरीरना बलनी जरुर नथी, तेथी शरीरे जेम टकाव रही शके तेटलो आहार लेशे; पण बत्रीशे रसोईना स्वाद लेवाना भाव न राखे, मात्र जे वस्तु निरवद्य एटले पाप रहित मली तेज चीजथी निर्वाह करे. एक चीजथी शरीर नभे छे तो वधारे वस्तु शुं करवा ले, एवा वीचारथी आहार करे छे, तो पण तेने आहारनी इच्छा नथी. तपस्वी छे अने तप करे ने तपने दीवसे तथा वीजे दीवसे खावानी भावनाज करे, तो एने ज्ञानीए तप गण्यो नथी, कारण जे इच्छाना रोधने ज्ञानी तप कहे छे, माटे हरेक प्रकारे इच्छा रोकाय एम करवुं, वा रोज तप करुं, तपनो अभ्यास करुं तो ते अभ्यासथी मारी इच्छा रोकाशे, एवा विचारथी तप करे तो ते पण कोई दीवस इच्छा रोकशे, माटे इच्छा रोकवानो उद्यम करवो ते सारो छे. जे जे रीते आत्मानो गुण प्रगट थाय एवो उद्यम करवो. जेम बने तेम इंद्रियोना विषयनी वांछा घटवी जोइए तोज सांचुं ज्ञान कहेवाय; केम के जे आत्मानुं स्वरूप जाणे छे के, जाणवुं देखवुं ए आत्मानो धर्म छे. तो जे जे खावानुं मल्युं ते फक्त जाणी लेवुं छे तेमां विषय बुद्धि करवी नथी ए आत्मानुं काम छे, तेवा विचारथी ते आहार करे छे तो पण तपस्वीज छे, केमके आत्मभाव कायम रह्यो. तप कांई आहारना त्यागमां नथी. इच्छाना रोधमां छे इच्छा रोधनां साधनोने पण तप कह्यो छे तेथी बार भेद कह्या छे, माटे जे भेदनो तप करवाथी पोतानी स्वदशा प्रगट थाय ते तप करवो. बारे प्रकारनुं तप उपयोग सहीत करे तो ज्ञानी माहाराजे निर्जरानुं कारण

कह्युं छे, एटले कर्म खपाववानुं कारण कह्युं छे, कारण के जीवने गाढ कर्मनां दलीआं बंधायां छे माटे सर्वथी वेदनी कर्मने पुद्गल वधारे जाग आपे छे, केमके वेदनीयनुं प्रगटपणुं छे. हवे जे जे तप करे तेमां अशाता वेदनी थया सिवाय रहेती नथी, ते अशाता तप गुणनो अंतराय तुटयो होय तेटली समजावे जोगवे छे. समजाव रहेवानुं बीज कोण छे? वीर्य छे. वीर्य अंतराय तुटवाथी फोरायमान थाय छे, ते वीर्य जे जे आचारमां जीव प्रवर्ते ते ते आचारमां फोरायमान थाय छे, ने जे जे वीर्यना फोरायमानथी तप थाय छे ते प्रसन्नताथी थाय छे, अहर्निश तेमां हरख थाय छे, अने ज्यारे कोइना आग्रहथी वा शरमथी थाय छे त्यारे प्रसन्नता न होय त्यां वीर्य फोरायमान नथी थतुं, त्यारे अशाता अवसरे समजाव पण जीवनो रही शकतो नथी. जे पुरुषोने स्वपरनुं ज्ञान थयुं छे तेमनो जाव तो पोतानी आत्मदशामां रहेवानो बनी गयो छे, पण आत्मजावमां वरती शकतो नथी, केम के तप गुणना लाजनो लाजांतराय तुटयो नथी. ते जेटलो जेटलो तुटतो जाय छे तेटलो तेटलो उंगे थतो जाय छे, अने तेटली वर्त्तना करे छे. वर्त्तना करतां अशाता थाय छे त्यारे बालजीव विचारे छे के में तप कर्यो तेथी मने अशाता वेदनी थई, पण ज्ञानी पुरुष तो विचारे छे जे कर्म नाश करवा तप कर्यो छे, ने वेदनी कर्मना उदयथी वेदनी थई छे. वेदनी कंई तप करवाथी थती नथी. तप करवाथी जगवान् श्री महावीरस्वामी प्रमुखे वेदनी कर्म वीगेरे खपाव्यां छे, तेम खपे छे, ने निकाचीत कर्म तपस्यानी वखते उदये आव्यां छे, तो ते तपस्या समजावे आदरी छे, माटे समजावे ए कर्म पण जोगवाशे, तेथी कर्म निर्जरा विशेष थशे, तेम विचारी अशाता वेदनोथी बीहता नथी. अशाता वेदनीनी उदीरणा ज करी छे तो उदये आवे तेमां बीहे नहि, एवा जाव जेम जेम वृद्धि पामे

छे तेम तेम वीर्यांतराय तुटतो जाय छे. अने वीर्य फोरायमान थतुं जाय छे. वली वधारे विशुद्धिवंतने तो आवा विचार करवा परूताज नथी ते तो पोतानी आत्म दशा जाणवा देखवानी छे ते रूप वेदनीने जाण्या करे छे तेमां राग द्वेष करताज नथी. एवी समभाव दशा अप्रमादी मुनिने बने छे, ते तो पोतानी अप्रमाद दशामां रही आनंदमां वर्ते छे. हवे प्रमाद गुणस्थानवंत वीगेरे तो पोताने समभाव दशा केटलीएक थई छे, केटलीएक नथी थई, ते वधारवा सारु बारे प्रकारे तप करे छे. ते अनशन एटले अन् एटले रहित अने अशन एटले अनाज प्रमुख खावुं, ते अनशन तप कहीए. आहार करवो ते आत्मानो धर्म नथी, पण पुद्गलनी साथे संबंध थवाथी आहार जाणे आत्माज करे छे, एवी दशा अनादीनी बनी गई छे; पण ज्ञान थवाथी जाण्युं जे आहारना पुद्गल शरीरमां प्रणमे छे, आत्मा अरूपी छे तेमां कांई प्रणमता नथी, तेम छतां म्हारे आहार करवो मानुं छुं, ते अज्ञान दशा छे, पण माहारी तथा प्रकारे जोईए एवी विशुद्धि थती नथी. एटले आहारनी इच्छा थाय छे तो पण जेटली जेटली रोकाय तेटली रोकुं के अभ्यासथी सर्वथा रोकाई जाय. एम भावीने नवकारशी एटले बे घरी दीवस चरूता सुधी, पोरशी एटले प्रहोर दीवस चरूे त्यां सुधी, साढ पोरसि ते दोढ पहोर दिवस चरूे त्यां सुधी, पुरिमढ्ढ ते बे पहोर दिवस चरूे त्यांसुधी अवढ्ढ ते त्रण पहोर दिवस जाय तीहां सुधी, वा बे वार खावुं, वा एकासणुं ते दिवसमां एकज वार खावुं, वा आंबिल ते छए विगय रहीत एक वार खावुं, उपवास तो सर्वथा खावुंज नहि, ते जेटला उपवास बने एटला दिवस आहारनो त्याग करवो; तेमां कोई चारे आहारनो त्याग करे, कोई त्रण आहारनो त्याग करी पाणी मोकलुं राखे, एहवी रीते तप करवो, वा मर-

ण वखते सर्वथा आहारनो त्याग करी सर्व वस्तुनो अने शरीरनो त्याग करवो, ते अनशन तप जाणवो.

हवे उणोदरी तप ते उणुं खावुं; एटले सर्वथा खावुं नही एवो आत्मानो धर्म छे, पण अनादी जडनी संघाते करी जीव जड क्रीयाने पोतानी मानी रह्यो छे तेम देहने पोतानुं माने छे, ते जोर अज्ञानतानुं छे, ते अज्ञानतानां जोरथी मने भूख लागी छे, माहरे खावुं माहारे पीवुं छे एम कहे छे, वली देहमां रह्यो छे ते देह जड पदार्थ छे ते जड पदार्थनो धर्म शडण, पडण, विध्वंसण छे, एटले विनाश धर्म छे. आहारनो पुद्गल मले तोज टकी रहे. हवे आहारना पुद्गल बे प्रकारे मले छे, एक रोम आहार ते रुवे रुवे आहारना पुद्गलनो शरीरमां समये समये आहार करी रह्यो छे ते, तथा एक कवल आहार ते कोलीउ करी मुखमां मुकीए ते; हवे रोम आहार तो पोताना उपयोग सहीत तथा उपयोग रहीत पण लेवाय छे, ते तो जीहां सूधी शरीर छे त्यां सूधी लेवानो बंध जीवने थतो नथी; तो पण ते आहार शी शी रीते लेवाय छे? जे पवन आवे छे ते ठंडो आवे छे तो ठंडक लागे छे, गरम आवे छे तो गरमी लागे छे, वरसाद वखत होय त्यारे सरदी लागे छे, आ बधुं गरमी प्रमुख क्याथी जाणे छे? शरीरमां प्रणमे छे तेथी, तो तेज आहार छे. पण ते कंई स्ववशपणुं नथी, तेथी तेनो त्याग ग्रहणमां उपयोग रहे छे ने नथी रहेतो, एटले वीरती पण थती नथी तो पण ज्ञानी पुरुषो छे ते तेमां राग द्वेष नथी करता. फक्त आत्मानो जाणवानो धर्म छे तेथी जाणे छे के आ गरमीना पुद्गल, आ शीतना पुद्गल लेवानो कर्म उदय छे तेम लेवाय छे, एम उपयोग सदाकाल रहे छे, ते पुरुषने इच्छानो रोध थयो ते तप छे, पण एटलो गुण प्राप्त थयो नथी तेथी ठंडी गरमीमां जाणवा रूप रही शकतो

नथी, तो पण कंईक ज्ञान थयुं छे, ने कंईक फरस ज्ञान थयुं छे; तेना प्रभावथी कंईक समभाव राखे छे; तो जेटलो राग द्वेष ओछो थयो ए पण उणोदरी तपनुं लक्षण छे, माटे जेम राग द्वेषनी परणती ओछी थाय एम उत्तम पुरुषे करवुं. हवे बीजो कवल आहार छे, ते सर्वथा जेहनी इच्छा उगे छे तेनो त्याग करे छे, ते अनशन तपमां गणाय छे. हवे सर्वथा आहार विना तो शरीर रहेतुं नथी त्यारे आहार आपवो जोइए, पण आहार लेवानो धर्म नथी तेथी इच्छा थती नथी पण शरीरने टकाववा आहार आपवो. ते उणुं ओछुं खाय तो पण शरीरनो टकाव, रहे रोगादीकनी उत्पत्ति न थाय तेथी आहार ओछो ले अने इच्छा नथी वा इच्छा छे तो ते ओछी थइ, एटलो आत्मा निरमल थयो ने इच्छाना रोधरूप उणोदरी तप सहेजे थयो. वली जेनी एटली विशुद्धि नथी थई ते पण हमेशना खोराक करतां पांच कोलीआ वा तेथी वधारे ओछा खावानो अभ्यास करे, तेथी पछी सेहेजे इच्छानो रोध थई जाय. वली बीजी रीते खावानी वस्तुओ छे, तेमांथी जेटली वस्तु ओछी ले तेटलो उणोदरी तप थाय. वली ओछी वस्तु ग्रहण क्यारे थाय. के कंइक खावाना विषय घट्या होय तो वा विषय घटवानो अभ्यास छे. केमके आहार लेवानो आत्मानो धर्म नथी, तो जेम बने तेम पोतानो आत्म धर्म प्रगट करवानो जीवने अभ्यास करवो जोईए. जेम जे जे कला शीखवी होय ते ते कला अभ्यास करवाथी शीखाय छे तेम. आत्म धर्मनी वर्तना अनादी काल थयां जाणतो नथी, तथा वर्ततो नथी. ते अभ्यास करवाथी वर्तना थाय तो ते अभ्यासमां जेम बने तेम अयोग्यनो त्याग करवो. आहार बहु जातना छे, तेमांथी जे आहार लेवाथी घणा जीवनी हिंसा थाय छे ते आहार शाकादिक तथा अभक्षादिकनो न करे ते बावीश अभक्षनां नाम मारा करे-

ला प्रश्नोत्तर चिंतामणीमां छे, तथा जोगशास्त्रादिक ग्रंथोमां छे तेमांथी जोई त्याग करवो, ते पण उणोदरी तप छे; तथा जे आहार रसवती नक्ष्य छे ते रसवतीमांथी थोमी चीजोथी निर्वाह थाय छे, तो पण निर्वाह करतां वधारे चीजो जीव विषयने सारु वापरे छे तेथी आत्मा वधारे लेपाय छे. एम जेणे जाण्युं छे तो खाती वखत निर्वाह जेटली वस्तु ग्रहण करी बीजी वस्तु उपरथी इच्छा उतारवी ते पण उणोदरी तप छे; माटे जेम बने तेम निर्वाह उपर लक्ष आपवो. केटलाएक विषय घट्या नथी तेथी वधारे वपराय, तो ते वीषे पण जीव निंदा गर्हा सहित जो वापरे तो विषयनां कर्म आकरां न बंधाय, तो ते कर्मना रस जेटला उंगा पड्यां ते पण उणोदरी तपनुंज फल पामे. वृत्ति संक्षेप तप ते, जे वृत्तिउ वर्ती रही छे, तेनो संक्षेप करवो, एटले मरजादमां आववुं; जेम के श्रावकने चौद नियम धारवा, मुनिने द्रव्य, क्षेत्र, काल, नाव आ चारे प्रकारमांथी हर कोई प्रकारनी आहारादिक वस्तु संबंधी धारणा करवी, रोटली अथवा हरकोई पदार्थ धारे के ए वस्तु मले तो लेवी, वा फलाणुं माणस आपे तो लेवुं वा आटला कलाके मले तो लेवुं वा हाव नावे आपे तो लेवुं, एवी रीतना अनिग्रह धारण करे. एहवी धारणा करवानी मतलब शुं छे के एवी रीतनो जोग न बने ने तप बने तो सारुं. पूर्ण चित्त तप करवानुं थतुं नथी, त्यारे आवा अनिग्रह धारण करी आहारादिकनी इच्छाने शांत करे. पुद्गल नावमां वृत्ति लंगी थई रही छे ते आवा अन्यास करीने वृत्तिउने रोके, ए वृत्तिसंक्षेप तप कहीए.

रस त्याग तप केहेतां चार महाविगय ते मध, माखण, मांस, मदीरा आ चार विगयनो श्रावक तथा मुनि महाराजने सदा त्याग होय, केमके ए वस्तुउ खातां त्रसकाय जीवनो वि-

नाश थाय छे, ते वातनो योगशास्त्रमां हेमचंद्र आचार्य महाराजे विस्तारे निषेध करेलो छे. एटलुंज नहि, पण हरिभद्र सूरि महाराजे पंचाशक वगेरे ग्रंथोमां मांसादिकनो निषेध कर्यो छे. मांसाहारी जीव छे तेने निर्दयपणुं तो अवश्य होय. जो दयाना परिणाम होय तो जेमां घणा जीवनी हिंसा थाय एवी वस्तु वापरवाना भाव थायज नहि. पन्नवणाजीमां जघन्य श्रावक कह्या छे, ते ए चार महाविगयना त्यागीज कह्या छे, वली उपाशक दशांगमां आणंदजीए मांसादीकनो त्याग कर्यो छे. वली मांसना आहारथी मीजाज चीडायेलो थाय, एवुं हालना डाकटरो पण कहे छे, वली मदीरा थकी आत्मानी ज्ञानशक्ति अवराई जाय छे. डाह्यो होय ते गांडो थाय अने ते गांडाइथी धन धान्यादिकना वेपारमां पण नुकशान थाय, वली जगतमां पण निंदानुं स्थानक थाय छे, वली परलोके नरकादिक गति पामे, तेथी उत्तम पुरुषो, साधु, तथा ग्रहस्थ एनो त्याग करे छे. वली हालना वखतमां इंग्रेजो तथा पारशीओ पण केटलाक मांसाहारनो त्याग करे छे, केटलाक ढंगी टेव थाय तेम करे छे, आम अनार्य लोक ज्यारे त्याग करे छे तो आर्य लोकने त्याग होय तेमां शी नवाईनी वात छे, माटे महाविगयनो त्याग कह्यो छे. बीजी छ विगय ते दुध, दही, तेल, गोल, पकवान तथा घी, ए छ विगयमांथी जेटली विगय त्याग थाय एटली करे; कारण के विगय खावाथी विकारनी वृद्धि थाय छे, तेथी काम दीप्त थाय छे, माटे मुनि महाराजो विगयनो त्याग करे छे. पण हाल कालमां विगय वापर्या विना शरीर टकी शके नही तेथी शरीर निभाव जेटली वापरी बाकीनी विगयनो त्याग करे. श्रावक छे ते पण रोज एक एक विगयनो त्याग करे, कारण के मुनि महाराज तो सर्व कामना त्यागी छे तेथी बने तो सर्वथा त्याग करे, पण

गृहस्थथी बनवुं डुर्लज्ञ छे. गृहस्थ एने तो जेटली मूर्गा काम उपरथी उतरे ते मुजब विगयनो त्याग करे. ज्ञावथी जेटला पुद्गल उंगा ग्रहवामां आवशे एटलो कर्म बंध नहि थाय, एम ज्ञावी मुनि तथा गृहस्थ विगयनो त्याग करे. पोतानो अणाहारी गुण प्रगट करवारूप वीर्य फोरायमान थाय एज आत्मानो तप गुण प्रगट थाय, ते रसत्याग तप कहीये.

कायक्लेश तपः—ते जेटलुं जेटलुं समज्ञावे कायानुं कष्ट ज्ञोगववामां आवे छे ते कायक्लेश तप. मुनिमहाराज लोचादिक कष्ट सहन करे छे, विहारमां चालवानां कष्ट सहन करे छे, सूर्यनी आतापना ले छे, ते मुनि महाराज शुं ज्ञावी कष्ट सहन करे छे के पोताना आत्मानुं स्वरूप जाण्युं छे, जमनुं स्वरूप जाण्युं छे तेथी जम जे शरीर तेने पोतानुं जाणता नथी, पोताना तेवा ज्ञाव रहे छे के नहि, एम विचारवुं. जे वखत लोच करे ते वखत कष्ट पमे छे ते कष्ट पमतां जे पुरुषोनुं मन बगमतुं नथी ने समज्ञावमां रहे छे तो एवां कष्ट स्वज्ञाविक रोगादीकनां आवे त्यारे पण समज्ञावमां ते पुरुष रही शके छे; अने समज्ञावे रहेवाथी ते कर्म ज्ञोगवाय छे तेज वखते आत्मानी अशुद्ध परिणती टले छे, ते निर्जरामां गणाय छे, अने आत्मा शुद्ध थाय छे. हवे जे माणसो जाणीबुजीने एवां कष्ट सहन करता नथी तेने रोग ज्ञोगवी वा बीजा कुटुंबनां वेपारनां काम करी कष्ट ज्ञोगववां जोइशुं. अनादि कालनो जीव संसारमां रोलाय छे तेमां मोहने वश अशाता वेदनी कर्म, अंतराय कर्म बांधेलां छे ते ज्ञोगव्या विना छुटको नथी, माटे उत्तम पुरुषो जे प्रमाणे समज्ञावमां रही शके छे ते प्रमाणे कष्ट ज्ञोगवी पोतानां कर्म खपावे छे, ते कायक्लेश तप छे. समज्ञाव सिवायनां कष्ट ज्ञोगवे छे ते निर्जरामां ज्ञानी गणता नथी, कारण जे एक कर्म ज्ञोगवी पाछां हजारो कर्म नवां उपार्जन करे छे, माटे ते डुःख

ज्ञोगवेलां काम लागता नथी. तेथी तेने सकाम निर्जरामां गणाता नथी. दरेक धर्ममां समजीने काम करवाथी लाज्ञ बताव्यो छे, तेमज जे जे कष्ट ज्ञोगववुं ते समजीने ज्ञोगववुं तेथी आत्माने लाज्ञज थशे. कष्ट ज्ञोगवतां आत्मानुं वीर्य जागे छे, तोज समज्ञाव रही शके छे, नहिं तो समज्ञाव रहेतो नथी. ते आत्म वीर्यना अंतराय टुटया विना वीर्य फोरायमान थतुं नथी. माटे समज्ञावमां रही जे जे बनी शके ते रीते कायाने कष्ट ज्ञोगवी कर्म खपाववां ते कायक्लेश तप जाणवो.

संलीनता ते मुनि महाराज करी शके छे. जेम कुकडी शरीर संकोचीने सुवे छे तेम मुनि महाराजो सुवे छे. एवी रीते सुवाथी अंगोपांग बधाने जागृति आवे छे, अने निद्रामां लीन थवातुं नथी, ने आत्मज्ञान अवराई जतुं नथी. जेम सख्त निद्रा आवे तेम उपयोग लोपाई जाय छे तेथी जेम आकरी निद्रा न आवे तेम मुनि महाराज सुवे. वली जोग संलीनता पण तपमां कही छे, परंतु ते अज्यंतर तप गणी शकाय. तेम वचन कायानां जोग जेम बने तेम आत्म स्वज्ञावथी बहार वर्त्तता रोकीने नीज स्वज्ञावमां थीर करवा. ते जोग संलीनता तप छे, ए घणो ज श्रेष्ट तप छे. ए रीते संलीनता तप कह्यो छे.

ए छ प्रकारे बाहाज तप कह्यो, तेनुं कारण जे ए तप करनारने जोईने आ तपस्वी छे एम उलखी शके. बाकी वस्तुपणे तो कर्म खपाववाना ज्ञावथी ए बाहाज तप करे, ते पण आत्मा निर्मल करे. अने अज्यंतर तपथी पण आत्मा निर्मल थाय. हवे ते अज्यंतर तप ते शाथी ? तो के बाहारथी देखीने तपस्वी कोई नहि कहे, पण आत्मा निर्मल करे तेथी अज्यंतर तप कह्यो. ते पण छ प्रकारे छे.

१. प्रथम विनय तप ते देवनो, गुरुनो, धर्मनो, ए त्रणनो

विनय करवो. देव ते अरिहंत, जेमणे ज्ञानावर्णी कर्म क्षय करी केवलज्ञान उपार्जन कर्युं छे. जे ज्ञाने करी लोकालोकनां भाव ते स्वर्ग, मृत्यु, पाताल ए त्रणमां जीव अजीव पदार्थ रह्या छे. ते पदार्थनी वर्णना थई रही छे, समे समे अनंता परजायनो उतपात, व्यय, अने ध्रुव थई रह्यो छे; ने गया कालमां वर्त्तना थई, आवते काले थशे अने वर्तमानमां थाय छे, ते सर्व भाव एक समयमां जाणी रह्या छे तेनुं नाम केवलज्ञान, एवुं ज्ञान जेने प्रगट थई रह्युं छे. दर्शनावर्णी कर्म क्षय करी अनंत दर्शन गुण प्रगट थयो छे, तेथी (सामान्य बोधरूप) केवल दर्शन प्रगट थयुं छे. मोहनीय कर्म क्षय करी चारित्र गुण प्रगट थयो छे, ते आत्म स्वभावमां स्थीर थाय, ते चारित्र गुण जाणवो. अंतराय कर्म क्षय थवाथी अनंत वीर्यादीक गुण प्रगट थयो छे. एवा अरिहंत भगवाननो विनय करवो. केमके आत्मानुं स्वरूप अरूपी छे ते केवलज्ञान प्रगट थया विना प्रत्यक्ष थतुं नथी. ते केवलज्ञानथी सर्व जीवना आत्मानुं स्वरूप प्रत्यक्ष देखाय छे तेथी ते स्वरूपनुं वर्णन प्रभुए कर्युं, वली आत्मा मलीन शाथी थाय छे ते स्वरूप बताव्युं, वली आत्मा निर्मल शाथी थाय छे ते बताव्युं. पुन्य पाप बांधवानां कारण बताव्यां छे, तो तेथी आपणे आपणा आत्मानुं स्वरूप जाणी शकीए छीए: माटे प्रभु मोटा उपकारी छे तेथी तेमनो विनय जेम बने तेम करवो. शक्ती गोपववी नहि.

सिद्ध महाराज जेमने आठे कर्म क्षय थवाथी आत्माना संपूर्ण गुण निष्पन्न थया छे, शरीरथी रहित थया छे, मोक्ष स्थानमां रह्या छे, जेमने फरी संसारमां आववुं नथी, केवल आत्माना गुणमांज लीन छे, नथी राग, नथी द्वेष, नथी क्रोध, नथी मान, नथी माया, नथी लोभ, नथी विषय; अक्षय, अमर, अजर, अकल, अगोचर, अरूपी आदे अनंत गुण रह्या छे, ते सिद्ध

ज्ञगवाननुं रूप जोई आपणी सिद्ध दशा प्रगट करवानी बुद्धि जागवानो हेतु छे; वळी गुणवंतना गुण गातां आपणो आत्मा पण गुणी थाय अने अनादीनी ज्जुलथी परवस्तु पोतानी मानी वर्ते छे ते ज्ञाव पलटाववानुं साधन छे, माटे सिद्ध महाराजनो विनय पण जेटलो बनी शके एटलो करवो. ए बंनेनो विनय करवो ते देवनो विनय जाणवो. हवे आ क्षेत्रमां अरिहंत सिद्ध महाराज कांई पण विचरता नथी, तो तेमनी मूर्त्तिउनो पण विनय करवो. कारण जे गुणवंत पुरुषोनी मूर्त्तिमां पण जे जे ज्ञगवाननी मूर्त्ति छे ते ते ज्ञगवानना गुणनो आरोप करवो छे, ने ते गुणनो विनय करवो छे, एटले ज्ञगवंतनोज विनय छे. हवे तेमां प्रथम शो विनय छे? के ते पुरुषोए जे जे हुकम फरमाव्या छे ते ते हुकम अंगीकार करीने पोतानो आत्मा शुद्ध करवाना उद्यमी थवुं अने उद्यम करवाथी आत्मा शुद्ध थशे. जे जे अंशे प्रज्जुजीना हुकम प्रमाणे समज्ञावमां रहीशुं ए मुख्य विनय छे. पछी तेना कारण रूप पांच प्रकारे विनय छे "ज्ञक्तिबाहाज प्रणीपत्तीथी" एटले पंचांग प्रणाम करवा जे खमासमणुं देईने पांचे अंग एकठां करी नमस्कार ज्ञगवंतने वा ज्ञगवंतनी मूर्त्तिने करवा. वळी अष्ट द्रव्यथी, सत्तर द्रव्यथी, एकवीश द्रव्यथी, वा १०८ द्रव्यथी ज्ञगवंतने पूजवा ते पण ज्ञगवंतनो विनय छे. "हृदय प्रेम बहुमान" हृदयमां ज्ञगवंतना गुण ज्ञगवंतनो उपकार अत्यंत विचारी हरखथी रोमराय विकस्वर थई जाय. आणंदनो पार रहे नहि. एवो अंतरमां हरख थाय, अने प्रज्जु उपर अतिशय प्रीति जागे. तेमज प्रज्जुनो परूपेलो जे धर्म जे आगममां कह्यो छे ते आगम सांज्ञली अहो प्रज्जुए शो मार्ग बताव्यो छे ते विचारीने हरख थाय. वळी प्रज्जुनां चरित्र सांज्ञळी प्रज्जुजीनी वर्तना जोई अहो आश्चर्यकारी ज्ञगवंतनुं वर्त्तवुं छे ते जोई हरख थाय अने प्रज्जुना

उपकार संज्ञारी अंतरंगमां राग उपजे ते पण प्रभुनो विनय छे.

"गुणनी स्तुति":—ते प्रभुना गुणनी स्तुति करवी ते स्तोत्र, श्लोक, दुहा, छंद इत्यादि प्रभु आगल उन्ना रहीने केहेवा; वा चैत्यवंदन, नमुठुणं, स्तवन, थोय विगेरे केहेवुं; वा प्रभुनां चरित्र सांभळ्यां छे ते चरित्रमां जे गुण वर्णव कर्या छे ते गुण याद करी पोते स्तवी वा बीजा आगल कही प्रभुना रागी करवा ते पण गुण स्तुति छे. अवगुणनुं ढांकवुं:—ते प्रभुमां तो कोई प्रकारे अवगुण नथी पण कल्पित कोई अवगुण केहतुं होय तो तेने समजावीने अवगुण बोलता बंध करवा. प्रभुजीनी प्रतिमाजी छे ते प्रतिमानी पूजा न करता होय तो तेमने समजावी प्रभुनी पूजा करता करवा जोइए. प्रतिमाजीना अवर्णवाद बोलता होय तो तेने पण समजावी अवर्णवाद बोलता बंध करवा जोइए. केमके प्रभु अने प्रभुनी स्थापना बे सरखी भगवंते कही छे. श्री अनुयोगद्वार सूत्रमां तथा आवश्यक सूत्रमां पण स्थापना निक्षेपो कह्यो छे. हालमां सामान्य गृहस्थनी पण यादगीरी कायम राखवा सारु पोटोग्राफ (छबी.) तो घणा लोक करावे छे, वली मोटा होद्देदारो वा राजानी वा शाहुकारनी मूर्तीउ (बावलां) पण मरनारना मान खातर बेसाडवामां आवे छे तो एवा माणसनां बहुमान करे, अने देवनी मूर्तिनां बहुमान करावववानो विचार न राखे, तो पोताना देव उपर पोतानो राग नथी एम खुल्लु समजाय छे; ने न्यायनी बुद्धि जेने थई होय तेने सेहेजे समजाय के भगवंतनी मूर्त्ति जोईने भगवान याद आवे अने भगवान याद आव्या के तेमनां चरित्र याद आवे, तेमनुं अद्भुत चरित्र याद आवे तो प्रभु केवा गुणवंत छे ते गुण सांभरे, गुण संभारतां, प्रभुए मोक्ष मार्ग बताव्यो छे तेमां जीवने केम चालवुं, ते याद आवे, ते याद आवतां आपणे भगवंतना हुकमथी

विरुद्ध चालीए छीए ते याद आवे छे अने ते याद आववाथी आपणी भूल सुधारवानी बुद्धि थाय, वली भगवानने उपकार याद आवे तो भक्ति करवाना भाव थाय, कारण के उपकारीनी जेटली भक्ति नहि करीए एटली ओछी छे; माटे भगवाननी यथाशक्ति भक्ति करवानो भाव जागे ए प्रभुनो विनय छे. जे जे अवर्णवाद बोलता होय ते बंध थाय ते लाभ समजावनारने छे, ने तेज प्रभुनो खरो विनय छे.

" आशातननी हाण " एटले भगवान विचरता होय ते वखते छद्मस्थ अवस्थाए एटले जीहां सुधी केवलज्ञान पाम्या नथी, तेनी अगाउना वखतमां केटलीएक प्रशंसा थती होय ते अज्ञानी मत्सरी जीव सहन करी शकता नथी, तेवा जीव अवर्णवाद बोलता होय वा पीडा करता होय तो आपणी शक्ति फोरवीने ते पीडा टालवी. मुखेथी बोलतो होय तेने पण समजावीने तेने दूर करवो, वा प्रभुने केटलाएक देवता पण परीक्षा जोवा पीडा करे छे तो ते देवताने पण पोतानी शक्तिथी दूर करवो. वा मिथ्यात्वी जीव प्रभुनां प्ररूपेलां ज्ञान संबंधी वगर दूषणने दूषण कही निंदा करे तो ते पण प्रभुनी आशातना छे, तेने पण समजावीने थीर करवो. वली आपणामां शक्ति न होय तो बीजा कोई शक्तिवान होय तेने विनंती करी तेनी शक्ति फोरवी तेनी शक्तिथी आशातना दुर करवी. तेमज जिनबिंबनी एटले मूर्त्तिनी आशातना करतो होय ते टाले. हवे जिन भुवनने विषे चोरासी आशातना टाले तेनां नाम.

१ बलखो वा थुक नांखवुं. २ हींचोलो बांधीने हिंचका खावा. ३ कलेश करवो एटले लडाई करवी. ४ धनुर्विद्या शीखवानो अभ्यास करवो एटले बाण साधतां ताकेली जग्योए बाण जाय ते. ५ पाणी पीने कोगला करवा. ६ तंबोलादिक

पान सोपारी खावां वा खाईने जवुं. ७ तंबोल खाधेलुं होय अने तीहां थुंकवुं. ८ सामाने गाळो देवी, जदवा तदवा बोलवुं वा श्राप देवा. ए मूत्र विष्टानुं नांखवुं वा करवुं. १० शरीर धोवुं एटले नहावुं. ११ नीमाळा देरासरमां नांखवा. १२ नख नांखवा. १३ लोही नांखवुं. १४ सुखडी प्रमुख खावुं. १५ शरीरनी चामडीनुं नांखवुं. १६ पीत्त वमन करवुं, एटले ठकवुं. १७ सामान्य वमन करवुं. १८ दांत नांखे वा समारे. १ए थाक्या होय तो विसामो लेवो. २० गाय प्रमुख ढोरनुं बांधवुं. २१ दांतनो मेल नांखे. २२ आंखनो मेल नांखे. २३ नख उतारे वा उतरावे. २४ गंडस्थळनो मेल उतारे वा नांखे. २५ नाकनो मेल नांखे. २६ माथुं समारे. २७ काननो मेल नांखे. २८ शरीर समारे. २ए मित्रने मळे. ३० नामुं लखे, वा कागळ लखे, (पोतानुं संसारी.) ३१ कांई वेचवानुं करे. ३२ आपण मुके. ३३ माठे आसने बेसे. ३४ गणां थापे. ३५ लुगडां सुकवे. ३६ पापड सुकवे. ३७ वडीउं करे वा सुकवे. ३८ राजाना भयथी नाशीने देरासरमां संताई रहे. ३ए धान्य सुकवे. ४० देरासरमां संसारी सगा सांभरवाथी रुदन करे ते आशातना, पण भगवानना गुणनुं बहुमान करतां हरखनां आंसु आवे ते अशातना नथी. ४१ विकथा करे एटले राज कथा, देश कथा, स्त्री कथा, वा भोजननी कथा एवी वातो देरासरमां करवी ते आशातना. ४२ शस्त्र घडे एटले बनावे. ४३ जनावरो देरासरमां बांधवानुं करे. ४४ तापणी करी तापे. ४५ रसोई रांधे. ४६ रुपीया सोनैया पारखे. ४७ निसिहि कही संसारी काम देरासरमां करवा निषेध कर्यो छे, ते छतां करीने निसिहिनो भंग करे ते दोष व्रत भंग जेवो समजवो. ४८ देरासरमां छत्र पोताना उपर धरावे. ४ए खासडां देरासरमां मुके. ५० चामर धरावे. ५१ मननी एकाग्रता न करे. ५२ शरीरे तेल चोळावे. ५३ स-

चित्त ज्ञोग तजे नहि. ५४ अयोग्य अचित पदार्थ तजे नहि. ५५ शस्त्र मुके. ५६ प्रज्ञु दीठे हाथ न जोमे. ५७ एक साम्री ज्ञतरासन नांख्या विना देरासरमां जाय. ५८ मुगट पाघमी ज्ञपर पहेरी देरासरमां जाय. ५९ पाघमीनो अविवेक करे. ६० फुल तोरादीक खोशीने देरासरमां जाय. ६१ होम करे एटले सरत बके. ६२ दमे रमे वा दमाथी रमे. ६३ गेमीनी रमत करे. ६४ देरासरमां जुहार करे वा सलाम करे. ६५ कोईने टुंकारा करे, वा हलका शब्द कहे. ६६ लांघणे बेसे. ६७ कुजे एटले बाथाबाथी लमे. ६८ ज्ञांम चेष्टा करे. ६९ चोटला समारवानुं करे. ७० पलांठी आसने बेसे. ७१ पावमी पेहेरीने देरासरमां जाय. ७२ लांबा पग करीने बेसे. ७३ पीपुमी वगामे. ७४ देरासरमां कादव करे. ७५ शरीरनीरज ज्ञमामे. ७६ मैथुन सेवे वा ए संबंधी चेष्टा करे. ७७ जुगार (जुगटुं) खेले. ७८ पाणी पीए, ज्ञोजन करे. ७९ मल्ल युद्ध करे. ८० वैद्य कर्म करे एटले नामी जुए, दवा आपे. ८१ वेपार हरकोई जातनो देरासरमां करे. ८२ सुवानी पथारी पाथरे. ८३ खावानी वस्तु देरासरमां मुके. ८४ देरासरमां नाहे (स्नान करे).

आ रीतनी चोराशी आशातना छे, ते कोईए पण करवी नहि, ने कोई करतो होय तो तेने रोकवो; ए सिवाय देरासरना पईसा खाई जवा, वा देरासरना पैसाथी नफो ज्ञपार्जन करवो, वा घरमां वापरवा, देरासरनी चीज लावीने वापरे, ते सर्वे आशातनामां समजवुं; ने देवद्रव्य ज्ञक्षणनुं दूषण लागे, माटे कोई पण चीज देरासरनी पोताना काममां वापरवी नहि. ए पांच प्रकारे देवनो विनय कह्यो; तेमज देवनो ज्ञाषेलो धर्म आगममां लख्यो छे, माटे आगमनो विनय करवो ते आगमनुं ज्ञान करवुं, आगम एटले शास्त्र तेने लखाववां, लखाववाना काममां पै-

सा खरचवा, जे आगम लेवुं ते नमस्कार अथवा खमासण दईने लेवुं, मुकवुं ते वखत पण नमस्कारादिक करवा; आगमनां पुस्तक होय त्यां वडीनीत एटले झाडो, लघुनीत ते पेसाब, ते करवां नहि, पग नीचे वा माथा नीचे मुकवुं नहि, तेमज आहार पाणी पण पुस्तक होय त्यां करवां नहि, तेम मैथुन तथा मैथुननी क्रीया पण करवी नहि, तेमज हास्यविनोद करवो नहि, ए प्रमाणे प्रभुना ज्ञाननो विनय करवो ते प्रभुनोज विनय छे. मुख्य विनय तो ए छे जे प्रभुनो हुकम छे के पोताना आत्मस्वभावमां रहेवुं. जे जे सुख दुःख थाय छे तेनां कर्म पूर्वे वा वर्त्तमानमां बांध्यां छे, ते प्रमाणे सुख दुःख थाय छे, अने आत्मानो स्वभाव जाणवानो छे ते जाणी लेवो; पण मने सुख थयुं तेवो हरख करवो, मने दुःख थाय छे एम मानी दिलगीर थवुं तेम करवुं न जोईए. एवा विचारमां रहेवाथी नवां कर्म नथी बंधातां, एम प्रभुजीए कह्युं छे. एम विचारवुं एज प्रभुनो विनय छे, आत्मानुं हित थवानुं कारण छे. ए आदे विनयनुं स्वरूप प्रभुजीए शास्त्रमां घणी रीते बताव्युं छे. विनय अध्ययन उत्तराध्ययनजीमां छे ते सांभळी ते अनुसारे विनय करवो. गुरु महाराजनो विनय करवो, ते गुरु महाराज कोने कहीये ? जे पुरुषे सर्वथा हिंसानो त्याग कर्यो छे कोई पण जीवने हणवो नथी, तेम कोई जीवने दुःख देवुं नथी, तेमज असत्य एटले जूठुं बोलवुं नथी, तेमज कोई पण प्रकारनी चोरी करवी नथी, तेमज कोई पण स्त्री साथे मैथुन सेववुं नथी, तेमज स्त्रीने अडकवुं पण नथी, तेमने पांचमुं व्रत जे धन धान्यादिक नव प्रकारनो परिग्रह तेमां कोडी मात्र पण जेने राखवी नथी, एवां पंच महाव्रते करी युक्त मुनि महाराज जे प्रभुनी आज्ञा मस्तक उपर चडावीने विचरे छे, प्रभुजीनी आज्ञा बहार वर्तता नथी, पोताना आत्मगुणमां

आनंदितपणुं छे, विषय कषाय जेने सेववा नथी, एथी मुक्त थया छे, कांईक अंश रह्यो छे तेथी मुक्त थवाना कामी छे, शांत रसनाज उद्यमी छे, शत्रु अने मित्र तुल्य छे, एवा आचार्य, उपाध्याय अने साधुजी महाराज, पर जीवना उपकार करवा पृथ्वी उपर विचरे छे, ने धर्म उपदेश देईने जगतना जीवने अधर्मथी छोडावे छे. केटलाएक नथी छोडता, पण छोडवाने सन्मुख थाय छे; एवा उपकारना करनारा पुरुषो छे, तेज गुरु कहेतां मोहटा छे माटे तेमनो विनय करवो. गुरु पासे जवुं तो सचित पदार्थ लईने जवुं नहि, तेमज गुरु दीठे हाथ जोडी नमस्कार करवा. वली गुरुजीने बे खमासमण एटले पंचांग प्रणाम करी इछकार सुहराइ (सुहदेवसी) सुखतप शरीर निराबाध सुख संजम जात्रा निर्वहो छोजी स्वामी शाता छेजी भात पाणीनो लाभ देजोजी, पछी कहेवुं जे-इछाकारेण संदिसह भगवन् अभुठिउंहं अभिंतरं देवसिअं खामेउं एम कही गुरुनी आज्ञा मागी गुरु आज्ञा आपे जे खामेह, पछी पंचाग प्रणाम पूर्वक अभुठिउंहं अभिंतर खामवो एटले कहेवुं. प्रतिक्रमणनी चोपडीमां छे ते मुजब खामवुं. इछकार कही साता पूछी अभुठिउ खामवाथी कंइ गुरुनी आशातना थई होय, तेनी माफी मागी हवे जेटला बोल अभुठिउमां आवे छे, एटला बोल करवाथी गुरुनी आशातना थाय छे माटे एटला बोल वर्जवाथी गुरुनो विनय थाय छे, तेथी अभुठिउ खमावी विचार राखवो, जे रखेने एहवी भूल थाय. वली द्वादशावर्त्त वंदन गुरुने करवुं, ए पण गुरु महाराजनो विनय छे, ते वंदन पण प्रतिक्रमणनी अर्थवाली चोपडीमां अर्थ सहित छे, माटे ते अर्थ समजीने ते प्रमाणे वर्तवुं. वली अरिहंत भगवंतनो विनय पांच प्रकारे बताव्यो छे तेज रीते करवो; एवीज रीते गुरु पासे जईने वंदन करवुं, पछी त्यां गुरु कथा करता होय ने

त्यां सन्ना ऊराई होय तो सन्नामां बेठेला श्रावक श्राविकाने प्रणाम करवा, तेमज सन्नामां बेठेला करतां आवनार विशेष गुणवंत वा धर्मी होय वा धनवंत होय तो तेने बेठेला लोक पहेलो प्रणाम करे, ने सामान्य होय तो आवनार प्रथम करे, एनी मतलब एज छे के चतुर्विध संघनो विनय करवानो छे, ते प्रथम विशेषनो सामान्य वालो विनय करे, अने विशेष होय ते पछी करे; आ मर्यादा समजवी. वली गुरु पासेथी जाय त्यारे पाण गुरुने वंदन करीने जाय. वली गुरु घेर पधारे तो तेमनी सन्मुख जवुं, गुरुने बेसवाने आसन आपवुं, तेमज गुरु दीठे नमस्कार करवा, गुरुने जे कंई खप होय ते हाजर करवुं, कीमती चीज होय वा अल्प मुलनी चीज होय तो ते पण गुरुने अर्पण करवी, रस्तामां गुरु मले तो पण नमस्कार करवा. गुरुनी तेत्रीश आशातना छे ते वर्जवी ते नीचे मुजब.

१ गुरु महाराजनी आगल बेसवुं, २ गुरुनी आगल ऊन्ना रहेवुं, ३ गुरुनी आगल चालवुं. ४ गुरु महाराजनी पाछल नजीकमां बेसवुं. ५ तथा ऊन्ना रहेवुं. ६ तेमज चालवुं. ७ गुरु महाराजनी बे पासे नजीकमां बेसवुं. ८ गुरुनी बराबरीमां चालवुं. ९ तेमज ऊन्ना रहेवुं आ नव आशातनानीमतलब एवी छे के नजीकमां बेसतां, ऊन्ना रहेतां, आपणी छींक बगासु अधोवायु सरवुं वगेरेनो तथा श्वासनो गुरुने स्पर्श थाय, माटे जेम स्पर्श न थाय तथा थुंक वगेरेना छांटा न ऊडे, तेम बेसवुं जोईए. आगल अने सरखाईमां बेसतां गुरुनी मोटाई शी रीते सचवाय ! मांटे बराबरीमां तथा आगल बेसवाथी पण आशातना थाय छे. १० पोताथी विशेष पुरुषनी साथे थंडील जाय, ने तेमनी अगाउ आवे तो पण आशातना. ११ बहारथी आवेला गुरु साथे शिष्य गुरुथी पहेला रस्ताना दोष आलोवे तो आशा-

तना. १२ रात्रीए गुरुमहाराज बोलावे जे कोण सुतो छे, कोण जागतो छे, ने पोते जागतां छतां हुं जागुं छुं एम न कहे तो आशातना. १३ उपाश्रयमां श्रावक आवे तेने गुरु वा पोताथी अधीक पुरुषे बोलाव्या पहेलां बोलावे तो गुरु होय तो गुरुनी, वा अधीक होय तो अधीकनी आशातना. १४ आहार लावीने पोताथी अधीक साधुजीने आहार बताव्या विना बीजा साधुने बतावे तो आशातना. १५ आहारादिकनी निमंत्रणा गुरुने न करतां बीजाने पहेली करे तो आशातना.१६ गुरु महाराजने पुछ्या विना बीजा साधुने आहारनी निमंत्रणा करे तो आशातना. १७ गुरु महाराजने पूछ्या विना बीजाने आहार आपे तोआशातना. १८ सरस अने स्वादीष्ट आहार पोते वापरे ने गुरुने न आपे तो आशातना. १९ गुरुनां वचन सांभळ्या छतां गुरुने जवाब न आपे तो आशातना. २० गुरु जेवा वडीले बोलाव्या छतां आकरा वचनथी जवाब आपे, कंई पण अवज्ञा थाय एवो जवाब दे ते आशातना. २१ गुरुए बोलाव्या छतां पोताने आसने बेशी रहे ने जवाब दे पण तरत पासे आवे नहि ते आशातना.२२ गुरुए पुछ्या छतां आसने बेठां कहे जे शुं आज्ञा आपोछो ते पण आशातना. २३ गुरुने वा वडीलने टुंकारे बोलावे, एटले तुं कोण हमने कहेनार, आदे शब्द बोले ते आशातना. २४ गुरु कहे तेवीज रीतनुं अविनय वचन बोली जवाब आपे ते आशातना. २५ गुरु महाराज, साधु साध्वी ग्लान एटले रोगी, तेनी सार संभाल करवा कहे त्यारे गुरुने कहे जे तमेज सार संभाल करो, एम करी गुरुनी अवज्ञा करे ते आशातना. २६ गुरु महाराज धर्म कथा कहे ते शुन्य चित्ते सांभले; कदापि सांभळे तो सांभळीने गुरुनां बहु मान करवां जोईए, के अहो गुरुजी शास्त्रना परमार्थ आप शुं बतावो छो? एवी रीते बहु मान न करे ते

आशातना. २७ गुरु महाराज वा रत्नाधिक धर्म उपदेश कहे, त्यारेकहे जे आ अर्थ तमे बराबर करता नथी,तमने अर्थ करता आवरूतो नथी, एवुं कहेवुं ते आशातना. २८ गुरु कथा करता होय ते कथानो भंग करी पोते बीजा सांभलनार आगल कथा कहे ने समजावे ते आशातना. २९ गुरु कथा करता होय अने ते कथा करतां गुरुने तथा सभाने कथाथी आनंद थई रह्यो छे, ने चित्त लीन थई गयुं छे तेवुं जाणया छतां शिष्य गुरुने कहे जे महाराज गोचरीनो वखत थई गयो छे माटे कथा बंध करो पछी गोचरी मलशे नहि, एवी रीते कहेवाथी चढती धारा होय ते टुटी जाय, ने व्याख्याननो छेद थाय ते आशातना. ३० गुरु महाराजे जे जे अर्थ कह्यो छे तेज अर्थ व्याख्यान उठ्या पछी शिष्य सभाने विस्तारी पोतानी बहादुरी जणाववा व्याख्यान करे ते आशातना. ३१ गुरु महाराजना संथाराने वा गुरु महाराजना पगने पगे करी फरसीने पाछो गुरुने खमावे नही ते आशातना. ३२ गुरु महाराजना संथारा उपर वा आसन उपर उभो रहे, अथवा बेसवा सुई रहे ते आशातना. ३३ गुरु महाराजथी उंचा आसने बेसे ते आशातना तथा गुरुना बराबरीना आसने बेसे ते आशातना.

आ बाबतनी गुरु महाराजनी तेत्रीश आशातना पोते करवी नहि, तेम कोई करतो होय तो तेनी पासे टलाववानो उद्यम करवो; आ आशातना पोतानामां अहंकार दशा हशे त्यां सुधी थशे, अने अहंकार टली गयो हशे तो सहेजे आशातना टलशे; माटे मुख्यपणे हुं गुरुथी बहु ज्ञानी छुं, एवो अहमेव होय ते टालवो, कारण जे वधारे ज्ञान पण वखते होय तो ते गुरु महाराजनी कृपाथी थयुं छे, तो जेमनी कृपा छे तेमनी मोटाई न आवें त्यां सुधी ज्ञान भणया होय पण फरशज्ञान थयुं नथी;

फरश ज्ञान थयुं होय ते तो उपकारीनो उपकार जूले नहि, माटे कदापी उपकार जूली गयो होय तो याद करीने आत्मानी जूल सुधारवी, ने गुरु महाराजनी मोटाई चित्तमां लावीने विनय करवो ने आशातना टालवी, एज आत्माने हितकारी छे. वली गुरूने द्वादशावर्त वंदन करतां बत्रीश दोष लागे छे. ढपेला प्रवचन सारोद्धारमां पाना ३ए मां छे ते उपरथी लखुं छुं, माटे ते दोष टालीने गुरु वंदन करवुं.

१ अणाढा दोष कहे छे. आदर विना गुरुने वंदन करवुं, जेमके पोताने वंदन करवानो हरख नथी, पण एक कुल मरजादथी करवानी रीती छे, ते करवुं पण वंदन करवाथी महा-निर्जरा थशे, आवा महा पुरुषने वंदन करवानो मने वखत मळ्यो, एहवा जाव आवे नहि त्यां सुधी आदर थाय नहि, माटे महा हरख सहित अने आदर सहित वंदन करवुं के अणाढा दोष टली जाय. २ स्तब्ध दोष. तेमां ड्रव्यथी स्तब्ध ते, गुरु महाराजने वंदन करवानो जाव छे, पण शुल आदिक रोगनी पीमामां चित्त गुम थई जवाथी प्रफुल्लित चित्त थाय नही. जाव स्तब्ध ते ड्रव्य थकी क्रिया करे छे पण अंतरंगनो उपयोग बीलकुल वंदनमां नथी, ते जाव स्तब्ध कहीए, माटे ड्रव्यने जाव बे प्रकारे स्तब्धता टालवी. ३ प्रवीध दोष. ते जेम जाफुत प्राणीने कोई पण काम लगामथा छतां जामा उपर लक्ष राखी काम करे अने जेम तेम काम करीने चाल्यो जाय तेम वंदन करतां व्यवस्था रहित वंदन पुरु कर्या विना चाल्यो जाय ते. ४ सपींम दोष. ते आचार्य, उपाध्याय अने साधु सर्वेने एकठा वांदे तेनुं नाम सपींम दोष. ५ टोलक दोष-ते जेम तीम पक्षी अहीं तहीं फर्या करे ने स्थीर न रहे, तेम वंदन करतां आघो पाछो फर्या करे, तेने पांचमो टोलक दोष कहीए. ६ अंकुश दोष ते जेम महावत हाथीने अंकु-

श वस्ने पोतानी मरजी प्रमाणे फेरवे छे तेम गुरुने फेरवे. आचार्य ऊन्ना होय वा बेठा होय वा कोई कार्यमां होय, तेम छतां गुरुनुं कपमु पकमी आसन ऊपर बेसामीने वंदन करे ते. ७ कछपदोष ते वंदन करतां काचबानी पेरे आगल पाछल जोतां वांदे, एटले केवल गुरु महाराजमां ऊपयोग नहि ते कछप दोष. ८ मछ दोष ते मछ जेम स्थीर न रहे तेम शरीरनी अस्थीरताए वंदन करे; विचित्र प्रकारे शरीरने चलाचल करे. ए मनप्रदुष्ट दोष ते पोताने अर्थे अथवा बीजाने अर्थे गुरु द्वारे कार्य सिद्धि न थवाथी तेना मनमां द्वेष छतां वांदे ते. १० वेदीका बंध दोष ते बे हाथ घुटण ऊपर मुकीने वंदन करे वा बे हाथनी वचमां पोताना घुंटण राखी वांदे, एक घुंटण बे हाथनी वच्चे राखी वंदन करे, खोलामां हाथ राखीने वंदन करे. बेहु हाथ खोलामां राखे, ए पांच प्रकारे वेदीका दोष. ११ जय दोषः—वांदणुं देतां जय राखे जे नहीं वांदु तो गुरु महाराजने द्वेष थशे, ने मने कहामी मुकशे, एवा जयथी वांदवा ते जय दोष. १२ जजंत दोष ते बीजा साधुउ आचार्यने जजे छे ने हुं नहीं आवुं ते ठीक नहि, एवा विचारथी जजवुं ते जंजत दोष. १३ मित्र दोषः—गुरुने वांदीश तो गुरु साथे मित्रता थशे, एवुं धारीने वांदवा ते मित्र दोष. १४ गारव दोषः—मने समाचारी जाणवाथी लोक पंमीत कहेशे, वली वीनीत जाणशे, एवा हेतुए वंदन करवुं ते गारव दोष. १५ कारण दोषः—ते गुरु महाराजने वंदन करीश तो गुरु महाराज पासेथी कंबल वस्त्रादीक इछित मलशे. १६ स्तैन्यनामा दोष ते गुरुने छानोमानो वांदे प्रगट न वांदे कारण जे बधा देखतां वांदीश तो हुं एमनाथी नानो कहेवाईश, गुरुनी मोटाई थशे एवुं विचारी वंदन करे ते स्तैन्य कहेतां चोर दोष. १७ प्रत्यनीक दोष ते आहार पाणी गुरु करता होय ते वखते वंदन करे ते प्रत्यनीक दोष.

१८ रुष्ट दोषः—ते कषाए धम धमतो वंदन करे वली गुरुने कषाय उपजावे ते रुष्ट दोष. १९ तर्जीत दोष ते गुरु तो कोप पण करता नथी, तथा प्रसाद पण करता नथी, काष्टनी पुतली जेवा छे, वा आंगलीए मस्तके करी तर्जना करवी ते तर्जीत दोष. २० शठ दोष ते गुरुने वंदन करीश तो गुरु तथा श्रावक म्हारो विश्वास करशे, तो मारुं इछित थाशे. २१ हीलना दोष ते गुरुने कहे जे हे आर्य! हे जेष्ट! हे वाचक! हुं तने प्रणाम करुं छुं, एवी रीते हीलना करतो वांदे ते हीलना दोष. २२ कुंचीत दोष ते वंदन करतां वचमां विकथा करे. २३ अंतरीत दोष ते साधु प्रमुखने अंतरे रह्यो वांदे, वा अंधाराने विषे रही वांदे, एटले कोई देखे नहि एम वंदना करे. २४ व्यंग दोष ते गुरुनुं सन्मुखपणुं मुकीने डावी अथवा जमणी बाजुपर वांदे ते. २५ कर दोषः—जेम राजानो कर आपवानो होय तेम मनमां विचारे के जगवाने कह्युं छे तेथी वांदवा पडशे; ए वेठ छे ते उतारवी, एवुं धारी वांदे ते कर दोष. २६ मोचन दोष ते संसारना करथी मुकाया पण अरिहंतना करथी मुकाया नथी, तेथी वंदन करवुं पडशे एम विचारी वांदे. २७ आश्लिष्ट अनाश्लिष्ट दोष ते वंदन करतां रजोहरणने हाथथी फरसे पण हाथ मांथाने फरसे नहि, मस्तके फरसे पण रजोहरणे फरसे नहि, रजोहरणे हाथ न लगाडे ने मस्तके पण न लगाडे ते दोष. २८ न्यून दोष ते वंदनना अक्षर उंगा बोले, वा बहु उतावलपथी वंदन करी दे, तेथी अवनमनादिक उंगां करे वा करे नहि; प्रमादे करी जेम तेम करे तेमां जे न्यून थाय ते न्यूननामा दोष. २९ चूलिका दोष ते वंदन कर्या पछी मोटा शब्दे करीने "मछएण वंदामि" कहे ते चूलिका दोष. ३० मूक दोष ते-मूगानी पेठे मुखेथी शब्द बोल्या विना वांदे ते. ३१ ढढ्ढर दोष ते मोटा स्वरवडे वांदणांनु सूत्र उच्चार करे ते ढढ्ढर दोष. ३२ चूरु-

खिका दोष ते—रजोहरण झालीने आमुं अवलुं फेरवतो वांदे ते.

ए रीते ३२ दोष वंदनना टालीने गुरुने वंदन करवुं, ए विनय छे. गुरुनी आशातना करी विनय करवो ते योग्य नथी, माटे जेम बने तेम गुरुनी आशातना करवी नहि. गुरुनी निंदा करवाथी, हीलना करवाथी, गुरु ठलववाथी, गुरुने पीमा थाय एटले मन छुत्राय एवुं करवाथी ज्ञानावरणी कर्म बांधे, एम पहेला कर्मग्रंथमां कह्युं छे; माटे जेम गुरुनी आशातना न थाय एम वर्तवुं, ने जेटली मन वचन कायाए करी नक्ति थाय तेटली करवी, के जेथी ज्ञानावरणी कर्मनी निर्जरा थाय.

धर्मनो विनय ते—ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूप धर्म अंगीकार करवो ते. तेमां जेटलो जेटलो धर्म अंगीकार करवामां आवे तेटलो तेटलो विनय थाय. ज्ञान अंगीकार करवुं ते आत्मानो ज्ञान गुण छे ते गुण प्रगट करवो, वा प्रगट करवानां कारणो सेववां. ज्ञान एटले जाणवुं, माटे जे जे वर्तना थाय ते जाणी लेवी, पण तेमां राग द्वेष न करवो, एवी ज्ञान दशा बनाववाथी संपूर्ण केवलज्ञान प्रगट थाय छे. हवे एवी दशा नथी थई त्यां सुधी एवी दशा प्रगट थाय एवा गुरुनी पासे ज्ञान नणवुं, सांनलवुं, निर्णय करवो, शक्ति होय तो पोते वांचवुं, पोताने जेटलुं ज्ञान थयुं होय ते बीजाने नणाववुं, ए पण ज्ञाननो विनय छे. वली पुस्तक लखाववां, ज्ञानवंत पुरुषनो ने ज्ञान जे पुस्तक तेनो विनय करवो, वंदन नमनादीक करवुं, तथा पुस्तकनी संनाल राखवी, ज्ञानवृद्धि थवाना काममां द्रव्य होय ते अनुसारे खरचवुं, शरीरनी शक्तिथी ज्ञानवृद्धि थाय एहवी महेनत करवी, बीजाने पण ज्ञाननो विनय करवामां जोमवा, ए सर्वे ज्ञाननो विनय छे. तेमज दर्शननो विनय करवो ते ते सम्यक्त्व अंगीकार करवुं, शुद्ध श्रद्धा करवी, वीतरागना वचनमां शंका न करवी, ए-

वा श्रद्धावंत पुरुषनो साधु, साध्वी, श्रावक, श्रावीका तेमनो उचित विनय करवो के जेथी उत्तम पुरुषनी कृपा थाय ने कृपाथी आपणी श्रद्धामां कसर होय ते नीकली जाय, ने शुद्ध थाय. एनो विस्तार गुरु विनयमां लख्यो छे ते प्रमाणे करवुं.

चारित्रनो विनय ते—मुख्यपणे आत्मानो चारित्र गुण छे, जे आत्माने आत्म स्वभावमां स्थिर थवुं. जे विभावमां अनादि कालनो आत्मा स्थिर थयो छे त्यांथी पलटावीने पोताना गुणमां स्थिर थवुं. जेटलुं जेटलुं परभावनुं प्रवर्तन रोकाशे तेटलो तेटलो चारित्र गुण प्रगट थशे, एज चारित्रनो विनय छे. हवे एवा गुण प्रगट नथी थया ते प्रगट करवाने सारु पंच महाव्रतरूप चारित्र अंगिकार करवुं. ते न बनी शके तो श्रावके बार व्रतरुप देशविरति चारित्र अंगिकार करवुं, ए अंगिकार करवाथी अंतरंग चारित्र प्रगटशे. वली तेटली दशा लाववा सारु एवा सर्व चारित्रवंत तथा देश चारित्रवंतनो विनय करवो, तेनी संगत करवी के उत्तम पुरुषना संगथी उत्तमता आवे माटे चारित्रवंत पुरुषनो विनय शास्त्रमां विस्तारे कह्यो छे ते मुजब करवो, ते चारित्र विनय. तेमज तप धर्मनो विनय करवो एटले तप अंगिकार करवो तथा तपस्वीनो विनय करवो ते पण धर्मनो विनय छे.

ए रीते देव, गुरुने धर्मनो विनय करवो ते विनयनामा अभ्यंतर तप कह्यो.

वैयावच्च तप ते—गुणवंत पुरुष जे अरिहंत महाराज सिद्ध महाराज, आचार्य, उपाध्याय, तपस्वी, साधुजी, कुल, गण, संघ, नवदीक्षित, ग्लान (जे रोगी साधु) ए आदे पुरुषोनी वैयावच्च करवी. आहार, पाणी, वस्त्र, पात्र, रहेवाने मकान, संथारा विगेरे पाट पाटलादि धर्म उपगरण आदे वस्तु उत्तम पुरुषने हीतकारी जे जे जोईए ते ते आपवुं, वा बीजा पासे अपाववुं तथा पोते

जाते एवा उत्तम पुरुषनी पगचंपी विगेरे करवी, तथा एवा उत्तम पुरुषनी स्थापना होय ते मुर्तिनी भक्ति, नमन, विलेपनादिकथी करवी, ते पण वैयावच्च छे. आ उपर कहेला पुरुषो उपगारी छे. ते उपगारी पुरुषोए आत्माने कर्मथकी मुक्त थवानो उपाय बताव्यो छे, वली जेम जेम सेवा भक्ति करीशुं तेम तेम आपणामां योग्यता आवशे, अने तेम तेम गुरु विशेष बतावशे, तेथी विशेष बोध थशे, तेमज गुण प्रगट थवामां सहायकारी थशे. आ उपगार करनार पुरुषनी जेटली वैयावच्च करी तेटलो आत्मा सफल थाय छे; केमके उपगारीनो उपगार भूलवो एज मिथ्यात्व छे; ने मिथ्यात्व गया विना आत्मानुं काम थवानुं नथी, माटे जेटली जेटली वैयावच्च करीशुं तेटलुं तेटलुं मिथ्यात्व टलशे, ने समकित शुद्ध थशे. सम्यक्त्व शुद्ध थयुं एटलो आत्मगुण प्रगट्यो, माटे वैयावच्चरूप लाभ थवानो अंतराय तुट्यो नथी त्यां सुधी वैयावच्च करवानुं मन थशे नही, अने एम करतां मन थशे तो पण अंतरायना जोगथी एवा पुरुषनो जोग बनशे नही, जोग बनशे तो आलस विगेरे वचमां विघ्न आवशे ने वैयावच्च बनशे नहि, पण उद्यम करतां करतां अंतराय तुटशे माटे बनती शक्तिये वैयावच्च करवामां वीर्य फोरववुं, एज कल्याणकारी छे.

सद्धाय तप ते—सज्झाय ध्यान करवुं ते पांच प्रकारे छे. वाचना ते गुरु महाराज शास्त्र वाचना आपे तेथी गुरुने वाचना आपवारुप वाचना तप थाय, शिष्यने ते वाचना लेवाथी वाचना तप थाय; पृच्छना ते पोते भणेला होय तेमां शंका पडे ते गुरुने पुछीने तेनो यथार्थ निर्णय करवो ते पृच्छना कहीए, पण कोई पुरुषने खट्ट करवा पुछवुं नही, ने पुछे तो ते पृच्छना तप न कहोये. परावर्त्तना ते भणेलुं फरी संभारवुं के जेथी भूली न जवाय, तेम खोट पडे नही, माटे जे भण्या होय ते हमेश संभा-

रवुं, रोज संजारवानो वखत न मले तो आंतरे आंतरे पण संजारवुं, नवुं जणवुं थाय, ने जुनु जुली जवाय ते जाणी बुजीने ज्ञानने आवर्ण लागवानुं थाय, माटे जेम जणेलुं जुली न जवाय तेम करवुं जोईए. चोथी अनुप्रेक्षा ते जणेली वा सांजलेली वस्तुनो तत्त्व विचार करवो, अने वस्तुना परमार्थनो अनुजव गम्य निर्णय करवो, एमां वधारे अनुमान शक्ति होय तो थई शके ठे, ने जेणे जगवंतनां वचननो अनुजव गम्य-निर्णय कर्यो ठे, ते माणसने पढी शंका रहेती नथी, तेमज कुबुद्धिवाला तेनुं मन तत्त्वनिर्णयथी फेरवी शकता नथी, आ अनुप्रेक्षा सद्याय ध्यान जेने सम्यक्त्व प्राप्त थयुं होय तेज पुरुष करी शके ठे, ने एज करवानी जरुर ठे. अनुप्रेक्षा ज्ञानवालाने आत्मा अरूपी ठे तो पण ते साक्षात आत्मा देखतो होय एवो निर्धार थई जाय ठे. हरेक वांचीने विचार करवो तेज अनुप्रेक्षा ठे ने तेम कर्या विना वांचेला जणेलानुं फल बराबर मली शकतुं नथी, पण ज्यारे ज्ञानावर्णी कर्मनो क्षयोपसम थाय त्यारे बनी शके ठे. घणाये जणेला जोईए ठीए, क्रिया करता जोईए ठीए, पण आ शुं कह्युं, मारे शुं करवा केहेवुं ते जाणता नथी. आ क्रिया शुं करवा करी ते जाणता नथी, तेनुं कारण के निर्णय करवानी बुद्धि जागी नथी, पण ते बुद्धि जगाववानी जरुर ठे. डुनियामां कहेवत चाली ठे के जण्या पण गण्या नही, माटे तेम थवुं न जोईए. हरेक बाबतनो निर्णय करवानी बुद्धि राखवी. एवी बुद्धि जागी ठे तेथी हरेक वस्तु अनुजव गम्य करे ठे, ते अनुप्रेक्षा कहीये. एवा अनुजववाला पुरुषो धर्म उपदेश करे ठे, तेनुं नाम पांचमी धर्मकथा कहीये. धर्म कथा करवाथी परजीव संसारनी उपाधीथी मुकाय, विषय कषाय शान्त थाय, तत्त्वज्ञान थाय, पोतानुं आत्मतत्त्व प्रगट कर-

वानो कामी थाय, वा प्रगट करे, एहवो उपदेश देवो, वा वार्ता करवी, वा सांभळवी तेनुं नाम धर्मकथा कहीये. जे कथा तथा वार्ता करवाथी विषयनी वृद्धि थाय, तृष्णानी वृद्धि थाय, मोहनी वृद्धि थाय, हिंसा, जूठ, चोरी, प्रमुखनी वृद्धि थाय तेनुं नाम धर्म कथा न कहीये, पाप कथा कहीये. आ पांचे प्रकारना सज्झाय ध्याननुं नाम तो ज्ञान छे, एनुं नाम तप केम कह्युं ? एम शंका थाय तेनो परमार्थ तो प्रथम अभ्यंतर तपनुं वर्णन कर्युं छे, त्यां दर्शाव कर्यो छे तेनो लक्ष देवाथी समजाशे. वळी संदेज आ स्थळे पण दरशाव करुं छुं. तप कोनुं नाम छे ? कर्मने तपावे तेने तप कहीये, तो वांचना प्रमुख करवाथी महा अज्ञानरूप जे कर्म ते कर्मनो नाश थई जाय छे, नाश करवानी सन्मुखता थाय छे, वळी अज्ञानपणे कर्म खपतां नथी. ज्यारे ज्ञान दशा थाय त्यारेज कर्म खपे छे. बाह्य तप साथे पण ज्ञान होय तो कर्म खपे छे, तो ज्ञानमांज वर्त्ते तेमां कर्म खपे एमां कंई नवाई जेवुं नथी, माटे जेम बने तेम सज्झाय ध्यानमां काल काहाडवो, ए थकीज सर्व वस्तुनी प्राप्ति थशे.

हवे पांचमो ध्यान नामा तप, ते ध्यान कोने कहीये. मन, वचन, कायानी एकाग्रता जेमां थाय तेहने ध्यान कहीये. तेमां धन, कुटुंब, वेपारादिक पुद्गलीक पदार्थमां एकाग्रता थाय तेहने अशुभ ध्यान कहीए, ते तजवुं जोईए ते तो सदाकाल जीवने थई रह्युं छे, ते ध्यान छोडीने आत्म तत्त्वने विषे एकाग्रता करी तेमां लीनपणे वरतवुं ते ध्यान तपमां गवेष्युं छे. ते ध्यान घणा प्रकारनुं छे, तेमां मुख्य–धर्म ध्यान शुक्ल ध्यान कह्यां छे, ने जे ध्यान ध्यावबुं ते अभ्यंतर तप छे. एनुं स्वरुप माहारा करेला प्रश्नोत्तररत्नचिंतामणि नामा ग्रंथमां विस्तारे छे त्यांथी जोई लेवुं. अहींआं सामान्य प्रकारे कह्युं छे.

प्रथम धर्म ध्यान तेना चार पाया छे. पहेलो पायो आज्ञा विचय ते, परमात्मानी आज्ञानुं वीचारवुं, जेवी जेवी आज्ञा छे तेम वर्त्तवानुं भाववुं.

बीजो पायो अपाय विचय ते-आत्मानुं जे स्वरुप छे ते स्वरुप नथी वर्ततुं तेनुं कारण जे मिथ्यात्वादीक ते त्याग करवामां एकाग्रता करवी.

त्रीजो विपाक विचय ते-कर्मनुं स्वरूप विचारवुं कर्मथी मुकावववानुं विचारवुं.

चोथो संस्थान विचय ते-चौद राज लोकनुं स्वरूप विचारवुं. आ रीते धर्म ध्यान तेमज शुक्ल ध्यानना चार पाया नीचे प्रमाणे.

(१) प्रथक्त्व वितर्क सप्रविचार. (२) एकत्व वितर्क अप्रविचार. (३) सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती. (४) उछिन्न क्रिया निवृत्ति. ए शुक्ल ध्यानना चार पाया मध्येथी प्रथमना बे पाया केवल ज्ञान पामतां अगाउ प्रगट थाय छे, ने बीजा छेल्ला बे पाया केवल ज्ञान पाम्या पछी सिद्धि जवाना लगभग वखत प्राप्त थाय छे. पहेला पायामां. भेद ज्ञान थाय छे. बीजा पायामां अभेद ज्ञान थाय छे, त्रीजा पायामां बादर जोग रुंधाय छे अने चोथा पायामां सूक्ष्म जोग रुंधाय छे. एवी रीते वर्त्तना थाय छे.

आजना कालमां शुक्ल ध्यान तो थाय एम नथी, कारण के पूर्वनुं ज्ञान होय तेने थाय छे, पण हालमां धर्म ध्यान बनी शके छे. वली समाधि प्रमुख छे ते पण ध्यानने लगतां साधनो छे. ते समाधि छे ते हठ समाधि छे तेथी बाह्यनां घणां कारणो रोकाय छे; ने विषयथी विमुख थया वीना समाधि बनती नथी. ए कामनो अभ्यास करती वखतथी खाटा, खारा, तीखा विषय रूप स्वादनुं रोकाण करवुं जोईए छे, स्त्रीना विषयनो पण त्याग करवो जोईए छे तथा बाह्यनां गप्पां विगेरे नकामी वातो कर-

वानी तेनो पण त्याग करवो जोईए छे. ए आदी बधां कारणो रोकीने तथा श्वासोश्वास रोकीने एक परमात्म पदमां लीन थयो ने तेमांज उपयोग रहे छे माटे ए समाधि उत्तम छे. वली सहज समाधि थाय, ते तो बहु उत्तम छे. केमके सेहेजे बीजा जरू भावमां उपयोग रहेतो नथी, ने आत्मभाव स्थिर थई जाय छे, ए समाधी तो धर्म ध्यानना पेटामांज छे. वली केटलाएक अक्षरोनुं ध्यान करवानी रीत छे, ते पण योगशास्त्रमां हेमचंद्राचार्य महाराजे बतावी छे, ते उपरथी प्रश्नोत्तर रत्न चिंतामणिमां लखेली छे, तेथी अंहीयां विस्तार कर्यो नथी, पण मुक्तिनुं निकट साधन छे, माटे आत्मार्थीए ध्याननो लक्ष करवो बहुज उत्तम छे. जेम पाघडीने छेडे तोरो कसबनो शोभे छे, तेम सर्व धर्म साधनमां ध्यान छे ते तोरा रूप छे. माटे ते साधननो अभ्यास करवानी घणी जरुर छे, पण ध्यानने अटकावनार उपाधीनां कारणो छे; ते कारणो ज्यां सुधी छे त्यां सुधी सेहेज समाधी बनशे नहीं, केमके एकांते विचार करवामां ते कारणो याद आवशे एटले जे ध्यानमां स्थिर थवुं हशे तेमां थवाशे नहीं, माटे ध्यान करवानी इच्छावालाए जेम बने तेम बाह्यना कारणोनो त्याग करवो जोईए, ने घणा माणसनो परिचय पण त्याग करी एकांतमां मुख्यत्त्वे करीने रहेवुं जोईए. त्यारे ए ध्यान बनवुं सुगम पडे छे, अने विशुद्धता थया पछी तो एकांतनी पण जरुर पडती नथी. जे पुरुषनुं चित्त जरू भावथी खशी जाय छे, ने पोताना स्वभावमां स्थिर थई जाय छे, तेवा पुरुष तो सदाकाल जगतनो तमाशो जुवे छे. आत्मानो ज्ञान गुण छे ते जाणवानो छे, पण ज्यां सुधी मिथ्यात्व भाव गयो नथी त्यां सुधी राग द्वेष सहित जुवे छे, ने जे जे जुवे छे तेमां राग अथवा द्वेष बेमांथी एक थया विना रहेतो नथी, पण मिथ्यात्वनी वासनाज खशी

गई छे, ने जड अने चेतन बे पदार्थनुं यथार्थ ज्ञान थयुं छे, अने वस्तु धर्मनुं ज्ञान थयुं छे, तेना प्रभावे जे पदार्थनो जे स्वभाव छे ते जाणे छे, एटले पछी रागद्वेष थतो नथी; ए दशा पाम्या छे तेउने तो एकांत अने वस्ती बधुंए सरखुं छे. तेमने कंई ध्यान करवाने जूदुं स्थानक जोईतुं नथी. ए ध्यान तपनुं स्वरूप कह्युं.

छठो काउसगनामा तप. ते कायाने वोसरावीने एक स्थानमां रहेवुं ने जेटली वारनी स्थिरता होय तेटली वार प्रभुनुं स्मरण करवुं ते.

ए मुजब छ प्रकारनो अभ्यंतर तप कह्यो. बन्ने मलीने बारे प्रकारे तप कह्यो छे ते तपनो लाभांतराय मटवाथी तपना आचारनी प्राप्ति थाय छे, ते तपनो अंतराय शाथी थाय छे ? ज्यारे तप करतां कंई शरीर नरम पडे त्यारे माणसना मनमां एवुं आवे के तप कर्यो तेथी मने पीडा थई हवे तप नहीं करुं; आवो भाव आववाथी जीव तपनुं अंतराय कर्म बांधे छे तो फरी तप करवाना भाव थता नथी, पण खरुं कारण तो अशातावेदनी कर्म पूर्वे बांध्युं छे ते वेदनी कर्म उदय आवे छे, त्यारे शरीरे पीडा थाय छे. जेणे अशातावेदनी कर्म बांध्युं नथी ते तो घणो तप करे छे, पण तेने रोग अथवा पीडा थती नथी, माटे तप कर्यो छे ने कदापी शरीरे वेदनी थई, तो ज्ञानी पुरुष तो विचारे छे के में कोई जीवने तप करतां अंतराय कर्यो हशे के मने वेदनी कर्मनो उदय तपस्यामां आव्यो, तेथी तपस्यानी वृद्धि बनशे नही; हवे तो हुं वेदनी कर्म खपाववाने तत्पर थयो छुं, माटे वेदनी कर्म समभावे भोगववुं के फरी नवुं कर्म न बंधाय, एम समभावमां रहीने तपस्यामांथी चित्तने खसेडता नथी, तेवा पुरुषने तपनो अंतराय तुटे छे, ने तप्पाचारनो लाभ थाय छे.

अने जे एम भावे छे के तप करवाथी शरीरे पीडा थई ते

आकरां कर्म बांधे छे. तेना दाखला तरीके (छपेली अर्थ दीपिकाना पाना ७४ मामां रज्जाआर्या[1])नी कथा छे ते नीचे मुजबः--

भद्र आचार्यना गच्छमां पांचसो साधुजी अने बारसो साध्वि छे, तेमना गच्छमां एक कांजीनुं पाणी, बीजुं भातनुं ओसामण, त्रीजुं त्रण उकालानुं पाणी, ए त्रण जातनां पाणी सिवाय बीजुं कोई जातनुं पाणी वापरता नथी, एम करतां कर्म भोगे रज्जा साध्वीनुं शरीर गलत कोढे बगड्युं, ते वारे बीजी साध्वीओए कह्युं के दुक्कर दुक्कर ! एवुं सांभलीने रज्जा साध्वीए कह्युं के--ए शुं मने कहोछो ? ए प्रासुक पाणीए करीनेज मारुं शरीर बगड्युं छे. एवां साध्वीनां वचन सांभलीने बीजां साध्वीजीओना मनमां आव्युं जे आपणने पण प्रासुक पाणीथी गलत कोढ थशे एवी बीक लागी, तेथी विचारवा लाग्यां जे आपणे पण प्रासुक पाणी पीवुं नही; पण तेमां एक साध्वीजीना मनमां आव्युं जे हमणा अथवा पछी मारुं शरीर शडीने कडका थई जाय तो पण मारे तो उष्ण जलज पीवुं. उष्ण जल पीवाथी शरीरनो विनाश थाय नही, परंतु पूर्वभव कृत अशुभ कर्मना उदयथीज शरीरनो विनाश थाय छे, वा रोग थाय छे. एम विचार करी खेद करवा लाग्यां के धिक्कार होजो ए पापणीने के जे न बोलवा योग्य वचन ए साध्वी बोली जेथी पोते कर्मबंध कर्यो ? ने बीजाने कर्मबंधनी कारणीक थई; एम भावतां शुद्ध अध्यवसायनी गाथा चिंतवतां घाती कर्म नाश करीने केवल ज्ञान पाम्यां, ने केवल ज्ञानना प्रभावे सर्वे साध्वीओना संदेह टाल्या. पछी रज्जा आर्याने संदेह पूछ्यो जे एने शा थकी रोग थयो ते वारे केवली साध्वीए कह्युं के ए बाईए करोलीया सहित स्निग्ध आहार कर्यो तेना प्रभावे रक्त पीतनो रोग थयो. वली सचित्त

---

१ साध्वी.

पाणी लइने श्रावकनी दीकरीनुं मुख धोयुं तेथी शासन देवीए ए रज्जा साध्वी उपर क्रोधायमान थईने शीखामण आपवाने आहारनी मांहे कोढ रोग थाय तेवुं चुरण नाख्युं तेथी कोढ रोग थयो; पण प्रासुक पाणीथी कोढ रोग थयो नथी. आवुं केवल ज्ञानी साध्वीजीनुं वचन सांभळीने रज्जा साध्वीए कह्युं के, हे भगवती! मुजने आलोयण आपो के शुद्ध थाउं, तेवारे केवलज्ञानी साध्वीए कह्युं के तुं शुद्ध थाय एवुं कोई प्रायश्चित नथी, कारण के तें क्रुर वचन कह्यां तेथी निकाचित कर्मनो बंध थयो छे. ते कर्मे करीने कुष्ट, भगंदर, जलोदर, स्वास, अतीसार, कंठमाल आदी महा दुःखो अनंता भव सुधी तारे भोगववां पडशे. एवी रीते कहीने बीजां साध्वीजीने आलोयणा आपी, तेथी सर्वे साध्वीउ शुद्ध थयां. आ साध्वी घणा भव भ्रमण करशे, तो जेम पाणीनुं दूषण काढ्युं तेमज तपनुं दूषण समजवुं. दुख सुख सर्व कर्म आधीन छे, ने तेमज कर्म आधीनता विचारवाथी एक साध्वी केवल ज्ञान पाम्यां. एक साध्वीए कर्म विचार न करतां पाणीनुं दूषण चिंतव्युं ने निकाचित अशुभ कर्म उपार्जन कर्युं. माटे आ कथा सारी पेठे लक्षमां राखवी. तप छे ते तो कर्म खपावनार छे, तेने अज्ञानपणे अवळे रस्ते जोडवाथी अवळुं थाय छे, माटे तेम जीवे करवुं नहीं. शरीरना निर्बलपणाथी तप न थाय तो भाववुं जे मारुं तप अंतराय कर्म क्यारे तुटे के हुं तप करुं, एवी भावनाथी अंतराय कर्म तुटशे, अने तपाचारनो लाभ थशे ए रीते बार प्रकारे तपाचार कह्यो छे.

वीर्याचारनो अंतराय तुटवाथी वीर्याचारनो लाभ थाय, तेथी बीजा चारे आचारमां वीर्य फोरायमान थाय, तेथी जे जे धर्म करणी करे ते उत्साह सहित तथा हर्ष सहित करे, वेठरूप नहीं थाय, अने जेने वीर्यना लाभनो अंतराय होय, ते वीर्य श-

क्ति होय तो पण धर्म करणीमां वीर्य फोरवी न शके. धर्म क-
रणी करती वखत कहेशे जे महारामां शक्ति नथी ने संसारी
काम करवुं होय तेमां तत्पर थाय. जेम के तमासो जोवो होय
तो बे कलाक ऊभो रही तमासो जुवे, ने प्रतिक्रमण ऊभा ऊभा
करवुं कह्युं छे, तेम करवामां गलीयो बलद थई बेठां बेठां करे
के मारी शक्ति नथी, ने शास्त्रमां तो बेठा बेठा पडीक्कमणुं कर-
नारने आंबिलनुं प्रायश्चित कह्युं छे, ते जाणतां छतां पडिक्कमणुं
बेठा बेठा करे छे. गुरु कहे तो पण प्रमाद छोडे नही. गुरुने वंदन
करवुं, प्रभुने वंदन करवुं, खमासमण देवानां जेम कह्यां छे तेम
न देवां, देवां तो तेमां सत्तर जग्याए पुंजवानुं पोताने अंगे कह्युं छे
तेम पुंजवुं नही, पौषध सामायकमां ध्यान करवुं ते न करे, प-
डिक्कमणुं भणाववुं होय तो कहेशे जे बधुं माराथी भणावी नही
शकाय, एवी रीते प्रमाद करे. वली ज्ञान अभ्यास करवो होय
तो प्रमाद करे अने भणे नही, वांचे नही, वा कोई संभलावे तो
सांभले नही. ए सर्वे वीर्याचारना लाभना अंतरायनो उदय छे.
वली एवी रीते प्रमाद करवाथी अथवा बीजो धर्मनो उद्यम करतो
होय तेने रोकवाथी पण अंतराय कर्म नवुं बंधाय छे, तेमज दे-
रासर, धर्मशाला, स्वामीवत्सल, विद्याशालानां काम करवां होय
तेमां प्रमाद करे, अने संसारी काममां तत्पर थाय, ए पण अं-
तरायनांज फल छे, ने जेने अंतराय तुट्यो छे ते तो जे जे काममां
आत्मानुं कल्याण थाय, आत्मगुण प्रगटे, तेमां वीर्य फोरवे, अने
अति प्रसन्नताये जेम देवगुरुनो हुकम होय तेम धर्म करणी यथार्थ
करे, वीर्य शक्ति गोपवे नही, जे जे काम करवां छे तेमां मननी ब-
लीष्टतानी जरुर छे. तपस्या करवी ए दुक्कर काम छे, केमके तपस्यामां
शरीर थोडुं के घणुं नरम पड्या विना रहेतुं नथी, पण तपस्या
करवामां वीर्य शक्ति फोरायमान थाय छे तो तेथी मन बलीष्ट

रहे छे. तेथी कष्ट उपर लक्ष जतुं नथी. सुखे तप थाय छे, माटे मननी बलीष्टता होय तो जे जे तप करवो होय ते ते करी शकाय छे. मन जो निर्बल होय ने शरीर बलवान होय तो पण ते माणस तपस्या करी शकतो नथी; पण ए सर्व क्यारे थाय छे के वीर्याचारनो लाभांतराय तुट्यो होय तोज धर्म कार्यमां वीर्य फोरवी शकाय छे. कदापी वीर्य शक्ति होय पण ते संसारी कामंमां फोरवे छे, केमके धर्मकार्यना लाभनो अंतराय तुट्या विना धर्म कार्यमां वीर्य फोरवातुं नथी. हवे ए लाभांतराय सद्गुरुनी संगतथी तुटे छे, माटे प्रथम तो उत्तम पुरुषोनी संगत करवामां वीर्य फोरायमान करवुं जोईए, ते प्रथम तो घुणाक्षर न्याये थशे. जेम के केटलेक ठेकाणे लाकडामां अक्षर कोतरेला जोवामां आवे छे, पण ते मनुष्यना कोतरेला नथी, पण स्वाभाविक घुणा नामना जीवो लाकडामां उपजे छे, ने तेने योगे अक्षर जेवो आकार पडे छे, तेम सहेजे एवा पुरुषोनो भवितव्यताने योगे संजोग बने छे, ने कंई पण कारणसर जतां आवतां प्रथम तो बाह्यनी प्रीति थाय छे, पछी तेमनी अमृत जेवी वाणी सांभलतां जो मिथ्यात्व मार्ग आपे छे, तो विशेष प्रीति उत्पन्न थाय छे, अने एवी प्रीतिथी शीथील अंतराय होय तो ते तुटी जाय छे; वली संसारमां वीर्य फोरवतो होय त्यांथी प्ररावृतमान थई जाय छे, ने धर्ममां वीर्य फोरवाय छे, तेम तेम अभ्यासथी कर्म पण तुटे छे. एवी रीते वीर्याचारनी वृद्धि थाय छे. ते प्रमाणे वीर्याचारनुं स्वरूप कह्युं. आ पांच आचारमां जे जे आचारनो लाभांतराय तुटयो होय, ते आचारना लाभनी प्राप्ति थाय छे. संपूर्ण आचारनी प्राप्ति ज्यारे क्षायक भावे सर्व प्रकारे अंतराय कर्म तुटे त्यारे प्राप्त थाय छे, ने केवल ज्ञान पामे छे. तेनी पहेलां क्षयोपशम भावे अनुक्रमे बार गुण-

स्थानकनी प्राप्ति थाय छे, अने तेमां अनुक्रमे आचारनी वृद्धि पामे छे.

दान अने शील ए बेनुं स्वरूप कह्युं. हवे तप ते तपनुं स्वरूप तपाचारमां विस्तारे कह्युं छे, एटले अहींयां फरी दर्शाव करतो नथी.

चोथो भाव ते भाव पांच प्रकारे छे.

उपशम भाव, क्षयोपशम भाव, क्षायक भाव, परिणामिक भाव, ऊदयीक भाव, आ पांच भाव छे, तेना ५३ भेद छे. ते मारा करेला प्रश्नोतररत्नचिंतामणिमां पाना १४० मामां कहेला छे, त्यांथी जोई लेवुं. वली ए भावप्रकरणनामा ग्रंथ छे तेमां गुणस्थानमां फोरवेला छे तेमां जोवा. इहां तो नाम मात्र कर्मग्रंथना आधारथी तथा अनुयोगद्धार सूत्रमां पण एनो विस्तार छे ते सर्वे उपर लक्ष राखी लखुं छुं.

प्रथम उपशम भाव ते मिथ्यात्व तथा अनंतानुबंधी कषायनां दलीयां उदय आवेलां खपावे, उदय नथी आव्यां ते कर्मनां दलीयां उदीरणा करी उदय लावीने खपावे. उदीरणाथी पण उदय आवे नहीं, एवां कर्मने अध्यवसायनी विशुद्धिथी उदय नहीं आवे एवां करी मुके छे. हवे प्रथमना त्रणे भावमां कर्मनां दळीयां उदय आवेलां खपाववां, उदीरणा करी उदय लावी खपाववां, विशुद्धिथी उदय नहीं आववा योग्य करवां, उपसमाववां ए सर्वे बाबतोनुं थवुं कृत्रिम नथी, पण स्वभाविक आत्मानी विशुद्धताथी सेहेजे बनी जाय छे. खपवा जोग्य वीगेरे बाबतो आत्मानी विशुद्धि थवाथी थई जाय छे. परमात्माना बनावेला नव तत्वनी श्रद्धा थईने जड भाव उपरथी मोह जेम जेम उतरे छे, तेम तेम आत्म स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे, ने ते ज्ञानने प्रभावे आत्माना सुखनुं आस्वादन थाय छे, अने ते सुखनुं आस्वादन थवाथी धन कुटुंब स्त्री शरीर उपरथी मारापणानो

ममत्वभाव हठी जाय छे. शत्रु मित्र उपर पण समदृष्टी थई जाय छे. विषयथी उदास वृत्ति थाय छे, एवी विशुद्धि थवाथी मिथ्यात्व अनंतानुबंधीनो उपसम थाय छे, एटले अंतरंग शुद्धि थई जाय छे. आत्म विचार सिवाय बीजी वस्तु उपर राग थतो नथी. आत्मामां रमवुं ते सिवाय बीजुं सुख मनने रुचतुं नथी. मन अति निर्मल थई जाय छे, ते उपशम भावना समकितनो काल अंतर मुहूर्त्तनो छे. उपशम भावनुं चारित्र पण थाय छे, ते आठमाथी ते अगीआरमा गुणस्थानमां थाय छे. तेनो पण काल अंतर मुहूर्त्तनो छे, पछी उपशम चारित्र रहेतुं नथी. एटलीवार वीतराग दशाने पामे छे. राग द्वेष रहित थाय छे. एवा जे स्वभाविक विशुद्ध भाव ते उपशम भाव एवा पण शुद्ध भाव भव चक्रमां पांचवार थाय छे. एवा भावनी प्राप्ति लाभांतराय कर्मना क्षयोपशमथी थाय छे.

बीजो क्षयोपशम भाव ते पण जे जे कर्म उदय आव्यां छे ते खपावे छे, ने उदय नही आवेलां पण उदय आववा जेवां होय तेने उदीरणा करी उदयमां लावीने खपावे छे. जे उदीरणाथी पण उदय आवी शके नही, एवां छे तेने उपशमावे छे. एनुं नाम क्षयोपशम भाव. ए क्षयोपशम भाव चार कर्म (ज्ञानावरणी कर्म, दर्शनावरणी कर्म, मोहनी कर्म अने अंतराय कर्म)नो क्षयोपशम थवाथी आत्मानी विशुद्धि थाय छे; जेम वादलथी सूर्य ढंकायो होय छे ने जेम जेम वादल खसे छे, तेम तेम प्रकाश थतो जाय छे; ए रीते ज्ञानावरणी कर्मनां आवरण जेमं जेम खसतां जाय छे, तेम तेम ज्ञाननो प्रकाश विशेष उपयोग रूप थतो जाय छे, तेमज दर्शनावरणी कर्मना आवरण खसवाथी सामान्य उपयोगरूप दर्शन तेनो उपयोग निर्मल थाय छे. मोहनी कर्मनी बे प्रकृति छे. दर्शन मोहनी अने चारित्र

मोहनी. तेमां ज्यारे दर्शन मोहनीनो क्षयोपशम थाय त्यारे समकीत जे शुद्ध यथार्थ श्रद्धा थाय छे, अने तेने आवरण लागवाथी विपरीत श्रद्धा थाय छे, ते आवरण जेम जेम खसे छे तेम तेम शुद्ध श्रद्धा थाय छे. वस्तुनो निर्णय पण यथार्थ थाय छे. वली चारित्र मोहनीनो क्षयोपशम थवाथी इच्छाउ रोकाती जाय छे, कषायनी परिणति शांत थाय छे, विरति प्रमुखना भाव जागे छे, जे जे वस्तु त्याग करे छे तेना उपरथी इच्छा खशी जाय छे, अंशे अंशे आत्म भावमां स्थीरता थाय छे, यावत् पांचमा गुणस्थानथी ते दशमा गुणस्थान सुधी क्षयोपशम भावनुं चारित्र छे. ए रीते मोहनी कर्मनो क्षयोपशम थाय छे, त्यारे अंशे अंशे वीर्यादी शक्ति आत्मानी जागे छे. तेना प्रभावे आत्मानुं वीर्य आत्मधर्म प्रगट करवाना काममां फोरायमान थाय छे, मलीन क्षयोपशमथी शंसारी काममां शक्ति फोरवाय छे, ए रीते ज्यारे कर्मनो क्षयोपसम भाव थाय छे, ते क्षयोपसम शुद्ध थवाथीज आत्मानी परणती जागे छे अने ते जागवाथी जे जे धर्म करणी थाय छे ते भाव सहित थाय छे. पछी भावना भेद घणा छे संजमना असंख्याता स्थानक छे तेमांथी जेटलो जेटलो क्षयोपसम भाव थाय तेटलां संजमस्थानक प्रगट थाय छे. ए रीते अल्प मात्र क्षयोपशम भावनुं स्वरूप लख्युं.

क्षायक भाव ते तो कर्मनो बंध, कर्मनो उदय, कर्मनी सत्ता ए त्रणे प्रकारे कर्मनो नाश करे छे, ए क्षायक भावनुं प्रथम समकित ज्यारे प्राप्त थाय छे, त्यारे अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, समकितमोहनी, मिश्रमोहनी, मिथ्यात्वमोहनी ए साते प्रकृतिउ सत्ता, उदे अने बंधमांथी नाश पामे छे, त्यारे क्षायक भावनुं समकीत प्रगट थाय छे ने ते आवेलुं जतुं नथी, पण तेवी वीशुद्धि तो उपशम भाव तथा क्षयोपशम भाव ए बंने भावथी विशुद्ध छे. त्या-

स्वाद ज्यारे केवल ज्ञान पामवाना होय त्यारे ते पुरुष क्षपकश्रेणी एटले कर्म क्षपक करवानी पंक्ति, एक पछी बीजी प्रकृति खपावी अनुक्रमे चारे कर्मनो नाश करवो ते श्रेणी कोई चोथे, पांचमे, छठे, सातमे, आठमे गुणस्थानकथी करे, ते बारमा गुणस्थानक सुधी क्षायक भावथी कर्म खपावता जाय छे. क्षयोपशम भाव तो चलायमान थाय छे ने पाछां कर्म बंधाय छे. क्षायक भाव एटले जे कर्म खपाव्यां ते पाछां फरी बंधाय नहि. तेवी क्षायिक भावनी विशुद्धि छे. माटे हरेक प्रकारे क्षायक भाव थाय तो कल्याण थाय. क्षायक भाव चार कर्मनो नाश करे छे, त्यारे केवलज्ञान प्रगट थाय छे. आठ कर्म नाश थाय छे त्यारे कर्म रहित थईने सिद्धिने विषे बिराजमान थाय छे. फरी संसारमां जेनुं आववुं थतुंज नथी, एवा शुद्ध पदने पामे छे. ए त्रण प्रकारना भावमांथी जे कोई भाव प्रगट थाय ते ज्यारे ए भाव पामवानो लाभांतराय तुट्यो होय त्यारे प्रगट थाय, अने जेने ए गुण प्रगट थवानो लाभांतराय छे त्यां सुधी ए भावमांनो भाव प्रगट थशे नहि. जो एमांनो कोई पण भाव आव्या विना जे जे धर्म करणी करशे ते द्रव्य क्रिया छे अने ते द्रव्य क्रियाने प्रभावे पुन्य बांधशे. संसारी सुख पामशे, पण मुक्तिरूप महेलमां रमवानुं तेनाथी नहि बने. ज्यारे क्षायक भाव आवशे त्यारेज मुक्तिरूप स्त्रीने आलींगन करशे. क्षयोपशम भाव क्षायिक भावना कारणरुप छे तेथी पण कर्म नाश थशे ने उपसम भावथी पण कर्म क्षय थशे. ए बेमांथी एक पण भावनुं समकीत आववाथी मुक्ति तो निश्चे थशे ए भाव वालाने छेल्ले क्षायक भाव पण आववानो खरो, माटे ए भाव पण प्रगट थाय तो कल्याण थाय. ए त्रणे भावोमां समकीत पाम्या वीना पूर्व काले मेरु पर्वत जेटली होगा मुहपती धारण करी पण जीवने जे मुक्तिरूप कार्य करवुं हतुं ते थयुं नहि. वली ए

भाव विना शुभ भावथी पण जीव नव ग्रैवेयक सुधी जाय छे ने पुद्गलीक सुख भोगवे छे. माटे पुद्गलीक सुख भोगववाना भाव आवे, पण मुक्ति सुख भोगववाना भाव आववा दुःकर छे. हवे मुक्ति सुख भोगववारूप भाव आव्यो के नहि तेनी नक्की परीक्षा तो नहि थई शके, पण आत्मीक भाव आववावालानां लक्षण शास्त्रमां बताव्यां छे ते जोवाथी अनुमान थई शकशे.

आ त्रण भाव छे ते आत्माने निर्मल करनार छे. हवे चोथो उदयिक भाव छे, ते कर्मना उदयथी प्राप्त थाय छे, तेना एकवीश भेद छे. ए भावथी अशुभ कर्म बंधाय छे. ने आत्मा मलीन थई मीथ्यात्व, अज्ञान, कषाय, लेश्या, अव्रत ए सर्व थाय छे. ते भावनुं इहां प्रयोजन नथी. परिणामीक भाव छे, ते तो स्वभावीक छे, ते सुख के दुःख कंई करतो नथी. भावनी संपूर्ण प्राप्ति तेरमे गुणस्थाने आत्माने संपूर्ण लाभांतरायनो क्षय थयाथी थाय छे. ए प्राप्ति न थवानां कारण के, जीव पोताना अहंकारमां म्हाली आत्मीक गुण प्रगट करवानी इछा करतो नथी. ने जे जीव आत्माना गुण प्राप्त करवाने सनमुख थया छे तेमने रोके छे, तेमनी निंदा हीलना करे छे. एवा जीवो लाभांतराय कर्म बांधे छे. वली संसारमां धन वीगेरे कोई दातार कोईने आपतुं होय तेने आपवा न दे. लेनारनां दूषण छतां अछतां बतावीने तेने आपवामां अंतराय करे तेथी लाभांतराय कर्म उपार्जे. जेम भीखारी मुठी जुवार सारु घेर घेर फरे छे, पण लाभांतरायथी मली शकती नथी, तेवीज रीते जे माणस एवा माणसने आपतां अंतराय करे छे तेमने भीख मागतां पण लाभ मलशे नहि, माटे हरेक प्रकारे कोई पण जीव दुःखी होय तेने सुखी करवानी इछा करवी, ने जेटली शक्ति होय ते प्रमाणे तेने आपीने संतोष पमाडवो. वली बीजा आपणा मेलापीने कहेवाथी तेवुं

दुःख भांगतु होय तो तेने कहीने तेनी पासे अपाववुं. वली सुपात्र पुरुष विषे दाननो उत्साह धरवो ने आपवुं, जेथी लाभ मलवो बहु सुलभ थाय छे. एक राजा देखीए छीए ने एक रंक देखीए छीए ते फेर थवानुं कारण एटलुंज छे के तेणे पूर्व भवने विषे सुपात्रने देखीने दान दीधां छे तेथी मल्युं छे, ने जे जीव रंक फरे छे तेणे पाछले भव लाभांतराय कर्म बांध्युं छे, तेथी लाभ मलतो नथी. केटलीएक वखत दातारना भाव, आपवाना थया छे, तो पण लेनारे लाभांतराय कर्म बांध्युं छे, तेना प्रभावे लेवामां विघ्न आवे छे. ने लाभ मली शक्तो नथी ए लाभांतराय कर्मनुं फल छे; माटे जेम बने तेम लाभांतराय तूटे एम करवुं, पण नवो बंधाय एम न करवुं.

३. हवे त्रीजा भोगांतरायनुं स्वरूप लखुं छुं.

भोगांतराय कर्म जीव अनादीनो बांधतो आव्यो छे तेना प्रभावे आत्माना स्वभावमां रहेवुं ते रूप भोग भोगवी शकतो नथी, ते भोगांतराय कर्म बारमे गुणस्थानना अंतेज क्षय थाय छे, त्यारे सदाकाल आत्मानाज भोगने भोगवे छे, तेना सर्वथा प्रकारे भोग अंतरायनो त्याग थई जाय छे. केमके विभाव वासना रहेती नथी. इहां कोईने शंका थशे जे केवलज्ञानी महाराज समोसरणमां विराजमान थाय छे, देवकृत वीगेरे अतीशय प्राप्त थाय छे, आहार करे छे, सुंदर पवन वीगेरे आवे छे ए भोग छे के शुं छे? ते विषे जाणवुं जे तीर्थंकर महाराजे तीर्थंकर नाम कर्म बांध्युं छे ते पुन्यना प्रभावथी घणी वस्तुनी प्राप्ति थाय छे, पण तेमां भगवानने राग पण नथी ने द्वेष पण नथी. ज्ञानथी जाणे छे के शुभाशुभ कर्मनो उदय छे. ते उदयना प्रभावथी थाय छे. ते मात्र कर्म भोगवी लेवा रूप छे, ए वस्तुमां अंशमात्र पण राग नथी. फक्त चार कर्म रह्यां छे ते भोगवीने निर्जरावबा छे. माटे तिर्थं-

कर महाराजनो तथा केवलज्ञानी महाराजनो जे भोग छे ते भोग नहि जेवो छे अने छद्मस्थ जीवने जे जे पुद्गलना भोग करवा छे ते राग द्वेष सहित छे, तेमां तेमने कर्मबंधनुं कारण रह्युं छे. तेथी आत्मीक भोग भोगवी शक्ता नथी. आत्मीक भोग भोगववानो अंतराय कर्मनो उदय पण टाल्यो नथी, त्यांसुधी आत्मीक भोग भोगवी शक्ता नथी. संसारी जीवने रात दीवस भोगनी इच्छाउ एटली बधी छे के जे जे पदार्थों जगतमां रूपी देखे छे वा सांभले छे तेनी इच्छा थाय छे. पण ते पामवानुं अंतराय कर्म बांधेलुं छे एटले मली शक्ती नथी, अने जेने अंतराय कर्मनो क्षयोपसम थयो छे तेने ते मले छे, अने भोगवे छे. पण जो ते पर अतिराग धरे छे, ने अतिरागे भोगवे छे, तो तेथी पाछुं नवुं भोगनुं अंतराय कर्म बांधे छे, तेथी पाछ मलवामां हरकत आवशे. केवी रीते? के भोगनी वस्तु हाजर छे पण कृपणता आववाथी ते वस्तु भोगवी नहि शके, अथवा तो शोक पमशे,तेने बदले भोगवी शके नहि, अथवा रोग थशे ने वैद ते वस्तु खावानी मना करशे ने भोगवी शकशे नहि, वा हरकोई प्रकारनुं कारण आवशे, जेथी इच्छा छे, वस्तुछे,पण भोगांतराय कर्मना उदयथी भोगवी शकशे नहि. पण सम्यक् ज्ञानी पुरुषो छे ते पुरुषो तो एवा अंतराय आववाथी विचार करे छे के पूर्वे भोगांतराय कर्म बांध्युं छे ते उदय आव्युं छे, ते समभावे भोगवीश तो कर्म बंधाशे नहि. एवी भावना प्रगट थइ छे तेना प्रभावे ते तो भोगांतराय कर्मनी निर्जरा करे छे, नवुं बांधता नथी. ने जेने एहवी दशा नथी जागी, ते जीवो बीचारा बीजाने भोग भोगवतां जोई अनेक प्रकारनां कर्म बांधे छे ए अज्ञानतानां फल छे. आ भवमां भोग मलता नथी, ने वली भोग भोगववाना विकल्प करी नवां कर्म बांधे छे तेने आवते भवे पण भोग मलशे नहि, एवा जी-

वनो मनुष्य जन्म पामेलो व्यर्थ जाय छे. वर्तमान भव अने आवतो भव बंने भव बगडे छे. विकल्प करवाथी, कोईनी अदेखाई करवाथी, कांई भोग तो मलतो नथी. ने फोकट मात्र कर्म बांधी दुर्गति जवानुं थाय छे, जो के रामचंद्रजी बलदेव, अने लक्ष्मण वासुदेव जेवाने पण भोगांतरायथी वनवास रहेवुं पड्युं, पांडव जेवाने पण वनवास रहेवुं पड्युं, ब्रह्मदत्त चक्रवर्तिने पण अंतराय हतो त्यांसुधी न्हासता फरवुं पड्युं;माटे कर्मछे ते कोईने मुकतुं नथी. जे जे कर्म उदे आव्युं ते जीवने भोगव्या विना छुटको नथी. समभावे पण भोगववुं ने विकल्प करीने पण भोगववुं, तो समभावे भोगवाशे तो नवां कर्म नहि बंधाय. वली समभावना जोरथी शिथिल अंतराय कर्म हशे तो सहेजे नष्ट थई जशे तो आ भवमां पण भोग मलशे, ने आवते भवे पण सेहेजे भोग मलशे. वली जेम जेम विशुद्धि थशे तेम तेम बाहिर जडना भोगनी इछा खससे. ने पोताना आत्म स्वभाविक भोगनी इछा थशे, ने तेना साधन पण करशे, ने संसार छोडी संजम लेशे तेमां पण तप संजम रुडी रीते पाली आत्मज्ञान मेलवी आत्माना ध्यानमां वर्त्ति धर्म शुक्लध्यान पामशे, तेने पामीने सर्वथा अंतराय कर्म नाश करी केवलज्ञान पामशे. ते निज गुण भोगी थशे, त्यारे ज आत्मानुं कल्याण थशे. "उपभोगांतराय" ते जे जे वस्तु वारंवार भोगववामां आवे" ते उपभोग कहीए. घर, हाट, खाटला, पाटला, कोच, खुरशी, गादी, तकीआ, तलाई, पहेरवानां, उढवानां कपडां सोना रुपाना आभूषण, हीरा, माणेक, मोती, स्त्री प्रमुख सर्व वस्तुने पामवामां अंतराय कर्म बांध्युं होय, ते उदय आवे, त्यारे ए सर्व उपभोगना पदार्थ मली शके नहि. आ जीव अनादिना उपभोगांतराय बांध्या करे छे ने भोगव्या करे छे, ज्यारे जीव शुभ काम करे छे, शुद्ध अध्यवसाय थाय छे, त्यारे कांई अंतराय क-

र्मनो क्षयोपसम थाय छे, त्यारे तेटली वस्तु मले छे. धर्मनी वर्त्तना थया शिवाय कर्म तुटतुं नथी. वली ए अंतराय कर्म बंधाय छे शाथी? तेनुं समजवुं के अधर्म प्रवर्तिथी, अधर्ममां पण मुख्य कोई जीव उपभोगनी वस्तु कोईने आपतो होय, ते नही आपे एवी वातो करवी, वा तेने समजाववो के नहिं आप. वा आपनारनी हांसी मश्करी करवी, तेनी निंदा करवी, वा उपभोग करतो होय तेने बीजुं कांई काम सोंपी ते काममां भंग करवो, एवां कारण करवाथी, वा हिंसादीक काम करवाथी जे जे जीवना प्राण गया तेने आ भव संबंधी उपभोगांतराय थयो. एवी रीतनां काम करवाथी उपभोगांतराय कर्म जीव बांधे छे. माटे प्रथम उपभोगांतराय न बंधाय एवी जीवने वर्तना करवी, अने पछी पूर्वेना बांधेलां क्षय थाय तेवो उद्यम करवो. हवे ते उद्यम शो करवो ते जणावुं छुं. पूर्वे तीर्थंकर महाराजे जे जे उद्यम पोते कर्यो छे ते आगममां बताव्यो छे. जो बनी शके तो संजम लेवुं तेम बनी न शके तो श्रावक धर्म अंगीकार करवो, ते नहि बने तो सम्यक्त्व अंगीकार करवुं, ते नहिं बने तो मार्गानुसारीपणुं आरंभवुं, जेटलो धर्म अंगीकार करशे ते प्रमाणे तेना कर्म तुटशे. उपभोग बे प्रकारना छे. १ पुद्गलीक अने २ आत्मिक. ए बंनेना अंतराय छे, तेमां पुद्गलीक मलवा तो सेहेला छे पण आत्मीक मलवा दुःष्कर छे ने तेना साधन पण मलवा दुःष्कर छे अने ज्यां सुधी संसारी उपभोगनी लालसा छे त्यां सुधी आत्मीक भोग मलवानो नथी. माटे आत्मीक धर्म शुं छे ते जाणीने ज्यारे संसारी उपभोगनी इछा उछशे, त्यारे आत्मीक उपभोगनी इछा थशे, अने प्रगट करवानुं मन थशे. एनो उद्यम तप, संजम आदिकनो एवो छे के इछा तो आत्मीक भोगनी छे, पण संसारमां रह्या छो, त्यां सुधी पुद्गलीक अने

आत्मीक बंने उपभोग मलशे, अने पुद्गलीक भोगनी इछाथी ते नहि मले, पुद्गलीकज मलशे, अने आत्मीक उपभोगनो अंत-राय थशे, पोताना आत्मीक सुख छोडी जड सुखनी इछा करे एज विपरीत दशा छे; वली संसारीक उपभोग बांधीने जेम जेम आनंदीत थाय तेम तेम आत्मीक अने पुद्गलीक बंने उपभोगनो अंतराय थाय, माटे संसारी उपभोगमां आत्मार्थी जीवो आनं-दीत थता नथी, ने ते भोगनी इछा पण करता नथी. पुद्गलीक सुखने तो ज्यारथी जीव समकित पामे छे त्यारथी सुखरूप मा-नता नथी. पूर्वेनी पुण्यप्रकर्तीथी मल्युं छे ते समभावे भोगवी ले छे, पण तेमां राग धरता नथी एवी रीते तीर्थंकर महाराज विगेरे वर्त्तिने आत्मार्थीने वर्त्तवानी आज्ञा फरमावी गया छे, ते प्रमाणे वर्त्तवुं के जेथी प्रथम उपभोगांतरायनो क्षयोपशम थाय, ने पछी वधारे विशुद्धिथी क्षय थाय ने केवलज्ञानादीक पोता-नी आत्मीक रिद्धि प्रगट थाय, तेनाज उपभोग सदा अवस्थित थाय. उपभोगांतराय कर्म सत्ता बंध उदयथी क्षय थाय, त्यारे सहज स्वभावीक उपभोग थाय. जेनुं वर्णन करवा कोई शक्ति-मान थाय नहीं. पांचमुं वीर्यांतराय कर्म तेना प्रभावथी जीवनी अनंती वीर्य शक्ति छे. ते अवराई गई छे तेथी जीव आत्म वीर्य, फोरवी शक्तो नथी. वीर्यांतरायना क्षयोपशमथी बाल वीर्य अने बालपंडीत वीर्य ए बे वीर्य प्रगटे छे. तेमां बाल वीर्य प्र-गटे छे तेना प्रभावे संसारमां प्रवर्तवानी शक्ति आवे छे, संसारी काम करी शके छे. ए वीर्यनो क्षयोपशम पण विचित्र प्रकारे छे. जेमके कोई लडवामां वीर्य फोरवी शके छे, कोई वेपारमां वीर्य फोरवी शके छे, कोई विषयमां वीर्य फोरवी शके छे. कोई नाच-मां फोरवी शके छे, कोई गावामां फोरवी शके छे, कोई लखवा-मां फोरवी शके छे, एवा अनेक प्रकारनी जुदी जुदी वीर्य शक्ति

प्रगटे छे. तेमां जेने जे बाबतमां वधारे आवरण छे ते माणस ते बाबतमां वीर्य फोरवी शकतो नथी. जे काम संबंधी आवरण टळ्यां छे, ते काममां शक्ति फोरवी शके छे.हवे तेमां पण केटलाएक जीवो मद करे छे के मारा जेवो कोण बलवान छे. दश माणसने हुं एकलो मारी नांखु. एवो मद करीने वीर्यांतराय कर्म पाछुं बांधे छे, ते जीवने फरी एटली पण वीर्य शक्ति नहि प्रगटे. वळी जे जे कळामां जेनी शक्ति चाले छे ते ते बाबतनो मद अज्ञानी जीव करे छे, तेना प्रज्ञावथी वीर्यांतराय कर्म बंधाय छे; अने एवी रीते अनादिकालथी जीव वीर्यांतराय कर्म बांध्याज करे छे ने ते कर्म भोगव्या करे छे, पण ज्यारे जीवनी भवस्थिति परिपाक थाय छे त्यारे मोक्ष पामवानो नजीक वखत आवे छे, त्यारे सारी नीतिमां वर्तवा सत्संग सद्गुरु प्रमुखनो जोग थाय छे ने धर्म सांभळवानी जोगवाई मळे छे. ते सांभळवामां जीव वीर्य फोरवे छे अने ते ज्ञान ग्रहण करे छे. वीतरागना ज्ञान उपर प्रीति जागे छे अने धर्म सन्मुख थाय छे. संसारमां वीर्य फोरववानी बुद्धि ओछी थाय छे त्यारे धर्ममां बुद्धि फोरवाय छे अने सम्यक् गुण तथा श्रावकपणाना गुण प्रगट करवा उजमाळ थाय छे त्यारे वीर्यनो क्षयोपशम थाय छे. सम्यक्त्वपणामां तथा श्रावकपणामां जे जे छांडवा जोग छे ते ते छांडे छे, आदरवा जोग जे आत्म धर्म ते आदरवामां वीर्य फोरायमान थाय छे. श्रावकनां बार व्रत. श्रावकनी अगीयार पडीमा अंगीकार करे छे, ते पाळवामां वीर्य फोरवे छे, तपस्या प्रमुखमां पण वीर्य फोरवे छे अने क्षयोपशमथी जेटलुं वीर्य प्रगटयुं छे तेने अनुसारे धर्ममां वीर्य फोरवे छे, पण संजम पाळवा जेवो वीर्यनो क्षयोपशम नथी थयो त्यां सुधी संजम लेइ शकतो नथी, ने संजममां वीर्य फोरवी शकतो नथी; अने संसारमां रह्यो छे तेथी संसारमां वीर्य फोरवे छे माटे तेने

वाल पंमीत वीर्य कहीए. पंमीत वीर्य ज्यारे प्रगट थाय छे त्यारे तो पुद्गलीक सर्वे वस्तु उपरथी मोह उतरी जाय छे अने सर्वथा संसारथी नीकली एक आत्मगुण प्रगट करवामांज वीर्य फोरवे छे अने निजस्वन्नावीक सुखमांज वर्तवानो कामी बनी सर्वथा प्रकारे वीर्यांतराय कर्मनो क्षय करी केवलज्ञान केवल दर्शन प्रगट करे छे, तेमने वीर्यांतराय कर्म सत्ता, बंध, उदये, कोई रीते पण रहेतुं नथी. निज स्वन्नावमांज अनंत वीर्य गुण छे ते प्रगट थाय छे. न्नगवंते एवी रीते सर्वथा वीर्यांतराय कर्मनो क्षय करी आत्मीक गुण प्रगट कर्या अने मारो आत्मा तो वीर्यांतराय सहीतज रह्यो; माटे हे चेतन! जेम न्नगवंते वीर्यांतराय क्षय कर्युं तेमज क्षय करवाने तेउए बताव्युं छे माटे ते प्रमाणे हुं वर्तुं, एवी न्नावना लावीने आत्मगुण प्रगट करवानां कारणो (ज्ञान, दर्शन, चारित्र ने तप) उत्साह सहित मेलववां. उत्साहे धर्मकरणी सफल थाय छे अने वीर्यनां आवरण खपे छे. वीर्य फोरायमान थाय छे. जेम मुनि महाराज उत्साहे तप संजमादीक पाले छे, तो तेना प्रन्नावे अठावीश लब्धी उत्पन्न थाय छे, ते वीर्यांतरायना क्षयोपशमथी थाय छे, एम योगशास्त्रमां हेमचंद्र आचार्य कहे छे तेमज प्रवचन सारोद्धारना बालावबोधमां पाने ए३ए में अठावीश लब्धीउ वीर्यना क्षयोपशमथी थायछे ते बतावी छे तेम आ ग्रंथमां नीचे बतावुं छुं.

प्रथम आमर्षौषधि लब्धीः लब्धी शब्दे शक्ति जाणवी. आ लब्धी जे मुनिने प्रगट थई छे, तेना प्रन्नावे ते मुनि हाथनो फरस रोगीने करे के रोग नाश पामे, सर्वे रोगनी शांति थाय.

बीजी विप्रौषधीनामा लब्धी. तेना प्रन्नावे मुनिमहाराजनी विष्टाथी ने मूत्रथी पण रोगीना रोग शांत पामे छे. आ तपना प्रन्नावनी शक्ति छे.

त्रीजी खेलौषधिनामा लब्धी. तेना प्रभावे मुनिनुं श्लेष्म ते थकी रोगीना रोग जाय.

चोथी जलौषधिनामा लब्धी ते जे मुनिने उत्पन्न थई छे तेना प्रभावे दांतनो, काननो, नासिकानो, नेत्रनो, जीभनो अने शरीरनो जे मेल ते मेल सुगंधीदार होय अने ते मेलथी रोगीना रोग जाय.

पांचमी सर्वौषधीनामा लब्धी. जे लब्धीने प्रभावे लब्धीवंतना संग थएल नदीना पाणीथी सर्व रोग शांत थाय. लब्धिवंतने फरसेलो पवन जेहने फरसे तेना पण रोग जाय. वली ए पवनथी विषे करी मुर्छित थएला प्राणीनुं विष जाय तथा विष संयुक्त अन्न होय ते पण निर्विष थाय. वली लब्धीवंतना वचन सांभलवाथी वा तेनुं दरशन करवाथी पण रोग विष जाय ने नीरोगी थाय. आवी प्रबल आत्मानी वीर्य शक्ति तपस्याथी थाय छे.

छठी संभिन्नश्रोत लब्धी. ते लब्धीवालाने पांचे इंद्रीउना जुदा जुदा विषय छे ते छतां लब्धीना प्रभावथी एक इंद्रिये करी पांचे इंद्रियोना विषय ग्रहण करे एटले जाणी शके. जेमके आंखो जोवानुं काम करे छे पण बीजी चार इंद्रियोनुं काम करी शकती नथी, पण लब्धीवंतनी आंखो पांचे इंद्रीउनुं काम करी शके छे. ते रीते बधी इंद्रियोए समजवुं. वली चक्रवर्त्तिनी सेनाना कोलाहलना शब्द थई रह्या होय तेमां पण एकी वखत जे जे जातनो शब्द थतो होय ते सरवेने जुदा जुदा जाणी शके.

सातमी अवधीज्ञान लब्धी. तेना प्रभावथी इंद्रीयोना बल सिवाय रूपी पदार्थनुं ज्ञान आत्माथी करी शके छे. नजरे जोवानी जरुर पडती नथी.

आठमी ऋजुमती मनःपर्यव लब्धी. ते उपजवाथी अढी द्वी-

मां न्यून संज्ञी पंचेंडीना मनना चिंतवेला जावने सामान्य जाणे. पण घट चिंतवेलाना ड्रव्य खेत्र, काल, जावथी विशेषे न जाणे.

नवमी विपुलमती मनःपर्यव ज्ञान लब्धी. ते लब्धीथी अढी द्वीपना संज्ञीना मनना चिंतवेला ड्रव्य क्षेत्र काल जाव सरवे जाणे ने तद्भव मुक्ति पामे.

दशमी चारणनामा लब्वी. ते वीद्याचारण तथा जंघाचारण लब्धी; ए लब्धीने प्रजावे आकाश मार्गे जइ शके. तेमां विद्याचारण लब्धी विद्याना वलथी प्राप्त थाय वे ते लब्धीवंतने धीरे धीरे लब्धी वधे वे, तेथी पोताना स्थानथी प्रथम उतपाते मनुष्योत्तर पर्वते जाय वे, ने बीजे उतपाते आठमा नंदीश्वर द्वीपे जाय वे, अने त्यांथी पाठा आवतां एकज उतपाते पोताना स्थानके आवे वे; अने जंघाचारण लब्धी तपस्या तथा शुद्ध चारित्र पालवाथी उत्पन्न थाय वे. ए लब्धीवंतने प्रथम शक्ति वधे वे. पठी आवतां घटे वे. पहेले उतपाते तेरमा रुचकद्वीपे जाय वे. आवतां शक्ति घटे वे तेथी आवतां पहेले उतपाते नंदीश्वरद्वीपे जाय वे. तीहां वीसामो लइ बीजा उतपाते पोताना स्थानके जाय वे, आ लब्धीनो महिमा वे. वली ए लब्धिवाला मुनियो प्रतिमा वांदे वे ते वावत जगवती सूत्रमां वे.

अगीयारमी आसीविष लब्धी. ते लब्धीना प्रजावे श्राप दे ते तेम थई शके.

वारमी केवलज्ञान लब्धी. जेथी सर्वे जाव जाणे.

तेरमी गणधर लब्धी. जेथी तीर्थंकर महाराज त्रीपदी कहे एटले द्वादशांगीनुं ज्ञान थई जाय अने जगवानने पाटे तेज पटोधर थाय.

चनदमी पूर्वधर लब्धि. जेथी पूर्वधर पदवी पामे.

पंदरमी तीर्थंकर लब्धी. जेथी तीर्थंकर पदवी पामे.

सोळमी चक्रवर्त्तीनी लब्धी. जेथी छ खंमनो स्वामी थाय.

सत्तरमी बलदेवनी लब्धी.

अढारमी वासुदेवनी लब्धी. जेथी त्रण खंमनुं राज करे.

उगणीशमी खीराश्रव लब्धी. ते खीराश्रव लब्धीना प्रभावे वचन बोले ते दूध जेवुं लागे, तथा मध्वाश्रव लब्धी तेना प्रभावे ए पुरुषनुं वचन साकर जेवुं मीठुं लागे.

वीशमी कोष्ट बुद्धि लब्धी. तेना प्रभावे जे जे परोपदेशे सूत्र अर्थ धार्या छे तेनुं विसरी जवुं थाय नहि, वगर संभार्ये पण याद रहे ए लब्धीनो प्रभाव छे.

एकवीशमी पदानुसारीणी लब्धी. ए लब्धीना प्रभावथी आखा श्लोकनुं एक पद आगलुं वा पाछलुं जाणवामां आवे तो बीजा त्रणे पदनुं ज्ञान थाय. जेम अभय कुमार प्रधान भगवानने वांदीने आवता हता ने विद्याधर आकाशे चमतो पमतो हतो, त्यारे अभयकुमारे पूछयुं के केम आकाशे उमातुं नथी? त्यारे कह्युं जे विद्यानुं एक पद जतुं रह्युं छे. पछी अभयकुमारे कह्युं जे विद्यानो पाठ बोलो. ते पाठ बोल्यो एटले खुटतुं पद पोते पूर्ण करी आप्युं. पोते प्रथम भणेला पण नहि हता, तो पण पोते पदानुसारीणी लब्धीना प्रभावथी पद पूर्ण कर्युं अने विद्याधर आकाश मार्गे चाल्यो गयो. आ लब्धीनो प्रभाव जाणवो.

बावीशमी बीजबुद्धि नामा लब्धी. ते बुद्धिना प्रभावथी जेम बीज एक वावे छे ने घणा दाणा उत्पन्न थाय छे, तेमज ज्ञानावरणी कर्मना क्षयोपशमथी एक अर्थरूप बीजने सांभलवे घणा अर्थनुं ज्ञान थाय. जेम गणधर महाराजने भगवाने त्रीपदी कही एटले उतपात व्यय-ध्रुव ए त्रण पद सांभली आखी द्वादशांगीनुं ज्ञान थयुं तेम ए लब्धीथी ज्ञान थाय. पदानुसारीणीमां एक पद जाणवाथी बीजा पदोनुं ज्ञान थाय अने बीज बुद्धिना-

ज्ञाने एक पदार्थनुं ज्ञान थाय तो तेथी घणा पदार्थनुं ज्ञान थाय आ फेर ठे. .

तेवीशमी तेजोलेश्या लब्धी. तेना प्रन्नावथी कोई जीव ठ-पर खेदआवेने तेजुलेश्या मुके तो सामा जीवने वालीने न्नस्म करे.

चोवीशमी आहारक लब्धी.तेना प्रन्नावे आहारकशरीर मुंम हाथ प्रमाणे करी श्रीसीमंधर स्वामी पासे वा वीचरता तीर्थंकर पासे पूठवा मोकले ने ते जवाब एटली शिघ्रताथी आपे के वा-ख्यान करता होय तेमां संशय पमे तो ते न्नगवान्ने पूठी आवे ने तेनी अंदर कहेवामां आवे ए आहारक लब्धीनो प्रन्नाव ठे.

पचीशमी शीतलेश्यानामा लब्धी. ए लब्धीना प्रन्नावथी कोईये तेजोलेश्या मुकी ठे तेना उपर शीतलेश्या मुकी शीतल करे. ने तेजोलेश्या हणाइ जाय.

ठवीशमी वैक्रिय लब्धी. तेना प्रन्नावे पोतानुं शरीर नानुं मोटुं जेवुं करवुं होय तेवुं करी शके. देवताने न्नव प्रत्ययी होय अने मुनिने तप चारित्रना प्रन्नावथी थाय ठे.

सत्तावीशमी अक्षीण माहानसी लब्धी. तेना प्रन्नावे अल्प वस्तु होय, जेमां एक माणस जमी शके एटलो पदार्थ होय तेमां हजारो माणस जमी शके. जेम गौतम स्वामी महाराज एक पमघो खीरनो लाव्या तेमां पंदरसें तापसने जमाम्या ए ल-ब्धीनो प्रन्नाव.

अठावीशमी पुलाक लब्धी. तेना प्रन्नावे कोई संघनुं कार्य होय तो चक्रवर्तीने पण चुरण करी नाखे.

आ मुख्यपणे अठावीश लब्धी कही ठे. वली बीजी पण तपना प्रन्नावथी लब्धीउ थाय ठे. प्रकृष्ट ज्ञानावरणी वीर्यांतराय-ना क्षयोपशमे करी समस्त श्रुत समुह एक अंतर मुहूर्त्तमां अ-वगाहे तेने विषे जेनुं मन होय ते मनोबल लब्धी कहीये. तेमज

अंतरमुहूर्त्तमां सर्व श्रुतनो विचार करवानी जे शक्ति तेणे करी जे सहित होय, वली पद वचन अलंकार सहित वचनने ऊंचे स्वरे नीरंतर बोलतां थकां पण तेनो घांटो रही जाय नहिं. ते वचन बल लब्धी, तेमज वीर्यांतरायना क्षयोपशमथी प्रगटपणे थयुं जे बल तेथी बाहुबल वरस दीवस सुधी काउस्सग्गे रह्या तो पण शरीर थाकयुं नहिं, तेम ए लब्धीवंत कायबल लब्धीना प्रभावथी थाके नहिं, ते कायबललब्धी. तेमज घणा कर्मोना क्षयोपशमथी प्रज्ञानो प्रकर्ष होय. जेथी चउद पूर्व भण्या विना पण कठण विचारोने विषे निपुण बुद्धि होय, अने तेने यथार्थ विचार थाय. ए आदे घणा प्रकारनी लब्धीउ योग शास्त्रमां हेमचंद्र आचार्य महाराजे दर्शावी छे. हालमां इंग्लांड, अमेरिका तथा जरमनीमां घणा युरोपियनो योग शास्त्र वांचे छे ने हेमचंद्र आचार्यने सर्वज्ञनु बिरुद आपे छे ए पण ज्ञाननो क्षयोपशम छे. वली हेमचंद्र आचार्य पण एक वखत कुमारपाल राजर्षिनी सभामां त्रण बाजठ मुकी तेना उपर बेशी देशना देता हता. राजानुं आववुं थयुं त्यारे बाजठ काढी नांखी अधर बेशीने धर्म देशना दीधी. आ पण योग साधननी शक्ति छे एवी अनेक प्रकारनी शक्तिउ वीर्यांतरायना क्षयोपशमथी थाय छे, ने ते शक्तिउ आत्माना हितना काममां वापरे. उपगार अर्थे वा शासन उन्नत्ति अर्थे फोरवे छे. पूर्ण वीर्यांतरायनो क्षय थाय छे, त्यारे पूर्ण वीर्य प्रगटे छे; तेने केवल ज्ञान प्रगटे छे. जेथी सर्व लोकना भाव एक समये जाणे छे. अतीत, अनागत अने वर्त्तमानना भाव पण जाणे छे. आवी आत्मानी पूर्ण शक्ति जागे छे, माटे हरेक प्रकारे वीर्यांतरायनो क्षयोपशम वा क्षय थाय एवो उद्यम करवो. वीर्यनी रीत एवी छे के अभ्यास करतां करतां वीर्य फोरायमान थाय छे, माटे वीर्य फोरववानो हमेशा अभ्यास करवो. एक माणसने त्या

गाय विआइ. तेनुं वाछरुं तेणे रोज एक वखत माल उपर लइने चडवा मांड्युं. एम रोज अभ्यास करवाथी बलद थयो तो ते पण उपाडीने चडवानी शक्ति थई तेम अभ्यास करवाथी शक्ति वधे छे. तप, संयम अने ज्ञाननो अभ्यास हमेश करवो, के वीर्यांतरायनो क्षयोपशम थशे, ने वीर्य वृद्धि पामशे अने जे जीव संसारमां वीर्य फोरवशे, ने धर्मना काममां प्रमाद करशे, तो वीर्यांतराय कर्म नवुं बांधशे ने आ भवमां वीर्य छे तेटलुं पण आवता भवमां मली शकशे नहि, अने अनादि कालनुं वीर्यांतराय बांधेलुं छे तेथीज आत्माना गुण प्रगट थता नथी, ते मोटो दोष छे. ए रीते पांचे प्रकारनां अंतराय कर्म भगवंते क्षय करी पोताना आत्मगुण प्रगट कर्या छे, ने आपणा जीवे तेवो उद्यम न कर्यो तेथी अनादिनो संसारमां रोलाय छे, अने जन्म मरणनां दुःख भोगवे छे ते दुःखथी मुकावा सारु भगवंतनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्तवुं के जेथी आत्माना गुण प्रगट थाय. ए रीते पांच दूषण कह्यां.

छठु हास्यनामा दूषण तेथी रहित भगवान छे अने संसारी जीव ए दूषणे सहित छे. ए सेववाथी अनादिकालनो जीव संसारमां रोलाय छे, अने ज्यां सुधी हास्यथी मुकाशे नहि त्यां सुधी आत्मानुं काम थवानुं नथी. हास्य थकी संसारमां पण केटलां दुःख छे ते सघला माणस जाणे छे, तो पण जागृत करवा लखुं छुं. केटली एक वखत हास्य करवाथी पोतानां भाचां दुःखे छे. हास्यने रोकवा मागे छे तो रोकी शकातुं नथी. वली जेनुं हांसुं करीए ते वखते मुखे न बोले पण अंतरमां तेने केटलुं दुःख थाय छे! ते जो माणस पोते विचार करे के मारी हांसी करे छे, ते वखत मने अंतरंगमां केटलुं दुःख थाय छे? तेवी रीते सामा धणीने पण दुःख थाय माटे परने दुःख देवुं तेथी वधारे बुराइ शी

छे? वली ते माणस जोरावर होय तो लमाई उत्नी थाय अने मा-
रामारी वा गालागाली थाय तेथी नवुं वेर बंधाय. आ दुःख प्रत्य-
क्ष छे. वली जेटली वार हास्यमां प्रवर्त्तीयें एटली वार सात आठ
कर्मनो बंध थाय, ते उदय आवे त्यारे तेनां दुःख जोगववां पमे छे.
जेमके कुमारपाल राजानी बेहेन तेमना जर्तारनी साथे सोकटां
बाजी रमतां हतां तेमां सोकटी मारतां एटलुं बोलवुं थयुं के
कुमारपालना मुंमीआने मार, तेथी कुमारपालनी बेहेनने रीस
चढी, ते रीसाइ कुमारपालने त्यां आवी, ने कुमारपालने ह-
कीकत कही ते उपरथी कुमारपाल राजाने रीस चढी के म्हारा
गुरुजीने आवुं कह्युं, माटे जे जीज्ञे बोल्यो छे ते जीज्ञ कढावुं
त्यारे छोकुं. एम विचारी युद्ध कर्युं ने बनेवीने हराव्या. छेवट प्र-
धानोए समजाव्या त्यारे जीज्ञ काढवी रहेवा देई जामानी पा-
छल जीज्ञनो आकार काढवो उराव्यो. ए विना पण हास्यथी
केटलुंएक नुकशान छे. हास्य करवानी टेववाला लोकमां मश्क-
रा कहेवाय छे. वली आत्म स्वरूपनो विचार करतां ए आत्म
गुणथी विपरीत प्रवृत्ति छे. ए प्रवृत्तिमां वर्तवाथी आत्मा मलीन
थाय छे. वली आत्मा निर्मल करवानां कारण व्रतादीक तेमां
अनर्थ दंम व्रतनां दूषण आवे. माटे जेम बने तेम आत्मा नि-
र्मल करवावालाने हांसीथी मुक्त रहेवुं, के जेथी आत्मा निर्मल
थवानो उद्यम थाय. सर्व हास्य मोहनीनो क्षय जगवाने कर्यो छे
ते दशाने पामीए एवो उद्यम करवो.

६ रतिनामा दूषण; ते दरेक पुद्गलीक पदार्थने विषे जेने
अनुकुल मले तेमां राजी थवुं, प्रतिकुल मले तेमां दीलगीर थवुं
ए अनादिनो जीवने जमनी संगतथी अज्यास छे, तेथी जीव
तेवी रीते वर्ते छे, अने कर्मबंध करे छे, अने तेज कर्मबंधथी अ-
नादिनो जीव जन्म मरणनां दुःख जोगवे छे. जे जे पदार्थने

जीव अनुकुल माने छे तेज अज्ञानता छे, कारण जे जे जम प-
दार्थ छे ते विनाशी छे, आत्मा अविनाशी छे, ते आत्मा अने जम,
बंने ज्ञीन्न पदार्थ थया तो ज्ञीन्न पदार्थने पोताना मानवा
एज मूढता छे. वली जे वस्तु जोई रति करे छे, ते वस्तु सदा-
काल रहेवी नथी. केटलाएक खावाना पदार्थ छे ते खावामां रति
करे छे, पण तेज पदार्थथी पुद्गलने उपाधी थाय छे, ने रोग थाय
छे, ने कर्मबंध थाय ते तो जूदो. एवीज रीते आज्ञूषण पहेरीने
खुशी थाय छे, पण शरीरने ज्ञार लागे छे तेनो विचार नथी क-
रता, ए अज्ञानतानां फल छे. कुटुंबना संजोगथी राजी थाय छे,
पण एज माणसनी इछा प्रमाणे नहि वर्ताय तो शत्रुपणुं करशे
तो एवा अनित्य स्नेहथी राजी थवुं ते मूढता छे, तेमज धन छे
ते जोई राजी थाय छे, पण ए धन केटला काल थीर रहेशे तेनो
लक्ष करशे तो रति नहि थाय, केमके धन आपणुं केटली वखत
गयुं ने आव्युं. वली कदापी कोई माणसनुं हाल गएलुं न होय
तो बीजा केटलाएकनुं गएलुं जोवामां आवे छे, ते जोईए छीए.
माटे एना स्वज्ञाव उपर लक्ष देवो जोईए. अथिर पदार्थ उपर
राजी थशे ने ते ज्यारे नष्ट थई जशे त्यारे दीलगीर थवुंज पमशे;
ने जे माणस धनना स्वज्ञाव उपर लक्ष देशे ते राजी नहीं थाय,
अने तेथी ज्यारे जशे त्यारे तेने दीलगीर थवुं नहीं पमशे. धनने
आपणे मुकीने जईशुं, वा धन आपणने मुकीने जशे आ धननो
स्वज्ञाव छे, माटे जे ज्ञानी पुरुषो छे ते धननो त्याग करी संजम
ले छे. संजम लइने धन कुटुंबादीक पदार्थनो त्याग करे छे; वली
शरीरमां रहे छे पण शरीरने मारुं जाणता नथी. तेथी शरीरना
सुख दुःखमां रति अरति नथी करता, तेमज वस्त्रादीक धर्म उपगर-
ण पुस्तकादीमां पण रति अरति न धरतां, एक पोताना आत्म
तत्त्वमां रमी, रति मोहनीनो नाश करी पोताना आत्माना गुण

प्रगट करे छे, अने अनुक्रमे सिद्ध सुखने न्नोगवे छे, तेमज आत्मार्थीए रति मोहनीनो नाश करवो एज कल्याणकारी छे.

४ अरति मोहनी, ते पण रति प्रमाणे छे, माटे आ जगोए जूदो विस्तार नथी लखतो. जेम रति सारु तेमज अरति सारु पण एमज विचार करी कोई रीते पण अरति न करवी. जे जे अरतिनां कारण मळे छे ते ते जरु पदार्थ छे, अने पूर्व न्नवे विषय कषाय तथा अरतिमां वर्तवाथीज कर्म बांधेलां छे, तेथी अरतिनां कारण उत्पन्न थयां छे. हवे ज्ञानी पुरुषोए तो कर्मनुं स्वरूप जाएयुं छे, तेथी जाणे छे जे पूर्व न्नवे अशुन्न कर्म बांध्यां छे, तेथी अरतिनां कारण मळ्यां छे, पाछो विकल्प करीश तो एथी पण आकरां कर्म बंधाशे, ने अरति उत्पन्न थशे. जेम कोईनुं देवुं होय ने ते नहि आपीए तो ते फरियाद करे तो वधारे डुःख न्नोगववुं परुे. माटे जे अशाता वगेरे डुःखनां कारण उत्पन्न थयां छे ते समन्नावे न्नोगववां, एवो विचार करी समन्नावमां रहे छे, ने तेथी वधारे विशुद्धि थाय छे, ने अरति मोहनीनो नाश करी पोताना आत्मस्वन्नाविक गुण प्रगट करे छे, तेज न्नगवान् थाय छे, अने तेवीज रीते थयेला छे; अने जेवी रीते न्नगवान् वर्त्त्या तेवीज रीते जे आत्मार्थी पुरुष वर्त्तशे ते न्नगवान् थशे अने अरति नाश थशे.

५ न्नयनामा दोप. ए न्नय सात प्रकारे छे. आलोक न्नय, परलोक न्नय, आदान न्नय, अकस्मात् न्नय, आजीविका न्नय, मरण न्नय, अपकीर्त्ति न्नय, ए सात न्नयथीज न्नयन्नित संसारी जीव सदा रहे छे, अने परमात्माए तो पोते पोताना आत्मानुं स्वरूप जाएयुं छे के आत्मा अरूपी छे. आत्मानो विनाश थवानो नथी, तेथी कोई प्रकारनो न्नय राख्यो नहि, तेथीज पोतानुं आत्मपद पाम्या छे. हवे संसारी जीव सात प्रकारनो न्नय धा-

रण करी रह्या छे. आलोक भय एटले जे जीव जे गतिमां होय तेज गतिना बीजा जीवोथी भय ते आ लोक भय, जेमके पोते मनुष्य छे तो बीजा सरवे मनुष्य आ लोक गणवा.

बीजा मनुष्य मने मारशे, वा मारी नांखशे, वा झेर देशे, शस्त्र मारशे, वा मंत्रथी मारशे, वा मने रोग उत्पन्न करशे, एवी रीतना भय धारण करवा ते मनुष्यने आ लोक भय जाणवो. ए भय जीव अज्ञानपणे करे छे. जो ज्ञान थयुं होय तो समजाय के आत्मा अविनाशी छे. विनाश थशे तो पुद्गलनो थशे, ते पुद्गल मारुं नथी, तो मारे शी बाबतनो भय करवो? बीजी रीते पुद्गलनी स्थिति तथा विनाश पण कर्मना उदय प्रमाणे बनवानुं छे, माटे भय शी बाबत करवो. वली संसारमां पण जे माणस भयभीत थाय छे तेनाथी उद्यम बनी शकतो नथी, ने भयनां कारण हठावी शकतो नथी, पण जेनुं वीर्य फोरायमान थयुं छे ते वीर्यना बलथी हींमत राखी पोतानो आत्म धर्म साधी शके छे. माटे उद्यम करी जेम बने तेम भय संज्ञा हठाववी, केमके उद्यमथी हठी शके छे. आठ दृष्टीमां बीजी दृष्टी प्रगटे छे त्यारे चार संज्ञानो विष्कंभ थाय छे, एटले थंभी जाय छे; एम योगदृष्टि समुच्चयमां हरिभद्रसुरि महाराज कहे छे, माटे भयनी शांति थाय तेम करवुं. अनुक्रमे जेम जेम विशुद्धि थशे तेम तेम सर्व प्रकारे भय रहित थशे, एटले दूषण टलशे.

२ परलोक भय. ते तिर्यंचनो देवतानो भय. ते संबंधीनी चिंता फीकरमां रहे. रखे सर्प, वींछी, वाघ, तथा व्यंतरादि देव, पीडा करे, ए भयनुं स्वरूप उपर प्रमाणे आत्मार्थी पुरुष भावीने भय रहित थई, निज निर्भय गुण उत्पन्न करे छे.

३ आदान भय. ते पोताना घरमां जे जे पदार्थ, धन, आभूषण, वस्त्रादीक वस्तु छे, ते वस्तु रखे कोई लई जशे, चोर

आवी चोरी जशे, वा विनाश पामशे, वा कोईने व्याजे आपीश ते पाछा रुपीआ आपशे के नहि, वा वेपारमां खोट जशे, एवी रीतना जयनी चिंता करवी ते आदान जय. एवो जय करवो तेनुं चिंतवन करवुं, तेने ज्ञानी पुरुषो आर्त्त ध्यान, तथा रौद्र ध्यान कहे छे, अने ए ध्यानथी जीव नरक, तिर्यंचनी गति बांधे छे; माटे ज्ञानी पुरुष होय ते तो विचार करे के, ए वस्तु मारी नथी. कर्मना संजोगथी अज्ञान दशा थई छे, ते अज्ञान दशाए करी ए वस्तु उपर ममत्व जाव थयो छे. ते ममत्व जावथी जय थयां करे छे, ए मारे करवा जोग नथी. एवी जावना जावी, जय संज्ञा उतारे छे, के ए धनादीक वस्तुनो स्वजाव अथीर छे, ज्यां सुधी पुन्य बलवानछे त्यां सुधी जवानुं नथी, अने ज्यारे पापनो उदय थयो त्यारे राखी मुकेलुं धन रहेवानुं नथी, माटे जीव शा सारु ममत्व जाव करे छे, एवी रीते जावी, जय संज्ञाथी निर्जय थाय छे. विशेष ज्ञान थाय छे, त्यारे संसारनो त्याग करे छे, संजम ले छे. तेथी एवी वस्तु त्याग करवी, एटले जय रहेवानो नथी. अने पोतानी पासे धर्म उपगरण तथा पुस्तक होय छे, तेनो पण जय राखता नथी. पोताना आत्माने जावे छे, ने पोताना आत्माने जाववाथी सर्वथा जय संज्ञानो नाश करे छे, अने आत्माना गुण संपूर्ण प्रगट करे छे.

४ अकस्मात् जय. ते बाह्य कारण विना, अकस्मात् मनमां जयभ्रांत थाय, डर लागे, ए कर्मना उदयना प्रजावथी छे. एवा जय पण कर्मनी बोहोलताथी थाय छे. जेने आत्म गुण प्रगट थया छे तेमने एवा जय लागता नथी.

५ आजीवीका जय समवायांगजीमां कह्यो छे, अने ठाणांगजीमां वेदना जय कह्यो छे माटे ते जयनुं स्वरूप लखुं छुं. पोतानी पेट पुरणी पुरी थवा संबंधी जीव जय करी रह्यो छे, पण

दुनियामां गरीब अने धनवान कोई पण अन्न खाधा विना रहेता नथी. आजीवीका पुरी थवी छे ते तो पूर्वना कर्मने अनुसरतुं बनवानुं छे, पण ते कर्मनुं ज्ञान नथी तेथी फीकर करे छे. हरेक काम उद्यमथी बने छे माटे उद्यम करवो पण भय धारण करवो ते मूढता छे, अने ए मूढताए करी काम करवानुं करी शकतो नथी, अने नवा नवा विकल्प करी कर्मबंध करे छे. वली धनवान पुरुष छे तेमने आजीविकानी कांई कसर नथी, तो पण आगला काल संबंधी विचित्र प्रकारनी चिंता कर्या करे छे. वरसाद तणायो तो शुं खाइशुं? वरसाद न आव्यो तो शुं खाइशुं? रसोईयो जतो रह्यो तो शुं खाइशुं? कोई चीज मोंघी थई तो शुं खाइशुं? एवा विचित्र प्रकारना आजीवीका संबंधी भय धारण करी कर्म बांधे छे. धनवान माणसने नवली वखतमां ने सारी वखतमां घने करी सर्व चीज बनी जाय छे, ते छतां पण अज्ञानताने लीधे भयभीत रहे छे, ने ज्ञानवंत पुरुषोने तो थोडुं ज्ञान थयुं छे पण स्वपर ज्ञान थयुं छे. ते ज्ञानने प्रभावे प्रथम तो कर्मनी खातरी छे, तेथी तेमने भय रहेतो नथी. बीजी रीते अशुभ कर्मनो उदय थयो, अने आजीविकामां हरकत पडे छे, तो विचारे छे के पूर्वे कर्म बांध्यां छे तेनां फल छे. विकल्प करवाथी शुं फायदो छे? एम विचारी भय राखता नथी, अने बनतो उद्यम करे छे, अने अतिशे विशुद्ध छे ते तो जरा पण भय राखता नथी. पोतानी आत्म भावना विचारे छे. जेम ऋषभदेव स्वामीने वर्ष दिवस सूधी आहार मल्यो नहि, पण तेनो विकल्प नथी, तेने करी वरसी तप थयो, अने अंते भय मोहनी क्षय करी निर्भय गुण प्रगट कर्यो, तेम आत्मार्थी पुरुषे करवुं, के भय मोहनी नाश थाय. हवे वेदनी भय ते रोग आवेथी दुःख सहन न थाय एटले अनादिनो भय छे ते प्रगट थाय, जे रोग वधे नहि, रोग

न होय तो रोग आववानो भय, एवा भय बदल तपस्या प्रमुख करे नहि. तपस्या करवाथी नवुं वेदनी कर्म उदय आववानुं ते क्षय थाय छे अने ते बदल अवला विचार करे ते मूढतानुं लक्षण छे, अने आत्मार्थी जीवो तो वेदनाथी बीता नथी. वेदना थाय तो विचारे छे, के पूर्वे जे जे वेदनी कर्म बांध्यां छे ते आवा बोधना (ज्ञानना) वखतमां उदय आवशे तो समभाव भोगवीश, अने घणा काल दुःख भोगववानुं ते थोडा कालमां भोगवई जशे. नवो कर्म बंध थशे नहि. वली विशेष विशुद्धिवंत तो जाणे छे के वेदना थाय छे ते शरीरने थाय छे, मारा आत्माने थती नथी, एवीज रीते महावीर स्वामी भगवानने सखत उपसर्ग संगम देवे तथा व्यंतरीए कर्या पण जराए भय धारण कर्यो नहि, ने वेदनानुं दुःख धारण कर्युं नहि, तो पोताना आत्मानो केवल ज्ञान गुण प्रगट कर्यो, तेमज जेने पोताना आत्मानुं कल्याण करवुं छे तेणे पण महावीर स्वामी भगवाननो मार्ग धारण करवो, के पछी कोई तरेहनो भय रहेशे नहि, ने निर्भय दशा प्रगट थशे.

६ मरण भय ते प्रसिद्धज छे. अनादि कालनी मरण थवानी संज्ञा चाली आवे छे, तेने प्रभावे देवता पण आवता भवनो, छ मास अगाउ बंध करे त्यारथी झूरे. तेमज मनुष्यनी समजणनी उमर थाय त्यारथी मरण भयनी विचारणा थया करे छे. हवे जे ज्ञानी पुरुषो छे ते अंश मात्र पण मरणनो भय करता नथी, कारण के आत्मा मरतो नथी. मरे छे ते पुद्गल छे. तो जेटली आउखानी स्थीति छे त्यां सुधी आ शरीरमां रहेवुं छे, तो भय शा माटे करवो. कदापी संज्ञाथी चित्तमां आवे तो विचारे जे आउखानी चंचलता छे. तो धर्म साधन करवामां प्रमाद न करवो, कारण जे धर्म साधन मोक्षनुं करवुं छे ते तो मनुष्यनी गतिमां थई शके छे. बीजी गतिमां एवुं साधन थवानुं

नथी, माटे जेम बने तेम अप्रमादपणे धर्म करवामां तत्पर रहेवुं. आवते काले करवानो विचार करीश, पण आवते काले शुं थशे ते खबर नथी, माटे जेम उत्तराध्ययनजीमां कह्युं छे के हे गो-यम! समय मात्र प्रमाद म कर, ते उपदेश धारण करी जेम आ-त्मानी निर्मलता थाय तेम उद्यम करवो, ने तप संजम साधतां शरीर नरम पडे छे वा देवतादिकना उपसर्ग थाय छे तो पण मरणनो जय करता नथी, आत्माने जावता विचरे छे. परिसहनी फोजथी बीता नथी. पोतपोताना ध्यानमां तत्पर रहे छे. तेवीज रीते आत्मार्थीए रहेवुं. जगवंत ए जय क्षय करी सिद्धि सुखने पाम्या छे, तेम तेमनी आज्ञा छे. तेवीज रीते वर्तिशुं तो मरणनो जय नाश थशे.

७. सातमो अपकीर्ति जय. ए शक्ति उपरांत कीर्तिनी इछा करे, काम अपकीर्तिनां करे छे, कीर्ति ते क्रियाथी थाय. जो लु-च्चाई, दोंगाई, चोरी, जूठु बोलवुं, परदारा गमन, पारकी निंदा, परने दुःख देवुं, पारकुं खाई जवुं, वेपारमां अन्यायथी बोलवुं, वांकु बोलवुं, आ कृत्यो जे नहि करे, अने दुःखीने सुखी करवो, पारकुं काम करवामां तत्पर रहेवुं, धनने अनुसरतुं दान देवुं, वली केटलाएक तो दान एवी रीते करे छे के पोते खाय नहि, बीजाने आपवा तत्पर थाय, एवो वर्तना करे तो सहेजे कीर्ति थाय. पण छतुं धन होय ने जीखारी बूम पाडीने मरे तो जराए दान न आपे, अने अपकीर्तिनो जय करे. अपकीर्तिनो जय राखी माठी आचरणा न आचरे तो उत्तम छे. अज्ञानताए अपकीर्ति थाय एवुं-ज कारण सेवे, पण ज्ञानी पुरुषो तो पोताना आत्माना दानादीक गुण छे, ते प्रगट करवामां उद्यमवंत थया छे. केटलाक गुण प्रगट थया छे, तेमां पण कीर्तिनी इछा नथी, अने अपकीर्तिनो जय नथी. तेमज जेम उत्तम पुरुषे कोई जीवने दुःख थाय एवी वर्त्तना करी

नथी, तेवीज रीते कोई जीवने दुःख थाय एवी वर्त्तना करवी नहि के सहेजे अकीर्त्तिनो भय टली जशे. आ रीते साते भयने जाणीने जेम महात्मा पुरुषोए निर्भय दशा प्रगट करी तेम करवुं. आत्म गुण प्रगट कर्यो के ते गुण जवानो भय राखवो पडशेज नहि, ते नित्य गुण छे. अनित्य गुणनो मोह छे त्यां सुधी जीवने भय रहेशे वास्ते त्याग करवो, एटले सहेजे भय टली जशे.

१० शोकनामा दूषण. ते संसारी जीवने रात दिवस लागी रह्युं छे. कुटुंबमांथी मांदु थाय वा कोई मरी जाय तो माणस शोक एटलो करे छे के, केटलाएक माणस अती शोके मरी जाय छे, वा मांदा पडे छे, शरीर सुकाइ जाय छे, केटलीएक स्त्रीउ छातीमांथी लोही काढे छे, केटलीएकनी छातीमां दरद थाय छे, आवी उपाधि शरीरने थाय छे, तेना उपर लक्ष न देतां ते काम कर्यां जाय छे, आवां फल पामवानुं कारण अज्ञानता छे. वली बजारनी अंदर म्होटा चकला उपर पण एवी तरेहथी कूटवाथी बीजा जीवने पण ए दुःख जोई दीलगीरी थाय छे. हालना राजकर्त्ताउने ते वात पसंद नथी. तेमज राजद्वारीना अधिकारीउने पण ते वात पसंद नथी, तेम छतां आ काम करे छे. वली केटलीएकना मनमां तो एवुं पण रहे छे के, आपणे कूटशुं नहि तो लोकमां शोभा नहीं रहे, एटले कूटीने पण लोकमां शोभा लेवी छे.आ केटली बधी मुर्खता? विद्वानोने पण बहु दीलगीरि आवे छे.आ नुकशान तो आ लोक संबंधी छे, वली परभवने विषे ए पापने लीधेज नरक, तिर्यंचनी गतिने पामे छे, तो आवां काम करवाथी आलोक तथा परलोकमां बे ठेकाणे दुःख भोगववानां थाय छे. वली ज्ञानवंत पुरुषो तो एटलो विचार करे छे के, जे चीजनो संजोग तेनो वियोग छे ज. कांतो आपणे कुटुंबने मुकीने जइए, अथवा कुटुंब आपणने मुकीने जाय, आ बेमांथी एक रीते

विजोग थवानो छे. जे जे वस्तुनो जे जे स्वभाव छे, ते जाणीने जराए शोक करता नथी. वळी धन जाय छे, गुमास्तो जाय छे, वस्त्र जाय छे, घर जाय छे, एवी इच्छित वस्तुना जवाथी शोक करे छे, तेमां विचारवानुं के इच्छित वस्तु पूर्वना पुन्यथी थीर रहे छे, पुन्य पुरुं थयुं के विजोग थाय छे. पछी गत वस्तुनो शोक करवाथी कांई फायदो नथी. केटलाएक माणसने अपमान थवाथी शोक थाय छे, पण अपमान तो नहि करवा योग काम करवाथी वा नहि बोलवा योग बोलवाथी थाय छे, वा पुन्यनी खामीथी अपमान थाय छे, माटे ते काम तजे तो अपमान थाय नही, शोक करवाथी फायदो नथी, ते छतां शोक करे छे, एवी रीते जे जे बाबतनो शोक करे छे ते ते बाबतथी पाप कर्म बंधाय छे, शोक थकी शरीर नरम थाय छे, बुद्धिनी पण हानि थाय छे, शोकनां कारण टळवानो पण उद्यम थतो नथी, तेथी वधारे शोक उत्पन्न थाय छे. आ प्रमाणे प्रत्यक्ष फळने पण अज्ञानपणे जीव विचारता नथी, अने जे ज्ञानी पुरुष छे तेमने शोकनां कारण उत्पन्न थाय छे, तो तेमां भावे छे के मारा आत्मा शिवाय बीजो मारो पदार्थ नथी. जे पुद्गलीक वस्तु छे तेतो संजोग विजोग संजुक्त छे, एटले मारे शी बाबतनो शोक करवो. जे जे बने छे ते पूर्वे कर्म बांध्यां छे, तेने अनुसरतुं बने छे. माटे जे जे कर्म उदय आव्यां ते ते समभावे भोगववां, एटले ते कर्मनी निर्जरा थाय अने आत्मा निर्मल थाय, एवी दशा बनी जाय तो जीवने शोक थाय ज नहि. भगवान तो आत्मगुण सिवाय बीजी परभाव दशा जे जे जडभावनी वर्त्ते तेमां रागद्वेष करे ज नहि, तेमणे शोक मोहनी कर्मनो नाश करी पोताना आत्माना गुण प्रगट कर्या. वळी जेने आत्माना गुण प्रगट करवा होय तेणे तेमज वर्त्तवुं के आत्माना गुण प्रगट थाय.

११ डुगंछा. ते कांई खुशबोवाळी चीज जोईने प्रसन्न थाय ने खराब खुशबो जोई दीलगीर थाय, वळी जे जे पदार्थ पसंद नहीं आवे ते पदार्थ डुगंछनीक लागे छे. ए प्रवृत्ति जीवने अनादिनी बनी छे, पण ज्ञानवंत पुरुषे तो वस्तुनो स्वभाव जे जे रह्यो छे ते ते जाण्यो छे, एटले कोई पण वस्तुनी डुगंछा करता नथी. जे जे कारण मळे छे ते पूर्वना कर्मना उदय प्रमाणे मळे छे, तेथी समभावमां रही तेना विकल्प करता नथी, तेमना मनथी तो जे जे जड पदार्थ आत्माने घात करता छे, तेना उपर सहेजे डुगंछा थाय छे अने अज्ञानी जीव जेने जे पसंद पडे तेमां राजी थाय छे, खुशी थाय छे, पण विषयादिकनां फळ विचारता नथी, के नरकमां एनां केवां दुःख भोगववां पडशे? तेवी ज रीते जन्म मरणनां केवां दुःख भोगववां पडशे? प्रत्यक्ष ढेढनी जातीने जुवो के तमे जेनी डुगंछा करो छो, तेवी वस्तु लई माथे मुकीने ज्यां फेंकवानी जगा होय त्यां फेंकवी, आ काम शाथी करवुं पडे छे के पाछले भवे जे काम नहीं करवा योग, ते काम कर्यां तेनां फळ छे. तो आपणने पण विषय नहि सेववा भगवंते कह्युं छे ने जो भोगवशो, तेने एवां दुःख भोगववां पडशे, तो ए विषयादि डुगंछनीक जाणी त्याग करवाने आत्माना गुणमां वर्त्तवुं, भगवंते एवी रीते वर्त्ती डुगंछा मोहनीनो नाश करी पोताना सहज स्वभावीक गुण प्रगट कर्या, तेम आपणा पण प्रगट थाय.

१२ कामदोष. ए दोष सर्व मांही सरदार छे. कामने वश पडीने जीव महा पुरुष थवाय एवी तक पामीने पाछा पडी जाय छे. संसारी जीव अनादि काळना कामने वश पड्या छे, तेनी संज्ञा चाली आवी छे, बालक अवस्थामां पण कामनी चेष्टा करे छे संसार भ्रमणनुं कारण काम छे. कामने वास्ते मातानो, पितानो, भाइनो, छोकरानो, मित्रनो नातीनो

सर्वेनो संबंध जीव तोडे छे. धननो पण ए विषयादिक कामने वश पडवाथी नाश थाय छे, शरीर पण निर्बल थाय छे, आयुष्यनी पण हानी थाय छे, आटला दुःखनो जीवने प्रत्यक्ष अनुभव थाय छे पण जीव अनादि कालनो कामने आधीन रहेवाथी कामांध थयो छे, ते अंधपणे करी कोई पण नुकशान के दुःख जोतो नथी. केटलाएक राजाउ कामने लीधे राज भ्रष्ट थाय छे, ते नजरे जोवामां आवे छे, पण जीवने भान थतुं नथी. केवी आश्चर्यनी वात छे! के कर्म केवा प्रकारे नचावे छे, कामांधपणे केटलाएक पोतानी छोकरी, पोतानी बहेन, पोतानी मा, तेनो पण विचार राखता नथी, तो बीजी स्त्रीनो तो शुं विचार राखे. केटलीएक माता कामने वश पडी पोताना पुत्रनो नाश करे छे, पोताना धणीनो नाश करे छे, आवी कामनी दशा पीडे छे, ने तेथी आ लोकनां दुःख आवी रीते अनेक प्रकारे भोगवे छे अने परलोकनां दुःख सांभलवां होय तो सुगडांग सूत्रथी जोई लेवुं. भवभावना ग्रंथथी जुउ नरकने विषे परमाधामी लोढानी धगधगती पुतलीए बझाडे छे, नरकमां पग मुकवानी जगो छे ते एवी छे के जेवी रीते तरवारनी धार उपर पग मुकवो तेवी रीते छे, उष्ण वेदना एवी छे के हजारो मण बलता काष्टनी चेहेमां सूवे ते करतां पण वेदना वधारे थाय छे सीत वेदना एवी छे जे टाढनो जोडो नथी, गमे एटली अग्नीए करी शरीर शेके तो पण टाढ नीकलती नथी. जन्मनी जगा एवी छे के राइ राइ जेवा ककडा करीने उपजवानी जगोमांथी बाहार काढे. वैक्रिय शरीरनो स्वभाव एवो छे के, वधा ककडा एकठा थया के पारो जेम मली जाय छे तेम शरीर उभुं थाय, एटले पाछा परमाधामी अनेक प्रकारनी वेदना करे छे. आवां दुःख टुंकां आउखां मनुष्यनां तेमां अल्प काल सुख मानीने, मोटा सागरोपमना आउ-

त्यां सुधी दुख भोगववानां छे, एवुं केटलाएक जीवो जाणे छे पण कामांधपणे दुःखनो लक्ष न आवतां ए काममां अंध थई रहे छे. जे पुरुष अथवा स्त्रीने ते भव स्थिती परिपक्व थई छे, ते पुरुष संसारनो त्याग करी पोताना आत्म स्वरूपमां आणंदपणे रहे छे. केटलाएक बाह्यथी स्त्रीनो त्याग करे छे पण अंतरंगमांथी चित्त खसतुं नथी, तो पाछा संसारमां आवे छे केटलाएक संसारमां आवता नथी पण चित्त बगडेलुं रहे छे, केटलाएकने राग रहे छे, ने ज्यारे स्त्रीनुं मुख जोवे त्यारे शांत चित्त रहे छे, एवी अनेक प्रकारनी कामनी विटंबना छे पण दृढ अनुराग आत्मतत्त्वमां जेनो थई गयो छे, एवा सुदर्शन शेठ जेने अभयाराणीए शरीरे विचित्र प्रकारे फरस कर्यो. अवाच्य प्रदेशने बहु विटंबना करी तो पण काम दीप्त न थयो. राजाए जेने शूलीए भोंकवा मोकल्या तो शीलना प्रभावथी शूली मटी सिंहासन थयुं, आ महिमा काम जीतवानो छे. चक्रवर्त्ती राजा जेने एक लाख बाणुं हजार स्त्री छे तेना भोगना करनार पण ज्यारे ज्ञान दशा जागे, त्यारे स्त्रीना सामुं पण जोता नथी, एवी रीते काम जीते छे तेमज भगवाने सर्वथा कामने जीत्यो, तेथी कामनामा दूषण नष्ट थयुं. ने भगवान् थया छे, तेम जेमने आत्माना गुण प्रगट करवा होय, तेमणे कामनी इछाथी मुक्त थवानो अभ्यास करवो. अभ्यासथी सर्व चीज बने छे, काम सेववो ए जड धर्म छे, आत्म धर्म नथी. आत्माना स्वभावथी बहार वर्त्तवुं नही, एवा भाव आववाथी सहेजे काम जीताई जाय छे. कामने जेणे जीत्यो तेणे दुनीयामां सर्व जीत्युं. पछी सर्व जीतवुं सुलभ थाय छे. जे जे पुरुषोए काम जीत्यो छे, तेना चरित्र वांचवानो उद्यम करवो. शीलोपदेशमाला वांचवाथी काम जीतवाना लाभ समजाशे. नीकट मुक्तिनो उपाय काम जीतवो एज छे.

१३ अज्ञाननामा दोष. ए अज्ञान दोष पण अनादीनो छे तेथी करी आत्मा शुं चीज छे, शरीर शुं चीज छे, सुख दुःख शाथी आवे छे तेनुं ज्ञान यथार्थ थतुं नथी. शरीरना दुःखे दुःखीउ थाय छे, कुटुंबना दुःखे दुःखीउ थाय छे, सुगुरुने कुगुरु माने, कुगुरुने सुगुरु माने, कुदेवने सुदेव, ने सुदेवने कुदेव, सुधर्मने कुधर्म, ने कुधर्मने सुधर्म माने छे. शातानां कारणने अशातानां कारण माने छे, अशातानां कारणने शातानां माने छे. जे जे प्रवृत्ति जगतनी करे छे अने पोतानी माने छे, धर्म प्रवृत्ति करे तो अधर्म थाय एवी करे छे. धन कुटुंब मळे छे, ते पर वस्तु छे. ते छतां ते पोतानी मानी आनंद थाय छे, ज्ञानवंतने ज्ञानवंत जाणतो नथी, तत्त्वज्ञान थाय एवो उद्यम करतो नथी, अज्ञानना जोरथी पांच इंद्रिना त्रेविश विषय तेमां लुब्ध वर्ते छे. ज्ञानी पुरुषे बतावेल खट द्रव्य पदार्थ तथा तेना गुणपर्याय, तेनुं ज्ञान करतो नथी. नव तत्त्व तेनुं ज्ञान थतुं नथी, अष्ट कर्मनुं पण स्वरूप जाणतो नथी, केटलाएक धर्मवाला कर्म माने छे पण कर्म शुं पदार्थ छे, ते जाणता नथी. कर्म केम आवी बंधाय छे, कर्म केम उदय आवे छे, कर्म केम निर्जरी आत्मा निर्मल थाय छे, ते अज्ञाने करी जाणी शकतो नथी. आ माहात्म्य अज्ञाननुं छे. केटलांएक खोटां कर्मनां जोर प्रत्यक्ष छे, तो पण अज्ञानना जोरथी ते लक्षमां आवतां नथी. कोई पण जीवने मारी नांखे छे तो सरकार फांसी दे छे, ते प्रत्यक्ष जुए छे तो पण केटलाएक माणस फांसीए जवानी बीक राखता नथी अने एवां कृत्य करे छे. मृषा बोलवाथी खोटी प्रतिज्ञानुं काम चाले छे, चोरी करवाथी केदमां जाय छे, आवा प्रत्यक्ष दाखला बधा माणसना समजवामां छे. जार कर्मथी पण केदमां जाय छे पण अज्ञानपणे ते बाबतनो लक्ष थतो नथी, ने एवां खोटां काम कर्यां जाय छे. अज्ञानताए राज विरुद्ध आचरण पण

करे छे, ए अज्ञान खसेमवाना न्नाव थाय तो ज्ञान अज्यास करवो. शास्त्र न्नणवाथी, सांन्नलवाथी, खट द्रव्यनुं ज्ञान थाय छे ते खट द्रव्य कहीए छीए.

१ धर्मास्तिकाय. ते अजीव द्रव्य, अरूपी, अचेतन, अक्रिय, चलन साह्य गुण ते जीव तथा पुद्गल चाले तेने सहाय करवानो धर्म छे. इहां शंका थशे के चाले तेने सहाय शुं करवी छे; ते विषे समजवुं के माछलुं पाणीमां तरे छे. हवे तरवानी शक्ति तो पोतानी छे पण पाणीनी सहाय जोईए छीए, पाणी विना तरी शकतुं नथी. तेम जीव तथा पुद्गल चाले तेने धर्मास्तिकायनी सहाय जोईए.

२ अधर्मास्तिकाय. एनो स्वन्नाव धर्मास्तिकायथी विपरीत छे, स्थिर रहेवाने सहाय करे छे. मनुष्य पाणी होय छे ने तरतां आवमतुं होय तो तरे छे पण ते थाकी जाय, तो कोई टेकरी अथवा छवारानी सहाय मली आवे छे, तो स्थिर रही शके छे, पण जो एवी सहाय न मले तो स्थिर रही शकतो नथी. वली तमकेथी आवतां जो थाक्या होय तो, झाम अथवा विसामानुं स्थानक मले छे तो बेसे छे. तेमज अधर्मास्तिकायनी सहायथी जीव पुद्गल थीर थाय छे, ए द्रव्यना पण चार गुण छे. अमूर्ति एटले रूप नहि, अचेतन एटले जीवरहित, अक्रिय एटले विन्नावीक कांई पण क्रीया करवी नहि, अने स्थीर सहाय गुण ते उपर प्रमाणे स्थिर पदार्थने सहाय करे छे.

३ आकाशास्तिकाय. ते लोक जेमां छ द्रव्य पदार्थ रह्या छे तेने लोक कहीए. अलोक जेमां आकाश सिवाय पदार्थ नथी. एवा लोकालोकमां व्यापीने आकाश द्रव्य रह्युं छे, तेना पण चार गुण छे अरूपी एटले रूप नथी, अचेतन ते जीव रहित, अक्रिय ते कोई जातनी क्रीया करवी नथी अने अवगाहना गुण

ते जीव पुद्गल पदार्थने रहेवाने जगो आपे छे. कारण आखा लोकमां जीव पुद्गल जरेला छे, तेमां जगो नथी ते आकाश जगो करी आपे छे. ईहां शंका थशे के जगो नथी, ते केवी रीते करी आपे छे, ते विषे जाणवुं जे जींतमां जरा पण जगो नथी होती पण खीलो मारीए तो दाखल थई शके छे, तेम आकाशास्तिकाय जगो करी आपे छे.

४ कालद्रव्य तेमां प्रथम वर्त्तना काल सूर्यनी चाल उपरथी गणाय छे, जेमके सूर्य अस्त थाय छे अने उदय थाय छे, तेना उपरथी गणत्री थाय छे, ते गणत्री संबंधी काल छे. तेनुं माप सात श्वासोश्वासे एक स्तोक थाय, सात स्तोके एक लव थाय छे, सत्योतेर लवे एक मुहूर्त्त बे घमीरूप थाय छे, एवा ३० मुहूर्त्ते दिवस थाय छे, त्रीश दिवसे एक मास थाय छे, एवा बार मासे एक वर्ष थाय छे एवां पांच वर्षे युग थाय अने वीश युगे एकसो वरस थाय. दश सोए एक हजार थाय, एवा सो हजारे लाख थाय. एवा ८४ लाख वर्षे एक पूर्वांग थाय. एवा ८४ लाख पूर्वांगे एक पूर्व थाय. एक पूर्वना आंक ७०५६०००००००००० एवां चोराशी लाख पूर्वे करी एक त्रुटिटांग थाय अने ८४ लाख त्रुटिटांगे एक त्रुटित थाय. चोराशी लाख त्रुटिते एक अममांग थाय. चोराशी लाख अममांगे करी एक अमम थाय अने चोराशी लाख अममे एक अववांग थाय. चोराशी लाख अववांगे एक अवव थाय. चोराशी लाख अववे करी एक हुहुकांग थाय. चोराशी लाख हुहुकांगे एक हुहुक थाय, चोराशी लाख हुहुके एक उत्पलांग थाय. चोराशी लाख उत्पलांगे करी एक उत्पल थाय, चोराशी लाख उत्पले करी एक पद्मांग थाय. चोराशी लाख पद्मांगे एक पद्म थाय, चोराशी लाख पद्मे करी एक नलीनांग थाय. चोराशी लाख नलीनांगे करी एक नलीन थाय. चोराशी लाख

नलीने करी एक नीपुरांग थाय. चोराशी लाख नीपुरांगे एक अर्थ नेपुर थाय, अने चोराशी लाख अर्थ नेपुरे करी एक अयुतांग थाय अने चोराशी लाख अयुतांगे करी एक अयुत थाय. चोराशी लाख अयुते करी एक प्रयुतांग थाय अने चोराशी लाख प्रयुतांगे एक प्रयुत थाय. चोराशी लाख प्रयुते एक चुलीकांग थाय. चोराशी लाख चुलीकांगे एक चुलीका थाय. चोराशी लाख चुलीकाए करी एक शीर्ष प्रहेलिकांग थाय. तेने चोराशी लाख गुणा करीए त्यारे शीर्ष प्रहेलीका थाय. ए गुणाकारनो आंक १९४ अक्षरनो थाय. ते नीचे प्रमाणे. ७५८२६३२५३०७३०१०२४११५७९७३५६९९७५६९६४० ६२१८९६६८४८०८०१८३२९६००००००००००००००००००००००००० ००० ०० ०००००००००००००००००००००००० आ प्रमाणे अनुयोगद्वार 'सूत्रनी टीकामां छापेली चोपडीना पाना २४५ मामां छे ते उपरथी ल-ख्युं छे. १९४ अक्षरनी संख्या छे एथी अधिक संख्या गणवी मुश्केल पडवाथी वधारे आंक दर्शाव्या नथी पण बीजी रीते संख्या मनमां समजी शकाय. मोंढे बोली शकाय नहि. वली वत्तुं ओछुं समजाय ते सारु बताव्युं छे के एक कुवो चार गाऊ ऊंडो, चार गाउ पहोलो, चार गाउ लांबो एवो एक कुवो तेमां जु-गलीआना सात दीवसना बालकना नीमाला ते नीमाला एकना असंख्याता ककडा करवा, अने तेवा ककडाए करी आ कुवो भ-रवो ते एवो सज्जड भरवो के ते नीमाला उपरथी चक्रवर्तीनी स्वारी जाय तो पण कुवाना नीमाला दबाय नही, पाणी अंदर प्रवेश न करी शके, एवो सज्जड कुवो भरवो; तेमांथी सो सो वर्षे एक एक नीमालो काढवो. एवी रीते सो सो वरसे नीमाला काढवाथी कुवो खाली थाय त्यारे एक पल्योपम थाय. एवा दश

कोमाकोमी पब्योपमे एक सागरोपम थाय. एवां सागरोपमनां नरक तथा देवतानां आउखां छे. बीजी पण गणत्रीउं काम लागे छे. आ कालनुं स्वरूप, जगत्ना जीवना आउखा वगेरेनी गणत्रीमां आवे छे, ए चंद्र सूर्यना आधारथी काल केहेवो छे तेने काल द्रव्यमां स्वाभावीक गणता नथी. हवे काल द्रव्य कोने कहे छे के छए द्रव्यना अगुरु लघु पर्यायनी वर्तना थाय छे, ते वर्तना एकथी बीजी थवी तेनुं नाम समय छे. तेज कालद्रव्य उपचरित छे. पदार्थ रूप नथी. कारण जे द्रव्यनी वर्तना अपेक्षित छे तेथी पदार्थ रूप नथी. कालनो गुण नवी वस्तुने जुनी करवानो छे. काले जे वस्तु बनी ते आजे जुनी कहेवाशे, आजे करी ते नवी कहेवाशे, ए काल अपेक्षित कहेवाय छे. काल छे ते अरूपी. अचेतन अक्रिय नवा पुराण गुण छे ए रीते कालद्रव्यनुं स्वरूप जाणवुं.

५ मो द्रव्य पुद्गलास्तिकाय. तेना चार गुण. मूर्त एटले देखाय छे. अचेतन एटले जीवपणुं नथी, सक्रिय एटले मलवा वीखरवा रूप क्रिया करे छे वली जीवनी साथे रहीने क्रिया करे छे माटे सक्रिय छे. तथा मलन विखरण गुण छे. जे पुद्गल परमाणु ने पुद्गल द्रव्य कह्यो छो ते परमाणु केवो सूक्ष्म छे ? बाल्यो बले नहि, छेद्यो छेदाय नहि, दृष्टिने अगोचर छे. एवा बे परमाणु मली खंध थाय छे, तेने द्वीप्रदेशी खंध कहे छे. एम त्रण चार आदे परमाणु मली खंध थाय छे, ते खंध दृष्टीगोचर आवता नथी. अनंता परमाणु मलीने जे खंध थाय छे ते दृष्टीने गोचर आवे छे ते व्यवहार परमाणु कहेवाय छे, निश्चय नये तो खंध कहीये. व्यवहारथी परमाणु कहेवानुं कारण ए छेकेए पण बाल्या बले नही शस्त्रथी छेदाय नही अने एक परमाणुमां एक वर्ण, एक गंध, एक रस अने बे फरस रह्या छे. वर्तना प्रमाणे अने सत्ता प्रमाणे तो पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस, आठ फरस रह्या छे तेथी परमाणुना

पर्यायनुं पलटनपणुं थाय छे ते पलटनपणे सत्तामांथी वर्णनारूप कालानो पीलो थाय पीलानो लाल प्रमुख थाय, एम फेरफार थाय छे. आ अधिकार अनुयोगद्वार सूत्रमां छपेली प्रतमां पाने २७० मे छे त्यांथी जोवो. एवो परमाणुनो स्वज्ञाव छे. तेथी एक छुटा परमाणुने निश्चय परमाणुं कह्युं छे अने बीजाने व्यवहार परमाणु कहेवाय छे. निश्चय नये तो खंध कहीए. व्यवहारथी परमाणु कहेवानुं कारण एटलुं छे के दृष्टिने अगोचर छे ए पण बाल्या बले नहीं, शस्त्रथी छेदाय नहीं. ए व्यवहारीक परमाणु अनंताए उत्श्लक्ष्ण श्लक्ष्णिका ते आठे करीने श्लक्ष्ण श्लक्ष्णिका कहीए तेथी आठ गुणानुं नाम उर्ध्वरेणु तेवी आठ उर्ध्वरेणुए एक त्रसरेणु थाय, जे सूर्यना प्रकाशथी छापराना हेरीयामांथी देखाय छे ते, एवी आठ त्रसरेणुए एक रथरेणु थाय, रथ चाल्ये जे आकाशे रज उमे ते, आठ रथरेणुए एक देवकुरुना युगलीआ मनुष्यनो वालाग्र थाय, एवा आठ वालाग्रे एक हरिवर्षना मनुष्यनो वालाग्र थाय, आठ ए वालाग्रे हेमवंतना मनुष्यनो वालाग्र थाय, एवा आठ वालाग्रे महाविदेहना मनुष्यनो वालाग्र थाय, एवा आठ वालाग्रे ज्ञरतक्षेत्रना मनुष्यनो वालाग्र थाय, एवा आठ वालाग्रे एक लीख थाय, आठ लीखे एक जू थाय, आठ जूए एक जवमध्य थाय. आठ जव मध्ये एक आंगुल थाय, छ आंगुले एक पाद थाय, बार आंगुले वेंत थाय, चोवीश आंगुले एक हाथ थाय, एवा चार हाथे एक धनुष्य थाय, एवा बेहजार धनुष्ये एक गाउ थाय, एवा चार गाउए एक जोजन थाय, एनां त्रण प्रकारनां मान छे, ते अनुयोगद्वार सूत्रमां पाने ३०५ मे जोइ लेवुं. आ मापनी वचमांना खंधो तथा एथी मोहोटा खंधो अनेक प्रकारना थाय छे, विचित्र संस्थान विचित्र मापनां थाय छे. परमाणु घणा अने अवगाहना नानी; परमाणु एथी ओछा ने अवगाहना मोटी. केटलाएक खंधे

दृष्टिए देखाय, हाथमां पकडाय नही, केटलाएकना फरस जणाय पण नजरे देखाय नही, केटलाएक गंधथी जणाय पण नजरे गंध देखाय नही. एम विचित्र स्वभावना पुद्गलना खंध थाय छे, तेमना मळवाथी पुद्गलना खंधना विचित्र स्वभाव थाय छे, तेम स्वभावथी विचित्र रीतना पदार्थ बने छे, पाछा वीखरी पण जाय छे, ते जोवामां आवे छे, ने काम पण विचित्र प्रकारे करे छे. जेटला पदार्थ देखाय छे ते पुद्गल छे. आपणे जीव कहीए छीए, पण जीवने देखता नथी. जीवनां ग्रहण करेलां शरीर देखाय छे, ते सारु समाधि तंत्रमां जशविजयजी महाराज कहे छे केः—'देखेसो चेतन नहि, चेतन नांहि देखाय; रोष तोष कीनशुं करे, आपो आप बुजाय. माटे कहेवानी मतलब एटली छे के चेतन देखातो नथी, देखो छो ते चेतन नथी पण जड छे, एटले पुद्गल छे, पुद्गलनां लक्षण नव तत्त्वमां दश कह्यां छे. वर्ण, गंध, रस, फरस, शब्द, अंधारु, उद्योत, ताप, प्रभा, छाया, आ दश लक्षणमांथी कोइ पण लक्षण देखाय तेनुं नाम पुद्गल जाणवुं. बीजां पांच द्रव्य छे ते देखातां नथी. आवुं पुद्गल पदार्थनुं ज्ञान होय तो विचारे छे के माहरो आत्मा अरूपी, आ रूपी पदार्थ, तेने जे मारुं कहुं छुं एज अज्ञानपणुं छे, अने ते अज्ञानपणुं गयुं नथी, त्यां सुधी पुद्गलीक पदार्थनी इच्छा मटती नथी, अने जड पदार्थनी इच्छा छे, त्यां सुधी जीव कर्मथी मुक्त थतो नथी. आ पुद्गल पदार्थनुं ज्ञान घणुं विस्तारे भगवतीजी, अनुयोगद्वार विगेरे सूत्रमां छे ते सांभळशो तो विस्तारे समजण पडशे. कर्म जे बंधाय छे ते पण पुद्गल पदार्थ छे. पवन देखातो नथी, पण फरस थाय छे, ते पवनना पुद्गलनो थाय छे. एवी रीते केटलाएक सूक्ष्म पदार्थ दृष्टीए नथी देखाता; जेमके अंधारुं अजवाळुं ए वस्तु पकडीए तो पकडाती नथी. पण रूप देखाय छे माटे पु-

द्गल पदार्थ समजवो. बादर पदार्थना जाणवाथी सूक्ष्म पदार्थ-
नो अनुमाने निर्णय करवो.

६ जीव द्रव्य ते अरूपी एटले जीवनुं रूप नथी, सचेतन
एटले चेतन शक्ति छे, चेतन एटले चेतवुं ते जाणवुं. जाणवानी
शक्ति जीव विना बीजा कोई पदार्थमां नथी. अक्रिय एटले क्रि-
या कोई पण करवानो चेतननो धर्म नथी. जे क्रिया थाय छे ते
अनादिकालना जीवनो कर्मनो संजोग छे, ते कर्मना संजोगथी
पोताना आत्मानुं स्वरूप भूली गयो छे; जेम मदिरा पाननो
पीनारो मदिरा पीईने मस्त थाय छे, एटले शुं करवा योग्य छे,
शुं नहि करवा योग्य छे, ए ज्ञान रहेतुं नथी, ने पोतानी जाति
स्वभाव नीति छोमीने वर्त्ते छे, तेम आत्मा पोतानो स्वभाव
छोमी विभाव वर्त्तनानी क्रिया करे छे. स्वभाविक वर्त्तनानुं ना-
म क्रिया नथी. विभावमां वर्त्ते तेने क्रिया कहेवी छे, मांटे स्वभा-
विक धर्म अक्रिय छे, पण अज्ञान दशाने योगे जीवनो स्वभा-
वज भुली गयो छे. शरीर छे ते हुं छुं एम जाणे छे. शरीरना
दुःखे दुःखीउ थाय छे, शरीरना सुखे सुख माने छे, धन पुत्र
परिवार जोईने आणंदित थाय छे, ए वधो पदार्थ आत्माथी
भिन्न छे, पण अज्ञानपणे जाणी शकतो नथी. आत्मानां छ ल-
क्षण कह्यां छे, ते आत्मा जाणी शकतो नथी. ते छ लक्षण कहुं छुं.
अनंत ज्ञान एटले जगतमां अनंता जीव छे, अनंता पुद्गल प-
दार्थ छे, एक एक पदार्थमां अनंता गुण पर्याय रह्या छे, तेनी
त्रिकाल वर्त्तना थाय छे ते सर्वे एक समये जाणी शके, एटली
शक्ति आत्मानी छे, पण जम संगे करी अवराई गई छे. तेथी
जीव जाणी शकतो नथी. पोताना शरीरनी अंदर सर्व व्यापी
ने आत्मा रह्यो तेने पण प्रत्यक्षपणे जाणी शकतो नथी, तथा
शरीरना अंदरना भागमां शा शा पदार्थ रह्या छे, ते पण आत्मा

जाणी शकतो नथी. ते ज्ञान अवराई गयुं छे तेनां फल छे. ज्यारे जीवनो भाग्य उदय थाय छे त्यारे सर्वज्ञना वचननी प्रतीति थाय छे, अने आवर्ण खपाववानो उद्यम करे छे, तो कर्म खपी जाय छे, त्यारे ते सर्व प्रत्यक्ष जणाय छे. ए ज्ञान गुण सर्वघाती ज्ञानावरणी कर्म क्षय थाय छे त्यारे प्रगटे छे, अने थोडां थोडां कर्मनो क्षयोपशम एटले केटलांएक क्षय पाम्यां छे, केटलांएक उपसमाव्यां छे, एटले सत्तामां हाल उदय न आवे एवां कर्यां छे, तेने उपसम कहीये, एवी रीते क्षयोपसम थवाथी मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधी ज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान ए चार ज्ञान थाय छे, पछी विशेष विशुद्धिथी सर्व प्रकारे कर्मनो क्षय थवाथी केवल ज्ञान थाय छे. हवे एवुं ज्ञान प्रगट नथी थयुं तेथी अज्ञानपणुं रह्युं छे, एवीज रीते आत्मानो दर्शन गुण छे, दर्शन अने ज्ञानमां भेद शुं छे ? ज्ञाननो विशेष उपयोग, दर्शननो सामान्य उपयोग, ए रीते दर्शन लक्षण, एनां पण आवरणने लीधे दर्शन गुण प्रगट थतो नथी; जेमके चक्षुनो विषय १ लाख जोजननो छे. तो एटला दुरथी देखी शकता नथी. ते आवरणनुं जोर छे. ए प्रमाणे पांचे इंद्रीयोनी शक्ति शास्त्रमां छे, तेम चालती नथी ते आवरणनो प्रभाव छे. वली केवल दर्शनथी सामान्य बोध सर्व पदार्थनो थाय छे ते केवल दर्शनने आवरण लागवाथी दर्शन गुणनुं लक्षण वर्ततुं नथी, ते लक्षण आवरणनो सर्वथा क्षय थवाथी प्रगटशे. हवे चारित्र लक्षण ते आत्मा आत्माना स्वभावमां स्थीर रहे ते. हवे ते स्थीरता अवराईने विभावमां स्थीरता थई छे, ने मोहनी कर्मनो नाश थशे त्यारे आत्मस्वभावमां स्थीरता थशे. तेनां कारणरुप पांच चारित्र छे ने जेटलो जेटलो कषाय क्षय थशे तेटलो तेटलो चारित्र गुण प्रगट थशे. संपूर्ण क्षये संपूर्ण चारित्र लक्षण प्रगट थशे. तप लक्षण ते अवरावाथी तपस्या थती नथी,

ने विचित्र इच्छाउ वर्त्ते छे. अने अंतराय कर्म क्षय थवाथी सर्वथा पुद्गल पदार्थनी इच्छाउ नाश थशे, तेनी अगाउ अंशे अंशे इच्छाउ रोकाशे, एटलुं एटलुं तप लक्षण प्रगट थशे, पांचमुं वीर्यनामा लक्षण ते आत्मानी अनंती वीर्य शक्ति छे, पण ते अवराई गई छे. जेटलो जेटलो वीर्यांतरायनो क्षयोपशम थाय छे तेटली तेटली आत्मानी वीर्य शक्ति शरीरमां रहीने चाले छे. जेमके श्रीमत् महावीर स्वामी भगवाने एक दीवसनी उमरमां टचली आंगलीए मेरु कंपाव्यो एटली शक्ति शाथी जागी छे ? तो के कोई पण जीवोने दुःख दीधां नथी, ने पोताने कोई दुःख दे छे तो सहन करे छे, ने तेनी पण दया चींतवे छे केमने दुःख दईने आ जीव कर्म बांधे छे, एवी तेनी दया चींतवी तेने प्रतिबोध करे छे; जेमके चंडकोशी सर्प डंश दीधो तो तेने प्रतिबोध दई अनशन करावी देवलोके वैमानीक देव बनाव्यो. आवी रीते दयाना प्रणामथी शक्तिउ प्रगट थई छे. आपणी शक्ति हणाई गई छे, ते दयाना प्रणाम नष्ट थई हिंसानी प्रवृति करवाथी वीर्य बल नष्ट थई गयुं छे, ते पाछा दया भावमां वर्तीए तो वीर्य शक्ति जागे; ते दया बे प्रकारे करवी जोईए. एक द्रव्य दया ते एकेंद्री जीवथी ते पंचेंद्रि जीव सुधी कोई पण जीवने हणवो नहि, तेम कोई पण प्रकारनुं दुःख देवुं नहि, ते द्रव्य दया छे. बीजी भाव दया एवा जीवने दुःख देवानी वर्त्तना करवी, ते आत्मानो धर्म नथी. आत्माने आत्माना स्वभावमां रहेवुं, ते न रहेवाथी आत्माना भाव प्राणनी हानि थाय छे. आत्माना भाव प्राण ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य ए चार कह्या छे, ते जेटली विभाव दशानी वर्त्तना थशे, तेटली हणाशे. जेटली जेटली विभाव दशा त्याग थशे, तेटली भाव दया थशे; ते एवी भाव दया जेटली प्रगट थशे तेटली तेटली वीर्य शक्ति जागशे. अने संपूर्ण वीर्य गुण

सर्व प्रकारे कर्म नाश थशे त्यारे प्रगट थशे तेज वीर्य लक्षण.

६ छठुं उपयोग लक्षणः—उपयोग शुं छे ते जाणवानी शक्ति छे पण जाणवामां चित्त घालवुं ते रूप उपयोग करता नथी त्यां सुधी जाणी शकता नथी, ते रूप उपयोग ज्ञान दर्शनना भेदे करी बार प्रकारे छे ते कर्मग्रंथथी जाणवा.

आ छए लक्षण जीव द्रव्यनां छे, ते जीव जाणतो नथी त्यां सुधी जीवने पोतानी पारकी चीजनी खबर पडती नथी, ते सर्व अज्ञानतानां फल छे. जीव छे से सदा अविनाशी छे, ते पोतानुं स्वरूप न जाणवाथी सदाकाल मरवानो भय राखे छे, एवा अनंत गुण आत्माना छे ते केवलज्ञानी महाराज सिवाय बीजा जीव जाणी शकता नथी. जीवना भेद १४ तथा ५६३ बताव्या छे, ते कर्म संयोगे करी शरीर, इंद्रीयो वगेरेना फेरफारना छे. बाकी कर्म रहित सत्ताए बधा सरखा छे. भेद नथी तो पण भेद जाणवा, ते अधीक लगा व्यवहारमां छे ते समजवा लखुं छुं.

१ एकेंद्रि सुक्ष्म ते चर्म चक्षुए देखाता नथी २ एकेंद्रि बादर ते चक्षुए करी देखी शकाय. ३ बेइंद्रि बे इंद्रिवाला. ४ तेइंद्रि ते त्रण इंद्रिवाला. ५ चोरेंद्री एटले चार इंद्रिवाला. ६ असन्नि पंचेंद्रि ते मन रहित. ७ सन्नि पंचेंद्रिय ते मन सहित.

ए सात जातना पर्याप्ता एटले पर्याप्ती पूर्ण करेली, अपर्याप्ता ते पोतानी पर्याप्ती पूरी करी नथी; एटले सात पर्याप्ता अने सात अपर्याप्ता मली १४ भेद जीवना थाय छे. हवे विस्तारे एना ५६३ भेद कहे छे.

१९८ देवताना थाय ते नीचे मुजब.

१० भुवन पति. १५ परमाधामीना देवता. १६ व्यंतर जातिना देव. १० तिर्यग जृंभकना देव. १० ज्योतसीनी जातिना देवता. १२ देवलोक वैमानीकनी जातिना देव. ३ किल्विषियानी

जातिना देव. ढेढ जेवा. ए लोकांतिक जातिना देव एकावतारी. ए ग्रैवेक जातिना देव. ५ अनुत्तर विमानना देवता. ए कुल ९९ जातना देवता, ते पर्याप्ताने अपर्याप्ता मली १९८ थया. ए देवोने कवल आहार नथी. पोतानी इच्छा प्रमाणे आहारनो स्वाद आवे छे. केटलाएक उंचा पुन्यवाला होय तेमने इच्छा परमाणे न पण बनी शके. देवतानी जातिने वैक्रिय शरीर छे. तेथी रोगादी उपजता नथी. मनुष्यना आउखाने उपक्रम लागे छे, तेवुं देवताने उपक्रम न लागे. पूरे आउखे मरे. एक बीजानी ऋद्धिमां घणो फेरफार रहे छे. वेपार रोजगार करवानी जरुर पमती नथी. ए सामान्यपणे देवतानी जाति कही.

३०३ मनुष्य गणावे छे, ते त्रण जातिना थाय छे.

१५ कर्मभूमिना मनुष्य. कर्मभूमि कोने कहे छे ? ज्यां असि कहेतां हथीआर, तरवार, भाला, छरी, कोश, कुहाडा, ए वस्तुनुं नाम असि कहीये, ते ज्यां वपराय छे. मशी कहेतां नामुं, चोपडा लखवामां आवे छे. कृषि कहेतां ज्यां कर्षण (खेतीवाडी) करवानुं थाय छे, ए त्रणजातिना कर्म जे क्षेत्रमां करवानुं थाय छे, तेने कर्मभूमिनां मनुष्य कहीए. ते क्षेत्रनां नाम.

३ जंबुद्वीपमां मनुष्य. १ भरतक्षेत्र. १ ऐरवृतक्षेत्र. १ महाविदेहक्षेत्र.

६ धातकीखंड द्वीपमां मनुष्य. २ भरतक्षेत्र. २ ऐरवृतक्षेत्र. २ महाविदेहक्षेत्र.

६ पुष्करावर्त्त द्वीपने विषे मनुष्य. २ भरतक्षेत्र. २ ऐरवृत क्षेत्र. २ महाविदेह क्षेत्र.

ए १५ क्षेत्रमां वसनारा मनुष्य पंदर जातिना, एमां भरतक्षेत्र तथा ऐरवृतक्षेत्रना मनुष्यनी रीति सरखी छे, कालस्थिति पण सरखी छे, छए आरानी हकीकत सरखी छे. पांच म-

हाविदेहक्षेत्रमां सदा तीर्थंकर महाराज विचरता लाभे छे, उः भगमां जग एक महाविदेहमां चार तीर्थंकर महाराज होवा जोईए, एम जंबुद्वीप पन्नत्तिमां अधिकार छे. कोई ग्रंथमां बे पण कहे छे, एम प्रवचन सारोद्धारमां कहेलुं छे. तत्त्व केवलीगम्य, वली उत्कृष्ट कालमां एक महाविदेहमां बत्रीश विजय छे, ते सर्वे विजयमां एक एक तीर्थंकर महाराज होय तेथी एक महाविदेहमां बत्रीश तीर्थंकर विचरता लाभे; वली केवलज्ञानी सदा काल लाभे, मोक्षमार्ग सदाकाल वर्ते; जेम भरत, ऐरवृतमां मोक्षमार्ग त्रण आरामां वर्ते छे, ने बीजा आरामां बंध थई जाय छे, तेम त्यां नथी. आउखा विषे पण भरत ऐरवृत्तमां ओछुं वत्तुं छे, तेम त्यां नथी. सदा क्रोड पूर्वनुं आउखुं छे. शरीरमान पांचसें धनुष्यनुं छे, आ फेरफार छे, बीजो पण फेरफार शास्त्रथी जोवो.

३० त्रीश अकर्मभूमि तथा छपन्न अंतर द्वीपना मनुष्य जुगलीआं छे ते मनुष्यने वेपार, रोजगार, रांधवुं, खेतीकाम, कोई पण जातनां हजार बनाववां, वस्त्र पहेरवां, ए कांई पण करवानुं नथी; टुंकामां असि, मशी अने कृषि ए त्रण कर्मभूमिना मनुष्यने छे तेम एमने नथी. फक्त कल्पवृक्ष फल आपे ते खावां छे. कल्पवृक्षथी घर बनी गयां छे, तेमां रहे छे. जेनी जेटली मरजादा छे ते प्रमाणे आहारनी इच्छा थाय ते वखते कल्पवृक्ष एनी मरजी प्रमाणे आपे, आयुष्य शरीर पण मोटां छे, ते दरेक क्षेत्र अपेक्षित छे, ते आगल आवशे. तेम वली त्यांथी मरीने देवता थाय, बीजी गतिमां जाय नहि. केमके सरल स्वभावी छे, आकरा राग द्वेष नथी.

१० हैमवंत अने ऐरण्यवृत जुगलीआनां क्षेत्र. २ जंबुद्वीपमां तेमज ४ धातकीखंडमां ४ पुष्कलार्द्धमां.

ए दश क्षेत्रमां जुगलीआं मनुष्य थाय छे तेमनुं शरीरमान

एक गाउनुं, एक पल्योपमनुं आउखुं. एकांतरे आमला प्रमाणे आहार करे, आयुष्यना ढेमाउपर एक जोमलानो स्त्री गर्भ धरे तेनो जन्म थया पछी ७एए दिवस सुधी तेनी प्रतिपालना माता पिता करे. पछी माता पिता मरीने देवता थाय आ स्थिति छे.

१०. हरिवर्ष अने रम्यक ए बे क्षेत्र नीचेना द्वीपमां छे. २ क्षेत्र जंबुद्वीपमां. तेमज ४ पुष्कलार्द्धमां, ४ धातकी खंमां.

ए दश क्षेत्रनां जुगलीआंनुं देहमान बे गाउनुं, आउखुं बे पल्योपमनुं, बे दीवसने आंतरे आहार बोर प्रमाणे करे, चोशठ दीवस छोकरांनी प्रतिपालना करे.

१० देवकुरु. उत्तरकुरुनां जुगलीआंनां क्षेत्र. २ जंबुद्वीपमां ए बे क्षेत्र. तेमज ४ पुष्कलार्द्धमां. ४ धातकी खंमां.

१० ए दशे क्षेत्रना जुगलीआंनुं देहमान त्रण गाउनुं, आउखुं त्रण पल्योपमनुं, त्रण दीवसने आंतरे तुवेर प्रमाणे आहार कल्पवृक्षना फलनो करे, ४ए दीवस छोकरांना जुगलनी प्रतिपालना करीने काल करे.

३० ए त्रीश क्षेत्रना मनुष्यने अकर्मभूमिना मनुष्य कहीये.

५६ छप्पन अंतरद्वीपनां मनुष्य ते अंतरद्वीप जंबुद्विपनी जगतीना कोटनी नजीक हेमवंत तथा शीखरी पर्वत छे. बंने पर्वतमांथी दाढाउ नीकली छे ते कोटना उपर थईने समुद्रमां गई छे. ने चार चार दाढाउ नीकले छे ने अकेक दाढा उपर सात सात द्वीप छे, ए प्रमाणे ५६ अंतरद्वीप थया. अंतरद्वीप केम कह्या? लवण समुद्र उपर अधर रह्या तेथी अंतरद्वीप कहीए अने ए द्वीप उपर वसनार जुगलीआं मनुष्यने अंतरद्वीपनां मनुष्य कहीए. ए मनुष्यनुं शरीर आठसें धनुष्यनुं होय, आयुष्य पल्योपमना असंख्यातमा भागनुं होय, तेने पण कल्पवृक्षथी आहार होय. ए कुल १०१ क्षेत्रनां मनुष्य ते पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता ए बे भेदे

गर्भजना गणतां २०२ भेद थया, तेमां १०१ भेद समूर्छिम म-
नुष्यना. समूर्छिम मनुष्य कोने कहीए ? मनुष्यना मलमूत्र,
लींट, वमन, थुंक, लोही, मांस, वीर्य, घामनी विगेरे माणसना
अंगना पदार्थमां उत्पन्न थाय, आयुष्य अंतर्मूहुर्तनुं. अपर्याप्ति अव-
स्थाएज मरण पामे. ए मनुष्यो पर्याप्ति पुरी करेज नहि. शरीर
पण अंगुलना असंख्यातमा भागनुं होय, एटले देखवामां आवे
नहि, ए सात आठ प्राण बांधतो मरण पामे. ए कुल भेद ३०३
मनुष्यना जाणवा.

हवे तिर्यंचना ४७ भेद ते नीचे मुजब.

एकेंद्री ते जेमने एक फरस इंद्रि छे तेना भेद.

४ पृथ्वीकाय ते माटी, पाषाण, रत्न, सोनुं, धातुओ, मोतीने
पण अनुयोगद्वारनी टीकामां पृथ्वीकाय अने अचित कह्यां छे.
ए बाबतमां माणसना मनने शंका थाय के छीपना शरीरमां
पृथ्वीकाय केम थाय. ते विषे जाणवुं जे मनुष्यना शरीरमां
पथरी थाय छे, तो ते पृथ्वीकाय छे तेम ए पण जाणवुं. ए पृ-
थ्वीकायना पथरा प्रमुख मोटा मोटा देखाय छे, तो पण ए
असंख्याता जीवनो पींड छे. एक आमळा जेटली माटी वा प-
थर लीधो होय तेमां असंख्याता जीव छे. एक जीवनुं शरीर
अंगुलना असंख्यातमा भागनुं छे ते बधानो पींडभूत छे. ए
जीवनां शरीर कल्पनाथी कबुतर जेवडां करीए तो एक लाख
जोजननो जंबुद्वीप छे तेमां माय नहीं. एवी पृथ्वीकायना श-
रीरनी सूक्ष्मता छे. ए पृथ्वीकायनुं उतकृष्ट आयुष्य बावीश
हजार वर्षनुं छे, ते बादर पृथ्वीकायनुं छे. ते देखवामां आवे छे
तेनुं स्वरूप कह्युं. हवे पृथ्वीकायना एथी पण सूक्ष्म जीव छे
ते चर्मचक्षुने अगोचर छे. केवलज्ञानी महाराजे पोताना ज्ञान-
मां जोइने कह्या छे, ते चउद राजलोकमां बधे छे. तेनुं आयुष्य

जघन्य अने उतकृष्ट अंतरमुहूर्तनुं छे. ए पृथ्वीकायना बे भेदने पण पर्याप्ता जेणे चार पर्याप्ति पुरी करी छे ते, तथा अपर्याप्ता जेणे चारे पर्याप्ति पूरी करी नथी, वा अपर्याप्ति अवस्थाएज मरे छे, ते अपर्याप्ता सूक्ष्म तथा बादर पृथ्वीकाय एटले चार भेद थया.

अपकायना च्यार भेद. ते पाणीना जीव, तेमां कुवानुं, तलाव, समुद्र, वरसाद, धुमर प्रमुखनुं पाणी. ए पाणीना जीवनुं शरीर पण अंगुलना असंख्यातमा भागनुं. ए पाणीनो पींम देखाय छे, तेना एक बींदुमां पण असंख्याता जीव छे. ए जीवनुं आयुष्य जघन्य अंतर मुहूर्तनुं, उत्कृष्टथी त्रण हजार वर्षनुं छे. ए बादर अपकाय, तथा सूक्ष्म अपकाय ते देखवामां आवता नथी एटले बे भेद थया. ते पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता बे मेलवतां अपकायना चार भेद थया.

तेउकायना चार भेद ते. सूक्ष्म तेउकाय तथा बादर तेउकाय. ए बे पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता. एनुं शरीर अंगुलना असंख्यातमा भागनुं. आउखुं उत्कृष्ट त्रण दिवसनुं. एमां पण सूक्ष्म तेउकाय अगोचर छे.

वाउकायना च्यार भेद ते सूक्ष्म वाउकाय तथा बादर वाउकाय. ए बे पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता एम चार भेद. वाउकायनुं शरीर अंगुलना असंख्यातमा भागनुं, आयुष्य बादर वाउकायनुं उत्कृष्ट त्रण हजार वरसनुं अने सूक्ष्म वाउकायनुं अंतमुहूर्तनुं.

वनस्पतिकायना छ भेद-तेमां प्रत्येक वनस्पति ते एक शरीरे एक जीव होय ते; जेम के एक फलनी मांहे जेटलां बीज छे तेटला जीव छे. फलनी गलनो एक जीव, फलना गर्भनो एक जीव, वृक्षनी शाखानो एक जीव, मूलनो एक जीव, थडमां एक जीव, पत्रमां एक जीव, एवी रीते जूदा जूदा जीव होय. कोई कहेशे जे आखा झाडमां एक जीव तो फलना, बी-

जनां जूदा जूदा जीव केम ? ते विषे समजवुं के, स्त्रीना आखा शरीमां एक जीव छे, पण तेना शरीरमां गर्भ जेटला रहे छे ते गर्भना जीव जूदा जूदा होय छे. तेम बीजना जीव जूदा जूदा होय. एवां जे फलादिक तेने प्रत्येक वनस्पति कहीये. मोटां झाड वड, पीपला, नालीएरी विगेरे तथा,घउं प्रमुख अनाजनां झाड तथा शाक, फल, चीभडां प्रमुखना वेलादिक ए सर्वे प्रत्येक वनस्पति जाणवी. ते बे प्रकारे पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. वनस्पतिकायना जीवने च्यार पर्याप्ति कही छे, ते पुरी करी नथी त्यां सुधी अपर्याप्तो, पूरी करे त्यारे पर्याप्तो. अपर्याप्ति अवस्थाये पण केटलाएक मरण करे छे. पर्याप्ति प्रत्येक वनस्पतिना झाड, वेला मोटामां मोटा एक हजार जोजन अधीकना थाय छे, ए वेलाउ निराबाध जगामां लांबा जाय छे ते जाणवुं. अने अपर्याप्तानुं शरीरनुं मान अंगुलना असंख्यातमा भागनुं कह्युं छे. उत्कृष्ट आयुष्य दश हजार वरसनुं कह्युं छे. जघन्य अंतर्मुहूर्तनुं कह्युं छे. अने अपर्याप्तानुं जघन्य उत्कृष्ट अंतमुहूर्तनुं छे. एक पर्याप्तानी निश्राये असंख्याता अपर्याप्ता रह्या छे. ए अधिकार पन्नवणाजीमां विस्तारे कह्यो छे. लीली वनस्पतिमां ए अपर्याप्ता संभवे छे, हवे साधारण वनस्पतिकाय ते एक शरीरमां अनंता जीव रह्या छे, तेने अनंत काय कहीये, अने निगोद पण कहीये. ते निगोद बे प्रकारे छे. एक बादर निगोद ते वनस्पति दृष्टिए देखवामां आवे छे. आदू, मूला, गाजर, सूरण, रतालु, आदे कंदनी जातो जे कंद काप्या छतां पण पाछा उगे ते तथा झाडोमां उगता अंकुरा जे जे पत्र फल प्रत्येकने योग्य नथी थयां, जेनी नस बीज परव देखाय नही, भाग्या छतां सरखुं भागे, कापेला जेवुं देखाय, भागेली जगोये पाणीना मोतीआ वाले, एवी वनस्पतिने अनंतकाय कहीये, ने. साधारण वनस्पति तेनेज बादर निगोद कहीये. ते जीव पण बे

प्रकारे, पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता एमनुं शरीर अंगुलना असंख्यातमा भागनुं छे, आयुष्य अंतर्मुहूर्तनुं. हवे सूक्ष्म निगोद ते चउदराज लोकमां सर्व ठेकाणे भरेली छे, सूक्ष्म निगोद विनानी कोइ जगो खाली नथी. एनी सूक्ष्मता एवी छे के अंगुलना असंख्यातमा भागमां निगोदना असंख्याता गोला छे, तेमांना एक गोलामां असंख्याती निगोद छे, ते एक निगोदमां अनंता जीव छे, ते जीवोनुं आयुष्य एक श्वास लइने मुकीए तेटलामां सत्तर भव झाजेरा थाय, एटले एटली वार मरवुं उपजवुं थाय, ए जीव पण पर्याप्ता अने अपर्याप्ता बे प्रकारे छे. ए बे भेद प्रत्येकना, बे भेद बादर निगोदना, बे भेद सूक्ष्म निगोदना—ए त्रणना मली वनस्पतिना जीवना छ भेद थया.

२ बेइंद्री जीव ते शंख, कोडा, गंडोला, अलसीयां, मेहेर, कमींया, शमींया, आदे जेने शरीर ते फरस इंद्रि तथा मुख ते रस इंद्रि ए बे इंद्रि छे ते बे इंद्रि जीव जाणवा. ए पण पर्याप्ता अने अपर्याप्ता बे भेदे छे. ए जीवनुं शरीर मोटामां मोटुं बार जोजननुं होय, एवा शरीरवाला जीव विशेषे करीने चोथा आरामां थाय छे, ते कालमां मनुष्यनुं शरीर पण मोटुं होय छे, केटलाएक जीवने भगवंतना वचननी प्रतीत नथी होती, तेने व्यामोह थाय छे के आटलुं मोटुं शरीर केम होय. पण बुद्धिवानने तथा भगवंतना वचननी श्रद्धावालाने शंका थती नथी. कारण जे हालमां एक पेपरमां वांचवामां आवेलुं हतुं के एक गीलोडीनां हाडकां सवा गजनां हतां. ने देखीती तो हालमां चार तसुनी देखाय छे. हाडकां आटलां मोटां देखाय छे. कोई काले एवी मोटी पण थती नीश्चे थाय छे तेम हालमां देश फेरथी पण मोटा नानानो फेर देखाय छे. काकरेजी बलदीया जेवा मोटा थाय छे तेवा मोटा बलदीया आ देशमां थता नथी. घोडा वि-

लायती एटला मोटा आवे छे के तेवा मोटा गुजरातमा थता नथी. माणसो पण पंजाबमां ऊंचां मजबूत थाय छे तेवां गुजरातमां थतां नथी.एनुं कारण एटलुं छे के हवा पाणीना फेरफारथी थाय छे. तेम काळना फेरफारथी फेरफार थाय एम जाणी बुद्धिवानने शंका थती नथी. ए बेइंद्रि जीवनुं आयुष्य बार वरसनुं उत्कृष्ट थाय छे.

२ तेइंद्रि जीवना बे भेद छे ते पर्याप्ता अने अपर्याप्तां, ते जीव–मांकण, कीडा मंकोडा वीगरे जाणवा ए जीवनुं शरीर मोटामां मोटुं त्रण गाउ सुधीनुं थाय छे, तथा आयुष्य उत्कृष्ट उगणपचास दीवसनुं कह्युं छे. ए पर्याप्तानुं जाणवुं, अने अपर्याप्तानुं तो अंतर मुहूर्तनुं होय.

२ चौरेंद्रि जीव पण बे प्रकारे पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ए जीवने पांच पर्याप्ति छे ते पूरी करे त्यारे पर्याप्ता अने तेमांथी अधुरी पर्याप्ति होय ते अपर्याप्ता, माखी, मछर, वींछु, प्रमुख जीव जाणवा. ए जीवने फरस इंद्रि, रस इंद्रि, घ्राण इंद्रि, चक्षु इंद्रि ए चार इंद्रि होय. आयुष्य उत्कृष्ट छ मासनुं होय, शरीर उत्कृष्ट एक जोजननुं होय.

२० पंचेंद्रि तिर्यंचना वीश भेद ते नीचे प्रमाणे जाणवा.

१ जलचर ते पाणीमां चाले ते मछ,ते मागलां,सुसुमार वीगरे.

२ थलचर ते जमीन उपर चाले ते गाय, भेंस, बलद, हाथी, घोडा वीगरे.

३ खेचर ते आकाशे उडे ते पंखीओनी जाति.

४ उरपरिसर्प ते पेटे चाले तेमां सर्प प्रमुख जाणवा.

५ भुजपरिसर्प ते भुजाए चाले ते नोळीया खीसकोली प्रमुख.

ए पांच प्रकारना तिर्यंच ते गर्भथी उत्पन्न थाय ते, गर्भज

ए स्त्री पुरुषना संजोगथी उत्पन्न थाय छे, ए जीवनां शरीरनां मान तथा आयुष्य, क्षेत्र, काल, जीव अपेक्षाये जूदां जूदां छे, ते पन्नवणाजी जिवाभिगमथी वा जीव विचारथी जाणवां. ए जीव कर्म भूमिमां तथा अकर्म भूमिमां उत्पन्न थाय छे. बीजो भेद समूर्छिम तिर्यंच ते स्त्रीना संजोग विना उत्पन्न थाय छे. जेम के देडको मरी गयो होय ने तेनुं कलेवर होय ते कलेवरमां वरसादनो छांटो पडे के-पाछा तेमां देडका उत्पन्न थाय; वीछुनुं कलेवर होय तेमां वीछु उत्पन्न थाय छे; छाणमां पण वीछु उत्पन्न थाय छे, तेम केटलीक वस्तुना प्रयोगमां जीवो उत्पन्न थाय छे, ते जीवने समूर्छिम कहीये. ए पण पांच प्रकारे थाय छे. एटले गर्भज अने समूर्छिम मलीने दश भेद थया, ते गर्भजने छ पर्याप्ति छे, समूर्छिमने पांच पर्याप्ति छे. ते प्रमाणे पर्याप्ति करे तेने पर्याप्ता कहीये. पर्याप्ति पुरी नथी करी त्यां सुधी अपर्याप्ता कहीये. ए प्रकारे बे भेदे गणतां वीश भेद थाय, ते वीश प्रकारना तिर्यंच पंचेंद्रि जाणवा. एकेंद्रियी तिर्यंच पंचेंद्रि सुधीना भेद एकठा करतां अडतालीश भेद सर्व तिर्यंचना थाय.

हवे नरकना जीव चउद प्रकारे नरकना नामना भेदथी थाय छे.

रत्न प्रभा नरकना नारकी १ शर्करा प्रभा नरकना नारकी २ वालुका प्रभा नरकना नारकी ३ पंक प्रभा नरकना नारकी ४ धुम प्रभा नरकना नारकी ५ तमः प्रभा नरकना नारकी ६ तमतमा प्रभा नरकना नारकी ७.

ए साते नरकमां जीव उपजे ते नारकी कहीये. पेहली नरकना करतां बीजी नरकमां दुख वधारे, आयुष्य वधारे, शरीर मोटुं एम अनुक्रमे सातमी नरक पर्यंत एक एकथी वधारे दुख, आयुष्य शरीर पण वधारे छे. ए नरकमां दुख एवां छे जे दुखनो जोडो मनुष्य लोकमां नथी. केटलीएक नरकमां परमाधामीनी

करेली वेदना छे. केटलीएक नरकमां स्वभाविक क्षेत्र प्रभावे वेदना छे. जे जे आकरां पाप करे तेनां फल नरकमां भोगववानां छे. आयुष्य वधारेमां वधारे तेत्रीस सागरोपमनुं छे, तेमां असंख्याती काल जाय, तेटला काल सुधी दुख भोगववानुं छे अने मनुष्यमां विषयनुं अल्प काल सुख मानेलुं माणवुं. वस्तुपणे तो विषयमां सुख नथी, पण अज्ञानपणे सुख मानी विषय भोगवे छे अने तेनां फल जीव नरकमां भोगवे छे. ए नरकना जीवने दश प्राण छे, छ पर्याप्ति छे, ते बांधी न रह्यो होय त्यां सुधी अपर्याप्तो कहेवाय ने पूर्ण बांधे एटले पर्याप्तो. ते पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एम बे भेद गणतां चउद भेद थाय, एटले चउद प्रकारना नारकी.

ए एकेंद्रिथी पंचेंद्रि सुधीना सर्वे भेद भेगा करीये त्यारे चारे गतिना कुल ५६३ भेद थाय ते नीचे प्रमाणे.

१९८ भेद देवताना ३०३ मनुष्यना भेद.
४८ तिर्यंचना भेद १४ नारकीना भेद.

एम बधा मली सामान्यथी जीवना ५६३ भेद थाय छे विस्तारथी तो जीवना भेद तथा जीवनां स्वरूपनुं वर्णन करतां आयुष्य पण पहोचे नही एटलुं वर्णन शास्त्रमां करेलुं छे, माटे विस्तार रुची जीवोए शास्त्र अभ्यास करी जाणी लेवा, पण ज्यां सुधी अज्ञाननुं जोर छे त्यां सुधी जीवने वीतराग भाषित शास्त्र जोवानुं तथा सांभलवानुं मन थशे नही, एम करतां जबराइथी वा शरमथी सांभलशे तो श्रद्धा करशे नहीं तेनुं कारण एटलुंज छे के पूर्व भवनी विपरीत श्रद्धानी संज्ञा चाली आवे छे, तेना जोरथी साची वस्तु रुचे नही. उन्मार्गनी रुची थाय. विपरीत वस्तु उपर कल्पित न्याय जोमी तेनी श्रद्धा करे. बीजा जीवने पण कुयुक्ति करी समजावी उन्मार्गमां पाडे अने तेवीज रीते अनेक जूदा जूदा धर्मो थइ गया छे, अने जे माणस जे ध-

मेने माने छे, ते धर्ममां शुं कह्युं छे ते पण जाणता नथी. पोते जेने देव माने छे ते देव शा कारणथी मानुं छुं, ते देवमां देवनां लक्षण छे के नथी ते जोता नथी. केटलाएक ब्राह्मणोए क्रीश्चियन धर्म अंगीकार करी वेद धर्म छोडी दीधेलो, तेओ वेद धर्ममां शी भूल छे ते जाणता नथी. तेम वेदमां कह्याथी विपरीत चालीए छीएं ते पण जाणता नथी. एक क्रीश्चियनने पूछएलुं तो संतोषकारक भूल पण बतावी शक्यो नही, तेनुं कारण एटलुंज छे के स्त्री अने धनना लोभे धर्म अंगीकार करे छे, तेने कांई पछी धर्म जाणवानी जरुर पडती नथी, अने अज्ञानना जोरथी सत्य खोलवानुं चित्त थतुं नथी. केटलाएक ब्राह्मणो जैननी निंदा करे छे ते एटला सुधी के वेश्याना घरमां पेसवुं पण जैन मंदिरमां न जवुं, आ केटलुं भूल भरेलुं छे ते नीचेनी हकीकतथी सहेज समजाशे. महाभारत शास्त्रमां नीचे प्रमाणे श्लोक छे.

युगेयुगे महापुण्यं, दृश्यते द्वारिकापुरि ।
अवितीर्णो हरि र्यत्र, प्रभासे शशि भूषणः ॥१॥
रैवताद्रौ जिनो नेमि र्युगादिर्विमलाचले ।
ऋषीणामाश्रमा देवः मुक्ति मार्गस्य कारणम् ॥२॥

आ मुजब महाभारतमां श्लोक छे—ए श्लोकमां जैननुं तीर्थ जे रैवतगिरि हालमां गिरनारजी कहेवाय छे, तथा त्यां नेमिनाथजी महाराज बावीसमा तीर्थंकर तेनोज महिमा जैनीयो माने छे, तेज तीर्थनुं तथा नेमिजिननुं बहुमान पूर्ण कर्युं छे. वली विमलाचल जे हालमां शत्रुंजय कहेवाय छे, त्यां युगादिजिन एटले ऋषभदेवजीने युगादिज जैनशास्त्रमां कह्या छे, तेम भारतमां पण कह्या छे. ए बे तीर्थने मोक्षनुं कारण आ श्लोकमां बता-

व्युं छे, तो भारतना माननारने ए जैनना तीर्थने अने देवने मोक्ष कारणभूत सेववा जोईए के निंदा करवी जोईए ? भारत तो हमेश वंचाय छे, ते छतां आ वात ध्यानमां न रहेतां अवलो रस्तो पकड्ये छे ते अज्ञाननी राजधानीनुं फल छे. पण जेने कांईक अज्ञान पातलुं पड्युं होय तेना कान खोलवा सारु आ बाबत जणावी छे. हजु बीजा पण स्थानमां छे ते नीचे लखीए छीए.

॥ ऋग्वेदनो मंत्र ॥

ॐत्रैलोक्य प्रतिष्ठितान् चतुर्विंशति तीर्थंकरान् ऋषभाद्यान्वर्धमानांतान्सिद्धान् शरणं प्रपद्ये ॥

॥ यजुर्वेदनो मंत्र ॥

ॐ नमोर्हतो ऋषभाय ॐऋषभपवित्रं पुरहुतमध्वरं यज्ञेषु नग्नं परममाह संस्तुतावारं शत्रुंजयं तं सुरिन्द्रमाहुतिरिति स्वाहा ॥

॥ यजुर्वेदनो बीजो मंत्र ॥

ॐत्रातारमिन्द्र ऋषभंवदंतिअमृतारमिन्द्र हवेसुगतं सुपार्श्वं मिन्द्रहवे सक्रमजितंतद्वर्द्ध मानपुरहुतमिन्द्र माहुतिरिति स्वाहा ॥

॥ त्रीजो मंत्र ॥

ॐनग्नं सुधीरंदिग्वाससं ब्रह्मगर्भंसनातनं उपैमिवीरं पुरुषमर्हंतमादित्यवर्णं तमसः पुरस्तात् स्वाहा ॥

पुनः ऋग्वेद. मं. १ अ. १४ सू. १०

स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्ट नेमिः ॥

आ रीतना वेदोमां मंत्र छे; ते दयानंद छलकपट दर्पण नामनी चोपडीमां में वांच्या पाने ३१० ते उपरथी वेदना जाणकार शास्त्रीने बताव्या, अने पूछ्युं के आ मंत्रो तमारा वेदमां छे ? त्यारे ते शास्त्रीये सत्य दशा धरीने कह्युं जे अमो नित्य वेदनुं अध्ययन करीये छीएं, तेमां आवे छे. आ शास्त्रीना केहवाथी खात्री थई के वेदमांनाज छे, तेथी आ चोपडीमां दाखल कर्या, जे हठ विनाना होय तेने समजाय के जैनना देवने पण वेदवालाए मान्य कर्या छे. तो तेमनी निंदा केम करुं—वली जैनधर्म नवीन छे एवुं जेना मनमां होय तेने समजाय के जैनना ऋषभदेवजीथी ते चोवीशमा महावीर स्वामी पर्यंत चोवीस तीर्थंकरनां बहुमान नमस्कार कर्या छे, तो ए जैनधर्मना देव थया पछी वेद थया के केम ? जो वेद अनादि होत तो ए देवनुं स्मरण थात नही. माटे जैनधर्म अनादि छे ए निश्चे वेदथीज थाय छे. पण आ वात जेने मिथ्यात्व पातलुं पड्युं हशे तेने समजाशे. पण जे हठ कदाग्रही छे, अज्ञाननु जोर पूर्ण छे तेवा माणसने विचार करवानी बुद्धिज जागती नथी अने खरुं समजातुं नथी. करता आव्या ते करवुं एटलुंज समजी राख्युं छे, अने ज्यारे अज्ञान खसशे त्यारे खरुं खोटुं खोलवानी बुद्धि जागशे, अने खरुं अंगीकार करशे. जे जे माणस पोताना देव माने छे, अने ते देवोए धर्म बताव्यो छे, ते प्रमाणे ते देवो धर्ममां वर्त्या छे के नही, ते सारु देवोनां शास्त्रमां चरित्र छे ते जोवां जोईए, अने ते चरित्रमां जेम आपणने चालवा कहे छे तेम ते पुरुष चालेला नथी अने सर्वज्ञपणुं माने छे ते चरित्रथी सिद्ध थाय छे के नही, अने ते सिद्ध न थाय तो पछी तेमने देव शा सारु मानवा एवो विचार अज्ञान खसशे त्यारे थशे. त्यांसुधी थशे नही. वली गुरुपणुं धरावे छे, अने लोकने धर्म उपदेश दे छे के अहिंसा धर्म सर्वमां मुख्य छे एम समजावे छे. पण पोते हिं-

सानो त्याग करता नथी. असत्य बोलवुं नहीं ए छये दर्शनवालाने मान्य छे, तेम छतां गुरु थइने असत्य बोलतां डरे नही, चोरी करवी नही, कोईने ठगवुं नही, ए जगत निंदनीक छे. सर्व धर्ममां निषेध छे. ते छतां गुरु नाम धरावे अने चोरी ठगाइ कपटनां काम करे. पर स्त्रीनो त्याग सर्व धर्ममां ने जगतमां निंदनीक छे, तेम छतां गुरु थइ सेवकनी स्त्री, बेन, मा, छोकरीनी साथे मैथुन सेवतां डरे नहि. साधुने धन राखवुं नहि जोईए ए आर्य धर्मनी मर्जादा छे तेम छतां सेवक पासेथी धन ले. वली कपट लुच्चाइ करी धन मेलवे. सेवको उपर जुलम करीने धन ले. आवी वर्तणुकना करनारने गुरु माने, हजारो रुपीआ आपे आ अज्ञानदशानी प्रबलता छे. आवाने गुरु मानवानो विचार जेने नथी, ते बीजा सत्य असत्य धर्मने ते शुं तपासे ? अज्ञानपणे एवा अज्ञानी गुरुथी ठगाय छे एटलेथी बस नथी. आवते भव खरा धर्मनी निंदा करवाथी जे कर्म बंधाय छे तेथी भवोभव जीव दुर्गतिनां दुख भोगवशे, अने जे पुरुष आत्मार्थी थयो छे, एटलुं अज्ञान खस्युं छे तेना प्रभावथी न्यायनी बुद्धि जागे छे तेथी सत्य असत्य मार्गनी परीक्षा करी खोटो मार्ग त्याग करी सत्य मार्ग अंगीकार करे छे. जेम गौतमस्वामी महाराज श्रीमन्-महावीर स्वामी भगवाननी महत्त्वता सांभली घणाज रोशमां तथा अहंकारमां व्याप्त थया हता, अने भगवान साथे वाद करवा समोसरणमां आव्या हता, पण भगवंते वेदनाज अर्थ समजावी खरो मार्ग गौतमस्वामी महाराजने समजाव्यो. ते न्यायनी बुद्धिथी विचारी सत्य जाणी ग्रहण कर्यो अने पोताना असत्य धर्मनो त्याग कर्यो, अने भगवान सर्वज्ञ छे एवुं दृढ करी पोते भगवानना शिष्य थया. भगवंते वास क्षेप कर्यो. एटलामां भगवानना प्रभावथी आवर्ण खपवाथी द्वाद-

शांगीना जाण थया. अनुक्रमे शुक्ल ध्यान धरी घातीकर्म ख-
पावी केवलज्ञान पाम्या अने मोक्षे पोहोंच्या; तेम आत्मार्थी
जे जे पुरुषोए अज्ञान खपावी ज्ञान पामीने अज्ञान खपाववानो
मार्ग दर्शाव्यो छे, ते मार्ग अंगीकार करीने वर्त्तवुं के सहेजे अ-
ज्ञान खपी जशे. जे पुरुषने विषे अज्ञाननो अंश पण रह्यो नथी
तेज सर्वज्ञपणाने पामे छे अने भगवान् पण तेज कहेवाय छे.

१४ मिथ्यात्वनामा दोष ते मिथ्यात्व कोने कहीये. खरी
वस्तुने खोटी माने, खोटी वस्तुने खरी माने; सत्यने असत्य माने,
असत्यने सत्य माने; धर्मने अधर्म माने, अधर्मने धर्म माने; देवने
अदेव माने, अदेवने देव माने; चेतनने अचेतन माने, अचेतनने
चेतन माने; जे जे पदार्थ छे तेना जे जे धर्म रह्या छे तेथी विप-
रीत धर्म तेना माने; न्यायने अन्याय माने, अन्यायने न्याय माने;
आवी विपरीत बुद्धि थाय ते मिथ्यात्वनी राजधानी छे. इहां को-
इने प्रश्न थशे के अज्ञाननामा दूषण कह्युं तेमां अने मिथ्यात्वमां
शो फेर छे ते विषे जाणवुं जे अज्ञाने करी जड बुद्धी थाय छे
अने मिथ्यात्वे करी विपरीत बुद्धी थाय छे. आ फेर छे. मि-
थ्यात्व जेने छे तेने अज्ञान पण छे अने जेने अज्ञान छे तेने मि-
थ्यात्व पण छे. ए बे साथेज रहे छे एटले एकाकार लागशे पण
बे शब्दना अर्थ जुदा छे तेम भाव पण जुदा छे. ए मिथ्यात्वनी
बुद्धिवालाने बहु प्रकारे छे. ते समजवा सारु सिद्धांतकारे पच-
वीस भेद कह्या छे अने ते पचवीस प्रकारे श्रावकनां बार व्रत
अंगीकार करे छे त्यारे सम्यक्त्व अंगीकार करे छे त्यारे पचीस
प्रकारे त्याग करे छे ते स्वरूप किंचित इहां लखुं छुं.

१ अभिग्रह मिथ्यात्व ते कुगुरु कुदेव कुधर्मनो खोटो हठ
पकडेलो छे ते मिथ्यात्वना जोरथी गर्दभ पुंछनी परे मुके नही.
एटले कोईक पिताए पुत्रने समजाव्यो के जे पकडवुं ते मुकवुं

नहीं ते वातनुं विशेष स्वरूप समज्या विना ते वात चित्तमां निश्चित थापी राखी पछी कोईक वखत बजारमां जाय छे त्यां गधेरुं दोमतुं आव्युं तेने रोकवाने पुंछरुं पकम्युं, त्यारे तेणे लातो मारवा मांमी ते लातो खाया करे पण पुंछरु मुके नही. ते जोईं लोकोने दया आववाथी तेने समजाव्यो जे ए पुंछरुं मुकी दे नीकर मरी जइश त्यारे एकज जवाब आप्यो जे महारा बापे शिखामण आपी छे के-जे पकम्युं ते मुकवुं नहीं, माटे हुं पकमेलुं छोमीश नहीं; एम कही मुक्युं नही अने लातो खाईने डुखी थयो. तेम आ मिथ्यात्वना जोरथी सुगुरु साचो मार्ग बतावे, घणी रीते समजावे, तो पण सुगुरुनुं वचन माने नहीं अने कहे जे बापदादा करता आव्या तेम करवुं, घरमा शुं गांमा हता? एम हठ पकमीने खरी वात समजे नहीं अने प्रत्यक्ष कुगुरु पोतानी स्त्री वा मा बेन साथे खोटी रीते वर्त्तता होय तो पण बापदादानो हठ पकमी कुगुरुने मुके नही ते अन्निग्रहीक मिथ्यात्व.

२ बीजुं अनन्निग्रही मिथ्यात्व ते साचा देव अने खोटा देव कुगुरुने सुगुरुने सत्य धर्मने असत्य धर्मने बधाने सरखा माने. सुदेवने पण नमस्कार करे अने कुदेवने पण नमस्कार करे. खराखोटानो न्नेद नथी. मुखे पण बोले के सर्व देवने नमस्कार करवा पण तेनो परमार्थ नथी जाणतो के देवने तो नमस्कार करवा योग्य छे पण देवपणुं नथी ने तेमां देवपणुं केम मानवुं तेवो विचार नथी तेथी गुणी निर्गुणी सर्वेने सरखा माने छे, तेमां न्नाग्य उदयथी सुगुरु मळे तो कल्याण, पण ते मली न शके. जो मळे तो एवी बुद्धि रहे नहीं ने एवी बुद्धि रही छे तेथी जणाय छे के कुगुरु मळ्या छे. अने तेनी संगतथी तत्त्वने अतत्त्व माने तेथी शुद्ध आत्मधर्म, अने आत्मधर्म प्रगट करवानां कारणो मली शके नही. अने न्नवनो निस्तार थाय नहीं माटे आत्मार्थी स-

त्य असत्यनी परीक्षा करी शुद्ध देवगुरु धर्म अंगीकार करवो के अनभिग्रहीक मिथ्यात्व टली जाय.

३ अभिनिवेशिक मिथ्यात्व ते सत्य देवगुरुने जाणे पण मिथ्यात्वना जोरथी तेने आदरे नहीं. कोई समजावे तेने कहे जे बापदादा मानता आव्या ते केम मुकाय. जो मुकीये तो नाक जाय बाकी अमे जाणीये छीए जे सारा तो नथी एवो जवाब आपे अने ममत्वे करी खोटी प्ररूपणा करे, खोटी खेंच करे, उन्मार्ग वर्त्तावे, आत्माने कर्मबंधनो भय नथी वीतरागनो मार्ग साचो जाणे तो पण ते रीते पोताना अहंकारने लीधे प्ररूपे नही, पोते वर्ते नही ने साचा उपर द्वेष धारण करे. एवा हठवादी, पार्श्वनाथजी महाराजनी परंपरामां थएला साधु, ते गोशाला भेगा रहेला तेमने श्रीमत् महावीर स्वामी महाराजना श्रावके जइने कह्युं जे आपे श्री पार्श्वनाथजी महाराजनो पण उपदेश सांभल्यो छे अने गोशालानो उपदेश सांभल्यो छे, तेमां सत्य शुं छे? त्यारे जवाब दीधो जे महावीर स्वामी महाराज जेम पार्श्वनाथजी महाराज उपदेश देता हता तेमज दे छे, पण हमारे ममत्त्व बंधायो छे माटे वीरनो मरोड उतारीशुं. हमो दुर्गति जतां बीता नथी एवो जवाब अभिनिवेशिक मिथ्यात्वना जोरथी दीधो, तेम आज पण साचु जाण्या छतां आवा आग्रहथी उत्सूत्र बोलतां डरता नथी. बीजा जीवोने उन्मार्गनो उपदेश देइने तेमने पण उन्मार्गने विषे जोडे. वीतरागना सत्य मार्गनी निंदा करे. आवी दशा छे ते ए मिथ्यात्वना जोरनी छे. एवी दशा छे त्यां सुधी पोताना सहज स्वभावने ओलखशे नहि, विभाव स्वभावने छांडशे नही. तेम शुद्ध तत्त्वनी श्रद्धा पण करशे नही, माटे ए मिथ्यात्वनो परिहार करवो.

४ संशय मिथ्यात्व ते वीतरागना वचनमां संशय पडे. जेम

के शास्त्रमां रीखवदेवजी महाराजना वखतमां शरीर पांचसें धनुष्यनां हतां, आयुष्य क्रोड पुर्वनुं हतुं, एवुं शास्त्रमां सांभलीने शंका करे जे आटलुं मोटुं शरीर, आयुष्य होय नहीं, एम मानी प्रभुना वचन सर्दहे नहीं, पण विचार करे नहीं के आवी गया कालनी बाबतो तथा अरूपी पदार्थनी श्रद्धा आप्त पुरुष जे सर्वज्ञ तेमना वचननी प्रतीत करवाथी थाय छे, माटे आप्त पुरुषनी खातरी प्रथम करवी. ते खातरी करवानुं साधन हालमां एटलुं छे के जे जे लोक जे जे देवने माने छे ते ते देवने ते सर्वज्ञ माने छे, तो ते देव सर्वज्ञ छे के नहीं ते मध्यस्थ बुद्धिथी तपासवा सर्वे देवोनां चरित्रो जोवां; तेमां सर्वज्ञतानी खामी जणाय छे के नहीं. जेम के महादेवजीए पार्वतीना बनावेला पुत्रने पुत्र न जाणतां जार पुरुष जाण्यो. वली तेनुं माथुं क्यां गयुं ते ज्ञानमां जणायुं नहीं तेथी हाथीनुं माथुं लावीने पेला पुत्रने चोडयुं. एवा दाखला जोवाथी सर्वज्ञ छे के नथी ते खात्री थशे. तेमज श्रीमत् महावीर स्वामी भगवान् केवलज्ञान पामी सर्वज्ञ थया त्यार बाद सर्वज्ञतानी खलना कोइ पण ठेकाणे थती नथी, तो जे पुरुषमां सर्वज्ञतानी खामी नथी जणाती तेवा पुरुषना वचनमां संशय करवो नहीं जोइए. युक्ति करवानी शक्ति होय तो ते युक्तिये तपास करवी. हालमां पण हवा फेरफारथी मजबूत माणस देखाय छे, तेम ते कालनी हवा एवी अनुकुल तेथी एवा बनी शके. एवा विचारो करवाथी अमने तो कोइ पण संशय वीतरागना वचनमां थतो नथी ने बीजाना चरित्रो जोयां तेमां सर्वज्ञतानी खामी जणाय छे. हालमां चरित्र चंद्रिका नामनी चोपडी छपाइ छे तेमां घणा देवोनां चरित्र छे ते में वांची छे. तेम परीक्षकोये मध्यस्थ बुद्धिए वांचवी. ते चोपडीमां महावीर स्वामीनुं पण चरित्र छे ते बराबर लख्युं नथी, तो पण तेमां स-

र्वज्ञतानी खामी पमती नथी. हवे जैननां द्विजवचनचपेटा हे-मचंद्राचार्यनुं करेलुं तथा धर्मपरीक्षानो रास जोशो तो केटला-एक देवोनां चरित्र जणाशे अने तेमनी सर्वज्ञतानी खामी जणाशे माटे जे पुरुषमां खामी नथी ते पुरुषनां वचन प्रमाण जेने ए मि-थ्यात्व खस्युं हशे ते करशे. जेने परमात्माना वचनमां कोइ पण बाबत माटे संशय तेने संशय मिथ्यात्व जाणवुं.

५ अनाभोगीक मिथ्यात्व ए मिथ्यात्ववालाने धर्म कर्मनी खबर नथी, तेनी खोजना नथी, मुढतामांज रहे छे, धर्म सन्मुख दृष्टीज नथी, जेम के एकेंद्री प्रमुख जीवो अव्यक्तपणामांज काल गुमावे छे तेने अनाभोगीक मिथ्यात्व कहीये.

हवे दश प्रकारे मिथ्यात्व ठाणांग सूत्रमां कह्यां छे. तेने अ-नुसरीने लखुं छुं.

१ धर्मने अधर्म माने ए मिथ्यात्व. हवे धर्म छे ते बे प्रकारे छे एक निश्चय धर्म ते आत्म स्वभावमां रहेवुं ते. अने तेथी विपरीत जे जम धर्म छे, तेमां प्रवर्तवुं अने तेने धर्म मानवो ते अधर्म. पुद्गल प्रवृत्ति बे प्रकारे छे. एक पुद्गल प्रवृत्ति आत्म धर्म प्रगट थवाना कारणरूप छे, ते पण आदरवा योग्य छे, तेने व्य-वहार धर्म कह्यो छे. ए बे धर्मने जे जे रूपे छे ते रूपे मानवा ते धर्म अने तेथी विपरीत मानवुं ते मिथ्यात्व व्यवहार धर्म, जे जे गुणस्थाने गुणस्थान मर्यादा प्रमाणे न आदरे अने धर्म माने ए पण मिथ्यात्व छे. हृदयमां निश्चय धर्म धारण करवो ते न करे अने व्यवहार वर्त्तनानेज निश्चयरूप माने तो ते पण मिथ्यात्व छे. जे जे अंशे आत्मा निर्मल थाय, कषायादिकथी मुकाय, तेने नि-श्चय धर्म कहीए, ते प्रगट थाय एवां कारण अंगीकार करवां. का-रणने कारणरूप मानी वर्तता ए मिथ्यात्व टली जशे.

२ अधर्मने धर्म माने एटले अनादिकालनो जीव अधर्मने

सेवी रह्यो छे. वली अधर्मीना कुलमां जन्म पाम्यो छे तेथी तेनी वार्ता सांभली ते रीतनी श्रद्धा करे अने हिंसा करीने धर्म माने; जेमके केटलाएक लोक वींछी, सर्प, वाघ, सिंह एवा हिंसक जीवने मारवा ते धर्म छे एम माने वली बकरीइदमां बकरा मारवा ते धर्म छे आवी रीते अज्ञानपणे जीव हिंसा करीने धर्म माने ते अधर्मने धर्म मान्यो कहीए वली लोकमां आर्य लोक कहेवाय, दयालु कहेवाय ते छतां केटलाएक बकरा घोडा विगेरे यज्ञ करीने तेमां होमे अने तेने धर्म माने; कोइ पण जीवने दुःख थाय तो तेनुं फल एज छे के ते पापथी आपणे दुःख भोगववुं पडे एवुं सर्व धर्मवाला माने छे. तेम छतां आवा प्राणीने दुःख देवामां पाप मानता नथी एज अधर्मने धर्म मान्यो कहीए, माटे जे जे माणस कोइ पण जीवने दुःख देवुं, जूठुं बोलवुं, चोरी करवी, स्त्री गमन करवुं, धननी तृष्णा ए वस्तुमांथी कोइ पण वस्तु करीने धर्म माने, ते अधर्मने धर्म मान्यो समजवो. अहीआं कोइ प्रश्न करशे जे तमारा जैनीउ गाडी घोडा उपर बेसनारा, सारा आभूषण घरेणाना पहेरनार, खाटला उपर सारी तलाइउ नाखी सुनारा, रोज सारा मिष्टान्न भोजनना करनारा तेवा सुखीआ माणसने संसार छोडावी दिक्षा आपी उघाडे पगे चलावोछो, उघाडे माथे फरवो छो, भोंय उपर सुवाडोछो, घेर घेर फरीने भिक्षा मंगावोछो. जेवो आहार मले तेवो खवरावो छो अने सुंदर विगयो खावाना बंध करावोछो तो ए शुं ? तेने दुःख दइ धर्म मान्यो न कहीये, ए विषे समजवुं के अमारा जैनी मुनि महाराजो कोइने पण जबराइथी एवी रीते करता नथी, ने जबराइथी एमांनुं कंइ पण कोइने करावे ने धर्म माने तो तमो कहोछो तेम थाय. पण अमारा मुनियो तो संसारमां शुं शुं दुख छे, वली संसारमां दुखने सुख मानवाथी शुं फल थाय

छे मोक्ष साधन शी रीते थाय छे तेनो धर्म उपदेश दे छे. ते धर्म उपदेश आत्मार्थी सांजली जम जे शरीर तेमां रही जे जे अज्ञानपणानी प्रवृत्ति अनिष्ट लागे छे अने आवते जव विषय कषायनां कमवां फल जाणवामां आवे छे ते जाणीने संसारनो त्याग करी एवी प्रवृत्ति पोतानी प्रसन्नताये करे छे ने तेम करवाथी संसारमां जे जे धन कमावानां छुख, रांधवानां छुख, वस्तु लाववानां छुख, आजूषणनो जार उचकवानां छुख, विषय जोगवी शरीर खराब करवानां छुख, केमके विषय जोगवती वखत शरीरने केटली मेहेनत पमे छे; वली विषय जोगवी रह्या पछी पण शरीरनी स्थिति केवी थाय छे! एवां छुखो टली जाय छे. करोम पतिने पण धन संबंधी केटली फीकरो करवी पमे छे. कुटुंब होय तो कुटुंबना ऊगमानां केटलां छुख? तेने अज्ञानपणे छुख मानता नथी पण जो बुद्धिथी विचार करे तो संसारमां सवारथी उठे त्यारथी ते रात्रे सुवे त्यां सुधी केटलां छुख जोगववां पमे छे. तेमानुं एक पण छुख साधुपणामां नथी. सदाकाल आणंदमां जाय छे. नवुं नवुं ज्ञान थाय छे तेथी बुद्धिवानो महा प्रसन्नतामां रहे छे. माटे जैनीउ कोइने छुख देइने धर्म मानता नथी. तेम जे जे आत्मार्थी होय तेने उपर कहेला पांचे, अधर्ममांथी कोइ पण अधर्म प्रवृत्ति करीने धर्म मानवो नही ने जे माने ते अधर्मने धर्म मान्यो कहीये.

३ मार्ग जे मोक्ष मार्ग जे मार्ग साधी वीतरागपणाने पाम्या छे, आत्माना ज्ञान दर्शन चारित्र रूप गुण प्रगट कर्या छे, केवल ज्ञाने करी जगतना जाव एक समयमां जाणी रह्या छे, तेवा पुरुषे देखामेलो मोक्ष मार्ग एटले मोक्षना साधन ते साधनने उन्मार्ग माने अने तेनुं आराधन न करे, आराधन करनारनी निंदा करे ते मार्गने उन्मार्ग मानवारूप मिथ्यात्व जाणवुं.

४ हिंसा करवानी बुद्धि आपे, जुठुं बोले, लोकने ठगता बीहे नही, स्त्री गमन करे, पैसानो ममत्व लोज्ञ मट्यो नथी, एवा गुरुनी सेवा करी धर्म माने; एवा खोटा मार्गे चालेला देवनो बतावेलो धर्म माने; जगतना पदार्थनुं ज्ञान जेने नथी, ते छतां पदार्थनुं स्वरूप विपरीत बतावे अने कहे जे आ मोक्ष मार्ग छे. पांच यम तो जगत प्रसिद्ध छे. ते यम पालवा सारा कहे ने पाले नही; अणगल पाणी वापरे, तेमां त्रस थावर जीवनी हिंसा थाय अने नदीमां नहावामां पुन्य माने, जुउ के महाभारतमां गरणुं बेवरुं करी पाणी गालवानुं कह्युं छे, तो नदीनुं पाणी शी रीते गालशे ? नही गलाय तो हिंसा थशे ने पाछा कहे छे जे नदीमां नहावानुं महा पुन्य छे. यज्ञ करी जीव हिंसा करवानो उपदेश आपे, तेने मोक्ष मार्ग कहे; वली जैनी भाइउ पण जे धर्म करणी छोकरानी इच्छाए पैसानी इच्छाए परलोकमां राजा थाउं देवता थाउं एवा सुखना अर्थे करे अने तेने मोक्ष मार्ग माने, ए पण उन्मार्गने मार्ग मानवारूप मिथ्यात्व छे. वली मानने सारु, जशने सारु, लोकने सारु देखाडवाने सारु, आत्महितनी बुद्धि विना वीतराग मार्गनी अश्रद्धानपणे जे धर्म करणी करे ते उन्मार्गने मार्ग मानवारूपज छे. वली जे मार्ग वीतरागे शास्त्रमां निषेध कर्यो छे तेवी धर्मनी प्रवृत्ति करी मार्ग माने, अविधिमां प्रवर्त्ते बीजाने प्रवर्तावे ते उन्मार्गने मार्ग मानवारूप मिथ्यात्व जाणवुं.

५ जीवने अजीव माने ते मिथ्यात्वः—जेमके केटलाएक नास्तिक मति तो जीवज मानता नथी. पांच भूत मली आ शरीर बने छे ते जीव छे, ते सिवाय जीव जुदो नथी. पांच भूत वीखरी जाय एटले कंइ नथी. परजीव पण नथी ए जीवने अजीव माननार सर्वथा प्रकारे जाणवा. केटलाएक पंचेंद्रि तिर्यंचने

जीव माने पण पांच थावरने जीव मानता नथी. ए पण जी- वने अजीव मानवानुं मिथ्यात्व जाणवुं. जैनीउ पांच थावरने तो जीव माने छे, पण केटलीएक शास्त्रना बोधनी खामिथी सचित वस्तुने अचित मानवी थाय छे, जेमके गुलाबजल केटला वख- तनुं तेने केटलाएक सचितना त्यागी अचित मानीने वापरे छे. शास्त्रमां सौथी वधारे काल चुनाना पाणीनो छे. चुनाना पाणी करतां गुलाबमां कंइ वधारे गरमी नथी के तेथी वधारे काल रहे- वाथी सचित न थाय. एवो विचार करवाथी सचित थाय एम लागे छे, तेम छतां अचित मानवुं तेमज जे जे जिव पदार्थने अचित मानवाथि जीवने अजीव मानवारूप मिथ्यात्व लागे; माटे सर्वज्ञ महाराजे जेने जीव कह्या छे तेने जीव केहवाथी ए मिथ्यात्व टले छे.

६ अजीवने जीव मानवो ते मिथ्यात्व ते बधां शरीर छे ते अजीव छे, ते हुंज छुं करीने ममत्व जाव करवो, वली अ- णसमजथी शास्त्रमां जे वस्तु अचित कही होय तेने सचित करी मानवुं थाय, तो पण मिथ्यात्व लागे.

७ साधुने असाधु मानवा ते मिथ्यात्व. जे मुनि महाराज पंचमहाव्रत पाले छे, प्रजुनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्ते छे, मोक्ष मार्ग- मां उजमाल थइने वर्त्ते छे, जेने स्त्रीनी धननी ममता नथी, सा- वद्य वचन मात्र बोलता नथी, एवा साधु मुनिराजने असाधु मा- ने. पोते संसार धन, स्त्रीना अजिलाषी एवा गुरुनो संग कर्यो छे, तेणे बुद्धि अवली करी नाखी छे. तेथी खरा साधुने असाधु माने ए मिथ्यात्व. खरा खोटानी परीक्षा ज्ञान थयेथी थाय छे. ते विना जे जे वाडामां जे पड्या छे ते बीजा वाडाना साधुने खोटा माने छे, ने दरेक वाडामां बंधारण पण एवां थइ गयां छे, एटले एम मानी जे उत्तम पुरुषनी निंदा करे छे; पण एटलो विचार करे जे पांच यम तो बधा दर्शनवाला माने छे. तेम यथार्थ आ-

णातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह ए पांच व-स्तुना संपूर्ण त्यागवाला कया साधु छे. एवुं जो तपासे तो ज-लदी समजवामां आवी जाय अने उत्तम पुरुषनी निंदा करवा-मां नही आवे.

७ असाधुने साधु मानवा ते मिथ्यात्व. असाधु जे साधु नाम धरावे छे. पण धननो अने स्त्रीनो त्याग कर्यो नथी जीव हिंसादिक आरंभने तो छोड्यो नथी, वेपार रोजगार करे छे, मंत्र जंत्र करी आजीविका करे छे, लोकने विपरीत समजावीने पै-सा ले छे, एवाने साधु मानवा ते तथा केटलाएक लोकने ठगवा सारु बाह्यथी धननो त्याग देखाडे छे, पण चित्तमां पैसानी इच्छा ते पण असाधु कहीए, केटलाएक साधुपणुं पाले छे, पण वीत-रागना वचननी श्रद्धा नथी, केटलाएक परलोकना संसारिक सुख-नी इच्छाए साधुपणुं पाले छे. पण मोक्षने अर्थे उद्यम नथी कर-ता, वली केटलाएक पंचांगी जे शास्त्र ते मानता नथी, जिन प्रतिमा भगवंते मानवी कही छे, गृहस्थने पूजवी कही छे, ते छतां गृहस्थने उपदेश करे के जिन प्रतिमा पूजवी नही, पूजवाथी पाप थाय छे, एवी प्ररूपणाना करनार पण असाधुज कहीए; एमने साधु माने ते असाधुने साधु मानवारूप मिथ्यात्व जाणवुं. बीजी रीते पोतानी विभाव परिणति मटी नथी, विभावमां (विषय कषायमां) मग्न रहे अने पोताना मनथी हुं रुडुं करुं छुं, एम माने पोतानी प्रशंसा करे ते पोताने विषे असाधुपणुं छे, ते छतां पोतामां रुडापणुं साधुपणुं मानवुं ते असाधुने साधु मानवारूप मिथ्यात्व छे.

ए सिद्ध भगवान जे अष्टकर्म जे ज्ञानावर्णी कर्म क्षय करी अनंत ज्ञानरूप जे केवल ज्ञान प्रगट कर्युं छे. दर्शनावर्णी कर्म क्षय करी सामान्य उपयोगरूप केवल दर्शन प्रगट कर्युं छे, मो-

हनी कर्म क्षय करी चारित्र गुण जे पोताना आत्मस्वज्ञावमांज स्थिर रहेवुं ते रूप चारित्र गुण तथा क्षायक समकित प्रगट कर्युं छे; अंतरायकर्म क्षय करी अनंत वीर्यादिक गुण प्रगट कर्या छे; नाम कर्म क्षय करी अरूपी गुण प्रगट कर्यो छे; गोत्र कर्म क्षय करी अगुरु लघु गुण प्रगट कर्यो छे; वेदनी कर्म क्षय करी अव्या बाध सुख प्रगट कर्युं छे; आयुष्य कर्म क्षय करी अक्षय स्थितिने पाम्या छे; एवी रीतें आठे कर्म क्षय करी आठ गुण प्रगट कर्या छे एवा सिद्ध महाराजने सिद्ध न माने, ज्ञगवान न माने अने एवा पुरुषनी निंदा करे, एवा देवने देव मानता होय तो तेने अंधु चक्षुं समजावी एवा देव उपरथी आस्था उगावे ए मिथ्यात्व सेववाथी आत्माना शुद्ध गुण प्रगट पण कोइ दिवस नहीं थाय, कारण के एवा गुणनी इछा होय तो एवाज पुरुषना गुणग्राम करत, पण ते करतो नथी अने निंदा करे छे तेज मिथ्यात्व जाणवुं,

१० असिद्ध जेमने आठे कर्म रह्यां छे, जे नवां पण कर्म बांध्यांज करे छे, विषय कषायमां आसक्त छे ते तेमनां चरित्रथी सिद्ध थाय छे; तेम छतां तेवा देवने सिद्ध मानवा, ज्ञगवान मानवा, तेमनी आज्ञाए वर्तवुं, तेज संसार वृद्धिनुं कारण छे, आत्माना गुणनुं घात करनार छे, माटे मिथ्यात्व त्यजवानो उद्यम एटलोज करे के आपणने धर्म करणी करवा बतावे छे ते करणी देवे करीने देवपणुं पाम्या छे के आपणने विषय कषाय त्याग करवा कहे छे, अने पोते विषय कषायमां वर्त्ते छे, त्यारे तो एक ठगाइ जेवुं काम बन्युं एम बुद्धिवानने सहेलाइथी समजाइ जशे, अने जेमनामां गुण प्रगट थया छे ते पण समजाशे, माटे आठ कर्म क्षय कर्यां होय तेमनेज सिद्ध, वा ज्ञगवान वा देव वा ईश्वर मानवा. एवुं करवाथी ए मिथ्यात्व टलशे; ए दश मिथ्यात्व.

१ तेमज बीजी रीते छ मिथ्यात्व छे तेमां प्रथम लोकीक

देवगत मिथ्यात्व ते उपर दशामां असिद्धने सिद्ध मानवानुं मिथ्यात्व लख्युं छे तेवा देवने देव मानवा वा संसार अर्थे मानता मानवी ते लोकिक देवगत मिथ्यात्व.

२ बीजुं लोकिक गुरुगत मिथ्यात्व ते गुरु नाम धरावी पंच अव्रत रात दीवस सेवी रह्या छे; एवा सन्यासी, फकीर, पादरी विगेरेने गुरु मानवा ते.

३ त्रीजुं लोकिक धर्मगत मिथ्यात्वः—जे पर्वने विषे धर्मनो परमार्थ रह्यो नथी, मात्र केटलाएक पाखंडीओए उन्नां करेलां पर्व जे होली, बलेव, नागपांचम, रांधनछठ, सीलसातेम आदि एवा पर्वने धर्म पर्व मानवां तथा जे हिंसामय, विषय कषायमय प्रवृत्तिने धर्म प्रवृत्ति मानवी, पुद्गल न्नावनी प्रवृत्तिने धर्म प्रवृत्ति मानवी ते लोकिक धर्मगत मिथ्यात्व.

४ लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्वः—देव जे तीर्थंकर महाराज तेमने मुक्तिने अर्थे मानवा ए तो योग्य छे. मुक्ति अर्थे मानवाथी सर्व कार्यनी सिद्धि थाय छे, ते छोडीने संसार अर्थे मानवा, मारे दीकरो आवशे तो सो रुपीया चडावीश एवी मानता मानवाथी ते लोकोत्तर मिथ्यात्व लागे छे; कारण के न्नगवंतनी यथार्थ श्रद्धा होय तो सहेजे थशे; थशे तो चडावीश एम मानेज नही. ते तो एमज जाणे छे के जेटली बने एटली न्नगवंतनी न्नक्ति करवी; न्नक्ति सर्व कार्यनी सिद्धिने आपनारी छे. न्नगवंतनी न्नक्ति कर्या छतां कदापि कार्य न थाय तो जाणे छे के जे बने छे ते पूर्व कर्मना उदयथी बने छे अने निकाचित उदय कोइ टालवा समर्थ नथी. न्नगवान महावीर स्वामीने पण कर्म उदय आव्यां ते न्नोगववां पड्यां एम विचारी श्रद्धा भ्रष्ट थाय नहीं अने जेनी मजबुत श्रद्धा नथी ते माणस आवो मानता करे छे, अने पूर्वना निकाचित कर्मना जोरथी कार्य न थयुं तो पछी तेनो सर्व बावत-

मां अज्ञानपणे श्रद्धा ठगी जाय छे अने धर्म भ्रष्ट थाय छे; माटे एवी मानता करवी नही. अने करे तो लोकोत्तर मिथ्यात्व लागे. वली जे पुरुषने मिथ्यात्व नष्ट थयुं छे तेमने तो भगवंते मोक्ष मार्ग बताव्यो छे ते अंगीकार कर्यो छे, तेथी एक मोक्ष सिवाय पुद्गलीक सुखनी इछाज नथी. फक्त आत्म तत्त्वनीज सनूमुख थया छे. जे जे कर्म उदय थाय ते खुशीथी भोगवे छे के मारे उदय आवेलां कर्म समभावे भोगवाय तो नवां कर्मनो बंध थाय नहीं एवी भावना बनी छे, तेथी स्वप्नामां एवी माननानी इछा नथी, फक्त सहेज सुखना कामी छे, ते लोकोत्तर मिथ्यात्व सेवताज नथी.

५ लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व ते जैनना गुरु महाराज मोक्ष मार्गना दातार तेमने मोक्ष अर्थे मानवा योग्य छे, ते गोरजीने संसारना स्वार्थे मानवा ते लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व; अने जैनना साधुनो वेष पहेरे छे पण प्रभुनी आज्ञाथी बहार वर्त्ते छे, उत्सूत्रप्ररूपणा करे छे, उन्मार्ग वर्तावे छे, एवा वेषधारी धोला कपडावाला वा पीला कपडावाला साधु नामधारीने गुरु मानवा ते लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व छे.

६ लोकोत्तर धर्मगत मिथ्यात्व वा पर्वगत मिथ्यात्व ते जैननां पर्वो संसार अर्थे करवां, जेमके फल पांचम करीए तो छोकरां थाय, आशापुरीनां आंबिल करीए तो आशा पुरण थाय; एवी इछाए जे जे पर्व आराधन करवां ते पर्वगत मिथ्यात्व; अने जो तपस्या कर्म क्षय करवा ते करे, तो ते निर्जरारूप फलने आपनार छे, ते कंइ दोषित नथी. संसारनी आशाए करवुं ते पर्वगत मिथ्यात्व छे. धर्म साधन करी आ लोक पर लोकनी इछा करवी, ते सर्व कर्म आववानुं कारण छे, केमके एक माणसे देवलोकनी वा राजा थवानी इछाए संसारनो त्याग कर्यो; हवे ए त्याग

इछा सहित छे. एने देवता वा मनुष्यना सुखनी तथा जोगनी इछा छे, तो एवी इछाए तप करीए तो संसारनी वृद्धिज थाय, माटे एवी इछानो त्याग करवो, ने आत्मगुण प्रगट करवानी इछाए धर्म करणी करवी, के संदेहेजे ए मिथ्यात्व टली जशे.

ए दश मिथ्यात्व थयां.

हवे त्रीजी रीते चार मिथ्यात्व छे ते कहीये छीये.

१ प्रवर्तना मिथ्यात्व ते मिथ्यात्वनी मांहे प्रवर्तवुं जेमके कोइ मिथ्यात्व सेवे छे. तेनी साहाज्यमां वा मिथ्यात्वीना वरघोमामां जवुं, वा पधरामणीमां जवुं, वा कुटुंबी अन्य देवनी सेवा करता होय तेनी साथे वर्तवुं वा मिथ्यात्वीनां पर्व करवां ए प्रवर्तना मिथ्यात्व.

२ प्ररूपणा मिथ्यात्व ते जिनेश्वर महाराजे आगममां पंचांगीमां वा पूर्वाचार्यना ग्रंथमां जे जे रीते धर्म प्ररूप्यो छे तेथी विपरीत पोतानी मतिथी प्ररूपणा करवी, जेमके दिगंवर मार्गना चलावनार जैनी छे, ते छतां वीतरागना आगमो जे वर्ते छे ते मानता नथी, अने कल्पित् सास्त्र रची जुदोज मार्ग वर्तावे छे. केटलाएक ग्रंथनी रचनामां निःकारण श्वेतांवरमत दोषित कर्यो छे. जेमके संजमथी भ्रष्ट वर्तनारने वांदवा पूजवा श्वेतांवरी पण निषेध करे छे, ते छतां एवा साधु श्वेतांवरी मतना छे तेथी ए मत खोटो छे. आ लखवुं केवुं जल जरेलुं छे. पण उत्सूत्रनो जय नहीं ते वोलावे छे. दिगंवर मत चलावनारे साधुने वस्त्र नहीं राखवां वताव्यां तेथी शुं थयुं के वस्त्र रहीत साधु थवा वंध थइ गया, अने साधुनो मार्गज वंध थइ गयो, नाम मात्र कोइक थाय छे तो ते पण उपरथी वस्त्र ढांढी राखे छे, एटले मार्ग प्ररूपेलो रह्योज नहीं. प्रजुने एक अंगे पूजे छे. आजूषण जगवंतने पहेरावता नथी ने कहे छे जे प्रजुए आजूषणनो त्याग कर्यो छे, तेथी चमावबां नहीं, तो प्रजुए स्नाननो पण त्याग कर्यो छे, तो प्रजुनी मूर्तिने पखाल

केम करो छो ? जो पखाल करतां, एक अंगे पूजा करतां, तमारा अभिप्रायमां हरकत आवती नथी, तो विचारो के ए पण निषेध करेलुं तमे करो छो; तेमज सर्वे अंगे पूजा करो, आभूषण चमावो, तो शुं हरकत थाय ? पण वगर विचारथीज ए वात वर्तावी छे. श्वेताम्बर रीत सर वर्ते छे, जेम मेरु शिखर उपर भगवंतनो जन्माभिषेक इंद्र महाराजे कर्यो ते वखते आभूषण भगवंतने पेहेराव्यां हतां ते भाव लावी ए सर्वे कर्तव्य करवुं छे. भगवंतनी मूर्त्ति आरोपित छे, तेमने जे जे अवस्था आरोपी भक्ति करीए ते थाय, आ विचार न करतां अष्ट द्रव्ये भक्ति करनारनी निंदा करे छे, तेज विपरीत प्ररूपणा छे. वली स्त्रीने मुक्ति नथी मानता ने गोमट सार दिगंबरनो करेलो छे ने ते तेओए मानेलो छे, ए नामांकित ग्रंथ छे. तेमां एक समये दश स्त्री मोक्ष जाय एम कहेलुं छे, ते छतां ते बाबतपर लक्ष न राखतां स्त्रीने मुक्ति नहीं एम विपरीत प्ररूपणा करे छे. दिगंबर मतनी चरचा विशेष प्रकारे अध्यात्ममतपरीक्षामां उपाध्याय महाराजजी श्री जसविजयजी महाराजे दर्शावी छे एटले इहां विशेष लखतो नथी; एमज ढुंढीया तेरापंथी विगेरे आगमथी जेटली विपरीत प्ररूपणा करे छे ते प्ररूपणा मिथ्यात्व जाणवुं. ए प्ररूपणा मिथ्यात्व, ज्ञान थया विना टलवानुं नथी, माटे वितरागना वचननी श्रद्धा सहित ज्ञाननो अभ्यास करवो के प्ररूपणा मिथ्यात्व टले. बोध विना जेम करता आव्या तेम करवुं, एम करवाथी मिथ्यात्व टली शके नहीं माटे ज्ञान, निःपक्षपातथी करवुं.

३ प्रणाम मिथ्यात्व ते मिथ्यात्व मोहनीनो ज्यां सुधी उदय छे, त्यां सुधी प्रणाम मिथ्यात्व टलशे नहीं. व्यवहारथी प्रभु पूजा प्रमुख करशे, अंतरंगमांथी मिथ्यात्वनो क्षयोपशम अथवा उपशम थयो नथी त्यां सुधी प्रणाम मिथ्यात्व टलशे नहीं. ए

ज्यारे ज्ञपशम समकित वा क्षयोपशम समकित पामशे त्यारे प्रणाम मिथ्यात्व टलशे, माटे ज्ञानमां तथा ज्ञानी पुरुषनी ज्ञपासनामां तत्पर रहेवुं, ने ज्ञानीनां वचन प्रमाणे चालवानी अति ज्ञत्कंठा राखवी, देवगुरुनुं अतीशे आराधन करवुं, तेथी ए मिथ्यात्व दूर थशे. हवे ए मिथ्यात्व दूर थयुं छे के नहीं तेनी परीक्षा समकितना लक्षण समकितनी सज्झायमां जशविजयजी महाराजे कह्यां छे ते प्रमाणे पोतानामां छे के नहीं ते मेलवी जोवाथी जणाशे,अने अनुमानथी धारी शकाशे;निश्चय तो अतिशय ज्ञानीनां वचनथी थाय, ते तो आ कालमां विरह छे एटले ज्ञपाय नथी; तेम अतिशय ज्ञानीने पुछ्या विना निरधार न थाय तेनो दाखलो जे इशान इंद्र महाराजे पण ज्ञगवानूने प्रश्न पुछ्या के हुं ज्ञवी छुं के अज्ञवी छुं? समकिती छुं के मिथ्यात्वी छुं? आवा त्रण ज्ञानना धणीथी मुकरर थयुं नही तेथी पुछवुं थयुं, तो आपणे शुं मुकरर करी शकीए. तो पण शास्त्राधारे ज्ञद्यम करवो, मार्गानुसारीना गुण हरिज्ञद्रसूरि महाराजे धर्म बिंदुमां बताव्या छे तेनी साथे मिलान करवुं अने मिलान करतां लक्षण न मले तो मिथ्यात्व गयुं नथी एम समजवुं.

४ प्रदेश मिथ्यात्व ते मिथ्यात्वनां दलीयां आत्म प्रदेश साथे क्षीर नीरनी पेरे एकमेक थइने रह्यां छे ते ज्यारे क्षायक समकित थाय छे त्यारे टले छे. मिथ्यात्व बंध ज्ञदय ने सत्ता त्रणे प्रकारे टली जाय छे त्यारे क्षायक समकित थाय छे, माटे ते समकित प्रगट करवानो ज्ञाव राखवो के प्रदेश. मिथ्यात्व टली जाय.

आ बधां मलीने पचीश प्रकारना मिथ्यात्व शास्त्रोमां दरशाव्यां छे. एमां केटलाएक ज्ञेद एक बीजाने मलता छे, तेनुं कारण एटलुंज समजवुं के साची वस्तुने खोटी कहेवी ए मि-

थ्यात्व छे तो सारी बुद्धिवालाने तो एक शब्द बस छे पण विषम कालमां मारा जेवा मंद बुद्धिना धणीउने रूपांतरे ज्नेद दरशावेला जोवामां आवे तो मन सुधरे, माटे जुदा जुदा ज्नेद छे; ते समजीने दरेक प्रकारे विज्नाव दशाथी मुक्त थवाना कामी थवुं. केटलाएक जैनी नाम धरावे छे, पोषध पमिक्कमणां करे छे, जिन ज्नक्ति करे छे, गुरुनी सेवा करे छे, परदेशथी धर्म बोध गामना लोकने करवाने साधुजीने तेमी लावे छे, पण गुरुजी स्याद्वाद् मार्ग दर्शावे छे तेथी कोइक ज्नव्य जीव प्रतिबोध पामे छे अने दिक्षा लेवाने तत्पर थाय छे, त्यारे तेनां माता पिता अने लागता वलगता गुरुनी निंदा करवा तत्पर थाय छे, लमवा तैयार थाय छे अने गालो देवानी फीकरज नहीं, आटली हदे पहोचे छे. जरा पण पापनी बीक राखता नथी. आ वात केवी अन्यायनी छे के जेमने उपदेश देवा लाव्यो, ते तो हरेक प्रकारे संसारथी उदास थाय एवोज उपदेश आपे, तेथी कोइक उत्तम जीव दिक्षा लेवा तैयार थया, तो तेमां साधुजी महाराजे शी कसुर करी के तेमनी निंदा करवा लमवा जीव तैयार थाय छे साधुजी कदापि कंइ फेरफार युक्तिए करीने बोले, तो श्रावको कहेशे जे साधु थइने जूठुं बोल्या, अने विचित्र प्रकारे निंदा करे छे, ए सर्वे जोर मिथ्यात्वनुं छे माटे ए वर्तना नहीं करवी. वली शास्त्रनी श्रद्धा छे एम बधा माणस कहे छे, पण पोताने फावती वात नहीं आवी तो शास्त्रपर पण लक्ष देता नथी, एकोना फल छे, के अंतरंगमांथी मिथ्यात्व गयुं नथी तेनां फल छे, जो मिथ्यात्व गयुं होत तो आ दशा थात नही, साधुजी दिक्षा लेवा नीकले तेनी केटलीएक हकीकतनो धर्म बिंदुमां हरिज्नद्रसूरि महाराजे दरशाव कर्यो छे, ते ग्रंथ टीका तथा बालाबोध सहित छपायो छे, तेमां दिक्षा लेनारने मातापितानी रजा लेवानो अ-

विकारज कह्यो छे, ते केवी रीते कह्यो छे, तेनो सार लखुं छुं. दिक्षा लेनारे मातापिताने समजावीने रजा मागवी, ने रजा न आपे तो जोशीने समजावे के तमे महारां मातापिताने कहो जे आयुष्य टुंकुं छे माटे एने रजा आपो, पछी जोशी एवी रीते जूठुं कहे, ते सारु त्यां तर्क कर्यो छे जे दिक्षा लेवा नीकले ने आवुं जूठुं बोलवुं केम घटे ? तेना जवाबमां कहे छे जे धर्म अर्थे जूठुं बोलवुं ते जूठुं नथी; आ वात पाने १७१ मे छे. आ उपरथी विचारो जे जूठुं बोलवानी पण आवा कारणसर छुट मुके छे के जेथी जावजीव जूठानो त्याग थाय, ए सारु आ परवानगी आचार्य महाराजे आपी छे, तो श्रावको निंदा करे तो शास्त्रथी विरुद्ध खरुं के नहीं ? ते विचार करवो जोइए, पण मिथ्यात्वनी प्रकृति खशी नथी त्यां सुधी शुद्ध मार्गनी श्रद्धा थवानी नथी, अने श्रद्धा विना आत्मतत्त्वनुं ज्ञान पण थवुं नथी, केमके आत्मतत्त्वनुं ज्ञान श्रद्धा गम्य छे, प्रत्यक्ष नथी माटे वीतरागना प्ररूपेला शास्त्र उपर श्रद्धा राखी आत्मतत्त्व प्रगट करवाना कामी थवुं. केटलाएक श्रद्धा राखे छे तो रागी द्वेषीनी श्रद्धा राखे छे तेथी धर्मनुं नाम अने अनेक प्रकारना मत ममत्त्व करे छे. धनादिकनी, स्त्रीनी कामनामां आसक्त थाय छे. ए पण जोर मिथ्यात्वनुं छे. माटे जे पुरुषना वचनथी संसार उपर प्रीति वधी शरीरादिक पदार्थ उपर राग वधे, मोहनुं जोर वधे, काम क्रोध दीपे, एवो धर्म बतावेलाने धर्म नहीं मानवो, एथी विपरीत एटले संसार कुटुंब धन ए परथी राग खसे, पोताना आत्मतत्त्व प्रगट करवामां सन्मुखपणुं थाय, ज्ञानमां चित्त लीन थाय, पांचे इंद्रियो वश थाय, मन वश थाय, पोताना आत्म स्वरूपमां लीनता थाय, यथार्थ, वस्तु धर्मनुं ज्ञान थाय, एवा प्ररूपेला शास्त्र उपर श्रद्धा करवी, ने एवा गुरु उपर श्रद्धा करवी एज मिथ्यात्वना

नाशनुं चिन्ह छे, प्रभुजीए राज ऋद्धि कुटुंब देह उपरथी म-
मत्वभाव छोडीने संजम लीधुं, कोइना उपर राग द्वेष नहि एवी
रीतनी वर्त्तना करी केवलज्ञान केवलदर्शन प्रगट कर्युं, ने मिथ्या-
त्व सत्ता, बंध, अने उदय ए त्रणे प्रकारे नाश कर्युं तेम आपणे
पण करवुं एज कल्याण छे.

१५. पंदरमो निद्रानामा दोष. ए दोष दर्शनावर्णी कर्मना
उदयथी प्राप्त थाय छे. निद्रा पांच प्रकारनी छे. पहेली निद्रा ते
अतीशे उंघ न होय. कोइ जगाडे तो सुखे जागे जागतां दिलगी-
री न थाय, जगाडनारपर गुस्से थाय नही. बीजी निद्रानिद्रा ते
जगाडवाने बहु महेनत पडे, वली जगाडनार उपर गुस्सो आवे.
पोतानुं मन उभाय त्यारे जागे. ए निद्रा प्रथम निद्राथी वधारे
आवर्णवाली छे. त्रीजी प्रचला ते बेठा बेठा उंघे ते. चोथी प्रचला
प्रचला ते चालता चालता उंघे. घोडो छे ते उंघतोज चाले छे.
एवी रीते माणसो पण उंघमां घणा चाल्या जाय छे. उंघमां
घेरायेला चाले छे ए पण वधारे आवर्ण दर्शनावर्णी होय तेथी
आवे छे. पांचमी थीनद्धि निद्रा ते छ मासे एक वखत आवे छे.
ते उंघतो होय ते वखत हालना कालमां पोताना बलथी बेवडुं बल
थाय छे. जागता नही करी शकाय तेवां बल फोरववानां काम
निद्रामां करे. दहाडे जे काम चिंतव्युं होय ते निद्रामां करे. एक
साधुजीने निद्रा आववाथी रातमां उठीने हाथीना दंतुशल का-
ढी लाव्या हता. आवा थीनद्धि निद्रावाला जीव नर्कगामी होय.
आ साधु पण संजमथी पडी नरके गया छे. ए पांचे निद्रानो
त्याग थाय त्यारे मोक्षे जाय छे. अज्ञानपणे निद्रा आववामां सुख
माने छे पण सुख मानवा लायक नथी. सुख मानवाथी, आल-
सुपणाथी अने बहु निद्रानी इच्छा करवाथीज ए दर्शनावर्णी कर्म
बंधाय छे. निद्राथी आत्मानो उपयोग अवराइ जाय छे. जीवनुं

माणस मुवेली अवस्थाने पामे छे. निद्रासक्तवाला आगल बोले चाले शरीरे कंइ करे तो पण तेने खबर पमती नथी, त्यारे उपयोग अवराइ गयो ए प्रत्यक्ष नुकशान थयुं, माटे हरेक प्रकारे जाग्रत दशा थाय एम इच्छवुं. भगवान श्री महावीर स्वामी महाराज जेमने बार वरसमां बे घमी निद्रा आवी छे. बाकी बधो काल अप्रमाद दशामांज गयो छे. आत्मतत्वना विचारमां गयो. तेमणे पोते स्वभाविक आत्मगुण प्रगट कर्या. माटे जेम भगवंते दर्शनावर्णी कर्म खपाव्युं तेम खपाववानो उद्यम करवो के जेथी आपणुं पण दर्शनावर्णी कर्म क्षय थाय अने केवलज्ञान केवलदर्शन प्रगट थाय. वली आ संसारमां पण बहु उंघवानी टेववालाने दलद्री कहे छे. पोतानुं काम करवा पण शक्तिवान थतो नथी. अभ्यासु माणसने निद्रा वधारे होय तो अभ्यास करी शकतो नथी; वली गुरु महाराज पासे वाख्यान सांभलवा जाय तो त्यां पण बेगे बेगे उंघे एटले वाख्याननी धारणा करी शकतो नथी. वली एहवा प्रमादीना घरमांथी चोर चोरी पण सुगमताथी करे छे ते आ लोकनुं नुकशान थाय छे, अने परलोकना नुकशानमां दर्शनावर्णी कर्म उपार्जन थाय छे. एम भगवंते जाणी नीद्रानी इच्छानो नाश करी केवल दर्शन प्रगट कर्युं छे जेमां सर्वे दर्शनगुण रह्या छे तेम आपणे पण भगवंतनी आज्ञा प्रमाणेज दर्शनावर्णी कर्म खपाववानो उद्यम करवो ने निद्रानो नाश करवो.

१६. अव्रतनामा दोष. ए दोष आत्मामां रह्यो छे तेना प्रभावे अनेक प्रकारनी इच्छा थाय छे. हिंसाथी जुठुं, बोलवाथी, चोरी करवाथी, मैथुननी वांछाथी, परिग्रहनी ममताथी, ए पांच अव्रतथी चित खसतुं नथी. ए पांच अव्रत एहवां छे. एक अव्रत सेववाथी बीजां अव्रत सहेजेज वर्ती जाय छे. वली ए अव्रत से-

वचाना निमित्तभुत पांचे इंद्रीना तेवीश विषय तथा मननी चपलता ज्यां सुधी पांचे इंद्री अने छठुं मन मोकलुं छे, तेनी कामना वनी रही छे, त्यां सुधी छकायनी हिंसा रोकाती नथी. हवे ए विषय छे ते आ लोक अने परलोक बंनेमां दुखना आपनार छे जेमके आपणने कोइ सोय शरीरने अरुकाडे छे तेथी केटली पीडा थाय छे. वली दाक्तर कंइ गुमडुं वीगेरे थयुं होय ने कापवाने नसतर मुके छे ने कापे छे तो आंखमांथी आंसु जरे छे, वली बुम पण एटली पडे छे के तेथी बीजाने धास्ती लागे. सर्वेने अनुभव एनो छे तेथी लखवानी जरुर नथी. तो जेम आपणने दुख थाय छे, पीडा थाय छे, तेमज बीजा जीवने कापीए तो तेहने केम दुःख न थाय? अवश्य दुख थायज. ते दुखथी तेनुं मन पण दुभाय तो. ते सरकारमां फरीयाद करे तो आपणने शिक्षा पण थाय. वखते फरीयाद न करे ने जबरो होय तो मार मारे तो प्रत्यक्ष दुख भोगववुं पडे छे. कोइ माणसने ते वखत तेने साहाजकारी न होय तो पछी पण साहाजकारी मलेथी दुख दे छे तो ए प्रमाणे बीजा जीवने दुख देवाथी दुख आ लोकमां भोगववुं पडे छे. तेमज जे जीवनी हाथमां शक्ती न होय तो आवते भव ते जीवने शक्ती मलेथी दुख देशे वा नर्कादीकमां परमाधामी वीगेरे दुख देशे माटे एकेंद्रीथी ते पंचेंद्री सुधीना जीवोमां कोइ पण जीवने दुख देवुं नही एवी बुद्धि प्राप्त थशे तो हिंसा करवानी बुद्धि थशेज नही. जुठुं बोलवाथी पण बीजा जीवने दुख थशे तेमज चोरी करवाथी पण ते जीवने दुखनो पार रहेतो नथी, कारण के गरीब वा करोडपति कोइने पण धननी इछा शांत थइ नथी अने ते धन लइ जाय तो केम दुख न थाय? अर्थात थायज. जेम कुमारपाल राजा एक छंदर मोहरो काढी तेनी साथे गेल करतो हतो ते जोयो, ते उपरथी मनमां आव्युं

जे आ तिर्यंचने धन उपर प्रेम समजथी छे के वगर समजथी छे तेनो तमाशो जोवा सारु उंदरनी सोना मोहर उचकी लीधी एटले थोडीवार तरफडीयां मारी उंदर कालधर्मने पाम्यो. पछी कुमारपाल बहु दलगीर थया ने तेहना पायछित्तमां पोते उंदरी-यो प्रासाद बांध्यो. ए उपरथी जुओ के तिर्यंचने पण धननी केट-ली तृष्णा छे तो मनुष्यने तो धनथीज बधो कारभार चाले छे. तेनुं धन कोइ चोरी जाय तो ते धनवालाने दुख थवाने बाकी रहेतुं नथी. दुनीयामां शरीरनी पीडा करतां मननी पीडा वधारे थाय छे. केटलीएक वखत धन जाय छे के माणस मरी जाय छे तो तेनाथी माणसनुं शरीर सुकाइ जाय छे तो ए शरीर सु-काय छे ते मननी पीडाथी सुकाय छे, वास्ते तेथी पण सामा प्राणीने दुख थाय छे. मैथुन पारकी स्त्री साथे करवाथी तेहना धणीने तथा तेना मातापिताने केटलुं दुख थाय छे ते प्रसिद्ध छे. कोइ वखत जार पुरुषनो जीव जाय छे. केटलीएक वखत ते स्त्री-नो जान जाय छे. केटलाक वखत स्त्रीना धणीनो जीव जाय छे. कदापि जीव न जाय तो रात दीवस एहनी पीडा साले छे. वली स्वस्त्रीनी साथे भोग करवाथी योनिमां समुर्छिम जीव अ-संख्याता हणाय छे तो ते जीवने दुख थाय छे. वली पोतानुं शरीर पण नरम पडे छे, पोताना शरीरे दुख थाय छे, एमज प-रिग्रहनी इच्छा होय त्यां सुधी हरेक प्रकारे धन मेलववुं तेमां लुच्चाइ ठगाइ करतां बीहता नथी. जुठुं बोलतां बीहता नथी कोइ नो प्राण लेतां बीहता नथी. पोते पण विचित्र प्रकारे दुखी थाय छे. ए परिग्रहनी मुर्छानां फल छे ए पांचे अव्रत एहवां छे के एक सेवतां बीजुं सेवाइ जाय तेथी भगवंते पांचे अव्रतनो त्याग कर्यो छे, अने एज उपदेश भगवाननो छे के हरेक प्रकारे अव्रतनो त्याग करवो जोइए. जो विशेष विशुद्धि थाय ने सर्व

प्रकारे अव्रतनो त्याग थाय तो ते करवो ने सर्व प्रकारे त्याग न थाय तो देशथी त्याग करी श्रावकनां बार व्रत धारण करवां ए वी रीते श्रावक धर्म वा साधु धर्म बाहजथी अंगीकार करो अं-तरंग शुद्ध नथी थयुं तो अव्रत टळतुं नथी माटे अंतरंगमांथी क-षायनी परिणति त्याग थवी जोइए. बाहारथी प्रवृत्ति न करे पण अंतरमां इच्छाओ थयां करे तो पछी कर्मबंध थतो रोकातो नथी. पुदगल भावथी अनादिनी इच्छाओ, हिंसानी, जुठनी, चोरीनी, मैथुननी, धननी ए पांचे पदार्थनी इच्छा छुटे त्यारे आत्मानुं काम थाय छे. जुओ तंडुलीउ मछ छे, ते मछनी पांपणमां थाय छे ते जे मछनी पापणमां थाय छे ते मछनुं मुख मोटदुं छे तेथी केटला-एक मछ तेहना मुखमां पेसे छे ने नीकले छे ते पेलो तंडुलीउ मछ जुवे छे ते जोइने विचारे छे जे माहरुं एहवुं मुख होय तो एक जीवने पाछो जवा न देउं एवो विचार करवाथी त्यांथो म-रीने सातमी नरके जाय छे. एणे खाधुं पीधुं कंइ नथी पण श-कत इच्छाथी दुष्ट ध्यान थाय छे तेना प्रभावथी नरके जाय छे. ए-मज दुनीयांमां चीजो छे ते बधी कंइ मलती नथी पण इच्छाओ खावानी थयां करे छे. केटलाक वखत पैसानी खामीथी मली शकती नथी वा पैसा छे पण कृपणताथी पैसा खरचवा नथी तेथी मली शकती नथी. केटलीएक वखत शरीरने प्रतिकूल ते वस्तु होवाथी खाइ शकाती नथी पण अव्रतना उदयथी इच्छाओ थयां करे छे ते प्रभाव अज्ञानतानो छे. पोतानी शी वस्तु छे, पो-ताने पोताना आत्म भावमां केम वर्तवुं तेनुं ज्ञान नथी तेथी इच्छाओ थयां करे छे. दुनियांमां हजारो स्त्री छे ते कंइ मोंपर धुं-कवानी नथी पण जे जे स्त्री नजरे पडे के चित्त दोडे वा काने सांभले के फलाणी स्त्री बहु रूपाली छे के मन दोडे, आ वात अज्ञानना जोरनी छे तेना जोरथी इच्छाओ बन्यां करे छे, पण ते

न थवुं जोइए. वली धन जो समुलगुं न होय तो हजार रुपीया मले तो सारुं पण ज्यारे हजार मळ्या त्यारे लाखनी इछा थाय छे. लाख मळ्या त्यारे करोडनी इछा थाय छे. करोड मले त्यारे अबजनी इछा थाय छे तेथी वधारे मले छे तो राजनी इछा थाय छे. राज मले तो वासुदेवना राजनी इछा थाय छे. वासुदेवपणुं मळ्युं तो चक्रीपणानी इछा थाय छे. चक्री थाय तो इंद्र थवानी इछा थाय छे हवे आवी इछाउ करे छे तेथी मलतुं कंइ नथी, पण तृष्णा जीवने शमती नथी ए अव्रतनी राजधानी छे. वली केटलाएकने दश वीस हजार मले छे के वेपार बंध करे छे के आ मलेला रखे जता रहे एवा विचारथी वधारे धन पेदा करवानो उद्यम नथी करतो तेथी तेनी तृष्णा रोकाइ छे एम समजवुं नहीं माटे हरेक प्रकारे इछा रोकवी जोइए. कदापि संसार त्याग कर्यो अने चेलानी, पुस्तकनी, माननी इछा न गइ वा इंद्रीयो वश न थइ तो पण अव्रत टलतुं नथी. कदापि आ लोकना विषय रोक्या पण परलोकनी इछा करे. जे हुं मरीने राजा थाउं, धनवान थाउं, देवता थाउं, देवतानी इंद्राणीना सुख भोगवुं. आवी इछा छे ते पण अव्रत छे उपाध्यायजी महाराजे मंडुक चुरण न्याय कह्यो छे. एटले मरी गएला देडकाना चुरणमां वरसाद पडे तो घणां देडकां थइ जाय. तेम आ भवना विषय छोड्या, ने परभवना घणा विषयनी इछा करी एटले अव्रत कंइ टळ्युं नहीं. शुभ क्रिया छे ते कारणरूप छे ते कारणरूप धर्म जाणी करवी पण तेहने आत्मधर्म न जाणवो. आत्मधर्म तो जेटली जेटली इछाउ थती बंध थशे ते कार्त्रिम नहीं, स्वाभावीक धन, स्त्री, पुत्र, शरीर कोइनी पण इछा वर्ते नहीं अने पोताना स्वभावमांज आनंदित थाय अने स्वभावमां स्थिर रहेवुं. जे जे पुद्गलने थाय ते जाणवा देखवाना स्वभाव छे ते स्वभावमां रहेवुं. तेमां राग द्वेष करवो

नहीं एज आत्मानुं काम छे. ए दशामां रहे एटले अव्रत सहेजे टली जाय. अव्रत सर्वथा कषायनो नाश थवाथी सर्वथा टली जाय छे. अंशे अंशे देश विरति गुणस्थान पामे छे. त्यांथी टलवुं शरु थाय छे. ज्ञगवंतने सर्वथा अव्रत टल्युं छे तेथी ज्ञगवान थया छे.

१७ राग नामा दुषण. ए रागना घरनां माया अने लोज्ञ छे. ए राग परिणति अनादि कालनी छे, धन उपर राग, कुटुंब उपर राग, स्त्री पुत्रपर राग, स्वजन उपर राग, घर हाट बाग बगीचा उपर राग, राग मलेली वस्तु उपर थाय छे, अने नहीं मलेली वस्तुपर पण राग थाय छे. दीठेल वस्तु उपर, अण दीठेली वस्तु उपर राग थाय छे. सांज्ञलेली वस्तु उपर, वांचेली वस्तु उपर राग थाय छे. एम अनेक प्रकारे राग दशा छे, अने राग दशाने प्रज्ञावेज पापी जीवनो संजोग मले छे ने एवा खराब माणसनो संग मलवाथी पाछो द्वेष जागे छे. पर वस्तु उपर राग थवानाज कारणथी जीव अनादिनो रोलाय छे. अनेक प्रकारे जन्म मरण करवां पडे छे. पर स्त्री उपर राग होय ते पोते मरे तो पण तेनी इछा छुटे नहीं. एवा अधर्मी जीवने मनुष्य जन्म तो आवे नहीं पण तेना शरीरमां कीडो वा करमीयो शरमीयो थाय एवा ज्ञवने पामे ए रागनो प्रज्ञाव छे. जे जे कर्मबंध थाय छे ते राग द्वेषथीज थाय छे. ने जीव संसारमां रोलाय छे. द्वेष पण रागथी थाय छे पोतानी वस्तु मानी छे ते वस्तु कोइ लइ जाय तो आ वस्तु उपर राग छे तेथी लइ जनार उपर द्वेष थाय छे. द्वेष करनारने कोइ कहेनार मले के तमो समजु थइने कषाय करो छो पण रागनी बाबतमां मुनि महाराजजी सीवाय कोइ समजावनार नथी. आ जड पदार्थ उपर राग करवाथी आत्माना गुणनो राग थतो नथी. तेम तेनां कारण जे ज्ञान दर्शन चारित्र तेना उपर पण राग थतो नथी. रागना बशे जीव लज्जाने मुकी-

ने निर्लज्ज कर्म करे छे. उंची जातना माणसने धन पण होय कुटुंब होय, स्त्री रूपाली होय ते छतां छेरूनी जातनी स्त्री उपर राग थयो होय तो आ धन कुटुंब छोरूी तेनी साथे संबंध करे छे. आ रागनी विटंबना छे. जे वस्तु खावाथी शरीरने उपाधि थाय छे. धर्म भ्रष्ट थाय छे, तो पण रागना बंधनथी ते वस्तु खाय छे ने एवी वस्तु खावाथी केटलीएक वखत माणस मरी जाय छे, ते जुवे छे तो पण एवां काम करे छे. धनना रागे करीने लोभ थाय छे ते गमे एटला पैसा मले छे पण संतोष पामतो नथी, अने असंतोषे लांबा वेपार करवाथी असल पैसा होय ते पण जता रहे छे तो पण लोभ छोरूता नथी; अने केटलाएकने देवा-लां काढवां परूे छे. केटलाएक खोटी दानतथी पैसा होय तो पण लोकना पैसा आपता नथी. ते लोक एम नथी विचारता के आ म करवाथी जन्म पर्यंत डुनियांमां गेर इजत थशे, अने छोक-राने पण कहेशे जे तारा बापे देवालुं काढ्युं छे. आवी बाबतो बने छे तो पण धनना रागे एवी खोटी दानत करे छे. वली पासे पैसा राखी केद पण जवुं कबुल करे छे. आ डुख राग दे छे. धन-ना रागे सामा जीवना ने पोताना ज्ञाइना, बापना, माताना, प्राण पण ले छे तो बीजाना प्राण ले एमां तो कहेवुंज शुं. आ विटं-बना रागनी छे. चोरी करतां, ठगाइ करतां पण रागे करी जीव बीहतो नथी, विश्वास घात करतां पण बीहतो नथी. कदापि गृहस्थपणुं छोरूीने दीक्षा ले छे पण जरू पदार्थ उपरथी राग गयो नथी तेथी पाछा साधुना वेषमां गृहस्थनी प्रवृत्ति करे छे. गृहस्थ-नी पेठे धन मेलवे छे. छोकराना रागनी पेठे चेलानो राग जागे छे. पुस्तकनो राग जागे छे, अने एवी वर्तना करी संजमथकी भ्रष्ट थाय छे. आत्म ज्ञावमां वर्तता नथी. शास्त्रनो बोध पण न-कामो थाय छे. ज्ञाननो बोध तो जेम ज्ञानमां जाण्युं तेम वर्तना

करे त्यारे ज्ञाननुं फल थाय. जेम कोइ माणसे जाण्युं जे आ झेर छे, पण ते खाधा विना रहेतो नथी तो ते अवश्य मरे, तेम ज्ञान जणी राग बंध तो छुटे नहीं, एटले कर्म बंधाया विना रहेतां नथी, अने जेने निराग दशा प्रगटी छे तेना प्रभावे कोइ कंइ लेइ जाय छे, कोइ मारे छे, कूटे छे, पीडे छे, निंदा करे छे, कोइनो वियोग थाय छे, तो पण पोताने खेद थतो नथी; मरवानी पण फिकर थती नथी; पोते पोतानुं आत्म स्वरूप जाण्युं छे, तेथी जाणे छे के मारो आत्मा मरवानो नथी; मरे छे ते जड छे; आत्मा अविनाशी छे. शरीरने पीडे छे ते पण पूर्वे जडनी संगते बीजा जीवने पीडा करी छे, तेथी पीडे छे, तो ते कर्म जेवुं जेवुं जड संगते बांध्युं छे तेवुं तेवुं भोगववुं छे. कोइ लइ जाय छे ते वस्तु मारी नथी, पण जडनी संगते मारी मानी छे,अने मारी मानी पारकी वस्तुओ लीधी छे तो मारी लइ जाय छे. पूर्वे जेणे कोइनी वस्तु लीधी नथी, तेनी वस्तु रस्तामां पडी होय तो पण कोइ लेइ जतुं नथी. आवा ज्ञानना प्रभावे जरा पण खेद धारण करता नथी, पोताना आणंदमां वर्त्ते छे. ज्ञानी पुरुष तो समवृत्तिए करीने जे जे सुख दुख प्राप्त थाय छे, तेमां रागद्वेष करता ज नथी. आत्मानो जाणवानो स्वभाव छे ते रूप जे जे बने छे ते जाणी ले छे. कर्मनुं स्वरूप जाण्युं छे, तेथी कर्मना उदय प्रमाणे बनी रह्युं छे, एम जाणी कोइ पण अनुकुल चीज उपर राग दशा धारण करता नथी, तेमज भगवाने राग द्वेष क्षय करीने आत्माना पोताना गुण प्रगट कर्या छे, तेमने पगले तेमनी आज्ञा प्रमाणे चाले तो पोताना आत्माना गुण प्रगट करी परम पदने पामे.

१८ द्वेषनामा दूषण–ए द्वेषनी प्रकृति जगतमां पण निंदवा योग्य छे. द्वेषना बे पुत्र छे, क्रोध अने मान. क्रोध करवाथी सा-

माने दुःख करूंछुं एम माने छे, पण पोताने प्रत्यक्ष दुःख थाय छे.
पोतानुं शरीर फेरफार थइ जाय छे, शरीर लाल लाल थइ जाय
छे, छातीमां गन्नराट थाय छे, लोही शरीरमांथी उछली जाय छे,
तेथी लोही सुकाइ जाय छे अने निर्बल थइ जाय छे. आ बनाव
क्रोधथी बने छे. क्रोधी माणस नोकरी रहेवा जाय तो कोइ नो-
करी राखे नहीं, कोइने त्यां व्याजे नाणुं लेवा जाय तो ते पण
खुशी थइने आपे नहीं, वली दुकान मांडी होय तो शांत माणसने
त्यां जेटलां घराक आवे, एटलां घराक क्रोधीने त्यां आवे नहीं,
कन्या जोइती होय तो खुशीथी मले नहीं, वली क्रोधी माणस
पोताने हाथे पोतानुं माथुं फोडे छे, कूवादिकमां पडे छे, वा झेर
खाय छे, फांसो खाय छे, पोताने हाथे पोतानी घात करे छे, ज-
गतमां अपजश पामे छे. क्रोधी माणस कदापि संसार छोडी
साधु थाय छे तो कषाये करी तेमां पण शोन्ना पामता नथी,
तेम आत्मानुं कल्याण थतुं नथी पण संसारवृद्धि थाय छे; जेमके
चंडकोशिया सर्पे पाछला न्नवमां साधुपणामां क्रोध कर्यो, तो म-
रीने पाछ क्रोधी थवानो वखत आव्यो, पाछो त्यां पण क्रोधथी
मरण थयुं ने सर्प थवानो वखत आव्यो, तेमज जे जे माणस
क्रोध करे तेने आ लोकमां दुःख थाय अने परलोकमां नरकग-
तिमां जवुं थाय छे; माटे हरेक प्रकारे क्रोध छोडवानो उद्यम क-
रवो. अग्निशर्मा तापस मास मासखमणनां पारणां करतो हतो,
तो पण दुर्गतिए जवानो वखत आव्यो. एनी विस्तारे हकीकत
समरादित्यकेवलीना रासमां जुओ. केटला न्नव सुधी द्वेष रह्यो
छे, अने केवां केवां दुर्गतिनां फल मल्यां छे. क्रोधथी प्रत्यक्षमां
मार खाय छे, वखते प्राण पण जाय छे, माटे जेम बने तेम क्रो-
धने जीतीने समतामां रहेवाथी आ लोकमां पण सुख थाय छे.
क्रोधीने संसारमां सुख नहीं तेम परलोकमां पण सुख नथी. न-

रकादिकनी आकरी वेदनाउ जोगववी पमशे. वळी मान करवा-
थी पोते एम समजे छे के मारी मोटाइ थाय छे, पण ते न थतां
लघुताने पामे छे. मद करवाथी मोटा मोटा राजाउ पण दुःख-
मां पमया छे, तो बीजाउनुं तो कहेवुंज शुं? माटे जेम बने तेम
अहंकारने तजवो. अहंकार क्रोधनुं बीज छे. अहंकार नाश पामे
तो क्रोध आवेज नहीं. जगतमां जेटली चीज छे तेमां जम छे
ते देखाय छे, तो पोते चेतन छे तो जम चीज प्रिय अप्रिय कर-
वाथी अप्रिय चीज उपर द्वेष थाय छे. पण जे परवस्तु एटले पो-
तानी वस्तु छे नहीं, तेना उपर द्वेष करवाथी फक्त कर्मबंध सिवाय
बीजो लाज नथी; माटे जे जे वस्तुना जे जे धर्म छे ते जाणी
लेवा; जे जे अवसरे जे जे वस्तु ग्रहण करवानो उदय थयो ते
वस्तु ग्रहण करवी; तेमां द्वेष करी ग्रहण करवाथी कर्मबंध सि-
वाय बीजो कांइ फायदो नथी. आत्मा मलीन थाय छे. मुनि म-
हाराजाउए तथा तीर्थंकर महाराजे द्वेषनो त्याग कर्यो ने केव-
लज्ञान पाम्या, माटे बीजा पण आत्मार्थी जीवे तेमनी रीत प्र-
माणे द्वेषनो त्याग करवो. खावानी, पीवानी, पेहेरवानी, उढवा-
नी, पाथरवानी, सुवानी, चालवानी कंइ पण वस्तु प्रतिकुल मळे
तेमां द्वेष धारण करवो नहीं. कोइ धन लेइ जाय, कोइ मारी
जाय तो पण कर्मनो विचार करवो के पूर्वना पुन्यनी खामी
पमे छे त्यारे बने छे, माटे रागथी जीव उपर द्वेष करवो ते न-
कामो छे, एम विचारी समजाव दशा धारण करवी. द्वेषनो अंश
पण जागे नहीं, एम प्रवृत्ति करवी, ने सत्ता, बंध, अने उदय ए त्रणे
प्रकारे नाश करवो के केवलज्ञान, ने केवलदर्शन गुण प्रगट थाय.

आ मुजब अढार दूषण जगवंते क्षय कर्या छे, तेथी आत्मा-
ना संपूर्ण गुण उत्पन्न थया छे, तेणे करीने त्रण जगतना जाव
एक समयमां जाणी शके एटली शक्ति प्राप्त थइ छे. एक एक

द्रव्यने विषे समय समय अनंता पर्याय परावर्त्तमान थइ रह्या छे, ते एक एक द्रव्यमां पूर्वकाल एटले जे कालनो छेडो नथी तथा आवता कालमां पर्याय थवाना ते सर्वे एकी वखते जाणी शके एवुं ज्ञान जेमने प्राप्त थयुं छे, आत्मानी अनंत वीर्यशक्ति प्राप्त थइ छे; एवा आत्माना समस्त गुण प्रगट थया छे, तेना प्रज्ञावेज देवताओ फटिक रत्नमय समवसरणनी रचना करे छे, त्रण गढ रचे छे, तेमां त्रीजा गढमां देवता सिंहासन थापे छे, ते सिंहासन उपर बेसीने जगवान देशना आपे छे, ते देशना केवी छे ? के जेमां पोतानो कंइ प्रकारनो लाज रह्यो नथी, कोइ प्रकारे धन के स्त्रीनी स्वप्नामां पण इछा नथी. जेने धनादिकनी तथा माननी इछा रही छे ते धर्म उपदेश आपे तेमां स्वार्थ राखीने आपे छे, अने स्वार्थ ज्यां आव्यो त्यां खरा धर्मना स्वरूपनो दर्शाव थतो नथी, तेम सांजलनारनुं ध्यान पण उपदेशकना स्वार्थ उपर जवाथी तेमनो उपदेश सांजलनारने लाजकारी थतो नथी, कारणके हमेश जे धर्म उपदेश देनार जेवो उपदेश दे ते रीते ते पोते वर्त्तता नथी, त्यारे सांजलनार विचारे के गुरुजीथी वा जगवानथी पण ए रीते चलातुं नथी, तो आपण शी रीते चालीए, एम विचारीने पोते जे स्थितिमां छे तेमांज कायम रहे छे, पण आत्माना गुण प्रगट करवाने उत्सुक थता नथी; अने जेने अढार दूषण गयां छे, तेमने तो वीतराग दशा प्रगटी छे, कोइ पण वस्तु उपर रागद्वेष रह्यो नथी, केवल जगतना जीवने तारवा सारु पृथ्वी उपर विचरी धर्म उपदेश दे छे, तेथी सांजलनारनुं पण कल्याण थाय छे. सांजलवा बार पर्षदा बेसे छे. ए अधिकार श्राद्धशतक नामना प्रश्नोत्तरमांथी लखुंछुं.

केवलज्ञानी महाराज पूर्व द्वारेथी प्रवेश करे, जिनने त्रण प्रदक्षिणा करीने "नमोतीथ्थस्स" कहीने पूर्व अने दक्षिण वच्चे

बेसे, तेमना पछी मनः पर्यवज्ञानी, अवधिज्ञानी, चौदपूर्वधर, दशपूर्वधर, नवपूर्वधर, अने लब्धिवंत मुनि पूर्व द्वारे पेसे. ज्ञगवंतने त्रण प्रदक्षिणा देइ नमस्कार करी नमोतीर्थाय, नमोगणधरेज्यो, नमो केवलिज्यः एवी रीते नमस्कार करी केवलज्ञानीनी पाछल बेसे. पछी बीजा सर्व साधुजी पूर्वने द्वारे प्रवेश करीने त्रण प्रदक्षिणा देइ नमस्कार करी "नमस्तीर्थाय," नमोगणजृद्भ्यो, नमः केवलिज्यो, नमोऽतिशयज्ञानिज्यो एवी रीते नमस्कार करीने पूर्वे बेठलानी पाछल ते साधुजी बेसे. पछी वैमानिकदेवी पूर्वद्वारे प्रवेश करीने ज्ञगवंतने त्रण प्रदक्षिणा देइ नमस्कार करी, नमस्तीर्थाय, नमः सर्वसाधुज्य एवी रीते नमस्कार करीने साधुजीनी पाछल बेसे. पछी साधवीजी पूर्वद्वारे प्रवेश करीने ज्ञगवंतने त्रण प्रदक्षिणा देइने नमस्कार करीने वैमानिक देवीनी पाछल रहे. ज्ञवनपतिनी, व्यंतरनी, ज्योत्सीनी देवीज दक्षिण द्वारे प्रवेश करे. ज्ञगवंतने वैमानिकनी देवीनी पेठे प्रदक्षिणादि करीने दक्षिण पश्चिमनी वचमां रहे ते अनुक्रमे रहे. त्यारबाद ज्ञवनपति, ज्योत्सी, वाणव्यंतरना सुर पश्चिमद्वारे प्रवेश करी ज्ञगवंतने प्रदक्षिणादिक दइ नमस्कार करीने पश्चिम अने उत्तर वच्चे यथाक्रमे बेसे. वैमानिकदेव तथा मनुष्य अने मनुष्यनी स्त्री ए त्रण उत्तरद्वारे प्रवेश करे, ज्ञगवानने प्रदक्षिणादि देइ नमस्कार करीने पूर्वने उत्तर वच्चे यथाक्रमे बेसे. आ मुजब बार पर्षदा समवसरणमां सांज्ञलवा बेसे छे. त्यां ज्ञगवानना अतिशयना प्रज्ञावथी त्रण पासे ज्ञगवाननुं प्रतिबिंब समवसरणमां देवता करेछे, तेथी चारे पासे बेठेला ज्ञगवंतनेज जुए छे ने चारे मुखे देशना दे छे, एम बधाना समज्यामां आवे छे. देशनानी एवी खुबी छे के जेना जेना मनमां जे जे शंका पडे छे, ते ते ज्ञगवान जाणी लेइ ज्ञानथी उत्तर आपे छे, कोइने प्रश्न

पूछवो पडतो नथी. आवी जेनी शक्ति छे. कोइना मननो संदेह दूर करवो मुश्केल नथी, एवी भगवंतनी वाणी सांभळीने निकट भवी जीवतो तेज वखत प्रतिबोध पामी संजम ले छे, अने तेवी विशुद्धि न होय ते श्रावक धर्म वा सम्यक्त्व अंगिकार करे छे, ने आत्मानुं कल्याण करे छे. ए बे प्रकारना धर्मनुं वर्णन विस्तारे प्रश्नोत्तररत्नचिंतामणिमां छे, एटले अहींआं लखतो नथी, पण सार ए छे के हरेक प्रकारे संसारना मोहनी, स्त्री पुत्रादिकनी, अने धनादिकनी राग दशा अनादिनी छे, ते राग दशा उतारवी, अने आत्म दशानी सनमुख जेम जेम विकल्प खसे ए उद्यम करवो, अने विकल्पनां कारण छोडवां. ज्यां सुधी संसारमां मग्न छे त्यां सुधी आत्मानी दशा जागवानी नथी, ते सारुज संसार छोडी साधु थवानी जरुर छे. साधुजी थाय छे त्यारे वेपारादिकनां कारण छुटी जाय छे, स्त्री प्रमुखनां कारण खशी जाय छे, एटले आत्मज्ञान केम करवुं तेनां शास्त्र जोवानो निवृत्तिए वखत मळे छे. शास्त्र केटलांएक तो एवां छे के वांचवाथीज मोह खशी जाय छे, ने आत्मभाव प्रगट थाय छे. आत्मभाव प्रगट थाय एवां घणां शास्त्र छे, तेना अभ्यासमां मग्न थाय, पछी अनुभव ज्ञान प्रगट थाय छे. त्यारे तो शास्त्रनी पण जरुर नथी. पोताना प्रबलज्ञाने ध्यानादिकथी कर्म खपावे छे, अने केवलज्ञान तथा केवलदर्शन प्रगट करे छे. एटली विशुद्धि नथी होती तो मरीने देवता थाय छे. त्यां देवतानां सुख भोगवी पाछा मनुष्य थइ धर्म आराधन करी मुक्तिने पामे छे. माटे एवा अढार दूषण रहित देवने देव मानवा, तेमनी भक्ति करवी, तेमनी आज्ञाए वर्त्तवुं. जे मोक्ष पाम्या छे तेमनो बतावेलो मार्ग अंगिकार करीए तो मोक्ष पामीए. त्यारे कोइने प्रश्न थशे के जैन धर्मनाज देव अढार दूषण रहित छे? शुं बीजा देव एवा नथी? तेने समजा-

वधुं के अमे कांइ एम केहता नथी. ए विषे जैन धर्म सिवायना होय तेमणे पोतानी मेळे पोताना देवनां चरित्र लखेलां होय ते जोइ लेवां, ने ते चरित्र जोतां जो अढार दूषणमांनुं कोइ पण दूषण न होय तो तेमने खुशीनी साथे देव मानवा, अने तेवा देवने अमे पण नमस्कार रात दिवस करीए छीए. वांचनारने देवनुं चरित्र जोतां जो अढार दूषणमांनां दषण देवमां देखाय छे तो दूषण वाळाने देव कोण मानशे. जेने ए दूषण तजवां नहीं होय—ते मानशे. ने जो तजवां हशे तो विचार करशे जे, जेणे पोताना आत्माने तार्यो नथी तो आपणो पण केम तारशे? एम विचार करीने सहेजे सत्य देवनीज आज्ञा धारण करशे.

प्रश्न.—मोटा मोटा पंडितो थइ गया ने मोटां मोटां शास्त्र रच्यां तेमणे शुं देवनुं ओळखाण नहीं कर्युं होय? न्यायनां शास्त्र, व्याकरण शास्त्र, जैनीओने पण ब्राह्मण पासे भणवां पडे छे, माटे एवा विद्वाने कांइ जोवुं बाकी राख्युं हशे? ते विषे जाणवुं जे ए वात पोतपोतानुं मन जाणे एवी छे. केटलाएक अन्य दर्शनना विद्वानो साथे वात थइ छे, ते विद्वानो पोताना धर्मनी पुष्टी करे छे, पण खानगीमां तेथी बोलवुं उलटुं थाय छे; जेमके आचार्य महाराज श्री आत्मारामजी महाराज प्रथम ढुंढक मतमां हता ते वखतमांज ढुंढीआ पासे भणवा गएला, ते ढुंढके शीखामण आपी जे प्रतिमाजीनी निंदा तमो करो छो माटे नहीं भणावुं, केमके आगममां जोतां प्रतिमाजी पूजवानुं व्याजबी जणाय छे, अने ते स्थलो बतावी प्रतिमाजीनी श्रद्धा करावी. त्यारे आत्मारामजी महाराजे कह्युं जे तमे केम खोटा मार्गमां पडी रह्या छो? त्यारे कह्युं जे हवे नीकळवानी लज्जा आवे छे. आवी रीत छे. माटे बीजानो जोवानो विचार करवो फोगट छे. पोते पोतानी मेळे शास्त्र जोइ निःपक्षपातथी तपास करवी के खरुं शुं छे?

तो सेहेजे समजाइ जशे. जैनीउ व्याकरण न्याय जणे छे ए तो कक्को शीखवा जेवुं छे, एमां कांइ मार्गनुं ज्ञान करवानुं नथी. मार्गनुं ज्ञान कोइ ब्राह्मण पासे लेवा जता नथी. मार्गनुं ज्ञान तो मार्ग पामेलो माणस बतावी शके छे, तो मुनि महाराजाउतो एक संसार त्याग करवानुं काम करी चुक्या छे. व्याकरण जणावनार तो संसारमां पमेला छे, ते शुं बतावी शके? माटे ए सर्व विचार पारका छोमी पोतानुं काम करवुं होय तेणे पोताना आत्मानो उद्धार करवा पोते शास्त्र अभ्यास करी देवगुरुनी तजवीज करवी. अनादिनी टेव तो एवी छे केजे वामामां पमथा तेज कर्या करवुं, पण ते रीत छोमी पोतानी बुद्धिथी सूक्ष्म विचार करी जे जे देवनाम धरावी आपणने जे धर्म करवा कहे छे ते धर्ममां ते वर्त्या छे? तेम स्वभावमां रही विभावथी मुक्त रहेवा कहे छे तेम रह्या छे? आ जोवानुं मुख्य काम छे, अने आपणे पण मनुष्य जन्म पामी एज करवानुं छे, माटे अंशे अंशे जमनी प्रवृत्ति उछी थाय, आत्म स्वभावमां स्थिरता थाय ए उद्यम करवो.ए उद्यमथीज वर्त्तमाने वा कालांतरे आत्मगुण अनुक्रमे संपूर्ण उत्पन्न थशे, माटे जेम बने तेम आत्मतत्त्वनी शुद्धि छए दर्शनमांथी जे दर्शनमां विशेष मले ते दर्शन ग्रहण करी ते दर्शननी श्रद्धा राखी स्वगुण खोजवाना कामी थवुं.

प्रश्न—तमारा जैन दर्शनमां व्यवहार क्रियामां वर्त्ते छे, पण कोइ आत्म खोजना करवी, आत्म गुणमां वर्त्तवुं, तेवा तो देखता नथी.

उत्तर—सर्व जीव कंइ आत्माना खोजी होता नथी, तेम आत्मगुणमां वर्त्तनारा पण होता नथी, कारण जे आ दुषम कालमां ज्ञानीउए ज्ञानमां प्रथमथीज जोयुं छे के हालमां कोइ मोक्ष आ क्षेत्रमांथी जशे नहीं. एटले मोक्षे जाय एवा ध्यानादिकना

करनार क्यांथी होय ? पण आ कालने योग्य साधन करी शके एवा उत्तम जीवो तो वर्त्तता नीकली शके. ध्यानादिक करीने समभाव दशा लाववी छे, विषय कषायथी मुक्त थवुं छे, कोइ मारी जाय कोइ पूजा करी जाय ते बंने उपर तुल्य दशा करवी जोइए, ते करवाना उद्यमी तो नीकलशे, पण केटलाएक धर्मवाला ध्यान करवानुं नाम देइ गांजानी चलमो फुंके छे, भांग पीए छे, तेथी ज्ञान नष्ट थइ जाय, अने कषायादिक वधे छे, एवा उद्यम करीने कहे जे अमे ध्यान करीए छीए ते केम मनाय ? अन्य दर्शनमां पण केटलाएक वेदीया ढोर कहेवाय छे ते कोने कहे छे ? के जे वेदांतनी वातो करे, तेनी कथा करे, अने विषय कषायमां वर्त्ते त्यारे कहे जे ए जडनुं काम जड करे छे तेमां अमारे शुं ? जे खावानुं मन थयुं ते खावुं, भोगनी इच्छा थइ ते भोग करवा, कंइ पण जड कर्त्तव्य रोकवुं नहीं. आवो धर्म पाली पोतानी इच्छा प्रमाणे विषय कषायमां वर्त्ते अने कहे जे अमे ध्यानी छीए, तेने दुनियामां वेदीया ढोर कह्या छे. पातंजली योगशास्त्रमां अष्टांग जोग साधवा कह्या छे तेमां प्रथम जोग यम छे, ते पांच वस्तुना त्यागथी कह्या छे. जीवहिंसा, जूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह ए पांच वस्तुनो त्याग थाय त्यारे यमनामा जोग प्रगटे. त्यारबाद बीजो जोग नियमनामा कह्यो छे, तेमां शौच, संतोष, तप सज्झाय ध्यान, अने ईश्वरध्यान आ पांच वस्तु करवानी कही, तो ए जेम जैनमां व्यवहार कह्यो छे, तेमज योगशास्त्रमां कह्यो. वली त्रीजा जोगमां आसननो जोग करवो छे, स्थीर आसन करवुं, ए त्रण जोग थया पछी चोथो प्राणायाम जोग थाय, तेमां रेचक, पुरक, कुंभक करवुं कह्युं छे. आ हठ समाधियोग छे. त्यारबाद पांचमो जोग प्रत्याहार छे, तेमां पांचे इंद्रिना विषयनो संवर थाय छे, संसारथी तथा जड भावथी विमुख थाय छे, तत्त्वबोध

थाय छे, सूक्ष्मज्ञान थाय छे. छठो ध्याननामा जोग, सातमो धारणानामा जोग, आठमो समाधि जोग ए त्रण जोग केवल सहज समाधिनी प्राप्तिनां साधन छे ते थाय. हवे विचारो के अष्टांग जोगना साधनवालाए पण प्रथमना जोगमां व्यवहार शुद्धि बतावो, ते व्यवहार शुद्धि करे नहीं, ने कहे जे ध्यान करीए छीएं, ते ज्ञानवंत केम मान्य करशे ? अनुक्रमे चरूवानो जैनशास्त्रनमां पण गुणस्थाननो क्रम वताव्यो छे, ते मुजब तेमां पण योग्यता प्रमाणे ध्यानादिक छे, अने क्रम रहित गुणस्थानमां पण चरूनारो परू छे, ते संयम श्रेणीनी सज्झायमां कह्युं छे. ने वली वृहत्कल्पनी शाख-आपी छे, माटे अनुक्रमे जेम कह्युं छे तेवी रीते ध्यानादिकनी रीत कही छे. अष्टांग जोगनी व्याख्या पण योग दृष्टी समुचयमां हरिभद्राचार्य महाराजे विस्तारे कही छे तेमां विशेष फेरफार समजातो नथी, अने जैनीउ जाणता नथी, खोजना करता नथी, ए कहेवुं जैन धर्मना शास्त्रना अजाणपणाने लीधे छे जैनमां क्रमे गुणस्थान चरूवानुं कह्युं छे, तेमां योग्य थाय छे, त्यारे ध्यान करे छे. योग्यता ना आवे त्यां सुधी भावनाउ भावे, ए भावनाध्याननुं स्वरूप ध्यानशतक, योगशास्त्र, ध्यानमाला, षोडशकजी वगेरे ग्रंथो जोशो तो सारीपेठे समजाशे. में पण अंशमात्र प्रश्नोत्तररत्नचिंतामणिमां दर्शाव्युं छे. तेथी अहीं लखतो नथी माटे त्यांथी जोवुं. तमारुं प्रश्न एटलुं स्वीकारीए छीएं के मार्गमां दर्शाव्या प्रमाणे माराथी वर्त्ततुं नथी ते प्रमाद दशा छे. वाकी जे महापुरुष थया छे ने थवाना छे ते पुरुष तो आत्मतत्त्वनी खोजनामांज वखत गाले छे. निज स्वरूप विचारे छे, पोताना गुण पर्याय विचारे छे, पोतानुं स्वरूप विचारतां पोतानी विपरीत दशा देखाय छे, ते टालवाने व्यवहारमां वर्त्ते छे. व्यवहारमां वर्त्ततां जेटलो जेटलो आत्मा कर्मथी मुक्त थाय

छे, अने निर्मल थाय छे, तेने ज धर्म माने छे, तेमांज आनंदित थाय छे. पोताना आत्मानी परीक्षा करवा कष्ट पण सहन करी जुए छे, कारण के केटलाएक वातो करवारूप जम पदार्थ मारो नहीं एम कहे छे, पण ज्ञानी तो कष्ट सहन करती वखत परीक्षा करे छे के जे शरीरने कष्ट पमे छे, त्यारे ते कष्ट मने थयुं मनाय छे के नहीं ? जो दुखमां चित्त लेपाय छे त्यारे तो कहेवारूप थयुं, ने जो शरीरने कष्ट थाय छे तेमां समजाव रहे छे त्यारे साचुं ज्ञान थयुं स्वीकारे छे, एवी स्वज्ञाविक दशाज स्वस्वरूप परस्वरूप ज्ञान थवाथी थइ छे, तेना प्रज्ञावे जे जे दुख थाय छे तेमां जराए खेद पामता नथी. पोते पोताना आनंदमां रहे छे. कर्म फलनी पतीज छे तेमां वधारे पतीज थती जाय छे के पूर्वे पाप कर्यां छे, तेनुं आ फल ज्ञोगवुं छुं, हवे पण पाप करीश तो तेनां फल ज्ञोगववां पमशे. आ विचारो ठशी गया छे, तेथी कर्म खपाववाना उद्यम जे जे प्रज्ञुए बताव्या छे, तेमां व्यवहारमां वर्ते छे, निश्चय स्वरूप हृदयमां ज्ञावे छे. तेनी विचारणा करे छे. वधारे विशुद्धिवंत ध्यानादिमां लीन थाय छे. एवा उद्यमी पुरुष मोक्ष पामशे ए निरधार छे, पण जेणे उद्यम छोमयो तेने तो कंइ पण बनवानुंज नथी.

प्रश्न—धर्मनो उद्यम तो बधा धर्मवाला पोतपोताना विचार प्रमाणे करे छे, तो जैन धर्मनुं विशेष शुं ?

उत्तर—जैन धर्मना मार्गमां निश्चयने व्यवहार बे प्रकारनो मार्ग छे, तेणे करीने वस्तुधर्मनो यथार्थ निर्णय थाय छे, अने यथार्थ प्रवृत्ति पण करी शके छे. जैन थइने पण केटलाएक एकलो निश्चय ग्रहण करे छे, केटलाएक एकलो व्यवहार ग्रहण करे छे अने निश्चय उपर दृष्टि नथी. ए बेमां यथार्थ जैनीपणुं नथी. ए सारु जशविजयजी महाराज कही गया छे के "स्याद्वाद

पूर्ण जो जाणे ॥ नयगरभीत जस वाचा ॥ गुणपर्याय द्रव्य जो बुझे ॥ सोइ जैन हे साचा ॥ " आवी रीते कह्युं छे, ते मुजब वर्ते तेने जैन कहीए; तो जेम जैन नाम धरावी एक पक्ष ग्रहण करे तेने जैनमां गण्या नहीं. तेनुं कारण के ते यथार्थ आत्म साधन करी शके नहीं, तेम अन्य दर्शनीमां पण एकांत पक्ष ग्रहण करे तेने वस्तु धर्मनुं यथार्थ ज्ञान नहीं थइ शके, अने वस्तु धर्मना बोध विना आत्मधर्मने आत्मधर्मना रूपे जाणे नहीं, जड ध-र्मने जड धर्मना रूपे जाणे नहीं. जेवुं आत्मानुं लक्षण छे, तेवुं लक्षण जाणे नहीं. परमात्मानुं जेवुं लक्षण छे तेवुं जाणे नहीं. ते कदापि परमात्मानुं ध्यान करे तो पण सफल शी रीते थाय? केटलाएक कहे छे जे ईश्वर सिवाय कोइ पदार्थ छे नहीं. जड पदार्थ छे एवुं जे कहीए छीए ते भ्रांति छे. हवे प्रत्यक्ष पदार्थने भ्रांति कहे छे ते भाषास तेने अनुसरतुं ध्यान करे तो आत्मकार्य शी रीते थाय? माटे जे जे वस्तु जेवे रूपे रही छे ते रूपनुं ज्ञान करी ध्यान करे तो कल्याण थाय; बाकी जे जे जीवने पो-ताना आत्मानुं कल्याण करवानीज बुद्धि छे, ने ते बुद्धिथी जे उद्यम करे छे ते परंपराए हितकारी छे, कारण जे आत्म धर्म पामवाना सन्मुख थया छे, तेने सदगुरुनो जोग बने तो ज्ञान थतां वार लागे नहीं; माटे सन्मुख भाव करवो ए सारो छे, तेथी परंपराए कल्याण थशे अने एक पक्षनी बुद्धि मुकी नि-श्चय दृष्टि हृदयमां स्थापी निश्चय प्रगट थाय, एवां कारणो से-ववां तेथी कल्याण थशे; अने परंपराए इच्छित सुख थशे, तेमां मुख्य शास्त्रज्ञान करवानो वधारे उद्यम राखवो ते ज्ञानने अनुसरता परभावथी मुकावानां साधन करवां एटले सर्वे श्रेय थशे.

प्रश्न—जैनमां वस्तु केटली कही छे?

उत्तर—जड अने चेतन बे पदार्थ छे, एनी व्याख्या प्रथम

घणी करी छे, एटले अहींआं लखतो नथी. हवे एटलुंज लखवानुं छे के जड जे शरीर, घर, हवेली, कपडां, आभूषण विगेरे प्रगट पदार्थ छे, तेने अद्वैतवादी कहे छे के भ्रांति छे पदार्थ नथी; अविद्याना प्रभावथी मानो छो. आ जे कहेलुं छे ए बाबतना ग्रंथ पण घणाज लखाया छे अने न्याय पण जोडाया छे. पण मारा विचारमां सर्वज्ञ पुरुषे शुं बताव्युं छे ? आ पदार्थ जड छे, तेथी ए पदार्थ मारा नहीं, ए पदार्थमां मारापणुं मानुं छुं ते भ्रांति छे, अविद्या छे; आत्मानो चेतन स्वभाव छे, माटे पर स्वभावने मारो कहेवो ते भ्रांति छे, ने ए भ्रांतिए अनंतोकाल थयो संसारमां रोलायो, माटे संसारमां जेने रझलवुं न होय तेणे ए पदार्थ उपरथी मारापणानो ममत्त्व छोडवो; आ रीते परमात्मानुं कहेवुं छे, तेनुं रूपांतर थइ गयुं छे, वली जैनमत स्याद्वाद छे तेने अजाणपणे एम जाणे छे के हा ने ना ए केम बने ? पण जे जे पदार्थ रह्या छे तेमां बे बे धर्म रह्या छे तो ते न मानतां कार्यनी सिद्धि शी रीते थाय ? तेनो दाखलो के, स्त्री छे तेने छोकरां थाय छे हवे एक पक्ष लइने कहीए जे छोकरां स्त्रीने थायज तो शुं दूषण आवे छे के जे स्त्री वंझा छे तेने थतां नथी, हवे वंझाने थायज नहीं एम मानीए तो तेमां पण दोष आवे छे, केमके वंझाने औषध खावाथी वंझा दोष टले छे ने छोकरां थाय छे. हवे एम कहीए जे औषधथी वंझा दोष टलेज छे, तो ते पण खोटुं थाय छे, कारणके केटलीएक बाइओने वंझादोष उसडथी नथी पण मटतो, तो ए पण एकांत कहीशुं त्यां दूषण आवशे. शरीरनी नीरोगता सारी संभालथी रहे छे, एम जो एकांतथी कहीशुं तो महाराणी साहेबने मांदगी भोगववी पडी अने देहनो त्याग करवानो वखत आव्यो, तेमणे कांइ संभाल राखवामां कचाश राखी नथी, पण पूर्वकृत कर्म जोर करे त्यां माणसनुं कंइ चाली

शकतुं नथी. हवे अहीं एवो सवाल थशे के शरीरनी संभाल राखवानी जरुर नथी, कर्मथी थाय छे ते थशे, ए पण एक पक्ष नथी, संभालथी पण बचाव थाय छे जेमके जाणी बूझीने झेर खाइए तो पछी शी रीते जीवीए ? मरकी प्रमुखनी हवा चालती होय त्यांथी खशी जवुं जोइए. तेम करवाथी बचाव थाय छे, ते पण एकांत नहीं. हवे दाक्तरने पण नाशी जवुं जोइए, आ सवाल आवशे. केमके बीजा नासे त्यारे डाक्तर केम न नासे ? त्यारे अमो कहीए छीए के नासवानो एकांत नहीं. दाक्तर मरकी न लागे एवा बंदोबस्तथी रहीने लोकनी संभाल करे, दाक्तर नासे नहीं, बीजा माणस बीजे स्थले जाय. एज प्रमाणे नाणुं पेदा करवुं, ते मेहेनत करवाथी नाणुं पेंदा थाय एम कहे छे तेने कहीए छीए जे मेहेनत करवाथी नाणुं पेंदा थाय छे ने नथी पण थतुं. बुद्धिवान बुद्धिथी नाणुं पेंदा करे छे ते पण एकांत कहेवाशे नहीं. बुद्धिवान देवाळां काढे छे, अने वगर बुद्धिवान धन साचवी राखे छे, ते पण एकांत नहीं रहे. बुद्धिनी खामीथी घणुं नुकशान थाय छे. खावुं ए सारुं छे पण एकांत कहेवाशे नहीं. केमके शरीरमां खाधेलुं पच्युं नथी ने खाय तो अजीर्णादिक रोग थाय, माटे तेणे खावुं नहीं, तेमां पण एकांत नथी. सेहेज पदार्थ संतोषने सारु, निभाव सारु, खाधेली पचवा सारु खावुं. घी पदार्थ उत्तम छे, खावा जोग छे पण निरोगीने, रोगीने नहीं. रोगीने पण न खावो ए एकांत नथी, दवाना अनुपानमां रोगना उपर वा शरीरनी स्थीति उपर विचार करी वैद या दाक्तर खावा कहे ते खावुं. दान देवुं उत्तम छे पण एकांत नहीं. पोताने माथे देवुं होय ते आपे नहीं अने दान दे, तेवी रीते देवुं नहीं ते पण एकांत नहीं. पोताने खावाने बे रोटला कर्या छे, तेमांथी अरधो वा एक रोटलो आपे छे ने बाकी रहेलामांथी निर्वाह करे छे. तो ते उत्तम छे. दान न आपत तो

पोते खात ते पोते खाधुं नहीं ने आप्युं, तो मद्दा फलदायी ढे. कोइने डुःख न देवुं ए शब्द एकांत ढे तो पण ते एकांत नहीं. कोइ उत्तम पुरुषने रोग थयो ढे. ते रोग टालवा डुःख दे तो ते लाभकारी ढे. जेमके गुमडुं थयुं होय ने नस्तर मूके ढे तेथी डुःख थाय ढे. पण शाता करवा सारु डुख देवुं ढे, तो ते डुःख देवुं निषेध नथी. ढोकराने भणवा सारु महेताजी विगेरे डुःख दे, ते डुख देवुं निषेध नथी, ते पण एकांत नहीं ने मारवाथी हाथ पग भागे, कोइ घा पडे, लोही नीकले, कोइ भारे इजा थाय एवो मार विगेरे मारवो जोइए नहीं. वली कोइ कोमल अंगनो होय एवाने बीलकुल मारवो न जोइए, वली कोइ शिष्य अयोग्य होय तो मारवो न जोइए. एम सर्वे विद्या भणवी ए साधारण नियम ढे पण ते एकांत नहीं. जेमां मंत्रादिक विद्या ढे, ते काम करवानी शक्ति न होय, तेणे ए भणवुं नहीं. एम तप करवो ए लाभकारी ढे, तो पण ते एकांत नहीं, जेनी शक्ति होय ते तो सुखे तप करे, पण जेने शक्तिनी खामी ढे, तेथी प्रणाम बगडे तेवुं ढे तेणे तप करवो नहीं, वली ते पण एकांत नहीं. ढेल्लो मरण समय ढे. ते वखते शरीरनी शक्ति न होय तो पण चारे आहारनो त्याग करे, ते पण एकांत नहीं. जेने भाव सारा न रहे अने प्रणाम बगडी जाय तो तेणे त्याग करवो नहीं. धर्म उपदेश देवो ए सारी वात ढे, पण ते एकांत नही जेणे यथा प्रकारे शास्त्रनुं ज्ञान मेलव्युं ढे ते उपदेश दे, पण ते ज्ञान जेणे न मेलव्युं होय ने ते उपदेश दे तो प्रभु आज्ञाथी विरुद्ध देवाइ जाय, माटे ज्ञान रहित होय तेणे उपदेश देवो नही. ज्ञानवंत ढे ते पण सांभलनार उपदेशने लायक न होय तो उपदेश देवो नहीं, ते पण एकांत नहीं. हालमां लायक नथी पण उपदेश देवाथी लायक थाय एवुं होय तो देवो. अयोग्यने जवाब न देवाथी शास-

ननी लघुता थती होय, तो ते लघुता न थाय ते सारु उपदेश देवो. आ स्याद्वादनी रीत छे. अपेक्षा अपेक्षानां वचन जुदां जुदां छे; हवे एवी अपेक्षाउ न समजे ने एकज रीतनी वात करे ते ज्ञानी के अज्ञानी ? सरकारना कायदामां पण अपवाद बताव्या छे, तेम जैन शासनमां उत्सर्ग अपवाद मार्ग बताव्यो छे. वगर अपेक्षाए हा तेनी ना एवो जैन मार्ग नथी, तेवी रीते जैन मार्ग जाण्या विना कोइ ठेकाणे शास्त्रमां उत्सर्ग मार्गनी वात होय, कोइ ठेकाणे अपवाद अपेक्षाये होय, ते विचार जाण्या विना कहे छे जे जैनमां एक ठेकाणे कंइ छे ने एक ठेकाणे कंइ छे. आ कहेनार केवल मुर्खता वापरी कहे छे. जो जैन शासननुं माहापण मळ्युं होत तो कदापि कहे नहीं. जैनमां जे साते नय सप्त भंगी आदे बतावी छे, ते आवी रीते अपेक्षाज्ञान थवाने सारु छे, ते नयादिकनुं यथार्थ ज्ञान थाय तो सर्व ठेकाणे जे जे नयनुं वचन होय ते ते नयनुं ते ते ठेकाणे थापे तो कोइ वातनो संशय रहे नहीं, पण ते ज्ञान विना जैन शासननी स्याद्वाद वात संबंधी विपरीत भाखे वा बोले ए पोताना वारुानो हठ छे. जे जे पदार्थो रह्या छे तेनो निर्णय स्याद्वाद ज्ञानथी थाय छे. दुनियामां कोइ पण वस्तुनो स्वभाव स्याद्वाद विना नथी. जेम के जीव छे ते अविनाशी छे, ए सत्य छे, कोइ दिवस जीवनो विनाश थतो पण नथी, एज पक्षपर एकांत रहीए तो जे जे संसारमां रोळाता जीवो छे ते एक शरीर मुकी बीजी जातिमां बीजुं शरीर धारण करे छे, तो प्रथम हाथी हतो त्यारे पोताना आत्मप्रदेश हाथीना आखा शरीरमां फेलाइने रह्या हता, ते हाथी पण मरण पाम्यो ने माखी थइ तो जे हाथीमां फेलावो हतो तेनो संकोच करी माखी जेटलामां समाया; एवी रीते आत्मप्रदेश थया तो हाथी वाली अवगाहनानो नाश थयो, तथा हाथीनी पण बोलवुं, चालवुं, खावुं,

पीवुं वगेरे जे जे प्रवर्त्तना हती ते बंध थइ गइ मांखपणानी थइ, तो हाथीपणुं नाश थयुं ते अपेक्षाए जीवमां नाश धर्म पण रह्यो. जे नाश धर्म न माने ते विपरीत के केम? परमाणु पदार्थ अविनाशी छे पण एक बीजामां मलवुं छुटा पडवुं ए धर्म रह्यो छे, ते विनाशी धर्म. तेमज माटीना अनेक घाट बने छे. ते विनाश थाय छे, माटी अविनाशी पणे छे; तो एवा पण बे धर्म रह्या छे. तेवा बे बे धर्म रह्या छे. आत्मामां स्वभाव धर्म अने विभाव धर्म बे, बे अपेक्षाये रह्या छे. स्वभाव धर्म कृत्रिम नथी. स्वभाव धर्म जडमां रहेवानो, जडनी साथे वर्त्तवानो नथी. मुख नथी तेथी बोलवानुं नथी, चालवानुं नथी फक्त जाणवुं, देखवुं, स्वभावमां स्थीर रहेवुं ए स्वभाव आत्मानो छे. हवे एकांत मानीए तो जड प्रवृत्ति करे छे ते कोण करे? वेदांती लोक एम कहे छे, के मायाथी—अविद्याथी थाय छे तो ते रीते पण परसंजोगे वर्त्तवुं तो थयुं, तो जीवमां स्वभाव न होय तो वर्ते शी रीते. हवे वर्तवानो स्वभाव मानीए तो एथी रहित थाय नहीं. एम कांइ पण एक स्वभाव मानवाथी वस्तु निर्णय थशे नहीं. जैनशास्त्रकारो स्वभाविक धर्ममां कांइ पण जड प्रवृत्ति नहीं एम कहेछे ते सत्य छे, तेम न होय तो संसारथी मुकाइने शुद्ध कोइ थाय नहीं, माटे शुद्ध निश्चय नयना पक्षथी निज स्वभावमां रहेवुं एज धर्म छे. अशुद्ध निश्चयना पक्षथी जडनी संगते कर्म बांधेलां छे, ते कर्मना संजोगथी जडनी प्रवृति थायछे. जड जेम वर्त्ते छे, तेम आत्मा वर्त्ते छे. हवे ते प्रवृति छोडवाने सारु व्यवहारमां धर्म साधन करवुं छे अने जे जे कर्म बांधेलां छे ते खपे एवो उद्यम करवो. कर्म खपाववानो उद्यम यथार्थ कर्या विना आत्मा निर्मल थवानो नथी ने कर्म खपवानां नथी. एवा वस्तुउमां स्वभावि धर्म विभाविक धर्मोनुं ज्ञान विना ध्यान करे तो विपरीत

ध्यान थशे, माटे पदार्थोना धर्मनो दर्शाव जैन शास्त्रने विषे बहु विस्तारे छे, ते जाणी पछी दया दानादिक करे तो सफल थाय, अने मोक्ष साधन पण तेनेज कहीए. स्वन्नाव धर्मने स्वन्नाव पणे श्रद्धा करी, विन्नाव धर्ममां वर्त्तना छे ते वर्त्तना दूर करवामां, प्रथम विन्नाव वर्त्तना करवी पमशे, जेमके ग्रहस्थ पणानी प्रवृत्ति विन्नाविक छोमी साधु धर्मनी प्रवृत्ति करवी, हवे निश्चय नयनी अपेक्षाए ए पण विन्नाव छे, पण ए विन्नाव केवो छे? के स्वन्नावने आवर्ण लागेलाने खसेमनार छे—वीतराग आज्ञाए साधु पणुं आवे छे, तेतो विन्नावना अंश खपवाथीज आवे छे, ते जेम जेम संजममां तत्पर थाय अने संजम स्थानमां चमे, तेम तेम विन्नाव दशा खसती जाय, अने आत्मशुद्धि थाय. अनुक्रमे गुणस्थान चमे ते सर्वथा विन्नावथी मुक्त थाय, अने स्वन्नाव धर्म प्रगट थाय, तेथी अनंत ज्ञान शक्ति प्रगट थाय, तेथी एक समयमां त्रण लोकना न्नाव जाणवामां आवे, अनंत दर्शन प्रगट थाय, तेथी सामान्य नपयोग रूप बोध थाय, अनंत चारित्र गुण प्रगट थाय तेथी स्वन्नावमां स्थिर रहे, अव्याबाध सुख वेदनी कर्मना क्षयथी प्रगट थाय, नाम कर्मना क्षयथी अरूपी गुण प्रगट थाय, गोत्र कर्मना क्षयथी अगुरुलघु गुण प्रगट थाय, अंतराय कर्मना क्षयथी अनंत वीर्य प्रगट थाय, आयु कर्मना क्षयथी अक्षय स्थिति प्रगट थाय आवी रीते अनंत आत्माना गुण प्रगट थाय, अने लोकाग्रे सिद्धिने विषे बिराजमान थाय.

प्रश्न—सिद्ध स्थान क्यां छे अने त्यां शुं करवा रहेवुं

उत्तर—सिद्ध स्थान चौद राजलोकनी उंचाइ छे तेना छेमाना न्नागमां अलोकने अमीने रह्या छे. अलोक एटले त्यां धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, काल ए पांचे पदार्थ नथी तेथी अलोक कहीए, ते अलोक नीचे रह्या छे,

कारण जे धर्मास्तिकाय अलोकमां नथी तेनी सहाय विना च-
लातुं नथी माटे त्यां रह्या छे, त्यां कहेवा रूपे रह्या छे. देह नथी
तेथी वर्ण नथी, गंध नथी, फर्स नथी, रस नथी अरूपी पणे रह्या
छे, ते सदाकाल अवस्थित पणे रह्या छे, कोइ पण दिवस फरी
चलायमान पणुं नथी. अचलस्वभावी (संसारी सुख अथिर छे,
तेवुं अथिर सुख नथी) स्थिर सुख छे. जन्म मरण करवानां दुःख
टली गयां छे. संसारमां विकल्पनुंज दुःख छे, ज्यारे विकल्प न
होय त्यारे संसारमां सुख थाय छे तेमां सिद्धमहाराज सदा वि-
कल्प रहित छे. कोइ पण वखत कोइ पण कारणनो विकल्प
नथी तेथी सदाकाल सुखमयी रहेछे. संसारमां इच्छाउ प्रवर्त्ते छे, ते
इच्छाउ पुरी न थाय तेनुं दुःख छे; पण सिद्धमहाराजने संसारी कोइ
पण चीजनी इच्छा नथी एटले दुख नथी तेथी सदा सुखमयी छे.
जे जे पदार्थो जोवामां जाणवामां आवे छे, ते संबंधी रागी जी-
वने राग थाय छे, पछी ते मलतुं नथी तेनुं दुःख थाय छे; अने सिद्ध
महाराज वीतराग दशाने पाम्या छे तेथी तेमना जाणवा देखवा-
मां चौद राज्यलोकना पदार्थ समये समये आवेछे पण वीतराग
दशाने लीधे जे पोताना आत्माना स्वभावथी जणाय छे तेमां
कांइ पण चिन्त नथी, विकल्प नथी, पण स्वभावाणंदमां वर्त्ते छे.
जेटलां जेटलां संसारमां दुख छे, तेमांनुं एक पण दुख सिद्ध म-
हाराजने नथी. वली संसारनां जे जे सुख छे ते दुःखमयी छे
अनित्य छे, मात्र सुख माने छे, एटलुं छे. ज्ञानदृष्टिए विचारीए
तो सुख नथी, कारण जे जगतना जीव स्त्रीना भोगे करी आ-
णंद माने छे पण तेज वखत शरीरने केटली पीडा थाय छे, तेना
उपर लक्ष नथी. ते दुःख न मानतां सुख माने छे—विषयथी
आयुष्यनी हानी—पइसानी खराबी—ते सरवे वात कोरे मुकी सु-
ख माने छे; तेमज तमाशा खेल जोवा जाय छे त्यां उजागरा

करे छे, ऊना ऊना पग डुखे छे, ते डुख मानताज नथी; आनुषण पहेरी खुशी थाय छे, तेनो जार उठाववो पमे छे अने शरीरे पीमे छे, तेहना उपर लक्षज नथी; तेमज खावाना विषय सेववाथी केटलीएक एहवी चीज छे के जे खावाथी रोगनी उत्पत्ति थाय छे पण तेहना उपर लक्षज नथी, केटलाएक पदार्थ शरीरने अ-मचण करे एहवा नथी ते पण प्रमाणथी खाय तो, पण ते प्रमाण उपर लक्ष नही ने अतिशय खायतो अजीर्ण थाय ने मरे वा मांदो पमे तेनो पण विचार विषय आगल रहेतो नथी; प्रमाणथी खाय तो तेमां पण केटलां डुख जोगववां पमे छे, जेमके जीवने डुध-पाक खावानुं मन थाय छे, अने ते डुधपाक खाइने खुशी थाय छे; पण ए डुधपाक रांधतांज केटलो शरीरमां पसीनो नीकल्यो त्यारे तइयार थयो, ते कोइ विचार करता नथी; एवी रीतनां सं-सारी सुख डुखगर्नित छे. स्त्रीयोने विषयने सारु पुरुषनुं दास पणुं करवुं पमे छे; जो विषयनी इछा न होय तो पाणिग्रहण क-रवानी जरुर न पमे, पण विषयनी इछाथी पाणिग्रहण करे छे. पछी पुरुष मारे, कुटे, गालो दे, घरनुं आखो दिवस काम करावे, आटलुं डुःख जोगवे त्यारे विषयनां पेहेरवानां सुख मले. माटे वस्तुपणे संसारी सुख, सुख मानवारूप पण डुःखमयी छे, अने सिद्ध महाराजने एमांनुं एक पण डुःख नथी; केवल सुखज छे; अने सादि अनंत जांगे छे. एटले सिद्धमां गया त्यारथी आदि छे पण ए सुखनो अंत आववानो नथी. एनुं स्वरूप अकल छे. को-इथी कथ्युं जाय एवुं नथी, तेम ए सुख मुखे कह्युं जाय तेवुं नथी. शास्त्रमां एक दृष्टांत आप्युं छे के एक राज पुरुष वक्र शिक्षित अश्व उपर बेठो अने पछी तेनी जेम जेम लगाम खेंचे छे तेम तेम दोमतो जाय छे, जंगलमां उज्जम जूमिमां लइ गयो, माणसो बधा पाछल रह्या अने राजा एकलो वनमां गयो. राजाने जय

लागवाथी लगाम मुकी दीधी. एटले अश्व उन्नो रह्यो. पछी अश्व उपरथी उतर्यो. राजाने पाणीनी तरस बहु लागी छे, पण पासे कांइ नथी. एटलामां एक न्नील आव्यो, तेनी पासे राजाए पाणी माग्युं, तेणे दया लावीने पातरामां पाणी लावी आप्युं, ते पाणी पीने राजा संतोष पाम्यो. पछी ते न्नीले फल प्रमुख लावी आप्यां ते राजाए खाधां, तेथी राजा बहु खुशी थयो. पछी पाछलथी प्रधान विगेरे आवी पहोंच्या. तेमने राजाए कह्युं जे आ न्नीले प्राण राख्या. पछी राजा न्नीलने पोताना घेर तेमी गया. त्यां खाजां, घेबर वगेरे अनेक पदार्थ खवमाव्या, ते खाइने न्नील पण अतिशे राजी थयो. एम केटलाएक दिवस रहीने राजानी रजा लेइने न्नील पोताने घेर गयो. त्यारे स्त्रीए पूछ्युं जे नगरमां केवुं सुख हतुं? तो बहु सुख हतुं एम कहे, पण शुं सुख हतुं ते कही शके नहीं. तेम सिद्ध महाराजनुं सुख कही शकाय नहीं, कारण के सिद्ध महाराजना सुखना जोमानुं सुख आ संसारमां नथी; माटे खरी रीते जे ए दशा प्राप्त करे, ते ए सुखने जाणे. केटलांएक लखवामां आव्यां छे, ते दृष्टांत रूप छे. तेथी बुद्धिवान केटलुंक समजी शके छे. आवुं सिद्ध महाराजनुं सुख अढार दुषणनो त्याग करवाथी थायछे. माटे दरेक दूषण न्नगवंते त्याग कर्यां. तेनुं स्वरूप ते ते दूषण नाम मात्र बताव्युं छे विस्तारे शास्त्रमां छे त्यांथी जोइने जेम न्नगवंते त्याग करवानो उद्यम द्रव्य न्नावथी कह्यो छे तेम करवो के आत्मानुं कल्याण थाय. अने सिद्ध महाराज वच्चे न्नेद छे ते न्नागीने सिद्ध महाराजना सरखा गुण वालो आत्मा थाय. मनुष्य जन्म पाम्यानुं एज सार छे.

प्रश्नः—आत्माना गुण आत्माने आपवा तेने दान कह्युं तथा आत्माना गुणनी प्राप्तिने लान्न विगेरे लख्युं ते शा आधारथी?

उत्तर—देवचंदजी कृत चोवीसीमां सुपार्श्व स्वामीना स्त-

वनमां दर्शाव्या छे. वली आनंदघनजी महाराजनी चोवीसीमा पण एवो दर्शाव छे तेना आधारथी लख्युं छे.

प्रश्न--हालमां महा पुरुषोना करेला ग्रंथोना तथा सूत्र सिद्धांतनां भाषांतर थाय छे ते योग्य छे के नहीं ?

उत्तर--हालमां भाषांतर थाय छे ते भाषांतर कोइ मुनि महाराज तो करता नथी. पूर्वेना करेला वालाव वोध मुनि महाराजो तथा आचार्यादिकना करेला छे, तेना उपर पण टीकाउ जेटलो विद्वानो भरोसो करता नथी. टीका जोइ मलतुं टीका साथे होय ते मान्य थाय छे. अने हालमां तो एवा पुरुषो कोइ ग्रंथनुं भाषांतर करता जणाता नथी. फक्त पोतानी आजीविकाने अर्थे गृहस्थो (जैनी) अथवा ब्राह्मणो करे छे. जे माणस पोतानी आजीविकाने अर्थे करेछे तेमणे जिनशासननी रीत पेहेलीज लोपी छे. कारण जे आ लोकने अर्थे प्रभुनी पूजा करे तेने लोकोत्तर मिथ्यात्व कह्युं छे, तो ज्ञानना अर्थ करी वा पुस्तक वेची पैसा पेदा करवा ते आ लोकनो लाभ छे तो प्रथमज लोकोत्तर मिथ्यात्व थयुं, ते मिथ्यात्व लागे छे, एम शास्त्रथी जाणेछे पण पोताने मिथ्यात्व लागे छे एम मानता नथी, आवी दशावाला जैनीउ तथा ब्राह्मणो मिथ्यात्वीछे एवा जीवोने यथार्थ सिद्धांतनो बोध केवी रीते थाय? अने यथार्थ वोध विना अर्थनो अनर्थ थाय. माटे ए काम आत्मार्थीए करवुं योग्य नथी. तेम छतां आजीविका निमित्ते काम करेछे तेने शुद्ध क्षयोपशम थतो नथी. वली विशेषावश्यकमां तो एम कह्युं के सामायक अध्ययन गुरु पासे भणवुं. पण " न नु पुस्तक चौर्यात् " पोतानी मेले पुस्तकमांथी भणवुं नहीं. तो आतो सिद्धांतना अर्थ करवा छे. वली पयन्नादिक विना वीजां आगम (अंग उपांगादिक) श्रावकने साधुजी भणावे तो प्रायश्चित निशिथजीमां कह्युं छे. तो भणवानी

तो नाज होय. अने आतो पोतानी मेलेज अर्थ करे, तेमा गुरु महाराजना आशय ते आवेज नहीं तेथी बरोबर अर्थ थाय नहीं; माटे आत्मानी बीक राखी एवां काम करवाने समता राखवी अने जे जीव, नय न राखे ने ए काममां वर्त्ते तेना करेला बालावबोध उपर आत्मार्थी नरोसो राखवाना नथी; अने जेने मार्गनुं ज्ञान नथी, मार्गना ज्ञानवंतनी अनुजाइए चालवुं नथी ते पोतानी मरजी प्रमाणे वर्त्तशे तेमां कांइ इलाज नथी.

प्रश्न--तमारा करेला प्रश्नोत्तर चिंतामणिमां जिनपूजामां अल्प हिंसा लखी छे, अने बीजा शास्त्रमां तो अल्प हिंसा पण नथी केहेता तेनुं कारण शुं?

उत्तर--पूर्व पुरुषो अनुबंध हिंसा नथी कहेता ते केहेवुं व्याजबी छे. पूजामां अनुबंध तो कुशलानुबंधी छे. एटले मोक्षमां जोमे एवो अनुबंध छे, माटे अनुबंध हिंसा नथी, स्वरूप हिंसा छे, ते कहेवा मात्र छे फल नथी, तेम अमारुं केहेवुं शब्द नेद छे, आशय एकज छे. अमे अल्प जे प्रते मुक्ति सुखनी प्राप्तिं थाय. एटले मोक्ष सुखने आपनारी जिन पूजा छे अल्प हिंसानुं फल थाय नहीं. अल्प शब्द अनाव वाची पण छे, तेवोज समजवो एवी रीते केहेवाथी पूर्व पुरुषोना केहेवा प्रमाणेज छे. पूर्व पुरुषथी विरुद्ध श्रद्धा अमारी नथी. कोइ ठेकाणे हमारी नूल थाय पण महंत पुरुषनी नूल थायज नहीं एज अमारी पण श्रद्धा छे. हमारी चोपमीमां ज्यां ज्यां पूर्व पुरुषथी विरुद्ध जोवामां आवे तेनी श्रद्धा करवी नहीं. ते ते ठेकाणे पूर्व पुरुषनीज श्रद्धा करवी. ते अमने पण जणाववुं के अमो अमारी नूल सुधारीए.

प्रश्न--प्रश्नोत्तर रत्न चिंतामणिमां पाने १०७ मे क्षायक सम्यक्त्व शुद्ध अशुद्ध नेद सारु तत्वार्थनी शाख आपी छे ते तत्वार्थमां छे ?

उत्तर--तत्त्वार्थमां तो सादि सपर्यवसान, सादि अपर्यवसान ए रीते बे भेद करेला छे ते पेहेला भेदना स्वामी श्रेणीकादिक छद्मस्थ कह्या छे. ने केवलज्ञानीनुं क्षायक सम्यक्त्व सादि अपर्यवसान, ए रीते बे भेद करेला छे. एज भेद नवपद प्रकरणनी टीकामां शुद्ध अशुद्ध कह्या छे ते बे शास्त्र एकठी लखी छे. शुद्ध अशुद्ध भेदना अक्षर नव पद प्रकरण टीकामां पाने ४९मे तथा समयसुंदरजी कृत प्रश्नने विषे छे, त्यांथी जोइ लेवुं.

प्रश्न--दिगंबर मत पहेलो के श्वेताम्बर मत पेहेलो?

उत्तर--दिगंबर मत विषे शास्त्रमां घणे ठेकाणे कह्युं छे. भगवंतना निर्वाण पछी छसेंने सत्तर वर्षे शिवभूति आचार्ये दिगंबर मत काढयो छे. ते वात दिगंबरी नथी मानता कारण जे तेमणे नवां शास्त्र रच्यां छे. अगियार अंग तथा बार उपांगादिक प्रगट छे, पण कहे छे के विछेद गयां छे अने पोताना मत काढनारना करेला ग्रंथो छे तेज आधारे चालेछे. एटले एमने शास्त्रथी समजावीए ते माने नहीं पण न्यायथी समजाववा जोइए. ते आत्मार्थी तो सेहेजे समजी जाय तेवुं छे. जो न्यायनी बुद्धि जागी होय तो हालमां संप्रति राजाना भरावेला हजारो जिन बिंब छे. ते संप्रति राजा भगवानना निर्वाण पछी आशरे ३०० वरसे थया छे ते प्रतिमाजीने लिंगनो आकार नथी. वली कच्छ देशमां महावीर स्वामीजीनी प्रतिमाजी भद्रेसरमां छे. त्यां त्रांबाना लेख छे ते प्रतिमाजीने २५०० वरस थयां छे, वली महुवामां जीवत स्वामीनी प्रतिमा छे, ते महावीर स्वामी विद्यमान अवसरमां भरावेला छे ए आदि दिगंबर मत नीकलता पहेलांनी जिन प्रतिमा घणे ठेकाणे छे, ते प्रतिमाजीने लिंगनो आकार नथी. तेम त्यार पछीना पण श्वेतांबर देरासर घणां छे ने घणां जिन बिंब छे, ते सर्वे लिंगना आकार विनानां छे. अने दिगंबरना देरासरमां लिंग

वालां जिनबिंब छे तो विचारो के वीर भगवानथी चालतो धर्म दिगंबरनो होत तो जुनी प्रतिमाजी लिंगवाली होत, अथवा श्वेतांबर मत नवो होत तो पण जुनां प्रतिमाजी लिंगवालां होत पण ते जणातां नथी. माटे श्वेतांबर मत भगवानना वखतथी चाल्यो आवे छे. दिगंबर प्रश्न करे छे के अमारां जिनबिंब जुनां छे. ते विषे जाणवुं जे ते जुनां छे एवो पुरावो नथी अने श्वेतांबरना जुनां प्रतिमाजीनो पुरावो छे, भद्देसरना लेख छे, संप्रति राजा क्यारे थया ते पण लेख छे, माटे पुरावो बलवान छे. आबुजी, तारंगाजी, समेतशिखरजी तथा गीरनारजी, सिद्धाचलजी ए मोटा तीर्थ उपर चैत्यो जुनां कोनां छे ? कबजो कोनो छे ? असलथीज श्वेतांबरीनो कबजो छे. फक्त श्वेतांबरी श्रावकोए कोइ कोइ ठेकाणे मेहेरबानी दाखल देरासर बांधवा दीधेलां जणाय छे, कारण के मुख्य जगोपर तो श्वेतांबरीनांज देरासर छे, अने दिगंबरीनां हमणां थोडा वखतमां थयां छे. ए जोतां श्वेतांबरी धर्म श्रीमत् महावीरस्वामीथी चालतो आव्यो तेज छे. हालमां कोइ कोइ देशमां श्वेतांबरीनी वस्ती ओछी छे, दिगंबरीनी वस्ती वधारे छे. तेवी जगोए मालकीनो पग पेसारो करे छे तेमां श्वेतांबरीए दया लावी देरासरमां आववा दीधा तथा दिगंबरी प्रतिमाजी केटलेक ठेकाणे पधराववा दीधा ते दया करी तेने बदले अपकार करी मालकीनी तकरारो केटलेक ठेकाणे करे छे पण उपकार विचारता नथी. ए दिगंबरीनी ज्ञान दशानी खामीनां फल छे. पण देरासरो तथा कबजा उपरथी श्वेतांबरी मुलथीज छे ते खातरी थाय छे. दिगंबर मतनो वाद तो अध्यात्म मत परीक्षामां बहु छे, एटले लखवानी जरुर नथी. पण केटलो

एक न्याय विचारमां आवे छे ते लावी लखुं छुं. दिगंवरीए व-
स्त्ररहित मुनिमार्ग प्रकाश्यो अने श्वेतांबरीनो सिद्धांत स्थविर
कल्पी साधु ते वस्त्र सहित होय. आ विधि चालतो आव्यो ते
चाले छे, तेथी श्वेतांवरीना हजारो साधुजी त्यागी वैरागी आ-
त्मार्थी जोवामां आवे छे, ने दिगंवरीना साधुनो लोप थयो. वली
जुज कोइ होय छे तो ते पण वस्त्र ओढे छे, तो नाम दिगंबर ध-
रावी पाछा वस्त्र पेहेरवानी जरुर पडी तो वस्त्र पहेरवां, ने दिगं-
बरी नाम धारण करवुं, ए केवी बालक जेवी वात छे. अहींआं
कोइ दिगंवरी प्रश्न करशे के सिकंदर वादशाहनी तवारीखमां छे
के जैनना नग्न साधु गाम बहार हता, तो असल वस्त्र नहीं एम
साबित थाय छे, एम कहे तेने समजाववुं के श्वेतांवर साधु वधी
वखत कपडां राखे छे, एम समजवुं नहीं. एकांतमां ध्यानादिक
करे त्यारे वस्त्ररहित होय, केमके श्वेतांबरी एकासणानुं पच्च-
क्खाण करे छे, तेमां चोलपटा आगारेण एवो आगार छे, ते
आगारनो अर्थ एवो छे के एकासणुं करवा मुनिमहाराज बेठा छे
ने एवामां गृहस्थ आवे तो उठीने चोलपटो पहेरी ले, तो एकास-
णुं भागे नहीं, आ आगार गृहस्थने नथी. आ जोतां गृहस्थनी
रुबरुमां वस्त्र सहित होय एम समजाय छे; माटे सिकंदर वाद-
शाहे दीठेला श्वेतांबर साधु जंगलमां काउस्सग्ग ध्यानमां वस्त्र
रहित जोया होय, तेथी ते कांइ दिगंवरी साधु थया नहीं, माटे
मार्ग वस्त्र सहितनो श्वेतांबर चालवाथीज, साधु, साध्वीनो
मार्ग कायम रह्यो. वली दिगंवर मतना काढनारने पण साध्वी
वस्त्र रहित रहे ते सारु लाग्युं नहीं तेथी साध्वी थवानो मारग
नष्ट थइ गयो; अने श्वेतांबर मतमां हजारो साध्वीजी थइ गयां छे,

थाय छे ने थशे. अने तेथी आत्मानुं कल्याण करशे, अने दिगंबरी स्त्रीउनुं तो आत्म कल्याण नष्ट थइ गयुं. आ दिगंबरी बाइउने फायदो कर्यो के केवल धर्मसाधन करवामांज अंतराय कर्यो. वली दिगंबरीउए स्त्रीने मुक्ति उगावी. पण पोताना गोमतसार ग्रंथमांज स्त्रीलिंगे मुक्ति जवा कहे छे, ते ग्रंथनुं अपमान करेछे अने स्त्रीउनुं मोक्ष साधन रोके छे, तो जेटलो जेटलो नवो मार्ग प्ररूप्यो छे, तेमां फायदानुं नाम नथी. तेमणे श्वेतांबरी साधुजीनी केटलीएक निंदा पोताना ग्रंथमां करी छे, तेवो मार्ग श्वेतांबरी साधुंनो छे नहीं ने तेम साधु चालता पण नथी. कोइक संजम थकी भ्रष्ट थइ वर्त्ते तेने कांइ श्वेतांबरी साधु मानता नथी, ते छतां श्वेतांबरी साधुजीनी निंदा करे छे, तेथी पोतानो आत्मा वगरे छे. साधुजीने कांइ हरकत थवानी नथी. पोताना साधुनी महत्वत्ता करे छे. पण पंच महाव्रतने दूषण लागे एवो ज व्यवहार वांध्योछे. मुनिने सावद्य प्रवृत्ति कंइ पण करवी कराववी नथी. तेम छतां दिगंबरी साधु आहार लेवा आवे तो बे जणने पडदो झाली उभा रहेवुं जोइए, आहार पण एमने खपतो करी मुकवो जोइए, एक माणस थाली वगाडनार जोइए. आ रीत बधी असंयमी संयमी सारु करे, तो असंयमी निर्वद्य काम शी रीते करशे ? सावद्यज करशे अने ते सावद्य मुनिने लागशे तो पंच महाव्रत केवी रीते पालशे ते विचार दिगंबरीने करवानो छे. श्वेतांबरी साधु असंयमी पासे कंइ पण करावे नहीं, पोताने सारु करेलुं पण वापरता नथी. गृहस्थे पोताने सारु कर्युं होय तेमांथी जुज ले छे. फरीथी गृहस्थने पोताने सारु पण करवुं न पडे एटले कोइ पण रीतनुं श्वेतांबरी मुनिने सावद्य

लागतुं नथी दिगंबरी साधु सारु तो कर्युं होय तेज काम लागे छे एटले सावद्य लागे छे तो संजम क्यां रह्युं. आ थवानुं कारण एटलुंज छे जे भगवंतनां प्ररूपेलां आगम विद्यमान छतां ते मानवां नहीं, ने पोतानी मरजीनां कल्पेलां शास्त्र मानवां ते कल्पनामां सर्वज्ञ जेवुं ज्ञान क्यांथी थाय? ए चोख्खुं समजाय छे. वली दिगंबरी गृहस्थो प्रभुनी पूजा एक अंगे करे छे, ने कहे छे जे श्वेतांबरी भगवानने आभूषण चढावे छे ते योग्य नथी; पण विचार करता नथी के पोते काचा पाणीथी पखाल करे छे ते पण गृहस्थावस्थानो आरोप करे छे, वली एक अंगे केशर वगेरे चढावे छे ते पण साधुपणानो आरोप नथी. पण जे वखते इंद्र महाराजे भगवंतने राज्याभिषेक कर्यो ते वखते युगलीआए एक अंगुठे पखाल वीगेरे कर्युं, तेवो हेतु धारता होय तो ए पण राज अवस्थानो छे. वा मेरु शिखर उपर इंद्रे अभिषेक कर्यो ते अवस्था लेता होय तो ए बंने अवस्थाए सर्व अंग केशर, चंदन, वस्त्र, आभूषण छे, तो एक अंगे पूजवानी कइ अवस्था छे ते विचारशे तो भूल जणाशे. जो केवली अवस्था कहेशो तो ते वखत तो टाढुं पाणी चढवानुं छेज नहीं, माटे ते अवस्था थपाशे नहीं. अने ते नहीं थापो त्यारे तो जन्म अवस्था अथवा राज अवस्थाविना बीजी अवस्था थपाशे नहीं. अने ते थापो त्यारे तो सर्व अंग पूजो, आभूपण घरेणां पहेरावो. वली दिगंबरना तेरा पंथीआए तो आवो तर्क आववाथी एक अंग पूजवुं मूकी दीधुं, मात्र पखालज करे छे. तो ते पण पखाल वखते कइ अवस्था विचारशे, वली नैवेद्य प्रभु आगल मुकशे त्यारे कइ अवस्था विचारशे? तेमनाथी पण बीजी अ-

वस्था थपावानी नथी. पण पोतानी नूल आत्मार्थी समजशे. आ नूल थवानुं कारण आगम नहीं मानवां तेज छे, बीजी नथी. नगवान आहार करता नथी एम माने छे अने नैवेद्य धरे छे, ते तेमने विचार करवानो छे. अमारे तो आहार करे छे एम मानवुं छे. एटले श्वेतांबरीने बधुं सीधुं छे. दिगंबरीकृत समयसार नाटकमां तो कहे छे जे ज्ञानी पुरुषनो नोग छे ते निर्जरानो हेतु छे तो नगवान उंगा ज्ञानी छे? के कर्म बंधनो हेतु थशे. एम विचार करे तो आहार करवाथी नगवानने दोष लागे छे ते कहेवुं खोटुं छे एम समजाशे. आ वातोनो वधारे विस्तार अध्यात्म मत परीक्षामां छे, तेथी अहीं वधारे लखतो नथी. त्यांथी जोइ लेवुं. आत्मार्थी जीवने श्वेतांबर दिगंबर मतनी परीक्षामां एटलुंज जोवानुं छे के आत्मानो जे स्वन्नाव छे ते प्रगट थवानुं साधन कया मार्गमां छे ते जोवुं. जे जे आत्मा निर्मल थवानां कारणो बंने मार्गमा बताव्यां छे, तेमांथी निकट कया मार्गमां छे ते जोवुं जोइए.

केटलाएक अध्यात्मी ग्रंथो दिगंबर मार्गमां छे, ते ग्रंथो वांचीने घणा जीवो संसारमां पमी जाय छे, तेनुं कारण एटलुंज छे जे जेम जशविजयजी नपाध्यायजीए अध्यात्मनां शास्त्र रच्यां छे, तेमां एक ढाल निश्चयनी, तेनी साथे एक ढाल व्यवहारनी छे, तेथी ते वांचवाथी कोइ मार्गथी नपरांग थता नथी. अने तेम दिगंबरना ग्रंथोमां नथी. तेथी दिगंबरना ग्रंथ वांची निश्चे पामता नथी अने व्यवहार पालता नथी तेथी जीवो बे मार्गथी भ्रष्ट थाय छे, एनुं कारण एटलुंज छे के आगम नहीं मानवाथी आगममां तो आ कालमां वधारे चार नयनीज व्याख्या

करवा कहेलुं छे, तेनुं कारण जे व्यवहार मार्गमां पुष्ट नथी थया ते जीवो निश्चय एकांत वांचवाथी संसारमां लीन थइ जाय छे. अने जे व्यवहार मार्गमां मजबूत थएला होय, तेने निश्चय मार्गनुं ज्ञान थवाथी व्यवहार मार्ग पालता होय, तेनो अहंकार नष्ट थइ जाय छे, के जेम प्रजुजीए आत्मतत्त्वमां रमवुं कह्युं छे तेम रमातुं नथी; माटे निज स्वज्ञावमां रमीश ते दिवस पूर्ण धर्म कर्यो गणाशे. माटे ते बाबतनी मारामां खामी छे. ते खामी मटारुवा साधन करवुं. ते साधनमां तत्वज्ञाननां शास्त्र तथा तत्त्वज्ञानना जाणकार पुरुषनी संगत करुं, आम विचारी निश्चय धर्म पामवाना उद्यमी थाय. एटले गुणनी वृद्धि थाय, पण जे एम विचारे जे ज्ञान विना क्रिया कायक्लेश छे, माटे क्रिया करवीज नहीं एम विचारीने क्रिया उपरथी विमुख थाय छे. ते शुं करे छे ? तप न करे त्यारे खाइने पुद्गलनी पुष्टता करे, विषय कषायनी वृद्धि करे, प्रतिक्रमणनी क्रिया न करे, नवराशना वखतमां उंघे वा छोकरा रमाडे, वा गप्पां मारे, आवो नकामो वखत जाय, अने एवां गप्पां मारवानी टेव पडवाथी वांचवानो अज्यास पण छुटी जाय छे, पछी संसारमां मग्न थाय छे. एवा थएला जोवामां आवे छे माटे पूर्व पुरुषोए "ज्ञानक्रियाज्यां मोक्षः" आ पाठ मुकेला छे. माटे आत्मार्थीए अध्यात्मज्ञाननो अज्यास करी संसारी विषय कषायनी क्रियाथी मुकावुं जोइए. अने जे कुशलानुबंधी अनुष्ठान छे ते आदरवुं जोइए. अने जे जे गुणस्थानमां जे जे क्रिया मुकवानी छे ते मूकवी. अने जे जे क्रिया ग्रहण करवानी छे ते ग्रहण करवी तोज गुणस्थान चडवानो वखत मले, अने आत्मविशुद्धि थाय. तेवी तेवी प्रवृत्ति थवाथी अध्यात्म ज्ञान

खरुं थयुं गणाय. नाम अध्यात्म, ठवण अध्यात्म अने ड्व्य अध्यात्म तोआनंदघनजी महाराज गंरूवा कहे डे, तेम ते अध्यात्म कार्य थशे नहीं, ज्ञाव अध्यात्मज आत्मानुं कार्य करनार डे, ते अध्यात्म दिगंवरी श्वेतांवरीनुं जूडुं नथी, पण सामान्य रीते ठीक डे, पण वस्तु धर्मना ज्ञानमां फेर न होय. फेर होय तेने जिनागममां ज्ञाव अध्यात्म कहेता नथी. प्रज्ञुए कहेला वस्तु धर्मनी यथार्थ श्रद्धा करी ध्यानादिक करे डे, तो सफल थाय डे. पण ते विपरीतपणे श्रद्धा करी ध्यान करे ते सफल थतुं नथी. अरूपी पदार्थनुं ज्ञान तथा रूपीपदार्थना वस्तु धर्मनुं ज्ञान सर्वज्ञता आव्या विना यथार्थ थतुं नथी, माटे तेनी श्रद्धा आगम अनुसारे करे तोज वने; अने ते आगम प्रमाण न करे तो यथार्थ श्रद्धा क्यांथी थाय? अने ते न थाय त्यां सुधी ज्ञाव अध्यात्म आवे नहीं, ने आत्म कार्य थाय नहीं. ते आगमनी श्रद्धा श्वेतांबर धर्ममां डे, माटे एज कल्याण करनारुं डे.

प्रश्न--तमे एम कहोडो जे आगमनी श्रद्धाएज ज्ञाव अध्यात्म आवे तो जैन आगममां पंदर भेदे सिद्ध थया छे ते केम मनाशे.

उत्तर–पंदर ज्ञेदे सिद्ध कह्या डे ते प्रमाण डे ने तेमां केटलाएक ज्ञेद तो आगम माननारना डे. फक्त अन्यलिंगे सिद्ध कह्या डे ते आगम माननार न होय पण ते जे पक्ष मानतो होय, तेमां आगमथी विरुद्ध वात होय ते वात उपर सेहेजे तेनी अश्रद्धा थाय डे. जेम कोइ माणसने वगर उद्यमे पग गरकी जाय डे ने निधान मले डे, तेम ते जीवोने सिद्धांत प्रमाणे श्रद्धा पोताना क्षयोपशमना बलथी जागे डे, तेथी जे जे तेना

आगममा जैन आगमथी विपरीत छे, ते विपरीत आवी जाय, अने जैन आगम जोया विना जैन आगममां कह्या प्रमाणे श्रद्धा थाय, तेने भाव अध्यात्म प्रगट थाय छे, तेम दिगंबरने पण थाय तेमां कांइ नवाइ जेवुं नथी. वीतरागनो धर्म कांइ केवल लिंगमां नथी पण यथार्थ नवे तत्वनुं तथा षट् द्रव्यनुं ज्ञान जेने थाय तेने भाव अध्यात्म प्रगट थाय. माटे वस्तु धर्म यथार्थ खोजवानो उद्यम करवो तेथी कार्य थशे.

प्रश्न--जैनमां रूवा कूटवानी रीती छे ते योग्य छे ?

उत्तर--जिन एटले राग द्वेषने जीते तेहने जिन कहीए तेहना सेवक ते जैनी कहेवाय छे तो जिननो उपदेश पण रागद्वेष जीतवानो छे. उपदेशना सांभलनार राग धरीने रुदन करे छाती कूटे माथां कूटे तो तेथी प्रभुनी आज्ञानुं उलंगन करवुं थाय छे. वली रुदन करवाथी अने मरनारनी फीकर करवाथी केटलाएक माणस मरण करे छे. जुवो लक्ष्मणजीनो संबंध ! लक्ष्मणजी ने रामचंद्रजी बे बन्नेना स्नेहनुं वखाण इंद्र महाराजे कर्युं ते कोइक देवताथी सहन न थयुं अने ते जोवा आव्या. मनुष्य लोकमां आवीने लक्ष्मण सांभले एम सीताजीनुं रूप धारण करी रामचंद्रजी काल करी गया एहेवुं रुदन लक्ष्मणे सांभल्युं तेवोज मनमां अत्यंत शोक प्राप्त थयो ने ते शोकनी अत्यंतताथी तरत लक्ष्मणजी मरणने पाम्या. आवी हानी वासुदेव जेवा पुरुषने थइ तो तेमना वीर्यनी अपेक्षाये आपणामां कंइ पण बलशक्ति वीर्य नथी तो आपणा शरीरने हानी केम न पहोंचे. कदापि तेमनामां भाइनो राग हतो, तेथी ओछो राग होय तो मरण न थाय, पण शक्ति तो घटेज. रोगादीक पण वखते थाय.

वखते माणस फीकरमां गांडा थाय छे बुद्धि भ्रष्ट थाय, भ्रमित थाय छे. आ म्होटुं प्रगट नुकशान छे. वली जगतमां पण आवरु नथी पामता. वली राजकर्त्ता यवन राजा छे तो पण आ रुवा कुटवानी रीतने धिक्कारे छे. आपणे जगतमां ऊंच कोम कहेवाइए, तेनी नीच कोम हांसी करे ए आपणी आवरुने केटलुं हीणु लगाडनार छे. बजार वच्चे रुवुं कुटवुं ते जोइ रस्ते चालता माणसने केटली इजा थाय छे ने हांसी करे छे. वली केटलाएक देशमां लाज काढवावालां बैरां छे, तेम छतां माथानो छेडो कमरे बांधीने कुटे छे, केड ऊपर अंग बधुं खुल्लुं रहे छे, आ केवुं हांसी कारक छे.आ रीत नीच कोम जेवी छे के नहीं ते विचारथी जुए तो समजाय. हमेश माणसने छातीनुं जोर सारुं होय तो बुद्धि सारी रहे छे ने छातीए जोरथी कुटवाथी छातीनी कमजोरी थाय छे तेथी बुद्धिनी पण हानी थाय छे, वली एथी छातीमां हार्टडिसीज रोग (इंग्रेजीमां कहे छे ते) थाय छे, ए रोग एवो छे के ए रोगवालो एकदम मरी जाय छे वली काम करवाने अशक्त थाय छे, ने तेम हालमां छातीना दरदवाला घणा माणस म्हारा जोवामां आवे छे ते माणसने तप, संयम ज्ञान अभ्यास करवानी बहु हरकत आवे छे. अमदावाद जेवा शेहेरमां घणो चाल हतो ते केटलोक फेरव्यो छे, तेटलो बीजा शहेरमां फर्यो नथी, पण म्हारा विचार प्रमाणे अने ज्ञानी पुरुषो थइ गया तेमना विचार प्रमाणे आ चाल बंध करवा योग्य छे आपणा देव वीतराग छे अने तेमनो हुकम पण वीतराग दशा लाववानो छे तो माणस मरी गयुं ते जोइने विचारवानुं छे के आ माणस बाल उमरमां मरण पाम्यो तो हुं क्यारे मरीश ते खबर नथी तथा हुं घरडो थइने मरीश ए पण निश्चे नथी तो म्हारे हवे धर्ममां उजमाल थवुं; आ-

वी म्हारी आत्मानी जे स्वभाव दशा छे ते प्रगट करवाने मुख्य कारण राग द्वेषथी रहीत थवुं ए छे तो हवे म्हारे रागादिक घटाडवा. ते घटाडवा सारु प्रभुजीए जे वैराग्यनां शास्त्र कह्यां छे तेनो अभ्यास करुं एवा शान्त पुरुषनी सोबत करुं के जेथी म्हारी रागादि दशा उछी थाय; आवा विचार करवा जोइए ते न करतां उलटो रोश वधे एवुं करवुं ते अयोग्य छे अने कहे छे के, म्हारे म्हारा भाइ साथे बहु स्नेह हतो ते याद आवे छे तेथी रडुंछुं पण ते माटे रडतो नथी. एम कहे छे ते लोकमां मान पामवा. पण चित्तमां तो पोतानो स्वार्थ जे भाइथी थतो ते बंध थयो ते सारु रडे छे, पण ते वास्ते रडे कार्य थतुं नथी पण पोताना कर्मनो विचार करवो जोइए. पोते तेनी पासे लेणुं मुक्युं हतुं ते लेइ चूक्या हवे ते क्यांथी आपे अथवा पुन्य बलवान हशे तो भाइ करतो हतो ते बीजो करनार मलशे, पण आवा रडवा कुटवाना विकल्प करवाथी उलटी बुद्धि नष्ट थइ जाय छे अने जे काम करवां छे ते थतां नथी; वली केटलाएक रडवानु ढोंगरूप पण करे छे कारण जे देखीतुं रडे छे अने भाइनो छोकरो होय तेनी वा भाइनी स्त्रिनी वा भाइनी पुंजी होय ते खाइ जाय छे अने तेहने बरोबर आपता नथी वा समुलगी खाइ जाय छे वा भाइनी स्त्री साथे वखते खोटी वर्तणुक चलावतां पण भाइनो स्नेह विचारतो नथी आवा माणसनुं रडवुं कुटवुं ते ढोंग छे. वली सगांवहालां तथा न्यातनां माणसो आवे छे तेहनुं काम ए छे के आ माणसनो भाइ मरी गयो, तो हमो जइने तेहने संतोष पमाडीए पण संतोष न पमाडतां उलटा पोते रडे छे ने पेहा रडता बंध थया होय तेने रडवानुं जारी करावे छे, वली बाइओने कुटती बखत उपदेश करे छे के आम शुं कुटो छो ? एटले जोरथी कुटो आ मतलबनो उपदेश करे छे, तेथी

कोइ समजथी थोरुं कुटतुं होय तेहने उलटुं जोरथी कुटवुं परे छे पण आ उपदेशथी शुं फल थशे ते अज्ञानपणे जाणती नथी के रूवुं कुटवुं ए रौद्र ध्याननुं आलंबन छे, एटले एथी रौद्र ध्यान थाय अने रौद्र ध्याननुं फल ज्ञानीए नरक बताव्युं छे तो नरकनां दुख केवां कह्यां छे ते जीव भावना ग्रंथ वा सुयगडांग सुत्र सांभले हृदय कांपी जाय एवां नरकनां दुःख आ उपदेशथी मले छे.कोइ समजु माणस आवा सुंदर विचार करी थोरुं रूए कुटे वा समुलगुं न रूए कुटे तेनी अज्ञानपणे निंदा करे छे आ निंदा करनारने दुर्गति सिवाय बीजां फल शी रीते मले, माटे जे नाम धरावीए छीए ते नाम पालवानी फीकर राखी जेम बने तेम निंदा तो एवा माणसनी न करवी. पण रूवा कुटवानुं बंध करनारने धन्यवाद आपवो; अने पोतानी शक्ति प्रमाणे उपदेश देइने ए चाल उठो थाय तेम करवुं ने शक्ति न होय तो जेओ सारां काम करवा इछता होय तेमनी मदद करवी ने तेमना संपमां रहेवुं ए काम बंध करवामां जेम ते सलाह आपे तेम करवुं तो तेथी कल्याण छे. वली पैसानुं जोर होय ने पैसानी लालचथी ए काम बंध थाय एवुं होय तो ते रीते बंध थाय एहवा इलाज करवा. न्यातना शेठथी थाय एवुं होय तो न्यातना जोरथी बंध करवुं. जे जे उद्यम करवाथी ए काम बंध थाय एवो प्रयास करवो जोइए. कदाचित हठीला माणस होय तो मध्यस्थ रही पोते ए कामथी मुक्त रहेवुं. वली आपणने अनुकुल माणसने समजावी तेहने ए कामथी छोडववाने जे आपणाथी बनी शके ते करवुं के जेथी आपणने आर्त्त रौद्रध्यान न थाय अने नरकादिक गतिना परोणा न थवुं परे. बधा माणसनो वाद करवानी जरुर नथी. पोते पोताने त्यां सुधारो करीए पछी धीमे धीमे बीजा पण सुधरे छे अने तेवा दाखला घणा जोयां

छे, ने कइक सुधारा थया छे माटे बुद्धिवाला पुरुषोए पोताने त्यां एवो चाल बंध करवो जोइए. ए बंध करवाथी निंदा थवानी बीक राखवी नहीं. एवी बीक राखवाथी आपणे धर्म करी शकता नथी. में म्हारी माताजी काल धर्म पाम्यां त्यारे ए रीवाज बंध करवा धार्युं त्यारे म्हारा पीताजी हयात हता अने ते पण धर्म चुस्त हता तेथी उलटा कहेवा लाग्या जे एम करवुं व्याजबी छे. आ वखत बंध थशे तो म्हारी पाछल पण बंध रहेशे तो म्हने पण लाभ मलशे एम विचारी म्हारा पीताश्रीए वीर्य फोरवी बंध कर्युं, तेथी अज्ञानी निंदा करता हता; पण सुज्ञ पुरुषो तो साबाशी आपता हता. पछी म्हारा पीताए काल कर्यो ते वखते म्हारी मातानी वखत निंदा करता हता तेटली निंदा न थइ; माटे पहेली वखत अणसमजु बोले तेना उपर समभाव राखीने आवा चाल बंध राखवा पहेल कर्या विना बनतुं नथी. सर्वे चीज उद्यमने आधिन छे अने पोताना घरना पोते राजा छे माटे पोताने त्यां एवुं रूवा कुटवानुं न करे तो कंइ न्यातवाला न्यात बहार मूकवाना नथी, माटे हिमत पकडीने ए चालने रोकवा जोइए. ए रूवा कुटवानुं काम एवुं छे के एक माणस रूतुं होय ते वात शांन्त पुरुषने सांभलवामां आववाथी एने पण राग प्राप्त थवाथी आंसु आवे छे तेनो निमीत्त भूत रूनार माणस छे माटे जेम बने तेम ए चाल सुज्ञ पुरुषोए ओछो करवो जोइए, तेने बदले एवो वहीवट थयो छे के आपणे तेने त्यां रूवा कुटवा नहीं जइये तो आपणे त्यां रूवा कुटवा कोण आवशे एटले जीवता माणसे पण रूए कुटे तेमां शोभा लेवानी ठरावी. आ ते कहेवी अज्ञानती राजधानी छे मुवा पछी पाते जोवा तो आववानो नथी अने रूशे कुटशे के नहीं तेनी

खबर नथी. पण ए बाबतनुं कर्म बांधी ले छे आ अज्ञानता छे ते आत्मार्थीए अज्ञानता टालवी. अने रूवा कुटवानी इच्छा तो न राखवी पण कुटुंबी माणसने समजाववुं जे म्हारी पाछल आ पाप करशो नहीं. एवी सखत रीते जलामण करवी के कर्म न बंधाय. पण कर्म बांधवानो जय लाग्यो एज शुज्ज प्रणामे शुज्ज कर्म उपार्जन थाय माटे एवो ठरावज करवो के म्हारी पाछल रूवा कुटवानुं करवुं नहीं एटले पाछल वालां एनो हुकम न माने तो पण मरनारने कर्म बंध थायज नहीं. आ लखवाथी एम न समजवुं के मरण थाय त्यां जवुंज नहीं. जवुं तो जोइए कारण के स्नेही वा न्यातना माणसने दुःख पड्युं तो जरुर जइने संतोष पमाडवो ते दीलगीरीमां छे तो तेमनुं कामकाज करी आपवुं. तेम जो न करीए तो निर्दयता थाय, माटे जवुं, संतोष पामे एवी वात करवी, के तेनुं चित्त शान्त रहे. वली मरनारनी देहने ठेकाणे पोंचाडवामां मदद करवी; ए करवुं जरुरी काम छे. ए करवामां एवी फीकर रहे जे म्हारी देहने ठेकाणे नहीं पाडनार मले ने तेमां जीवनी उतपत्ति थशे वा तेथी कोइ प्रकारनुं काम थशे, तेथी कर्म बंध थशे ते पण फीकर राखे, तेथी पण कर्म बंधनो जय रह्यो तेमां हरकत नथी; अने जे पुरुष संथारो करी वोसराववानीज जावना करे छे तेने ए विचार थतो नथी. फक्त स्नेहीने मदद करवी अने शबमां वधारे वखत लागवाथी जीवनी उत्पत्ति थशे ते फीकरथीज जरुर जवुं, कामकाज करवुं, रूवा कुटवानो विकल्प बंध कराववो वा ढंगे कराववो ए जरुरी छे. वली केटलाएक देशमां हालमां पण हिंदुलोकमां पण मरण वखते रूता कुटता नथी. उलटा ढोल वगारे छे, तो शुं ते लोकने मरनार उपर राग नहीं होय? रागथी आंखमां आंसु आवे ए स्वाजावीक नियम छे तेम बने, पण ते थोडा वखतमां वि-

कल्प शांत थइ जाय. पण तेनी वर्तणुक याद लावी रहे ते-नो पार न आवे अने मांठुं ध्यान पण विशेष थाय वली स्त्रियो धणीनुं सुख याद करी रहेवाथी काम पण दीप्त थाय; तो पछी कुलक्षण सेववानी बुद्धि थाय. आवा नुकशान कारक चाल सु-धारवा ए म्होटा पुरुषनी फरज छे. ए नित्य एवुं रहेवानुं जारी रहे-वाथी धणीने स्त्री संबंधी विकार जागवानुं साधन थाय छे, माटे ए बदले एटलो वखत धर्म साधनमां काढवो एवुंज मुकरर कर्युं होय तो वैराग्य दशा जागे, विकल्पनी शान्ति थाय, खोटा मार्गनी बुद्धि थाय नहीं ने होय तो ते खोटी बुद्धि नष्ट थाय माटे एवा अवसरमां वैराग्यनी कथा विगेरे सांभलवामां वखत कांढवो, आ बाबत ज-रुरनी छे. पण जैनमां हालमां वर्त्ते छे एवी रीति होय एम संभ-वतुं नथी. त्यारे अहीं कोइ प्रश्न करशे जे, जे वखत मरुदेवी माताजी निर्वाण पाम्यां त्यारे भरत महाराजे पोक मुकी ते वात शास्त्रमां छे ए कंइ धर्म रीत नथी, संसार रीत छे के एवी पोक मुकवाथी लोकना जाणवामां आवे तेथी सर्वे लोक एकठा थइ जाय. ए तो मरण वखतनी एक क्रिया छे, पण आवुं बजार वच्चे कुटवुं, रोज छेहा वालीने बेसवुं, ते कंइ साबीत थतुं नथी. ते वखते रागना बंधनथी रुदन थइ जाय, लोकने जणाववा पो-क मुके ए कृत्य संसार नीतिनुं छे पण त्यार बाद जे वधारे कृत्य थाय छे ते धर्मीष्टने करवा योग्य नथी. धर्मीष्टने तो जे रागा-दिक घटे एम करवुं एज सार छे.

प्रश्न.—जैन कोमनी चडती दशा केम थाय?

उत्तर.— आ प्रश्ननो जवाब तो अतिशे ज्ञानी विना बी-जो कोइ देवा समर्थ नथी अने ते आपणा भाग्यनी कसरथी अतिशे ज्ञानीनो विरह पड्यो छे एटले खातरी पूर्वक जवाब देवा अशक्त छुं. वली हुं जवाब लखुं छुं ते करतां पण म्हाराथी

वधारे बुद्धिवान वधारे बतावी शके, माटे जेनुं विशेष होय ते अंगीकार करवुं,

१ प्रथम तो अन्यायनी प्रवृत्ति जैनमां जे धनाढ्यपणे दीपता पुरुषो तथा शेठीआ नाम धरावता होय वा धर्मीमां नाम लखावता होय एवा पुरुषोए बंध करवी जोइए, कारण के यथा राजा तथा प्रजा तेम म्होटा पुरुषोनी एवी सुंदर प्रवृत्ति जोइने नाहाना पण न्यायमां प्रवर्ते एम वर्त्तवा सारु मार्गानुसारीना गुण योगशास्त्रमां तथा धर्मबिंदुमां तथा श्राद्धगुणवर्णवमां बताव्या छे ते उपरथी म्हारी चोपडी प्रश्नोत्तर रत्न चिंतामणी नामनी छे, तेमां जोशो तो जणाशे. ए गुणमां जैन कोम वर्त्ते एवा उपदेश मुनि महाराजोए पण देवाना जारी राखवा जोइए तथा जेम रात्री भोजन विगेरेना नियम कराववामां उद्यम करे छे तेम आ उपदेशना उद्यममां वर्त्ते तो वधारे लाभ थाय एवो उपदेश नथी देता एम म्हारुं कहेवुं नथी, पण देनार महा पुरुषोनो उत्साह वधारवा लख्युं छे अने कोइ सामान्यपणे देता होय ते विस्तारे उपदेश दे ते सारु लखवुं छे. ग्रहस्थोए एवी प्रवृत्ति रोकीने पोताना स्नेहीने अन्याय त्याग करे एवी भलामण कर्याज करवी जोइए. कदाच भलामण कोइ धारण करतुं नथी तेथी पण उदास थइ ए उपदेश बंध करवो नहीं. हमेश जारी राखवाथी कंइ कंइ सुधारो थाय. अन्यायनुं धन स्थिर रहेतुं नथी एवुं श्राद्धविधि विगेरे शास्त्रमां घणे ठेकाणे कह्युं छे माटे न्यायनी प्रवृत्ति धन मले ते स्थिर रहे. वली जैन कोमनो बीजी कोममां घणो विश्वास पडे तेथी वेपार करवा पैसा जोइए ते पण सुखे मले; वली नोकरी करवा जाय तो झट नोकरी सारा पगारनी मले. दलाली करवा जाय तो ते धंधामां पण पेदाश करे. हरकोइ माल वेचवानी दुकान मांडे, घणां घ-

शाक तेनी दुकाने आवे ए बाबतमां सुरतमां कल्याणभाइ क-
रीने उत्तम श्रावक हता तेमनी शाख एवी पमी हती जे टो-
पीउना वेपारमां रुपिआ बे त्रण हजार दर वरसे पेंदा करता
हता. वळी पिता पासे पुजी नोहोती ते उतां पोते आशरे चा-
लीश हजारनी पुंजी मेळवी हती. ते त्रण भाइउ तथा पिताए
वहेंची लीधी. त्यार बाद पोते वेपार करवानो बंध कर्यो तो पछी
भाइउ दुकान चलावी न शक्या. अने पेदाश नहीं थवाथी दु-
कान बंध करवानो वखत आव्यो. भरुचमां एक पारसीनी दुका-
न छे ते एकज रीतनो भाव राखे छे तेमां तेने त्यां घणो वकरो
थाय छे. मुंबाइमां उफीसोवाला म्होटा वेपारी एक रीत राखे छे
तो तेमां सुखी थयेला जोइए छीए, माटे वेपारमां अन्याय जो
बंध करे तो म्होटी साख पमी जाय अने पुन्यानुसारे सारी पें-
दाश थाय. गया कालमां सत्यवादी श्रावको थइ गया छे ते ए-
टली बधी छाप मारी गया छे के श्रावक गेर व्याजबी रीते
चाले नहीं, तेथी हालमां श्रावक बुरु काम लुच्चाइ करे छे एटला
अर्थमां श्रावक लुच्चाइ न करे आ छाप चाली आवे छे, तेना ब-
दलामां हमणांना समयमां धर्मी नाम धरावीने पण केटलाक
ठगाइ करता जोवामां आववाथी बीजा धर्मी श्रावकने त्यां कोइ
भलामण करे छे तो धनवान ग्रहस्थो तेनो विश्वास नथी करता
अने धर्म ठगनी उपमा आपे छे. ते में पण सांभली छे आ थवा-
मां धनवाननी भूल नथी पण धर्मी थइने ठगाइनो धंधो करे त्यारे
लोकमां सर्व धर्मीनी निंदा थाय अने वेपार रोजगारमां विश्वास
उठवाथी पेंदाश थाय नहीं अने सुखी थवानो वखत मळे नहीं
माटे जेम बने तेम श्रावकोए छाप सारी पामवी जोइए. केटला
एक वेपारी वेपार करे छे तेमां नुकशान लागे छे त्यारे देवामांथी
छूटवा सारु सरकार पासे लाय ले छे एटले कायदानो फायदो लइने

मुक्त थाय छे तेमां पैसा छुपावी राखे छे. ए अन्याय छे के शुं छे वळी कदापि कोइए न राख्या अने पाछा पैसा पैदा कर्या ने लाखो मळ्या पण पेहेलाना देवामां जुज रकम देवी होय तो देवां वाळाने आपे नहीं तो जगतमां जैन कोमने सुंदर छाप शी रीते पडे ते विचारवुं जोइए; अने एवा पैसा राखी शासननी परभावना करे संघ जमाडे तेमां अन्यायना पैसा आवे तो जमनारनी बुद्धि केवी रीते सुधरे. साधारण माणस दाखलो ले के देवा वाळा ते आवा धनवान थाय छे, शासनना थांभला जेवा केहेवाय छे, ते आपता नथी तो आपणे शी रीते आपीए? एवा विचार फेलावाथी लोकना मनमां एवुं आव्युं जे पैसा हशे तो मान पामीशुं. देवा वाळाने बधा पैसा आपी दइशुं तो मान नहीं पामीये. आ बुद्धि फेलाइ गइ छे तेथी सर्व कोइने देन थाय ते आपवानी बुद्धि थाय नहीं. आ बाबतमां संघनो अंकोश एवो जोइए वा नाती वाळानो के जे देवादार थाय तो तमाम पैसा देवा वाळाने अपाववा जोइए अने पछी तेने म्होटा वरा संघ जमाडवानां खरच करवां देवां जोइए एवी चीज करवा तैयार थयो के न्याते भलामण करवी तें ला लीधी छे ते वखत छंग पैसा आप्या छे, ने बाकीनुं देवुं छे ते पेटे न्यातना तथा संघना खरच जेटला पैसा आपी दो अने ते देवुं पुरु थया पछी तमारी मरजी प्रमाणे खरचो. आवी अंकुश न्यात राखी शके तो जैननी बहु मानता थवामां बाकी रहे नहीं अने एवी छापथी श्रावकोने धीरतां कोइ आंचको खाय नहीं. सर्वेथी शिरोमणि कोम थइ जाय पण हालमां तो श्रावको प्रथम देव द्रव्यनाज पैसा खाइ जनार उपर एवी अंकुश राखी शकती नथी अने तेथी लोको दुखी थया विना रहेता नथी. केटलाएक गाममां एवी पण रीत छे के देवद्रव्यनुं देवुं होय त्यां सुधी श्रावक तेहने त्यां न्यात जमवा जता

नथी तेथी तेवा स्थलोए देवद्रव्यना लेहेणानो निकाल आवी जाय छे पण एवो रीवाज सरवे देवा आशरी सर्वे सेहेरमां तथा सर्वे गाममां थाय तो जैन कोम सुखी थवानुं साधन छे वली कोइ माणसे देवालुं काढ्युं नथी पोतानी रीतमां छे पण पैसा नथी ते माणस देवुं करी न्यात विगेरे जमाडे छे तेनी न्यात जमवी नहीं. वली ठगाइ लुच्चाइनो वेपारज करे छे तो तेनी पण न्यात तरफथी शिक्षा करवी. आ रीत थाय तो न्यात सुखी थाय अ-थवा आ लोकमां वेपार रोजगार सारो चाले अने जगतमां बहु मानता थाय अने सुखी थाय अने तेना पुण्यथी परलोकमां पण सुखी थाय. विद्याभ्यास करी हुंशियार थइ वर्त्तणुक अन्यायनी सुधारे नहीं तो तेथी पण कोमनुं बहुमान थवानुं नथी. बहुमान थवानुं कारण अन्याय छोडवो एज छे. ते म्होटा पुरुषे करी ब-तावषो जोइए तथा देव द्रव्य साधारण द्रव्य ज्ञान द्रव्य एवां द्रव्य श्रावकने त्यां वधारे व्याज उपजतुं होय तो पण धीरवुं नहीं, ए बाबत श्राद्धविधी तथा द्रव्य शीत्तेरी विगेरे शास्त्रमां मना करी छे अने तेमां घुबण विस्तारे बताव्यो छे ते जोवुं जोइए. देवादिक द्रव्य जेणे खाधुं तेनी सात पेढी सुधी तेनो वंश सुखी थतो न-थी माटे धीरवानो पायोज बंध करवो जोइए अने राखनारे व्याजे तो न लेवुं पण घीनी टीपना देवा पैसा पण राखवा नहीं, अने राखवाथी घणुंज नुकशान शास्त्रमां बताव्युं छे, माटे ए वातनो खूब लक्ष राखवाथी सुखी थवानुं साधन छे, देरासर सं-बंधीना पैसामां कांइ पण पोताना पैसानो भेल करवो नहीं तेथी आ लोकने परलोकना सुखना भाजन थशे.

२ बीजुं जैन कोमना शेठीआओए सट्टानो वेपार करवा दे-वो न जोइए. सट्टाना वेपारथी माणसने घणां प्रकारनां नुकशान थाय छे एकतो प्रथम आलसु थाय छे कांइ पण वेपार ढुंढवानी

शीखवानी बुद्धि नष्ट थाय छे. वेपारनी रीतनो खबर पमती नथी नामानी रीत पण शीखी शकतो नथी, ए सट्टाना धंधावालाने बीजा वेपारनी वाकेफगारी थती नथी. तेथी कदापि सट्टाना धंधामां नुकशान गयुं, तो पछी सुखी थवाना वखतनी मुश्केली छे. वली ए धंधाथी माणस वांकु बोलवुं, लुच्चाइ करवी, एवी अनेक रीतो खोटी शीखे छे, कोइक भाग्यशाली न शीखे तेने ए ठपको नथी; पण ए निमित्त एवुं छे. एं वेपारवालाने पोतानी पासे रु. ५००) आपवानी शक्ति होय अने पांच हजार खोट जाय एवो वेपार करे त्यारे हवे नुकशानी क्यांथी आपीशुं. ए फीकर रही नही. ने खोट जाय तो देवालुं काढवुंज पमे, अने पाछो फरी पेदा करे तो ते आपवानी दानत रहेती नथी तो ए अन्याय छे के शुं छे? ए वेपार लांबो केम करी शके छे के वेपारमां पैसा रोकवा पमता नथी. जो रोकवा पमे तो लांबो वेपार सहेजे थाय नही. वली जुगार अने आ नामफेर छे. जुगारमां पण पैसा जोइता नथी फक्त एकी वा बेकी बेमांथी एक बोलवामां आवे ते साचुं पमे तो जीते छे तेम आंकना धंधामां पण एज रीत छे. कलकत्तेथी मलतो आंक आवे ते जीते छे ने नफो ले छे तो बे रीत एक छे. हालमां सुरतमां बाइडं पण ए वेपार करवा लागी छे. आ स्थितीने आपणी श्रावक कोम पोहोंची छे. हवे सुखी शी रीते थाय? सट्टामां एक पेदा करे अने एक खुए त्यारे एक श्रावक सुखी थयो अने एक डुखी थयो, तेमां कांइ बहारथी पैसो आव्यो नही अने बीजा वेपारमां तो माल देशावर चमावे वा मंगावे तेमां फायदो थाय छे. या कोइ कहेशे श्रावक सिवाय बीजी कोम शुं सट्टानो धंधो नथी करता ते विषे जाणवुं जे बधी कोम करे छे पण घणुं करी श्रावकनी वस्तिना प्रमाणमां श्रावक घणा सट्टाना धंधा करनार निकले छे. म्होटा शहेरोमां दलालो अने सट्टाना धंधा करनार वधारे

देखाय छे तेमां दलालीना धंधाने हमो वखोडता नथी, कारण के ए वेपार वगर जोखमनो छे, नुकशाननुं नाम नथी ए पेदा करवानो ज धंधो छे पण जे सट्टाना दलालो छे ते दलाली उपर संतोष करीने रहे तो जरुर दलालीमां सारु पेदा करे पण ते दलालो पाछा सट्टानो धंधो करी दलालीमां पेदा करेलुं सट्टामां वहोलताए आपे छे एटले दलालोने पण सुखी थवानो वखत मलतो नथी वली जेना बाप सट्टाना धंधा करता होय तेना छोकरा पण एज वेपारमां पडे छे. तेमनी वधारे भणवा गणवानी बुद्धि पण जागती नथी तेम मा बापने पण भणाववानी कालजी रहेती नथी माटे सट्टानो वेपार जैन कोमने करवो नही एवो न्याती वा संघ तरफथी बंदोबस्त थाय तो जैन कोमने बीजा वेपार करवानी खोजना थाय. माता पिताने अने छोकरांने भणावानी बुद्धि थाय तेथी छोकरां विद्वान थाय तो न्याय अन्याय सहेजे समजे अने अन्याय सहेजे त्याग करे, माटे हरेक प्रकारे सट्टाना धंधा छूटे एवा भाषणो तथा मुनी महाराजनो उपदेश जारी करी माणसोना मनमां ठसावी पछी न्यातीनो बंदोबस्त थाय तो सारी रीते सुधरवानुं स्थानक छे.

३ त्रीजुं के जैन कोममां विद्याभ्यासनी घणी खामी छे माटे जैनने विद्याभ्यासमां जोडवा जोइए. ते जोडवानुं काम नाणानुं छे नाणां विना बनतुं नथी हवे नाणां भेगां करवामां एवुं थवुं जोइए के जे नाणुं खर्चाय छे तेमांथी बचावीने नाणां कढाववां जोइए, के कोम खरचना बोजामां आवे नही ते सारु मन एम थाय छे के लगन सिमंत अने मर्ण पाछळ हजारो रुपिआ खर्चाय छे. केटलीक न्यातमां केटला एक शहेरमां लगनमां एक एक छोकरो परणे छे त्यारे पैशा वहेंचवानो सो सो दोढसो दोढसो रुपीआ खरच थाय छे ते बुम काढी नांखो ते ख-

रचना पैशा विद्याभ्यासना फंडमां लेवा. जे न्यातमां लग्नने सिमंतनी एक न्यात करतां वधारे न्यातो जमाडवानो चाल छे ते न्यातमां एक न्यात करतां वधारे न्यात जमाडवानो रीवाज बंध करी तेना बचावना पैशा आ फंडमां लेवा. तेनो एवो अंकुश जोइए के ज्या सुधी ठरावेला पैसा फंडमां नहीं आपे त्यां सुधी हस्तमेलाप विगेरे थाय नही. आ ठराव पसार थाय तो केटलीएक उपज दर वरसनी थाय. वली मर्ण पाछळ केटलीएक ज्ञातीमां न्यातो जमाडवानो रीवाज छे ए रीवाज बहुज दीलगीरी भरेलो छे. घणुं करी अन्य दर्शनीनी रीत जैनमा दाखल थएली जणाय छे ए जमण केटलुं निर्दय छे ते थोडुं जणावुंछुं. केटलाएक देशमां जे दिवस न्यात होय तेज दिवशे परदेशना माणसो रडवा आवे ते घणुं करीने जे वखत न्यात जमवा बेसे तेज वखत रडवा कुटवानुं काम चाले छे. हवे जे माणसने त्यां मृत्यु थयुं होय ते माणस केटली दीलगीरीमां होय ते तो सर्व कोइने अनुभव छे. हवे एवी दीलगीरीवालाने त्यां जमवा जवानुं मन वज्र जेवी छातीवालाने थाय, पण दयालु माणसनुं मन शी रीते थाय? अने थाय तो निर्दयता साबीत थाय छे. वली एक बाजु उपर रडता कुटता होय ने कुटवाथी छातीमांथी लोहीधारा निकळती होय अने ते वखत जमवा बेसनार सुखे प्रसन्नताये खाय ए केवी निर्दयता छे. वळी केटलाएक बुढ्ढा माणस मरवा पडया होय ने मर्ण जेवी स्थितीमां होय तेने जोइने आवीने लोकने बोलतां सांभळ्या छे के हवे लाडवा सही थाय एवुं छे. पछी ते माणस मर्ण पामेछे, त्यारे खुश थाय छे के हवे लाडवा मलशे. ए जे लाडवा बदल खुश थाय छे तेमां गरभित पंचेंद्रीना मर्णनी अनुमोदना थाय छे, आ पाप केटलुं छे. ते ज्ञानी कहे ते खरु. पण खावानी तृष्णाने लीधे माणस

विचारता नथी अने ए चाल चलाव्या जाय छे, माटे ए चाल बंध थाय तो पैसा बचे अने वली वहाली अनुमोदनानुं पाप टले माटे ए रीवाज बंध करीने तेना बचता पैसा आ फंडमां लेवा. वळी मर्ण पाछळ शुभ मार्गे हजारो रुपीआ काढे छे तेमांथी कंइक भाग आ खातामां लेवानो राखवो जोइए, तथा म्होटा गृहस्थोए खुशीथी म्होटी रकमनी मदद करवी जोइए आम थवाथी खर्चातां नाणां आ फंडमां आवशे एटले वधारे बोजो आवशे नहीं अने ए सारु विद्याभ्यासना काममां आ फंडमांथी मदद थशे. कदापि एटले नाणे बस न थाय तो पैदाश उपर सेंकडे एक एक रुपिओ अथवा अरधो रुपित ठरावंवो जोइए एक हजार रुपिआ सुधीना पैदा करनार उपर सेंकडे रु ०॥ लेवो जोइए अने तेनी उपरनी पैदाशवाळानो सेंकडे रु १) ठरावंवो जोइए. म्होटी पैदाशवाळाने कंइ भारे पडे एम नथी कारण के शास्त्रमां तो हेमचंद्र आचार्य पैदाशमांथी चोथो भाग शुभ मार्गे वापरवा कहे छे तो आतो एक रुपित कंइ भारे पडवानो नथी आ सिवाय न्यातोमां केटलाएक दंडो लेवानो चाल छे ते दंडना पैसा आ फंडमां लेवा जोइए. आम थवाथी पैसानी उत्पत्ति सारी थवानो संभव छे अने हंमेश तेमांथी जे जे कामो करवां हशे ते थयां करशे. हालमां दरेक न्यातमां न्यातनी पूंजीउ छे ते पूंजीयो आ फंडमां जो आवे तो कामनी शरुआत सहेजे थाय अने कोइने पैसा घरमांथी काढवा पडे नहीं. अने हंमेशनी आवक शरु थाय. पैदाशमां लेवानुं अनुकुळ ना आवे तो घणी जातना मालना वेपार छे ते दरेक जातना माल उपर कंइ लेवानो ठराव करवो एवो ठराव पांजरापोळ सारु छे तो ते सुखे ते कारखानुं चाले छे पण वस्तुपणे पैदाशनो ठराव वधारे उत्तम छे. वेपार उपर नांखवाथी वेपारमां केटलीएक हरकतो

पडे माटे पेदाशपर थाय त्यां सुधी वेपार उपर टेक्ष करवो नहीं पण जेम माणसो समजे तेम करवुं, केमके बधा माणसना विचार मळवा मुश्केल पडे छे अने आवां काम माणसने प्रसन्न करीने करवानां छे; जेम कोइने अप्रीती न थाय तेम करवानुं छे. आ काम करवाथी जेम पोतानी जातिना माणसने जमवानुं मळे छे ते पोताना छोकरा हुशीआर थशे तो वधारे जमवानुं मळशे, जमवानुं जवानुं नथी. वळी कर नहीं आपे तो छोकरा जणाववा निशाळमां वधारे कर आपवो पडशे ते पण बचशे, माटे सर्वे जाइनए मनमां आ वात विचारवी जोइए अने पैसानुं फंड प्राप्त करवुं. पैसा विना कंइ काम बने एवुं नथी.

४. ए पैसाना खरच करवामां प्रथम निशाळो गुजराती इंग्रेजी संस्कृत अने जैनधर्मनुंए जणे एवी निशाळो जोइए. आ निशाळमां पण अन्यायमांथी मन खसे एवुं शिक्षण आपवुं जोइए. संस्कृत जणनार माणसने घणां वर्ष अभ्यास करवो पडे छे त्यां सुधी एमना कुटुंबनुं पोषण थाय एवा बंदोबस्तनी जरुर छे, ते विना हालमां संस्कृतशाळामां अभ्यास छोकरा करे छे पण ते छोकरा पुरुं संस्कृत ज्ञान मेळवी शकता नथी, अधुरुं मूकी चाल्या जाय छे; तेनुं कारण एटलुंज छे के धनवानना छोकरा तो प्राये अभ्यास करता नथी अने ते करनार विरलाज निकळशे. साधारण स्थितीना छोकरा पचीश त्रीश वर्षनी उमर सुधी अभ्यास करे त्यारे संस्कृत ज्ञान पुरुं करी शके तो एटली उमर सुधी एना कुटुंबनो निर्वाह केम थाय? वळी धननी तृष्णा धनवानने लाखो मळे तो पण शमती नथी तो साधारण माणसने तृष्णा केम शमे माटे पंदर वरशनी उमर थाय त्यारथी कुटुंबना निर्वाहनी फीकर थाय, ते फीकर न थाय एवो बंदोबस्त जणावनार तरफथी थयो होय तो सुखे अभ्यास पुरण

करे ए सारु प्रथम व्याकरणनो अभ्यास करे तेनो रु ५) महिनो आपवानो जारी करवो पछी जेम जेम अभ्यास वधे तेम तेम परीक्षा लेइने पगार वधारवो छेवट न्यायशास्त्र पुरण करतां सुधी अभ्यास करे त्यारे रु ५०) नो महिनो आपवो. एवी आशा होय तो संस्कृतनो अभ्यास पुरण करनार उमेदवार छो करा नीकलशे माटे एवा नियमो बांधवाथी जैनमां संस्कृत भणेला विद्वान थशे. वली ब्राह्मणो पासे साधुजीने भणवुं पडे छे ते भणवुं पडशे नहीं. तेज भाइने संघ पगार आपी राखी लेशे तो श्रावकना पैशा बीजी कोम दर वरशे एवा पगारना आशरे बधा मलीने शास्त्रिन पचीश हजार रुपैआ खाता हशे ते जैन कोम खाशे माटे आ फंड थाय तो तेमांथी आ करवानी जरुर छे. कोइ सुखी माणस हशे ते पोताना आत्महित बदले भणशे तो ते पगार नहीं पण ले पण आ शालामां मोटामां मोटी रु ५०) ना महिनानी आशा आपवानी जरुर छे. पचाश नो महिनो आ फंडमांथी तो एक वरशथी वधारे वखत आपवो नहीं पडे, पण ते छोकराने पचासना आपनार घणा मलशे. वली संस्कृतनां भाषान्तर विगेरेमां वा बीजी शाळामां एवी पेदाश थइ शकशे जैननी विद्वत्ता वखणाशे जे तेनी साथे वाद करवा कोइ शक्तिवान थशे. एथी म्होटी प्रभावना थशे. तेमज जैन धर्मना ज्ञाननो अभ्यास तो हालमां सुरतने अमदावादमां जेम एक कलाक करावे छे तेम करवानुं जारी रहेशे तोए बस छे.

जे माणसो बीन रोजगारी छे ने दुखी छे तेने सारु दरेक म्होटा शेहरमां उद्योगशाळा करवानी जरुर छे ते शाळामां तेमने दाखल करवाने तेने काम करवानुं सोंपवुं. जे जे काम जेनाथी बनी शके तेवुं काम सोपवुं के जैन कोम भूखे न मरे ए शाळामां कंइक माल वेचतां नुकशान थाय ते आ फंडमांथी

आपवुं. घणी जातना वेपार हाथे करी करवाना छे ने जे आवडी शके एवां काम उद्योगशालामां राखवां, जेथी सहेजे ते काम करे माटे नमुना दाखल बताव्युं छे. जे चीज जैनोमां हजारो मण खपे छे ते बनाववानुं काम बैरां सहेलाइथी शीखी शके. दशीयो वणवानुं काम ते पण बनावी शके. वालाकुंचीयो बांधवानुं पण बनावी शके एवुं छे. नबली स्थितीनी बाइओने योग्य काम दाल विणवा विगरेनुं सोंपवुं ने भाइओने बीडीयो वालवानुं, सुतरना दडा करवानुं, दोरडां वणवानुं ने गुंथवानुं काम, केटलाक सुका पदार्थनी गोलीयो दवा सारु बनावी वेचवानुं काम, आवां काम सोंपवां. मीलो विगेरेमां काम करी शके एवा ने ते धंधामां जोडवा. केवल अशक्य माणसने छुपी मदत पैसानी आपवी. आम थवाथी जैन कोम निराधार वधारे रहेशे नहीं. आ उद्योग तो एक नाममात्र लख्या छे. जगतमां घणी तरेहना वेपार छे, तेमांना बनी शके तेमां नुकशान थोडुं ने नफो घणो एवा जोइने दाखल करवा. बनावेल वस्तु वेचवानुं काम पण तेने सोंपवुं के गाममां फरीने ते वेचे.

५ जैन कोमनी लडाइओ सरकारमां जाय छे वा न्यातमां तड पडे छे अने तेथी एक बीजामां द्वेष बुद्धि बहु रहे छे, एक संप रहेतो नथी अने ते एक बीजा वच्चे घणा वरस सुधी पोहोंचे छे, अने ते बदल दरेक बाबतमां तकरारो पडे छे अने सरकारमां हजारो रुपैआ जैन कोमना बगडे छे. मन जुदां थवाथी एक बीजानुं बगाडवाना उद्यम थाय छे ए सारु एवो बंदोबस्त थवो जोइए के जैननी दरेक गाममां लवाद कोरट ठराववी अने जे तकरार होय ते लवाद कोरटमांज मूके एवो न्यात तरफथी ठराव थवो जोइए पण तेमां एटलुं राखवुं के ते गामना लवादना फेंसलाथी नाराज थाय तो तेथी म्होटा शहेरोमां लवाद कोरटमां अपील करे. अमदावाद ने मुंबाइ जेवा शहेरमां त्रण त्रण कोरट करवी १. नंबर.

१ नंबर. २ नंबरनी एक एकथी चमती एटले सौथी मोटी पहेला नंबरनी के त्रीजा कलासना फेंसलाथी नाराज थाय तो बीजा नंबरनी कोरटमां पछी पहेला कलासना लवाद आगल अपील करे के जेथी कोइने पक्षपातनो वहेम रहे नहीं, ने हरेक कजीआ टुंकामां पती जाय. मारा मारी विगेरेना तोफान करनारने योग्य शिक्षा पण करवी के कोरटमां सीपाइ विगेरेनो खरच निकले. आ ठराव थवाथी घणा कजीआ ओछा थशे ने नातोमां कुसंप चालशे नहीं. न्यातना रीवाजना कायदा न्यातमां अनुकूल होय ते बांधी राखवा तेमां वहु मते सुधारा एक बे वरसे कर्या करवा पण ते हंमेश चाले एम करवुं. आम थाय तो बहु फायदो थाय वारसानी म्होटी रकमनी तकरारना पण निकाल आवी जाय. लाख रुपिआ उपरना फेंसला सारु एक म्होटी दस वीस माणसनी सभा करवी जेमां बधा देशना म्होटा गृहस्थो--लवाद निमावा जोइए ने बेस्त्रा फेंसला तेउने करवाने सोंपवा, के अपक्षपात इन्साफ मले, जेथी जैन कोमनी एवी तकरारोमां पूंजीउनो नाश थाय छे ते थतां अटके.

६ वीसा श्रीमालीनी न्यात घणा गाममां छे ते छतां ते लोक एक बीजाने ऊंचा निचा गणे छे ते गणवा न जोइए. वस्तुपणे तो तमाम श्रावकोमां भेद न होवो जोइए पण ते भेद भांगवानो हालमां समय जणातो नथी. तेम छतां तेम थाय तो वधारे सारुं ने तेम न थाय तो पोतानी न्यातनो माणस कोइ पण शहेरमां होय तेने कन्या आपवा लेवानो भेद होवो न जोइए, ने कन्या आपी पैसा ले छे ते पण लेवा न जोइए. एना बंदोबस्तनी पण जरुर छे. तेमां ते गामवालानो घणो भाग सरखो होय त्यां न्यातनुं जोर चालतुं नथी, माटे तेने अटकाववानो रस्तो बीजा शहेरवालाए करवो जोइए. घणुं करीने म्होटा शहेरवाला पैसा आपे छे ते आपनारना उपर पण अंकुश रहे तो

ते सहेजे बंध थइ जाय. तेथी अयोग्य स्थानमां कन्याओ जइने दुःख पामे नहीं माटे पैसा आपनार लेनार बेने मना करी होय तो ए काम सुधरे. श्रीमाली, पोरवाड, उसवाल विगेरे जे जे न्यात जे जे देशावार होय ते सर्वेनी साथे आप लेनो वहीवट करवामां अटकाव छे ते काढी नांखवो जोइए, अने वली उसवाल श्रीमाली पोरवाड विगेरे दसा विसानो भेद छे ते निकली जाय तो वधारे सारुं. एमांथी जेम बहु मते सवड थाय तेम करवा जेवुं छे. वली जैन धर्मना पालनार केटलीएक न्यातना छे ते आपणा धर्मी भाइओ छे तेमनी साथे एकठा जमवानो रिवाज नथी ते पण खराब छे, कारण के अन्य धर्मी ब्राह्मण वाणीयानुं खाइए छीए ते खावामां बाध छे केमके ते लोक आपणे जेने अभक्ष कहीए छीये ते वस्तु खाय छे, माटे तेमनुं खावुं न जोइए; ते खावानी प्रवृत्ति छे ते रोकवाथी श्रावकना व्रतमां दुषण नहीं लागे एटलो फायदो छे अने जे जैनी भाइओ गाळेला पाणीना पीनार अभक्षना पण त्याग करनार एवा जैनीओनुं न खावुं तेथी प्रभुनी आज्ञा न लोपाय एम समजातुं नथी, कारण जे स्वामी भाइनां तो बहुमान करवां ए समकीतनो आचार छे तेना बदलामां तेमने निचा कहेवा तेथी समकीत केम मलीन नहीं थाय? आ जगो उपर मने कोइ सवाल करशे के तमे केम जाणया छतां ते प्रमाणे चालता नथी? ते विषे म्हारो जवाब ए छे के घणा लोक तेम प्रवृत्ति करता नथी ते प्रवृत्ति हुं करुं तो ते घणा माणस साथे विरोध थाय माटे ते विरोध पोतानी जातीना साथे न थाय तेम हुं वर्त्तुं छुं पण म्हारी श्रद्धा तो बीजी कोमना श्रावक साथे भेद न पाडवो एज छे अने म्हारी मलती श्रद्धावालाने भलामण करुं छुं के एक साथे मेलाप करो एक साथे विरुद्ध करवुं तेथी कांइ फायदो नथी अने हालमां पण वधा लोको हजु जैन धर्मनी

मर्यादा शुं छे ते जाणता नथी त्यां सुधी आ वात मान्य पण भाग्ये करशे, माटे ए वात मान्य न करे तो केटला एक शहेरमां जुदो न्यातना जैनीउनुं सीधुं लइने जमे छे अने केटला शेहेरमां तो एवो हठ बंधायो छे के जैनधर्मी पाछलथी थएला एवा लाडवा श्रीमाली छे हवे ते पाछळ थया के केम तेनो लेख जोवामां नथी पण तेमनी साथे संबंध हालमां जमवा खावानो नथी राखता. तेथी जाणीए छीए के पाछळथी थयेला होवा जोइये कारण जे ओसवाल पोरवाड प्रमुख न्यातो पण आचार्य माहाराजे प्रतिबोध करी स्थापी आपी छे ने ते स्थापती वखत जे जे धणीए आचार्य महाराजनी आज्ञा पाली ते सरवे ओसवाल थया तेमां ज्ञाति भेद रह्यो नथी, तेमज हरिभद्र सुरी महाराजे -पोरवाड स्थापती वखते पण एमज थयुं छे अने ते सरवे ओसवाल पोरवाड श्रीमाली विगेरे जमे छे, तेम लाडवा श्रीमालीनामां पण कोइ आचार्ये प्ररूप्युं होवुं जोइए अने जैन धर्म पामवाथी एक न्यात थएली जणाय छे ते छतां तेमना पैसाथी सीधुं लावेलुं ने तेनी रसोइ ओसवाल श्रीमाली पोते रांधी जमवा कहे तो पण ओसवाल प्रमुख जमवानी ना कहे छे. आ कोइक प्रकारथी असल हठ बंधायेलो जणाय छे. ए हठ छोडवा लायक छे कारण के शा कारणथी हठ बंधायो ते पण कोइने खबर नथी अने ते हठ पकडी बेसवो ए भूल भरेलुं छे. केटलाएक शेहेरमां कणबी तथा भावसार पैसा वा सीधु आपे छे ते श्रीमाली पोरवाड प्रमुख खुशीथी जमे छे अने वहीवट चालतो आवेलो चाले छे अने तेवीज रीते लाडवा श्रीमाली आ वहीवट चालतो नथी ते चलाववो जरुर छे. आगल ते लोक जमता हता पण आपणे तेमनुं नहीं जमवाथी तेमने खोटुं लागवाथी ते लोक पण आपणुं जमता नथी.आथी शासनमां भेद

पमी गयो छे. ए जैन न्नाइओमां न्नेद पमवाथी केटलाएक शासननना काममां घणी गुंचवणो आवे छे. ते लोक आपणा विचार प्रमाणे चालता नथी ने जो तेमनी साथे ऐक्यता होय तो ते पण आपणा विचारथी जुदा पमी शके नहीं. वली तेमनी पासे आपणे धर्म पामवो ने आपणी पासे तेमने धर्म पामवो सुलन्न पमे अने घणीज सुगमता पमे, माटे एकठा थवुं जमवुं खावुं तो उत्तम छे पण ते न बने तो तेमना पैसा लइ जमवानो न्नेद काढी नांखवो. जेटलो न्नेद न्नागशे ते गुणदाइ छे. साम्रा त्रणसें गाथाना स्तवनमां गछमां न्नेद न पामवा एम साधु महाराज आशरी कहेवुं छे ते तेमज श्रावकमां पण न्नेद पामवा जोइए नहीं. बे दीलीथी शासनने घणुं नुकशान छे, वली ममत्वी ओसवाल श्रीमाली प्रमुख छे तो कहे छे जे अमो ऊंचा छीए ए लोक निचा छे एम बोली तेमनी निंदा करे छे तेथी नीच गोत्र बंधाय छे, कारण के श्रावकनो धर्म पांचमा गुणस्थाननो छे ते गुणस्थानमां मनुष्यने नीच गोत्रनो ऊदय ज नथी ते छतां श्रावकने नीच कहेवा ए न्नूल न्नरेलुं छे ने कर्मबंधनुं कारण छे; वीतरागनी आज्ञा विरुद्ध छे. विचारसारनी टीकामां प्रश्न थयुं छे के हरिकेशी चंमाले दीक्षा लीधी छे ते छठे सातमे गुणस्थानके वर्त्ते छे अने छठे सातमे गुणस्थानके नीच गोत्रनो ऊदय नथी तेना जवाबमां देवचंद्रजी महाराज कहे छे के जेने नरेंद्र जे चक्रवर्त्ती अने देवेंद्र जे सुधर्म इंद्र महाराज नमस्कार करे छे तेने उंच गोत्रनो ज उदय कहीए, नीच गोत्र उदय होत तो पूजनीक थातज नहीं. पूजनीकपणुं उंच गोत्रना उदयथी ज थाय छे. बार व्रतनी पूजामां श्रावकना बहुमान आश्री कह्युं छे के विरतिने प्रणाम करीने इंद्र सन्नामां बेसे. गुणस्थानवंत श्रावकने इंद्र महाराज नमस्कार करे छे ने तेवा व्रतवंत ओसवाल श्रीमाली पोरवाम विगरे सि-

वायनी नातमां शुं नहीं होय? अर्थात होय ज. तेम छतां आवो भेद राखवानी पद्धती होय तो व्रत वंत लाड्वा श्रीमाली प्रमुखनी निंदा थाय ते शुं प्रभुनी आज्ञा बहार नथी? माटे प्रभुनी आज्ञानुं आराधन थवुं एज उत्तम पुरुषनुं तथा उत्तम पुरुष थवुं होय तेनुं काम छे केमके कर्मग्रंथनो ५६ मी गाथामां मिथ्यात्व मोहनी उपार्जना करवानां उन्मार्गनी देशना विगरे घणा बोल कह्या छे तेमां संघनुं प्रत्यनीकपणुं पण गण्युं छे अने ते गाथाना अर्थमां श्रावकनी निंदा विगेरे करवाथी मिथ्यात्व उपार्जे एम कहेछे, माटे पर न्यातना धर्मीष्टने नीचा कहेवाथी एज गाथामां फल कह्यां छे ते पामीये तेमज तेमनी साथे भेद भांगी एकत्र थइए तो समकीत निर्मल थाय माटे आपण सर्वे मीत्रोए आ भेद मनमांथी काढी नांखी अभेदपणुं थाय एम उद्यम करवो जोइए. जैन धर्मना पालनार अने प्रशंसाना करनारनां जेम बने तेम तेमनां बहुमान करवां, तेमने बने एटली मदत आपवी, पण तेमना उपर इर्ष्याभाव द्वेषभाव लाववो नहीं तेम ए नीच जाति छे एवुं कलंक देवुं नहीं जोइए. हालमां रजपुतोनुं आपणे खाता नथी तेज जातिमांथी ओसवाल प्रमुख थया छे तेमज लाड्वा श्रीमाली विगेरे धर्म पालवाथी एकन्यात थइ छे. असल आपणे हता तेमने जेम संभारता नथी तेम तेमनी शुं न्यात हती ते तपासवानुं काम नथी. महावीरस्वामी महाराज आदे तिर्थंकर महाराजना गुण ग्रामना करनार तेमना प्ररूपेला मार्गने सेवनार छे माटे ते गुणनी बहुमानता जेटली आपणथी थाय ए करवी पण तेनी लघुता करवी ए महा दुषण समजुं छुं माटे सर्व भाइओए आ प्रयास लेवा योग्य छे.

७ जैनमां न्यातनी वर्त्तणुकना कायदा करवा जोइए ते सर्वे जैनीओनी एकज जातनी वर्त्तणुक जोइए. रीतो भातोनो

आपवा लेवानो पण कायदो बंधाय तो सहेज सहेजमां न्यातो-मां तड पडे छे अने लडाइओ थइ ऐक्यता भंग थाय छे. ते का-यदाने आधारे चालवानुं होय तो वर्तणुक भंग थाय नहीं. हमेश मर रहे भंग करे तेहना प्रायश्चितनी व्यवहारी मरजादा जोइए अने एक गामना लडे तो तेनुं समाधान कायदामां देश परदेश उपरांत कर्या होय ते करे एटले तेनो निकाल आवी जाय ने तकरार लांबी पोहोंचे नहीं, कारण जे थोडा थोडा माणसमां पक्षपात थइ शके छे. आखुं जैन मंडल एकज थाय अने तेमनुं बंधारण कायदानुं कर्युं होय ते बंधारण जे तोडे तेनी साथे देशो देशनुं जैन मंडल विरुद्ध थाय तो जैननो कायदो तोडतां मर रहे अने बधा साथे विरुद्धता थइ शके नहीं. कायदा कर्या पछी पण तेमां अडचण पडे तो आखुं मंडल दर वरसे मले त्यारे काय-दामां सुधारो करता जाय आ करवाथी पण जैन कोमने सुखी थवानां साधन छे.

७ आ सिवाय काम सुधारानां करवानां घणां छे पण ए करनार माणसनी खामी छे. ए खामी क्यारे दूर थाय ज्यारे जैन मंडलमांथी परोपकारी माणसोए आवुं काम करवानी खुशी बतावची जोइए, तेमां बे वातनी खुशी बतावची जोइए. एकतो पोते जेटलुं काम करी शके तेटलुं काम करवानी खुशी बतावची जोइए. बीजुं जेटला पैसानी जे मदत करे वा चहाता होय ते-टला पैसानी मदत करवा तैयार थयलाए जणाववुं जोइए. हवे ते कोने जणावे ए बंधारण सारुं एकठा थइ परोपकारी अग्रेसर मुकरर करवा जोइए. अने पैसानी मदतमांथी श्रावको कारभार करनार राखवा जोइए अने ते माणसोथी तथा परोपकारी म-हेनतु भाइओनी महेनतथी जेटलुं जेटलुं बने ते बनाववुं तेम करतां करतां कोइक वखत बधो सुधारो थवानो वखत मलशे.

एकली वातो करवाथी आ काम बनतुं नथी चतुरविध संघमाथी कोइ पण धनवान गृहस्थ अग्रेसरी थाय तो ए काम बने माटे जेने पूर्वे पुण्य उपार्जन कर्युं छे ते पुण्यात्मा हित सारु उपार्जन कर्युं छे माटे ते पुण्यनां फल एज छे धनवान पुरुषो सारा गुमास्ता राखे पोताना वेपारनुं काम तेमने सोंपी पोते परमार्थनां काममां कम्मर बांधवी के जेथी शासन दीपे अने पुण्यशाली शेठतो कहे जे अमने फुरसद नथी त्यारे साधारण माणसने फुरसद तो होयज क्यांथी? त्यारे पुन्यवंतने धन मल्युं तेनां फल खावां ते खाइ शकता नथी. अने जे जे जेटलुं जेटलुं काम करे छे ते तो तेटलुं तेटलुं फल चाखे छे अने भगवंतनुं शासन एकवीश हजार वरस सुधी जयवंतु कह्युं छे, माटे कोइ पण भाग्यशाली शासनना काम करवा कम्मर बांधशे अने शासन जयवंतु वर्त्तशे. जे जे भव्य प्राणी शासन जयवंतु राखवानी मेहनत करे छे ते कांइ उछुं पुण्य बांधे छे एम नथी, अतुल्य पुन्य उपार्जे छे; माटे आ वांची कोइ पण भाग्यशाली तत्पर थाय ते सारु आ लखाण कर्युं छे. भाग्यशाली पुरुषो जागे नहीं त्यां सुधी तो चाले छे एम चालवानुं छे पण हालना वखतमां केटला एक भाग्यशालीउ जाग्या जणाय छे ने एनो उद्यम करे छे तेमने मारा लखवाथी कंइ कंइ सारु लागे तो तेउ ते वापरे ते सारुज लखाण कर्युं छे वा आवता काले पण जैन कोम सुधारवाना कामी थाय तेमने पण मारी बाल बुद्धिना विचारमां कांइ सारो विचार होय ने पसंद पडे ते वर्त्ते ते सारु आ लख्युं छे. कदापि आ लखाण प्रवृत्तिनुं छे तेमां कोइने खोटुं लगाडवा लख्युं नथी तेम छतां पण मारी भूलथी कोइने खोटुं लागे एवुं लखाइ गयुं होय तो तेमनी पासे अगाउथी क्षमा करवा विनंती करुं छुं अने मने लखशे तो पत्र द्वारे हुं माफी मागीश अने प्रभुजी

आगल तो प्रभुनी आज्ञाथी विरुद्ध लखायुं होय तेनुं मन वचन कायाये करी मिच्छामि दुक्कडं दउ छुं.

प्रश्न—जेम जैनमां अभक्ष्य पदार्थ मांस मदीरा मध मांखण मूला प्रमुख अनंतकाय वीदल बेगण रात्री भोजन अभक्ष्य कह्यां छे तेम अन्यदर्शनीउए कह्यां छे ?

उतर--श्रीचंद्र केवलीना रासमां पुराणोमां कहेला श्लोक टांकेला छे ते श्लोक नीचे लखुं छुं, तेथी खात्री थशे. जे जे आत्मार्थी माणसो छे ते तों वीचारशे पण विषयी जीवो छे ते लोक तो जे धर्म माने छे तेना पण शासन उपर भरोसो न राखे एटले इलाज नथी. अन्यदर्शनीओना धर्म प्रकाशनार ज पोताना शास्त्रमां अभक्ष्य कहेलुं छे ते वांचीने तेहनो त्याग करे नही एटलुं श्रोताना गलामां उतरे एहवो उपदेश पण दइ शके नही, एटले हालमां एहवुं थयुं छे के श्रावक राते खाय नहीं कोइ दयालु ब्राह्मण राते न खाय तेने कहे छे जे तुं तो श्रावक थइ गयो छे आवी दशा बनी छे; ए बधुं योग्य गुरु नही मलवानां फल छे माटे जैनीभाइओए तेहनी दया चींतववी तेज उत्तम छे, पण जैनी थइने हालमां केटलाएक शेहेरमां नलो थया छे तेथी न ले चीथरां बांध्यां एटले पाणी गलइ गयुं अने संखारो पण साचवता नथी, आ कांइ थोडी अफसोसनी वात छे! के अन्यदर्शनी कहे जे जैनीओ पाणी गलीने वापरे ने जैनीभाइओ आ वात छोडता जाय छे तो दीर्घकाले अन्यदर्शनी जेवुं ज थशे. केटला एकने कहीए छीए के नलमांथी पाणी लइ तेने गाली नाखी तेनो संखारो जो नल तलावमांथी होय तो तलावमां नांखवो ने कुवामांथी नल होय तो कुवामां नांखवो पण तेम करनार घणा ज थोडा छे, माटे जैनभाइओ जीव दया प्रतिपाल कहेवाय तो ते नाम साचे साचुं क्यारे थाय के ज्यारे जीवनी जतना करे त्यारे माटे

जीव रक्षा सारु पाणी गलवुं ने तेनो संखारो तलाव वा कुवामां ज्यांनुं पाणी होय त्यां नांखवो. अभक्ष्य बावीस जैनशासनमां कह्यां छे तेनो त्याग करवो. तेमांनां केटलांएक अन्यदर्शनीमां पण कह्यां छे पण केटलांएक अन्यदर्शनीने खबर नथी तेथी नीचे लख्यां छे. जैन भाइओने पोतानी त्याग करवानी चीजने अन्यदर्शनी पण त्याग जोग कहे छे तेथी त्याग करवानी श्रद्धा वधे ते सारु लख्युं छे.

॥ श्री जिनो जयतु, यदुक्तं महाभारते ॥

घातकश्चानुमन्ता च, भक्षकः क्रयविक्रयी ॥
लिप्यंते प्राणिघातेन, पञ्चैतेऽपि युधिष्ठिर॥ १ ॥
यावन्त पशु रोमाणि, पशु गात्रेषु भारत ॥
तावद्वर्षसहस्राणि, पच्यन्ते पशुघातकाः ॥ २ ॥

अर्थ—महाभारतमां कह्युं छे के हे युधिष्टिर जीवोने प्राण घाते करीने मारनार, संमति आपनार, खानार, वेचनार, वेचातु लेनार, आ पांचे जणाओ पापथी लेपायछे अने पशुना शरीरमां जेटलां रुवाटां छे तेटला हजार वर्ष सुधी नरकमां रहे छे.

॥ शान्तिपर्वेप्युक्तम् ॥

यूपं छित्वा पशुन् हत्वा, कृत्वा रुधिर कर्दमान् ॥
यद्येवं गम्यते स्वर्गे, नरके केन गम्यते ॥ १ ॥

अर्थ—शान्तिपर्वमां पण कह्युं छे के थांभलाने छेदीने अने पशूओनें मारीने पृथ्वी उपर लोहीना कादवो करीने जो स्वर्गमां जाय तो नरकमां कोण जाय? अर्थात् पशु विगेरे जीवोने मारनार ज नरकमां जाय॥ माटे पशुघात अनें यज्ञ होमादीक करवाथी एहवांज फल थाय.

॥ मार्कंडपुराणे ॥

जीवाना रक्षणं श्रेष्टं, जीवाः जीवितकांक्षिणः॥

तस्मात् समस्तदानेभ्योऽभयदानं प्रशस्यते ॥ ४ ॥

अर्थ—मार्कंड पुराणमां कह्युं छे के जीवोनुं रक्षण करवुं ए श्रेष्ठ छे. जीवो पण पोताना जीवीतनी ईच्छा करे छे, माटे सर्व दान थकी जीवोने अभयदान आपवुं ए अधिक गणाय छे. ॥ अभयदाननी महत्त्वता केटली बतावे छे ते छतां पशुने होमवुं थाय ते केटली बालचेष्टा छे, माटे सर्वे धर्ममां कोइने दुःख न थाय एम वर्तवुं एज धर्म छे.

॥ तत्रैव मार्कंडे पुष्पाण्युक्तान्यष्टौ ॥

अहिंसा परमं पुष्पं, पुष्पं इंद्रिय निग्रहम् ॥ सर्व भूत दया पुष्पं, क्षमा पुष्पं विशेषतः ॥ ध्यान पुष्पं तपः पुष्पं, ज्ञान पुष्पं तु सप्तमं ॥ सत्यं चैवाष्टमं पुष्पं, तेन पुष्यंति देवता ॥ ५ ॥

अर्थ—मार्कंडपुराणमां 'जीवानां रक्षणं श्रेष्टं' ए जग्योए आठ पुष्प कह्यां छे, तेमां हिंसा न करवी ए पहेलुं पुष्प, इंद्रिय निग्रह करवो ए बीजुं पुष्प, त्रीजुं पुष्प सर्व जीवमां दया राखवी, चोथुं पुष्प शान्ति राखवी, पांचमुं पुष्प ध्यान करवुं, छठुं पुष्प तप करवो, सातमुं पुष्प ज्ञान मेळववुं, ने आठमुं पुष्प सत्य बोलवुं, एथी देवताओ प्रसन्न रहे छे.

॥ यदुक्तं महाभारते ॥

यूकामत्कुन दंशी मसात्, जंतुश्च तुदति तनूं ॥ पुत्र वत् परि रक्षंति, ते नराः स्वर्ग गामिनः ॥ ६ ॥ आत्म पादौ च ये घ्नन्ति, ते वै नरक गामिनः॥ सर्वत्र कार्या जीवानां ॥ रक्षा चैवापराधिनाम् ॥ ७ ॥

अर्थ— जू, मांकड, मछरने आदे लइ जंतु शरीरने चटका मारे छे तो पण तेनुं पुत्रनी पेठें जे रक्षण करे छे, ते प्राणियो स्वर्ग

मां जवा योग्य छे ॥ अने जे मनुष्य जीवोना शरीर आदे लइने पग विगेरे मारे छे ते मनुष्य नरकमां जाय छे माटे अपराधी जीवोनी पण सर्व प्रकारथी रक्षा करवी ए मुख्य धर्म छे.

॥ अन्यदप्युक्तं महाभारते ॥

विंशत्यंगुलमानं तु, त्रिंशदंगुलमायतम् ॥ तद्वस्त्रं द्विगुणीकृत्य, गालयित्वा पिबेत् जलम् ॥१॥ तस्मिन्वस्त्रे स्थितान् जीवान्, स्थापयेत् जलमध्यतः ॥ एवं कृत्वा पिबेत् तोयं, स याति परमां गतिम् ॥ २ ॥

अर्थ—पाणी गालवा विषे कह्युं छे के, वीश आंगल पहोलुं ने त्रीश आंगल लांबु वस्त्र लइ तेने बेवडुं करी तेनाथी पाणी गालीने पीवुं, ने ते वस्त्रमां रहेला जीवोने कूवा विगेरेमां नांखवा, आवी रीते करीने जे मनुष्य पाणी पीए ते उत्तम गतिने पामे ॥ १ ॥ आ रीते महाभारते छे, छतां सन्यासी पुराणी थइ अणगल पाणी पीये, वापरे, नहाय, तेनी शी गति थाय? ते महाभारत वांचनार सांभलनार लक्ष नथी देता, ते केवी बाल दशा छे तो आत्मार्थिये दया करवी.

दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं, वस्त्रपूतं पिबेत् जलं ॥
सत्यपूतं वदेत् वाक्यं, मनःपूतं समाचरेत् ॥

अर्थ—आंखोथी जोइने पग मूकवा, वस्त्रथी गलीने पाणी पीवुं, सत्यथी पवित्र वचन बोलवुं, मन पवित्रथी आचरवुं.

॥ महाभारते ॥

मधु भक्षणे पिदोषः— संग्रामेण यत् पापं, अग्निना भस्मसात् कृतं ॥ तत् पापं जायते तस्य, मधुबिंदु प्रभक्षणात् ॥ १ ॥

अर्थ—मोटुं युद्धकरवाथी जेटलुं पाप थाय छे, अग्निथी गाम

विगेरे बालवाथी जेटलुं पाप थाय छे, तेटलुं पाप मधनुं बिंदु मात्र खावाथी थाय छे ॥ मधनुं आवुं पाप छे तोपण शास्त्र वांचनार त्याग न करे तो सांभलनारने त्यागनी शी वात? माटे प्रथम कथा वांचनार दयालुये मधनो त्याग करवो के जेथी श्रोता सुधरे.

॥ विष्णुपुराणेऽपि ॥

ग्रामाणां सप्तके दग्धे, यत् पापं समुत्पद्यते ॥
तत् पापं जायते पार्थ, जलस्याऽगलिते घटे ॥ १ ॥
संवत्सरेण यत् पापं, कैवर्तस्यैव जायते ॥
एकाहेन तदाप्नोति, अपूतजलसंग्रही ॥ २ ॥

अर्थः—विष्णुपुराणमां कह्युं छे के हे पार्थ! सात गाम बालवाथी जेटलुं पाप थाय छे तेटलुं पाप घडामां गाळ्या वगरनुं पाणी भरवाथी थाय छे. माछी वर्ष सुधी जाल नांखे ने तेने जेटलुं पाप लागे तेटलुं पाप एक दिवस गाळ्या विना पाणी वापरनारने थाय छे ॥२॥

॥ विष्णुपुराणे ॥

यः कुर्यात् सर्वकार्याणि, वस्त्रपूतेन वारिणा ॥
स मुनिः स महासाधु, स योगी स महाव्रती ॥ १ ॥

जे वस्त्रथी गालेला पाणिये करीने सर्व कार्य करे छे तेज मुनि, तेज मोटो साधु, तेज योगी, ने तेज मोटा व्रत वालो जाणवो.

॥ यदुक्तं ऐतिहासपुराणे ॥

अहिंसा परमं ध्यानं, अहिंसा परमं तपः॥ अहिंसा परमं ज्ञानं. अहिंसा परमं पदं ॥१॥ अहिंसा परमं दानं, अहिंसा परमो दमः॥ अहिंसा परमो जापः, अहिंसा परमं शुभम् ॥२॥ तमेवमुत्तमं धर्मं, महिंसा धर्म रक्षणं॥ ये चरन्ति महात्मानः, विष्णुलोकं व्रजान्त ते ॥ ३ ॥

अर्थ—ऐतिहासपुराणमां कह्युं छे के ॥ अहिंसा ए उत्तम

ध्यान छे, अहिंसा ए उत्तम तप छे, अहिंसा ए उत्तम ज्ञान छे, अहिंसा ए उत्तम पद छे, अहिंसा ए उत्तम दान छे, अहिंसा ए-उत्तम दम छे, अहिंसा ए उत्तम जप छे, अहिंसा एज उत्तम शुभ छे, अहिंसा रूप धर्म करवो एज उत्तम धर्म छे, ते धर्मनुं जे महात्माउ आचरण करे छे ते विष्णु लोकमां जाय छे ॥ ३ ॥

॥ यदुक्तं नागपरूल ग्रंथे ॥ युधिष्टिरं प्रति कृष्णः ॥

अभक्ष्याणि नभक्ष्याणि, कंदमूलानि भारत ॥
नूतनोद्गमपत्राणि, वर्जनीयानि सर्वतः ॥ १ ॥

अर्थः—नागपरूल ग्रंथमां धर्मराजाने कृष्णे कह्युं छे के हे धर्मराजा कंदमूल अभक्ष्य छे ते न खावां तथा नविन उगेला अंकुरादिनां पांदरुां विगेरे पण त्याग करवां आ रीते कह्या छतां कंदमूल जे सूरण शकरियां विगेरे एकादशी करीने खाय तेनुं केटलुं पाप ते बुद्धिवाने विचारवुं.

॥ मधुपाने विशेषमाह ॥

मधुपाने मतिभ्रंशो, नराणां जायते खलु ॥ धर्मेण तेभ्यो दातॄणां, नध्यानं न च सत्क्रिया ॥१॥ मद्यपाने कृते क्रोधो, मानं लोभश्च जायते ॥ मोहश्च मत्सरश्चैव, दुष्टभाषणमेव च ॥२॥ अन्यदप्युक्तं ॥ मद्ये मांसे मधुनि च, नवनीते बहिःकृते ॥ उत्पद्यंते विलीयंते, सुसूक्ष्म जंतु राशयः ॥

अर्थः—मदिरा पीवामां मनुष्योने बुद्धिनो भ्रंश थाय छे तेथी पापाचरण करे छे, माटे तेउने आपनारने धर्म थतो नथी ने मदिरा पीनारने ध्यान तथा सत्क्रिया फल रहित थाय छे ॥ १ ॥ मदिरा पीवाथी क्रोध, मान, लोभ, मोह, मत्सर थाय छे, तथा दुष्ट भाषण बोलाय छे ॥ २ ॥ बीजुं पण कह्युं छे के मदिरा, मांस, मध तथा छासमांथी बार काढेला मांखणमां, झीणा जंतुउना समुह उत्पन्न थाय छे ने नाश थाय छे ॥ मांखणनो दोष कह्यो छे पण

दोष गणाता नथी अने कहे छे के शास्त्रथी विरुद्ध नथी ते न्या-
यीए विचारवुं.

॥ अभक्ष्य भक्षणे दोषमाह ॥

पुत्रमांसं वरमुक्तं, न तु मूलक भक्षणं ॥
भक्षणात् नरकं याति, वर्जनात्स्वर्गमाप्नुयात् ॥१॥

अर्थः—पुत्रनुं मांस खावुं ते सारुं पण मूलो न खावो, मूलो
खावाथी प्राणी नरकमां जाय छे ने एनो त्याग करवाथी स्वर्ग-
मां जाय छे ॥ १ ॥

॥ ऐतिहासपुराणेऽपि ॥

यस्तु वृंताक कालिंग, मूलकानां च भक्षकः ॥
अंतकाले स मुढात्मा, न स्मरिष्यति मां प्रिये ॥ १ ॥

अर्थः—ऐतिहासपुराणमां भगवाने कह्युं छे के हे प्रिये वें-
गण, कालिंगडो अने मूलाना खानार प्राणी अंतकालमां पण
मने नहीं संभारे ॥ १ ॥ एनो आशय एज छे के वेंगण, कालिं-
गडा अने मुलानो खानार अधर्मी छे तेथी अंतकाले मने संभारशे
नहि तेथी दुर्गतिमां जशे.

॥ शिवपुराणेऽपि ॥

यस्मिन् गृहे सदा नाथ, मूलकं पचति जनः॥ श्म-
शानतुल्यं तद्वेश्म, पितृभिः परिवर्जितं ॥ १ ॥ मूलकेन
समं भोज्यं, यस्तु भुंक्ते नराधमः॥ तस्य बुद्धि र्न वैधेत,
चांद्रायणशरीरीणः ॥ २ ॥ भुक्तं हलाहलं तेन, कृतं चा
भक्ष्यभक्षणं॥ वृंताक भक्षणाच्चापि, नरा यांत्येव रौरवं॥३॥

अर्थः—शिवपुराणमां कह्युं छे के ॥ हे नाथ! जेना घरमां निरं-
न्तर मूला रंधाय छे तेनुं घर श्मशान तुल्य छे, ने ते घरने पितृ
लोकोए त्याग कर्युं छे. मूलानी साथे जे वस्तुनुं भोजन करे छे

ते मनुष्यमां अधम गणाय छे ने तेनी बुद्धि चांद्रायणादि व्रतें करीने पण शुद्ध थती नथी ॥ २ ॥ जेणे अन्नभक्ष्य, मूला, वेंगण विगेरे खाधां तेणे हलाहल झेर पीधुं समजवुं ने अंते ते प्राणी रौरव नामना नरकमां जाय छे. ॥ ३ ॥

॥ पद्मपुराणेपि ॥

गोरसं माषमध्ये तु, मुद्गादिके तथैव च ॥
भक्ष्येत्तंभवेत् नूनं, मांसतुल्यं युधिष्टिर ॥ १ ॥

अर्थः—हे युधिष्टिर ॥ दुध, दहिं, छाश अडदमां तथा मग विगेरे कठोलमां नाखे छे ते मांस तुल्य थाय छे, माटे ए खावुं ने मांस खावुं बराबर छे ॥ १ ॥

॥ अन्यदप्युक्तं तत्रैव ॥

अस्तंगते दिवानाथे, आपो रुधिर मुच्यते ॥ अन्नं मांससमं प्रोक्तं, मार्कंडेन महर्षिणा ॥ १ ॥ चत्वारो नरक द्वारः, प्रथमं रात्रिभोजनं ॥ परस्त्रिगमनं चैव, संधानाऽनन्तकायकाः ॥ २ ॥

अर्थः—पद्मपुराणमां बीजुं पण कह्युं छे के दिवसनो स्वामी सूर्य अस्त पामे, त्यार पछी पाणी पीवुं ए लोही तुल्य छे ने अन्न खावुं ए मांस तुल्य छे ॥ १ ॥ चार नरकनां द्वार छे तेमां प्रथम रात्रे भोजन, बीजुं परस्त्री साथे गमन, त्रीजुं अथाणुं विगेरे खावुं, चोथुं मूला विगेरे खावा जेमां अनंतकाय जीव थाय छे ॥ २ ॥

आ श्लोकमां रात्री भोजन, परस्त्री गमन, बोल अथाणुं जे सुकातुं बराबर नथी अने कीडा पडे छे ते, तथा मूला जेमां अनंतकाय एटले अनंत जीवो छे तेथी, ए चारे सेवनार नरकगामी छे माटे त्याग करवो.

॥ समाप्तः ॥